[श्री श्यामवर सत्य हैं].

अनन्त श्री स्वामी लालदास जी
प्रणीत

बीतक
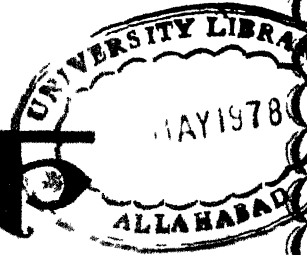
श्री १०८ प्राणनाथजी की आद्य गद्दी महामंगलपुरी
धम्म, के आचार्य श्री १०८ मंगलदास जी
महाराज के आदेशानुसार

सम्पादक—
प्रोफेसर माताबदल जायसवाल [यू० पी०]
देवकृष्ण शर्मा शास्त्री साहित्यरत्न [आसाम]

प्रकाशक—

सेठ श्री बलमजी लालजी तथा	ब्रह्मचारी मोहन प्रणामी (नेपाल)
सेठ श्री मणिलाल कुंअरजी,	प्रणामी साहित्य संस्थान
वाघेला बाकुडा (बंगाल)	इलाहाबाद

भूमिका

प्रो० मातावदल जायसवाल, हिन्दी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय

स्वामी लालदास कृत बीतक[1] का सम्बन्ध श्री प्राणनाथ द्वारा प्रवर्तित तथा प्रचारित प्रणामी धर्म और प्रणामी साहित्य[2] से है। भारतीय इतिहास के मध्ययुग मे श्री प्राणनाथ एक ऐसे महात्मा थे, जिन्होने तत्कालीन अन्य धर्म सुधारको (कबीर, नानक, दादू आदि) की भाँति राम-रहीम की एकता का कथन करके हिन्दू मुसलमानो के पारस्परिक धार्मिक विद्वेष को शान्त करने का सन्देश ही नही दिया, बल्कि 'हिन्दुओ के धमग्रन्थ वेद उपनिषद, गीता-भागवत, मुसलमानो के धमग्रन्थ कुरान, ईसाइयो के इजील, यहूदियो के जबूर तथा दाउद पैगम्बर के अनुयायियो के धर्मग्रन्थ तौरेत मे मौलिक एकता खोजने का प्रयत्न किया।'[3] प्रणामियो के उपास्य ग्रन्थ 'कुलजम स्वरूप' मे सग्रहीत लगभग १८ हजार चौपाइयो के प्रणेता, १७वी शती ई० मे सर्व-धर्म-समन्वय के स्वप्न दृष्टा तथा छत्रसाल की प्रेरणा के प्रतीक इस महात्मा के जीवन वृत्त के सम्बन्ध मे भारतीय इतिहास तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखक मौन से हैं।

मध्यकाल मे प्राणनाथ के सम्बन्ध मे कुछ कहने का प्रथम श्रेय छत्रसाल के दरबारी कवि श्री गोरेलाल को है। इस कवि ने 'छत्रप्रकाश'[4] के अतिम दो अध्यायो मे श्री प्राणनाथ द्वारा छत्रसाल को उपदेश दिलवाया है। ['छत्रप्रकाश' के सम्पादक स्वर्गीय श्याम सुन्दरदास के अनुसार इस ग्रथ की प्राप्त प्रति अपूर्ण सी है। सभव है, पूर्ण प्रति मे प्राणनाथ के सबध मे कुछ और अध्याय भी रहे हो।] आधुनिक युग मे एफ० एस० ग्राउज ने १८७९ ई० मे प्रकाशित अपने एक लेख[5]—'ए सेक्ट आव दि प्राणनाथीज—मे प्राणनाथ के 'व्यापक प्रगतिशील उदारवादी दृष्टिकोण' तथा 'शुद्ध हिन्दी वाक्यरचना मे फारसी-अरबी शब्दो के प्रयोग की विशेषता की ओर सकेत करते हुए 'छत्रसाल के विशेष सरक्षण मे रहने वाले इस क्षत्रिय कवि' का आविर्भाव, काल १८वी शती ई० बताया है। मथुरा के एक प्रणामी करकदास द्वारा प्राणनाथ की एक रचना 'क्यामतनामा' आपको प्राप्त हुई थी। केवल उसी ग्रथ का परिचय होने के कारण ग्राउज के लेख मे प्राणनाथ के १४ ग्रथो का नाम भी कुछ अशुद्ध है और आविर्भाव काल भी।

इसी प्रकार 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री आव इडिया' मे इतिहासकार ने शाहजहाँ काल के 'वर्न्याक्यूलर' साहित्यकारो मे सुन्दरदास (ग्वालियर), चिन्तामणि (कानपुर), देवदत्त

१—'बीतक' शब्द वृत्त या वृत्तान्त के अर्थ मे हल्लार-जनपद मे आज भी प्रयुक्त होता है, यद्यपि हिन्दी कोष मे यह शब्द नही मिलता। २—दे० लेखक का 'प्रणामी साहित्य' नामक निबन्ध, साहित्य सम्मेलन पत्रिका—भाग ४१, सख्या—१, स० २०११। ३—वही पृ० ३। ४—गोरेलाल, छत्रप्रकाश। २३ वा, २५ वा अध्याय तथा संपादक द्वारा प्राणनाथ पर सक्षिप्त टिप्पणी।

(मैनपुरी) आदि ब्राह्मण कवियों के साथ कुछ पक्तियो मे प्राणनाथी सप्रदाय के प्रवर्त्तक प्राणनाथ६ का उल्लेख मात्र है। किन्तु इतिहासकार का सूचना-स्रोत मौलिक न होकर सभवत ग्राउज के लेख पर ही आधारित है, अतएव प्राणनाथ के जीवन-वृत्त की जानकारी नही के बराबर होती है। औरगजेब युग के इतिहास लेखक श्री यदुनाथ सरकार भी 'छत्र-प्रकाश' की सामग्री का उपयोग करने पर प्राणनाथ के सबध मे मौन रह जाते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखको मे मिश्रबधु, डा० हीरालाल८, डा० श्यामसुन्दर, डा० बडथ्वाल९, डा० रामकुमार वर्मा१०, तथा श्री परशुराम चतुर्वेदी११ ने प्राणनाथ तथा प्रणामी सप्रदाय का उल्लेख किया है। किन्तु मौलिक सामग्री का उपयोग न करने के कारण जा कुछ भी सामग्री प्राणनाथ के जीवनवृत्त तथा प्रणामी धर्म के सम्बन्ध मे प्रस्तुत की गई है वह अत्यल्प है।

यद्यपि जीवन वृत्त तथा प्रणामी धर्म के सबध मे अन्य श्रोत मौन से हैं, किन्तु स्वय प्रणामी सम्प्रदाय इस सबध मे पूर्णरूप से मुखरित है। इस सम्प्रदाय मे श्री प्राणनाथ के जीवन वृत्त लिखने की एक परम्परा भी दिखाई पडती है—जिसे सम्प्रदाय का बीतक साहित्य कहा जा सकता है। सम्प्रदाय मे लगभग ७ बीतके मानी जाती हैं, किन्तु उनमे से निम्नलिखित प्रचलित हैं—(१) स्वामी लालदास कृत बीतक (हस्तलिखित), (२) ब्रजभूषण कृत बीतक या 'वृतात मुक्तावली' [कानपुर निवासी काव्यतीर्थ पडित कृष्णदत्त शर्मा व्याकरण शास्त्री साहित्य-आयुर्वेद-आचार्य द्वारा सम्पादित तथा श्री प्रणामी धर्म सभा नौतनपुरी, जामनगर द्वारा प्रकाशित वि० १९८८], (३) मुकुन्द स्वामी या नौरग स्वामी कृत बीतक नेपाल निवासी ब्रह्मचारी मोहन मकुन्द जी द्वारा सपादित राज शिरोमणि दास द्वारा प्रकाशित, (४) हसराज स्वामी कृत बीतक मेहेराज चरित्र। (बिहाली दलेनी निवामी शास्त्री देवकृष्ण शर्मा द्वारा सपादित श्री नौतनपुरी धाम जामनगर द्वारा प्रकाशित वि० २०२२) (५) स्वामी लल्लू महाराज कृत बीतक प्रकाशित गुजराती मे। (६) जयरामदास जी कृत बीतक (हस्तलिखित) और (७) बहुरग स्वामी कृत बीतक (हस्तलिखित)। उपर्युक्त बीतको मे स्वामी लालदास कृत बीतक सर्वाधिक प्राचीन, पूज्य, व्यापक और विश्वसनीय है।

५—एशियाटिक सोसाइटी आव बगाल, सन् १८७९, भाग १, पृ० १७१। 6—Pran Natha Chatri of Panna in Bundelkhand wrote a number of poems which attempt to reconcile Hinduism and Islam Their language itself being marked by a grammatical basis with a vocabulary of Persian and Arabic words Ref. Cambridge History of India', vol. IV 1937 p. 221. ७—मिश्रबन्धु विनोद भाग ३, पृ०। ८—ना० प्र० स० खोज रिपोर्ट १९-२४, २६, सवत् १९९३,। ९—छत्र प्रकाश, २३ वा अध्याय फुटनोट, ना० प्र० पत्रिका, पृ० ११३ भाग १। १०—हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ० २७८-७९। ११—उत्तरी भारत की सत परम्परा पृ० ५२७, ५३७।

~~प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता~~ स्वामी लालदास१२, पोरबदर१३ [सुदामापुरी—महात्मा गान्धी की जन्मभूमि] काठियावाड के प्रतिष्ठित व्यापारी थे। पोरबदर में महात्मा गान्धी तथा कस्तूर बा के घर (जिसे आजकल पोरबदर मे कीर्तिभवन कहते है) से मिला हुआ प्रणामी मदिर है। कहा जाता है कि यह मन्दिर ही लालदास जी का पुराना घर है। पोरबदर प्रणामी मन्दिर के मत्री प्रतिष्ठित वयो-वृद्ध श्री प्रभुदास जी भाई (वकील) ने एक मुलाकात मे और पत्र मे लिखा था कि गान्धी जी की भतीजी सभवत आज भी उसी परपरानुसार प्रणामी संप्रदाय मे दीक्षित हैं।

महात्मा गान्धी के परिवार द्वारा प्रदत्त एक मकान मन्दिर की वृत्ति के लिये आज भी लगा हुआ है। इससे प्रतीत होता है कि महात्मा गान्धी के परिवार का प्रणामी धर्म से घनिष्टतर सबध था। कहा जाता है बाल्यावस्था मे प्राय महात्मा गान्धी इसी प्रणामी मन्दिर मे खेलने आया करते थे। खुद महात्मा गान्धी की मा प्रणामी सप्रदाय को मानती थी१। हावर्ड यूनीवर्सिटी अमेरिका के एक विद्वान प्रोफेसर स्टीफेन ने एक पत्र के जरिए मुझसे इस बात का जिक्र करते हुए, तथ्य का समर्थन इस प्रकार करते है।

"महात्मा गान्धी की मा का जन्म दात्राणा (गुजरात) ग्राम के एक प्रणामी परिवार मे हुआ था। मझे यह अत्यावश्यक प्रतीत होता है कि यदि हमें महात्मा गाधी के धार्मिक विचारो से अवगत होना है तो हमे महात्मा गाधी की मा के धार्मिक विचारो का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।*

ठट्ठानगर मे लालदासजी का वृहत व्यापार था। आपके पास निन्यानवे व्यापार पोत थे। व्यापारियो मे आप लक्ष्मण सेठ के नाम से प्रख्यात थे। धमप्रिय होने के कारण गीता-भागवतादि शास्त्रो मे विशेष रुचि थी। धर्मप्रचार करते हुए जिस समय श्री प्राणनाथ जी ठट्ठानगर पधारे उस समय चतुरा नामक एक द्विज के द्वारा लालदास (लक्ष्मणदास) ने प्राणनाथ के दर्शन की प्रार्थना की, जिसका उल्लेख स्वय लाल ने बीतक मे किया है—

१२—प्रणामी सप्रदाय के ब्रह्मचारी मगलदास शर्मा ने (वतमान मगलपुरी के आचार्य) लालदास बिरचित 'छोटी वृत्त' नामक एक अन्य खडी बोली (गद्य) रचना का सपादन किया है— 'जो सेठ श्री चिमनलाल लालजी राजा' द्वारा प्रकाशित की गई है—इस ग्रथ के अत मे लालदास का सक्षिप्त जीवनवृत्त भी दिया गया है। १३—लालदास (लक्ष्मण) की जन्मभूमि होने के कारण श्री प्राणनाथजी इस स्थान को लक्ष्मणपुरी कहा करते थे—बीतक मे इस नाम का भी उल्लेख है। *Gandhi's mother come from a Pranami faimly in the village of Dantrana. Now it seems to me important to understand Gandhi's mother's religious ideas if we are to understand Gandhis.

(Extract from a letter by Prof Stephen, Hoy, Fast Asian Research Centres HarwardUniversity Cambridge, U S A, December, 31, 1965)

"चतुरें आए अरज करी, लाल चाहे करे दीदार ॥
लछमन उनका नाम है, है तालिब धनी निरधार ॥"

लालदास, बीतक प्रकरण २३ चौ० ४

वही श्री प्राणनाथ द्वारा 'तारतम्यमत्र'१४ की दीक्षा लेकर लालदास पोरबदर मे धर्म प्रचार१५ करने लगे । सवत् १७२९ १६ सूरतनगर मगलपुरी मे श्री प्राणनाथजी ने अपने 'सुन्दरसाथ' सहित भारत मे धर्म प्रचार करने का निश्चय किया। लालदास भी उनके साथ चले--

लालदास सग चले, खाली लेकर हाथ ॥
निबाहे आखर लो, चले राज के साथ ॥

ला० बी० प्र० ३१ चौ० ११

तब से लेकर श्री प्राणनाथ के 'परमधाम गमन तक लालदास छाया की भाति उनके साथ रहे और सब प्रकार से उनके दाहिने हाथ बने रहे । श्री प्राणनाथ के सहस्रो समसामयिक शिष्यो मे लालदास ही उनके अन्यतम शिष्य, निकटतम 'साथी' तथा सर्वाधिक विश्वासपात्र थे । श्री प्राणनाथजी लघु से लघु और महान् से महान् बातो मे इनकी सम्मति लेते थे । लालदासजी सिन्धी, कच्छी, गुजराती, मारवाडी, हिन्दी (खडीब्रज), सस्कृत, फारसी और अरबी कई भाषाओ के ज्ञाता थे । श्री प्राणनाथ से दीक्षित होने के पूर्व भी आप गीता-भागवत के सम्बन्ध मे प्रवचन करते थे । प्राणनाथजी के लिए यहा कुरान का पाठ करते थे--

"कुरान हदीसा बाचने बैठत है दासलाल"

ला० बी० प्र० चौ०

१४--प्रणामी सम्प्रदाय का दीक्षामत्र । १५--देखिए छत्रसाल के समसामयिक ब्रजभूषण कृत "वृतान्त मुक्तावली"--

ठट्टा ते पोरबदरहि, लालदास इत आन ॥
पहुचे अपने घर तहा, अ र तिनकी पहचान ॥

प्र० ४९, चौ० ३७

"या विध चरचा होइ नित, पुरी सुदामा माहि ॥
लालदास लीनो नियम, अन्न लेहु अब नाहि ॥

प्र० ४९, चौ० ४४

१६सत्रह शत पर बीस नव, बीते सबत आइ ॥
लालदास सूरत तबै, प्रभु ढिग पहुचे जाय ॥

वहीं प्र० ४९, चौ० ५१

स्वर्ण-जाति, सुवार्षिकी, मडक खडे,
माधवी युत कर्णिकार, मुदित बडे ।

अथवा

चल पडी रात नभ वदन हुआ पीला-सा,
पृथ्वी अचल पट हरित हुआ गीला-सा ।
वह सु-अभिसारिका गई चिन्ह ये छोडे,
हत प्रभ से तारे उसे पकडने दौडे ।
मूर्च्छित-सा विधु हो गया न यह सह पाया,
आ पहुँचा मन्द समीर देख मुस्काया ।
वह व्यजन डुलाने लगा गन्ध से सीचा,
हो विवश तिमिर ने हाथ धरा से खीचा ।

सवाद—

केशिनी ! न है यह बात, तुम्हे क्या सूझा,
पौरुष का कुछ भद्रत्व न समझा-बूझा ।
रजनी भर मुँदता कभी अली, फूलो मे,
बिध जाता कभी निरीह, अली ! शूलो मे ।
अपने प्राणो पर खेल, लता को पाता,
करता है इसको मुग्ध गीत मधु गाता ।
पाकर अलि का सर्वस्व, स्वरस ये देती,
यह क्या देना जो मात्र परस ये देतीं ।

मुद्रा-चित्रण—

छू रहे है कृष्ण-दृग युग-कण को,
वर्ण लज्जित कर रहा है स्वर्ण को ।
नाक-शुक सी, वदन-मध्य रदावली,
भर रही ज्यो शुक्ति मे मुक्तावली ।
चिबुक परम मनोज्ञ, विस्तृत भाल है,
अक्षियो पर, पक्ष्म का घन-जाल है ।

यह सत्य है कि नयी कविता के नये शिल्प-प्रयोगो एवम् प्रतीक-विधानो से हारीत जी की कला सर्वथा अछूती है किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नही है कि नवयुग में नये प्रश्नो ने भी उन्हे नही छुआ है । नवीन काव्यगत मान्यताओ को अस्वीकार करके भी वे नवयुग की प्रमुख-प्रमुख समस्याओ से पूर्ण परिचित है और स्थान-स्थान पर इस प्रबन्ध मे उनकी समुचित अभिव्यक्ति हुई है ।

नाम न देने का यथाशक्ति प्रयत्न करने पर भी लालदास जी कई स्थलो में उत्तम पुरुष (हम) में घटना वर्णन करते हैं—यथा

(१) इन भात सबद फेरकें, किए जब तैयार ।।
तब भीम लालदास को कह्या, देओ पैगाम परवरदिगार१९ ।।
दोनो तैयार होयके, सिर चढाया हुकम ।।
चले बूडीए सेहेर से, आए पोहोचे डिली२० हम ।

अतिम पक्ति का सरल अन्वय इस प्रकार होगा हम दोनो (भीम—लालदास) बूडीए सेहेर से चले [और] दिल्ली आए पोहोचे । इस प्रसग से स्पष्ट सकेत मिलता है कि बीतक का वर्णन कर्ता भीम या लालदास मे से कोई एक है ।

(२) चले पीछे दिन तीसरे, पोहोचे हादी कदम ।
मिलाप कर बातें कही, जो बीतक भई हम२१ ।

बुढानपुर मे धर्म-प्रचार करते हुए श्री प्राणनाथ जी ने पुन औरगजेब के प्रधान काजी शेख-उल-इसलाम से शास्त्रार्थ करने के लिए लालदास को भेजा, किन्तु इससे विशेषलाभ न देख लाल को पत्र भेज कर बुढानपुर लौट आने के लिए कहा। पत्र पाकर लालदास हादी [श्री प्राणनाथ] के पास पहुचे और अपनी बीतक कही। प्रस्तुन प्रसग से यह स्पष्ट हो जाता है कि बीतक के रचयिता लालदास ने अपने लिए ही 'हम' का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त भी कही-कही तो लालदास बीतक के कथनकार के रूप मे अपना नाम तक दे गए है—यथा

(१) श्री महामत कहे ए मोमिनो, ए सरत करो याद ।
फेर लाल आगे की कहो, जो झगडे की बुनियाद२२ ।।
(२) श्री महामत कहे ऐ साथ जी, ए बात बडी बुजरक ।
एक जरा मैं ना केहे सको, लाल कह्या गजे माफक२३।।
(३) श्री महामत कहे ऐ मोमिनो, सुनो जिकर सुभान ।
ए सिफत सुभान की, लाल जिनको भई पेहेचान२४ ।।

ग्रन्थ को आद्यन्त पढने के पश्चात् सरल, सजीव तथा यथातथ्य वर्णन शैली की गवेषणात्मक विवेचना से यही सकेत मिलता है, कि ग्रन्थ का लेखक श्री प्राणनाथ का कोई समसामयिक निकटतम शिष्य होगा और ऐसे व्यक्ति लालदास ही हो सकते हैं। वहिर्साक्ष्य से सम्बन्धित सप्रदाय की प्रबल मान्यता के अतिरिक्त छत्रसाल के समसामयिक शिष्य कवि श्री ब्रजभूषण जी उपर्युक्त बीतक को लालदास कृत मानते हैं। जिसका समर्थन उनकी निम्नलिखित पक्तियो से होता है—

१९—दे० ला० बी० ३३-२३ २०—दे० ला० बी० ३३-२४ २१—दे० ला० बी० ५३-४२
२२—ला० बी० प्र० २९-११२ २३—ला० बी० मे आठो पहर की सेवा—प्र० ४-१०२
२४—दे० ला० बी० प्र०.१२—७२

सुनि मैं चरचा धाम धनी की, सत्तरि साथ मिले नरनारी।
श्री लालदास कृत बीतक माही, नाम ठौर सब कहे उन्हारी२५ ॥

इस प्रकार अन्तर्साक्ष्य और बहिर्साक्ष्य सब प्रकार से प्राणनाथ के समसामयिक शिष्य लालदास ही बीतक के रचयिता सिद्ध होते है।

ग्रन्थ की रचना तिथि लेखक ने स्वय नही दी। अभी तक यह ग्रन्थ हस्तलिखित परम्परा से पोषित था। 'कुलजम स्वरूप' की भाति 'बीतक' की एक हस्तलिखित प्रति भी प्रत्येक प्रणामी मंदिर मे प्राय रहती है। सम्प्रदाय मे यह माना जाता है कि श्री प्राणनाथ के परमधामगमन२६ (श्रावण बदी ४ वि० स १७५१) के दूसरे दिन से पन्ना मे लालदास जी ने बीतक लेखन का कार्य आरम्भ किया और भादौ बदी अष्टमी (कृष्णजन्माष्टमी) के दिन समाप्त किया। इसके पश्चात् लालदास की भी इहलीला समाप्त हुई२७। आज भी उत्तर प्रदेश, बिहार, पजाब, गुजरात बम्बई, आसाम, तिब्बत, नेपाल जहा कही भी प्रणामी मदिर हैं सर्वत्र श्रावण बदी पचमी से भादौं बदी अष्टमी तक बीतक का पाठ होता है। अतएव बीतक की रचना-तिथि १७५१ सवत् (१६९४ ई०) ही मान्य होनी चाहिए। हो सकता है कि बीतक के कुछ प्रकरण (यथा-प्राणनाथ के दो पत्र) अथवा उनकी रूपरेखा इसके पहले भी बनी हो, किन्तु ग्रथ रूप मे बनने की तिथि १७५१ ही है।

ग्रन्थ की प्राय समस्त हस्तलिखित प्रतिया गुटका के आकार की हैं। सबकी लिपि शैली भी एक ही प्रकार की है। आज भी यदि पन्ना मे इसकी प्रतिलिपि तैयार की जाती है तो मध्यकालीन हिन्दी लिपि शैली का ही प्रयोग होता है। धार्मिक महत्व के कारण लिपिकर्ता आदि प्रति की पूर्ण अनुकृति बनाने का प्रयत्न करते हैं, जान कर कोई भी परिवर्तन नही किया जाता है। [प्रणामी मंगलदेव शर्मा द्वारा मौखिक रूप से ज्ञात हुआ कि सवत् १७६० की 'कुलजम स्वरूप' तथा 'बीतक' दोनो की प्रतिया उन्होने देखी हैं। प्रयत्न करने पर भी लेखक की मूल प्रति अभी तक नही देख सका।]

ग्रन्थ मे कुल ७१ प्रकरण और ४३०० चौपइया हैं। ५९ प्रकरण तक पन्ना तक की बीतक कही गई है और शेष १२ प्रकरणो मे पद्मावतीपुरी या पन्ना मे निवास करते समय श्री प्राणनाथ का आठो पहर का वृत्त या दिनचर्या वर्णित है। प्रकरणो का विभाजन निम्नलिखित क्रम से किया गया है।

प्रकरण	चौ०	विषय
१.	२८	चारो युगो के राजाओ का नामोल्लेख (सतयुग मे राजा कृत से कलियुग के औरगजेब तक)

२५—श्री ब्रजभूषणकृत 'वृतान्त मुक्तावली'—प्र० ४७ चौ० १२। २६—दे० इसी निबंध मे अन्यत्र अनु०। २७—छत्रसाल द्वारा निर्मित पन्ना प्रणामी मंदिर के एक भाग में लालदास की समाधि बनी है।

प्रकरण	चौ०	विषय
२	६४	मूल मिलावे की बीतक श्री देवचन्द (श्री प्राणनाथ के गुरु) जी की बीतक आरम्भ (जन्म तिथि का वर्णन)।
३	७०	श्री देवचन्द्रजी की सत्य की खोज मे कच्छ देश की यात्रा, भोजनगर मे स्वामी हरिदास के दर्शन, और स्वामीजी द्वारा देवचन्दजी को बाल मुकुन्द की सेवा सौपना।
४	६१	श्री देवचन्द जी की बीतक।
५.	२५	नौतनपुरी (जामनगर) मे देवचन्दजी की बीतक।
६	५३	देवचन्द तथा प्राणनाथ की बीतक
७	२७	(जन्म तथा मृत्यु वर्णन)।
८	१४	देवचन्दजी के परिवार की बीतक।
९.	५५	देवचन्दजी के प्रथम शिष्य गाग जी भाई।
१०	१९	श्री मेहेराज (श्री प्राणनाथ) के कबीले का उल्लेख, सक्षेप मे पुन देवचन्दजी की बीतक।
११.	७५	देवचन्दजी तथा प्राणनाथ का मिलाप।
१२	४२	देवचन्द की आज्ञा मे प्राणनाथ की गुजरात यात्रा।
१३	६६	श्री मेहेराज की बरारब (अरब) यात्रा पुन गुजरात लौटना नौतनपुरी मे देवचन्दजी का परमधाम गमन। श्री मेहराज को धमभार सौपना।
१४.	३३	दवचन्दजी के पुत्र बिहारीजी का पिता की गद्दी पर बैठना।
१५.	६८	श्री मेहेराज की बीतक। कुलजम स्वरूप की भिन्न-भिन्न किताबों का नामोल्लेख।
१६	७०	प्रमोदपुरी (प्रबोधपुरी) हवसा की बीतक कुतुबखान की चढाई।
१७	१५	तीन प्रकार की सृष्टि वर्णन श्री प्राणनाथ द्वारा।
१८	४१	दीवबदर की बीतक।
१९.	३०	,, ,,
२०	४७	,, ,,
२१.	२९	पोरबदर भोजनगर, ठट्टे की बीतक, कबीर चितामन साधु से शास्त्रार्थ।
२२.	२८	चितामन का शिष्यत्व, लालदास को प्राणनाथ के आगमन की सूचना।
२३.	३१	ठेठे की बीतक, लालदास का शिष्यत्व, मसकत यात्रा।
२४.	५०	मसकत की बीतक।
२५.	७९	मसकत, अब्बासी बदर की बीतक।
२६.	३५	पुन ठठे की तीसरी यात्रा।

प्रकरण	चौ०	विषय
२७.	७१	नलिए की बीतक, बिहारीजी से मतवैभिन्य।
२८	३३,	खभालिया की बाधा, मडई बदर की यात्रा की बीतक।
२६.	११२	महामगलपुरी सूरत की बीतक।
३०.	२०	श्री प्राणनाथ के धार्मिक एकता मूलक उद्देश्य की बीतक
३१	७४	महामगलपुरी सूरत से मेडते तक की यात्रा
३२,	५६	मेडते से दिल्ली की यात्रा दिल्ली की बीतक
३३	६८	हरिद्वार के मेले की बीतक
३४	४५	अन्य सप्रदायियो से हरिद्वार मे शास्त्रार्थ
३५.	६०	प्राणनाथजी द्वारा हरिद्वार मे अपने मत की व्याख्या
३६.	२६	दिल्ली की बीतक
३७.	११८	,, ,,
३८.	६६	,, ,,
३६.	१७	,, ,,
४०.	५६	,, ,,
४१.	६७	,, ,,
४२	३५	कुरान सम्बन्धी बीतक, आयतो के अनुवाद सहित
४३.	२५	आयतो की पौराणिक नवीन व्याख्या
४४.	२८	सरियत की बीतक
४५.	१५२	पत्री बडी
४६.	८८	,, छोटी
४७	१००	उदयपुर की बीतक
४८	५०	अवरग की चढाई
४६.	८६	मन्दसोर यात्रा
५०	१८	,, बीतक
५१.	१४६	राजा भावसिंह के यहाँ औरगाबाद की बीतक
५२	८८	आकोट की बीतक
५३.	४४	बुढानपुर की बीतक
५४	८	कुरान के प्रमाण
५५,	८७	आकोढ की बीतक।
५६.	१४३	रामनगर की बीतक
५७.	५६	गढ़ा की बीतक
५८	१६५	पन्ना की बीतक
५६	४४	,, ,,

पन्ना मे श्री प्राणनाथ के आठों पहर की बीतक

१	६४	मगलाचरण

प्र०	चौ०	विषय
२.	१००	पहले प्रहर की बीतक
३	४६	दूसरे ,, ,,
४	१०२	,, ,, ,,
५.	७२	तीसरे ,, ,,
६	६०	चौथे ,, ,,
७.	७५	पांचवे ,, ,,
८	८१	छठवे ,, ,,
९	५८	सातवे ,, ,,
१०.	८६	आठवें ,, ,,
११.	२०	साथी सेवको की नामोल्लेख या बीतक
१२	३५	,, ,, ,,
कुल ७१	४३००	

श्री देवचन्दजी का जीवन वृत्त

श्री प्राणनाथ की भाति लालदास भी सर्वधर्म समन्वय मे विश्वास रखते हैं। मूलतः सब धर्म एक हैं और सब धर्मों के मूल पुरुष भी एक हैं। प्रणामी धर्म के मूल पुरुष श्री देवचन्द तथा प्राणनाथ का जीवन वृत्त लिखते समय भी वह इस महान् धर्म-रहस्य को भुलाते नहीं हैं—यही कारण है कि वीतक को वह तीनो सरूपो (कृष्ण-मुहम्मद और देवचन्द तथा प्राणनाथ) की बीतक मानते हैं। उनका कथन है .—

तीनो सरूपो की बीतक। जनम सें लेकर ॥
सो कहू आगे सैयन के। ए चरचा सब ऊपर[२८] ॥

बीतक के मगलाचरण वाले प्रथम प्रकरण के बाद ही दूसरे प्रकरण (मूल मिलावें) के आरम्भ मे वह इस महान धर्मैक्य को सिद्ध करने के लिए कृष्ण-मुहम्मद और धनी-प्राणनाथ के ऐक्य की ओर सकेत करते है। मुसलमानो से शास्त्रार्थ करते समय जिस 'मूल मिलाप' की बात श्री प्राणनाथजी करते थे उसी का सार दूसरे प्रकरण के आरम्भ तथा पुन ५२वे प्रकरण मे भी कहा गया है। जो मूल ब्रज मे अकुरित हुआ, वही रास मे प्रकट हुआ।[२९] रास के बाद वही बरारब (अरब) मे अवतरित हुआ और अन्त मे वही धनी देवचन्द तथा प्राणनाथ के रूप मे प्रकट हुआ।

श्री धनी देवचन्द जी का जीवनवृत्त—

इस महती भूमिका के पश्चात् लालदासजी प्राणनाथ के गुरु देवचन्द का जीवन वृत्त आरम्भ करते हैं। बीतक के प्रथम १३वें प्रकरण तक मुख्य रूप से श्री देवचन्दजी का जीवन वृत्त

२८—दे० ला० बी०—प्र० २ चौ० २६।
२९—"रास लीला खेलके, आए बरारब स्याम ॥"
ला० बी० प्र० २, चौ० ८,
,, ,, ५२, चौ० २१

वर्णित है। बीतक के आधार पर श्री देवचन्दजी के जन्म, जन्मकाल, जन्म-स्थान, परिवार, शिक्षा, विवाह, धर्म-चेतना जागृति, तारतम्य मन्त्र की अनुभूति, गुरु-खोज, देवचन्द-प्राणनाथ (श्री मेहेराज) मिलन, निजानन्द सम्प्रदाय की स्थापना तथा देवचन्दजी के परमधाम गमन की संक्षिप्त सूचनाये प्राप्त हो जाती हैं। जीवन वृत सम्बन्धी कुछ पंक्तियां निम्नलिखित हैं—

जन्म तिथि—

(१) "संवत सोला सें अठतीसे। आसो सुद चौदस कों॥
जनमदिन श्री देवचन्दजी। आए प्र.टे मारवाड़मो॥३०

स्थान-माता-पिता—

(२) तामे गाव उमरकोट। मतू मेहता घर अवतार॥
माता जो कुवरबाई। ताको करो विचार॥३१

धर्म-खोज—

(३) बात तब की मन मे रहे। मैं जाउ कच्छ मे॥
तहा जाए के खोज करो। पाउ परमेस्वर तिनसे॥३२

(४) तहा जाय के खोज करी। सोए बताऊं इत॥३३

(५) ग्राम खोजे सन्यासी। बड़े डिम धारी॥
ग्राम पूजे तिनको। आवे खलक सारी॥३४

(६) बड़े डिभ कनफटे। जाए पोहोचे तिन ठौर॥३५

(७) इन भांत मेहेजद मे। मुल्ला की करी सोहोवत॥
ताहा कछू ना पावहीं। कोइक दिन रहे तित॥३६

(१२) फेर भुजनगर। आए तिन सहर मैं॥
तहां हरदासजी रहे। भई सोहोवत तिनसे॥३७

(१४) वो थे राधावल्लभी। सेवत कारज आतम॥
सेवा बंकेबिहारी की। करें सखी भाव होए धरम॥३८

(१५) पूछ्या नाम पेहेले। काहू का लिया है॥
कहा सन्यासी का। कर विस्वास॥३९

(१६) दियो नाम सुमरन। देख्यो सरूप सनमुख॥४०

(१७) जामा बंके बिहारीजी का। दिया सेवन को॥
श्रीदेवचंदजी सिर चढाए कें। ल्याए अपनें घर मों॥४१

धर्म-प्रचार—

(१८) अब यहाँ से आए। बीच हलार देस॥
तहा पुरी नौतन मिने। बोहोत जमा भए खेस॥४२

३०—ला० बी० प्र० २-१६। ३१—ला० बी० प्र० १७। ३२—ला० बी० प्र० ३८। ३३—ला० बी० प्र० ३-१। ३४—ला० बी० प्र० ३-४। ३५—ला० बी० प्र० ३-७। ३६—ला० बी० प्र० ३-११। ३७—ला० बी० प्र० ३-१३। ३८—ला० बी प्र० ३-१४। ३९—वही ३१। ४०—वही ३५। ४१—वही प्र० ४ ३०। ४२—वही प्र० ५-१।

(१६) सुनत भागवत देहुरे । तहाँ कहा तारतम ।।
तुम आए हो अरस सें । जगाओ अपनी आतम ।।४३

श्री मेहेराज को धर्म-कार्य सौपना—

(२०) बरस चौहत्तर । न्यून भए एक मास ।।
तब सौप चले श्रीमेहेराज को । उमत खासल खास ।।४४

मृत्यु—

(२१) सवत सत्रह बारो तरे । भादो मास उजाला पख ।।
चतुरदसी बुधवारी भई । हुए धनी अलख ।।४५

विवाह—

(२२) सबध जाहिर का हुआ । लीलाबाई से ।।
सेवा करी सनेह सो । सोभा दई राजे इने ।।४६

(२३) तिनके उदर प्रगट भए । बिहारीजी है नाम ।।४७

उपर्युक्त उदाहरणो से देवचन्दजी के जीवन की एक सामान्य रूपरेखा सामने आ जाती है । वास्तव मे श्री प्राणनाथ के जीवन वृत्त के लिए देवचन्दजी का वृत्त एक वास्तविक भूमिका है । अतएव सक्षेप मे वह वृत्त आवश्यक था । लालदासजी ने यह वृत्त दूसरो से सुनकर ही लिखा होगा । यही कारण है कि सतो के जीवन से सबधित कई अलौकिक तथा चमत्कारिक बातो का भी उल्लेख देवचन्दजी के जीवनवृत्त में मिल जाता है । देवचन्दजी के जीवन वृत्त में भावी प्रणामी धर्म के बीच निहित हैं जिसे श्री प्राणनाथ ने निजानन्द सम्प्रदाय के रूप मे विकसित किया ।

श्री प्राणनाथ का जीवन वृत्त—

प्राणनाथ का जीवन वृत्त वर्णन ही बीतक लेखक का प्रमुख उद्देश्य है । ग्रन्थ के १०वें प्रकरण से प्राणनाथ का क्रमबद्ध जीवन वृत्त मिलता है यद्यपि ६वें प्रकरण से ही प्राणनाथ के आविर्भाव तथा परिवार आदि का उल्लेख होने लगता है । बीतक के आधार पर सक्षेप मे उनका जीवन वृत्त इस प्रकार है—

श्री प्राणनाथ का जन्म[४८] हल्लार देश जामनगर या नौतनपुरी मे[४९] वि० स० १६७५ भाद्रपद, कृष्ण पक्ष १४ रविवार को चढते प्रहर हुआ था । इनके पिता का नाम केशव ठाकुर और माता

४३—वही प्र० ७-८ । ४४—वही ७-१७ । ४५—वही ७-१६ । ४६—वही ८-४ । ४७—वही ८-५ ।

४८—सवत सोले से पचहत्तरा, भादो वदी चौदस नाम ।
पोहोर दिन बार रवी, प्रगटे धनी श्री धाम ।
लाο बीο प्रο ७-१७ ।

४९—हलार देस पुरी नौतन, उदर बाइ धन ।
प्र० ११-३६

५०—कसा ठाकुर पिता कहियत, माता बाई धन ।
वही २३

सर्ग सूची

सर्ग	पृष्ठ
प्रथम सर्ग	१
द्वितीय सर्ग	२१
तृतीय सर्ग	४१
चतुर्थ सर्ग	५८
पञ्चम सर्ग	८०
षष्ठ सर्ग	६८
सप्तम सर्ग	११३
अष्टम सर्ग	१४४
नवम सर्ग	१६६
दशम सर्ग	२०१
एकादश सर्ग	२२८
द्वादश सर्ग	२४४
त्रयोदश सर्ग	२५५
चतुर्दश सर्ग	२७६

उस अविवेकी ने हवसा में इन्हें बन्दीग्रह५७ मे रख दिया। इसी समय अहमदाबाद के सूबेदार कुतुबखां५८ [कुतुबद्दीन खान] ने जामनगर पर चढाई कर दी। जाम वजीर इन्हे बंदीग्रह मे छोड़ अहमदाबाद चला गया वही बदीग्रह मे अनेक बानियो की रचना हुई। एक साल बाद लौटने पर वज़ीर ने अपनी भूल स्वीकार की और प्राणनाथ को मुक्त कर उनसे क्षमा मागी।

सवत् १७१६ मे आप जूनागढ़ पधारे और वहा २ वर्ष रहकर एक गाव बसाया। वही हरजी व्यास नामक एक विद्वान पडित को शास्त्रार्थ मे हराकर अपना शिष्य बनाया। वहां से 'नौतनपुरी' [जामनगर] लौट आए और पुन. जामनगर की दीवानगीरी का भार ले लिया। इसी समय सवत् १७१६ मे कुतुबखान५९ ने फिर जामनगर पर चढ़ाई की। सूबेदार को समझाने के लिए 'जाम वज़ीर' के साथ प्राणनाथ भी संवत् १७२० मे अहमदाबाद (गुजरात) गए। वही से कुछ ऐसी घटना घटी कि आपने लौकिक कार्य त्यागकर पूर्णरूप से धर्म जागरण का कार्य अपने सिर पर लिया।

अहमदाबाद से श्री प्राणनाथ जी दीव६० बन्दर (ड्यू) पधारे और वहा साथी जैराम६१ को जागृत किया। और लोग दीक्षित होकर साथी बने। नगर मे कीर्तन की हलचल मची जिससे कुछ ईर्ष्यालुओ ने नगर के 'फिरगियो'६२ के पास चुगली करनी चाही, किन्तु एक सज्जन के समझाने पर दरबार मे पहुच जाने पर भी 'चुगल' लौट आया, किन्तु फिर फिरगियो के भय से 'साथियो' मे 'खलभल' पड़ गई और सब इधर उधर 'छिप गए'। इस समय 'जैराम' को छोड़कर समस्त साथियों ने श्री मेहेराज का साथ छोड दिया। 'सुन्दर साथ' एकत्र करने के उद्देश्य से प्राणनाथ जी दीव बन्दर से पोरबन्दर, पाटण होते हुए कच्छदेश में मडई [माँडवी] में साथी प्रागमल के यहा पधारे। वहां जागरण कार्य करते हुए 'कपाइए' गाव मे हरवश ठाकुर को 'जागृत' कर भोजनगर मे बृन्दावन (हरिदास जी के पुत्र) के यहा रहे। धर्मोपदेश देते हुए 'नलिए' होकर 'ठट्ठानगर' में 'नाथा' जोशी के यहा १२ दिन तक ठहरे। फिर वहाँ से 'लाठी' बदर होकर 'मस्कत' (अरब मे) बदर जाने के लिए नाव पर सवार हुए; किन्तु १७ दिन तक 'तोफान' रहने के कारण पुनः ठट्ठानगर लौट आए। यही एक कबीर धर्मावलंबी साधु 'चितामन' से शास्त्रार्थ

५७—बीतक मे इसी को प्रबोधपुरी या प्रमोदपुरी कहा गया—वही अनेक बानियो की रचना हुई। ला० बी० प्र० १३ १४.१६

५८—सवत सत्रे बारोतरे। भई कुतुबखान की महूम।
जाम वजीर गए तिनपर। खडभड पडी इन कोम। १५ ४२
बैठे प्रमोधपुरी मिने। ४३

५९—सवत सत्रे से उनईसें। देस पर आया कुतुबखाँन।
उत इलहाम हुआ। थी ब्रह्मस्रिष्ट पेहेचान। १६.६५

६०—संवत सत्रे बावीसे। दीव पधारे श्री राज।
दोए बरस तहां रहे। सब पूरे मनोरथ काज ॥ ला० बी० प्र० १६

६१—तब गुजरात मे आए दीव मे। भाई साथी जैराम के घर। १८.३
[साथी जैराम ने भी एक बीतक लिखी है।]

६२—चुगल केतेक दिन पीछे। गया फिरगी पास। प्र० २०.६
" " फिरगी ऐसे जालिम। सुनत तुमे मुख बेन। प्र० २०.११

हुआ। चिंतामन ने कबीर का एक पद६३ सुनाया और प्राणनाथ ने भी स्वरचित कई पद (यथा सुनो सत के बनजारे ।। हो मेरी आतमा) सुनाए। अन्त मे चिंतामन भी शिष्य बन गया। ठट्ठानगर मे ही यही सर्वप्रथम (सवत १७२४ मे) लालदास (लक्ष्मन सेठ) ने श्री प्राणनाथ जी के दर्शन किया और वे जागृत हो धर्म मे दीक्षित हुए। पुन. ठट्ठे से लाठी बन्दर होते हुए फिर से सवत १७२५ में मसकत (अरब की सीमापर) पहुचे। धर्मोपदेश कर अनेक बन्धुओ को यहा जागृत किया। यही कई पदो६४ की रचना हुई। मसकत मे अढाई बरस रहकर आप अबासी बन्दर (अरब देश) पधारे। वहा से तीसरी बार १७२८ मे ठट्ठानगर होकर नलिए पहुचे। नलिए मे देवचन्द जी के पुत्र बिहारी जी ने बुलवाया। और 'जागनी' के सम्बन्ध मे बातचीत की। बिहारी जी के रूढ़िवादी विचार से सहमत न होकर प्राणनाथ ने जातिपाति का विचार न करके समस्त मानवता को 'जागृत' करने का मत प्रकट किया। मतवैभिन्य होने से बिहारी जी नौतनपुरी चले गए। वहा श्री प्राणनाथ जी मांडवी, धोरा जी, घोघा, सुहाली होते हुए वि० सवत १७२९ आषाढ़ बदी १४ सूरत पहुचे। वहाँ १७ महीने तक धर्म प्रचार किया। यहा महावेदाती भीमभट्ट और श्यामभट्ट तथा वैष्णव कथावाचक गोविन्द व्यास शिष्य बने। यही श्री प्राणनाथ ने कलश ग्रन्थ समाप्त किया। यही पर समस्त मानवता के उद्धार६५ के लिए देश-विदेश पर्यटन का व्रत लिया। लाल दास ने सूरत को मदीना और ब्रजभूषण ने 'मंगलपुर' (महामगलपुरी) कहा है। यही से लालदास भी सपत्नीक (लाल बाई) श्री प्राणनाथ जी के साथ चले।

सूरत से प्रस्थान कर अपने 'सुन्दर साथ' सहित 'चार दिन' गुजरात मे तथा सीदपुर (सिद्धपुर) मे 'बावीस' (बाइस) दिन रहकर भगवान उपाध्याय को जागृत करते हुए (सवत् १७३१ मे मेड़ता नगर पहुचे। यहा लाभानन्द अती (यती) के साथ धर्मचरचा हुई उस पर धर्म विजय प्राप्त की। यहा के प्रसिद्ध सेठ राजाराम अगरवाल तथा सेठ झाझन 'जागृत' दीक्षित हुए। तबसे संवत १७४३ तक राजाराम सेठ ने धन से जितनी सेवा की उतनी छत्रसाल के अतिरिक्त किसी ने भी नही की। श्री जी ने मेडते में चार मास६६ रह कर अपने धर्मोपदेश से सैंकड़ों नर-नारियों को 'जागृत' किया। यही से जसवत६७ (राजा जसवतसिंह राठौर) को जागृत करने के

६३–निकस्या सबद देखो अब।
एक पलक ते गग जो निकसी। हो गयो चहुंदिस पानी।
वह पानी दो परवत ढापे। दरिया लेहेर समानी ।।१।।
उड़ मक्खी तरवर चढ़ बैठी। बोलत अमृत वानी।
वह मक्खी के मक्खा नाही। बिन पानी गर्भानी ।।२।।
तिन गरभे गुन तीनो जाए। वह तो पुरुष अकेला।
कहे कबीर या पद को बूझे। सो सतगुरु मै चेला ।।३।।

६४–इत दोए चार कीरतन नए किए बीतक

६५–तब श्री जी साहेबजीए कहा। जो कोई लूला पाँगला साथ।
श्री इद्रावती न छोडे तिनको। पहुचावे पकड हाथ।

६६–तहा मास चार लग—रहे मेड़ते मे इन बखत। ला० बी० प्र०

६७–सुनी बात जसवत की। पाती लिखी दोए।
भट गोबरधन ले चले। पैगाम पोहोचावने सोए।
अटकपार पोहोच के। खबर दई उन जाए। ला० बी० प्र० ३१, ६५, ३७

लिए गोवरधन को दो पत्र देकर अटकपार भेजा (किन्तु जसवत धर्म में न आ सके) यहीं पर एक दिन प्रात काल मसजिद से एक मुल्ला की बाग सुनी। कलमा (लाईला हो इलाला हो महमद रसूलअल्ला) और तारतम्य मन्त्र मे ऐक्य का आभास पाया और लालदास से इस रहस्य का उद्धाटन किया। यही से स्वधर्म और इस्लाल धर्म मे ऐक्य का अनुभव कर सुलतान६८ अवरग से धर्म युद्ध करने का व्रत ठाना गया। यह महान् अग्निव्रत ठान कर अपने धर्मप्राण साथियो सहित श्री प्राणनाथ गोकुल-मथुरा-आगरा होते हुए दिल्ली६९ आ पहुचे।

दिल्ली के इस महान् धर्मयुद्ध मे सम्मिलित होने के लिए श्री प्राणनाथ ने अपने समस्त साथियो का आह्वान किया। कोने-कोने से अनेक साथी आए और दिल्ली मे भी अनेक दीक्षित हुए प्रसिद्ध मुसलमान शिष्य सेखबदल यही दीक्षित हुआ। 'उरदू बाजार' मे गरीबदास मिले। गोवरधन भी काबुल सें (जसवत सिह को पत्र देकर) लौट आया। 'पुरी बीठलगोर के सैयद की हवेली मे छै मास रह श्री प्राणनाथ लाल दरवाजे के पास एक क्षत्री की हवेली मे आ गए। यही पर श्री प्राणनाथ और लालदास ने 'रात दिन मेहेनत' करके 'हिन्दवी' मे एक पत्र अवरग७० के नाम लिखा। पत्र तैयार कर प्राणनाथ ने सब की सम्मति ली। आसाजीत ने कहा—कि 'हिन्दवी' की यह 'पाती' अवरग कान से नही सुनेगा। अतएव कुछ दिन के लिए प्राणनाथ 'साहजहापुर घोडिया' चले गए। 'सबद फेरके' (शब्द परिवर्तन करके) पुन पाती तैयार हुई, किन्तु प्राणनाथ को ऐसा आभास मिला कि अभी कार्य पूर्ण नही हो।। अतएव ८ माह बाद दिल्ली से हरिद्वार को प्रस्थान किया।

शक सवत् १६००, तथा वि० स० १७३५ श्री प्राणनाथजी कुम्भ मे सम्मिलित होने के लिए दिल्ली से हरद्वार आये। वहा चार वैष्णव सम्प्रदाय रामानिज (रानानुज), मध्व, नीमानिज (निम्बार्क) विष्णुस्याम (विष्णुस्वामी के अनुयायी, दशनामी सन्यासी तथा षटदर्शनी एकत्र हुए थे। सबको शास्त्रार्थ मे पराजित कर निजानन्द सम्प्रदाय की श्रेष्ठता सिद्ध कर यहाँ श्री प्राणनाथ विजयाभिनन्द 'निष्कलक बुद्ध' की उपाधि से विभूषित हुए। हरद्वार में चार माह रह कर पुन आप दिल्ली लौट आए।

दिल्ली के कुछ 'साथ' को अनूपसहर मे छोडकर पुन शाहगज मे उतरे। यही नबी-नारायण की एकता के अनेक पद बने। लाल दरवाजे के हवेली मे रहते हुए श्रीजी ने शेख सुलेमान

६८—अब लडाई करनें को। जाइए पास सुलतान।
इनको प्रथम दावत करे। ए ल्यावे ईमान।

६९—ए विचार करके। मेडते से चले जब।। ला० बी० प्र० ३२-५
गोकुल मथुरा आगरा। आए पोहोचे तब। ३२-९
कई दिन तहा रहके। दिल्ली पोहोचे धाए।
केतेक साथ ठंट्ठे का। इत पोहोचा आए। ३२-१०

७०—सो पाती हिंदवी की। क्यो कर सुने कान। ३२-३८

७१—फेर श्रीराज आए दिल्ली, आए मिले सब साथ।
मास चार इत भए, फेर साथ कों पकडे हाथ।

को पत्र लिखकर अपना आदमी उसके पास भेजा। धर्मसघर्ष की इस प्रणाली के सम्बन्ध मे शिष्यो (विशेष रूप से गोवरधन और लालदास) मे मतभेद सुनकर श्री प्राणनाथ को दुख हुआ। सबको अपने-अपने घर जाने को कह श्री जी ने अनूपसहर को प्रस्थान किया। वही सनध७२ नामक ग्रन्थ रचा गया और गुजराती कलस तथा प्रकाश ग्रन्थ हिन्दुस्तानी में भाषान्तर हुआ। सनंध मे श्री प्राणनाथ ने भागवत के माध्यम से कुरान की नवीन व्याख्या की और उसे लेकर सेखबदल को सुलतान के पास भेजा। किन्तु 'हिन्दवी' की इन बानियो की ओर सुलतान के किसी व्यक्ति ने ध्यान न दिया। परिस्थिति की जानकारी के लिए प्राणनाथ पुन. दिल्ली आए और लाल दरवाजे छोड कर रोहिलाखान की सराय मे ठहरे। फिर इन बानियों को फारसी७३ लिपि मे लिखने का निश्चय किया गया। और एक काइम के लड़के की सहायता से २ महीने मे कई प्रतिया तैयार की गई। और उस्ताद शेख निज़ाम, रिजवीखान, शेष इस्लाम तथा अन्य सुलतान के निकटस्थ अमीरो के पास भेजी गई। किन्तु कोई लाभ न हुआ। पुनः 'हुसेनी तफसीर' (फारसी मे कुरान की व्याख्या) अडतीस रुपये मे मगाई गई और "काइम" से उसे पढवाया गया। फिर पाच नलुए (पत्र) तैयार किए गए जिसमे कुरान के शरहो को उद्धृत करके क्यामत की नई व्याख्या की गई, श्री प्राणनाथ ने इमामत का दावा किया। कान्ह जी द्वारा ये पाच नलुए७४ (पत्र) शेख इसलाम, रजबीखान, शेखनिजाम, अकलखान तथा सीदीपोलाद के पास पहुचाए गए और उनका उत्तर मागा गया, किन्तु किसी ने भी उत्तर न दिया। बहुत विचार करने पर अन्तत यह निश्चय हुआ कि किसी न किसी प्रकार बानी का पैगाम सुलतान के पास पहुचाना चाहिए। बात की सुनवाई के लिए नन्दलाल घड़ियालची ने रात को गुसलखाने के द्वार पर गुप्त रीति से एक रुक्का गोद से चिपका दिया। रुक्के को पढकर सुलतान ने ढिढोरा पिटवाया कि फरियादी जुमा के दिन मस्जिद मे उससे मिले। लाल तथा निरमलदास ने जामा मस्जिद मे शेख निजाम के लड़के अब्दुल्लाखान को रुक्का दिया; किन्तु उसने फाड़ डाला। सब प्रकार से हारकर धर्म पर बलिदान होने के महान् उद्देश्य को लेकर प्राणनाथ के बारह शिष्यो—(लखमन, शेखबदल, मुल्लाकाइम, भीम भाई, सोमजी, नागजी. खिमाई, दयाराम, चिंतामन. चचल भाई, जोगाराम, बनारसी) ने भेष बदल कर स्वय सुलतान तक अपनी बात पहुचाने की प्रतिज्ञा की और मसजिद मे कुरान पढ़ते लगे। मस्जिद का इमाम सबको लेकर सुलतान के पास ले आया। सुलतान७५ अवरग ने उन्हे बुलाकर उनका उद्देश्य पूछा।

७२—सनधे लिख तैयार करी, बिचार देखे सुकन।
यह बानी सुनके, पीछा न हटे मोमिन। ३७-२८

७३—ए कलाम आरबी मे रहे, तब होवे पेहेचान। ३७-५२
तब एक मुल्ला पारसी का, हुकम हुआ दया राम।
बुलाय ल्याओ तिनको, लिखे पारसी मे कलाम।५३

७४—एक नलुआ शेख इसलाम पर, दूजा रजवी खान।
तीसरा शेख निजाम पर, ए तिनको होए पेहेचान।
चौथा अकल खांन को, पाचमा सीदीपोलाद। ३८-२४, २५

७५—फेरे इसारत करी सुलतान ने, क्या मतलब है तुम।४१-२६

शिष्यो ने उत्तर दिया, हम एक यही बात मागते हैं कि हम एकात मे तुमसे 'रूबरू' बात कर—हमारी तुम्हारी बात के बीच मे और कोई न पड़े।' शिष्यो ने कहा, हममे दसतन हिन्दू और दो तन मुसलमान है।' सुलतान ने कोतवाल सिद्दीफौलाद को उन सब को अपने साथ ले जाने के लिए सकेत किया। उनका मतव्य सुलतान तक पहुचाया जाए ऐसी आज्ञा दी। अपने वजीर और काजी के मना करने पर भी सुलतान ने 'रूबरू' बात करने की बात स्वीकार कर ली। क्योकि इमाम मेहेदी की देखने की उसे आशा थी। कोतवाल के यहा रहने के बाद ये सब काजी शेख इसलाम के यहा पहुचाए गए। बहा कई दिनो तक धार्मिक विवाद हुआ। कयामत सम्बन्धी अपनी बात को सिद्ध करने के लिए शिष्यो को कष्ट दिया जाने लगा. तब श्री प्राणनाथ ने उन्हे प्रोत्साहित करने के लिए कुरान के उदाहरण देकर पत्र७६ लिखा।

सोलह महीने तक दिल्ली मे रहकर श्री प्राणनाथ ने समझौते पर आधारित धर्मयुद्ध किया; किन्तु उससे कुछ लाभ न देख, अन्य हिन्दू राजाओ को इस धर्मयुद्ध मे सम्मिलित करने के उद्देश्य से पर्यटन को पुनः निकल पडे और आमेड सागानेर होते हुए स० १७३६ मे उदयपुर पहुचे। दिल्ली मे धर्मयुद्ध करने वाले अपने शिष्यो को भी बुलवा लिया, जिन्हे सुलतान ने चार महीने बाद बिना किसी बाधा के मुक्त कर दिया। इसी समय अवरग ने उदयपुर पर चढाई७७ की। राजसिह किसी प्रकार भी जागृत न हो सका, बल्कि सुलतानी सेना के भय के कारण उदयपुर छोड़ देने की प्रार्थना की। वहा से नितान्त निर्गुण भेष धारण कर श्री प्राणनाथ मन्दसोर पहुचे। वही दौलतखान दीक्षित हुआ। लालदास ने इब्राहीम की सहायता से कुरान को उतारा। यही से श्री प्राणनाथ ने 'कृष्णदास' नाम से बूँदी नरेश भाऊसिह के पास मुकुन्ददास के द्वारा एक पत्र भिजवाया। मन्दसोर से सीतामऊ, नोलाई, उज्जैन, बुढानपुर से औरगाबाद भाऊसिह के घर आए। भाऊसिह बहुत प्रभावित हुआ और अपने यहा श्री प्राणनाथ का स्वागत किया। वही भाऊसिह के मुसलमान कर्मचारियो को अपने धर्म से सहमत किया जिनमे जहानि मुहम्मद सिया था, किन्तु फतेह मुहम्मदखान ने दुराग्रह के कारण बात न मानी। उसी समय भावसिह का देहान्त हो गया। फतेमुहम्मद ने अत्याचार करना आरम्भ किया, अतएव बूदी छोडना पड़ा। वहा से आकोट, कापस्तानी होते हुए १७३८ मे रामनगर आए। वहा दो बरस रहे। वहा हरिसिंह और सूरतसिह तथा दीवान देवकरण 'जागृत' हुए। अवरग का भेजा हुआ शेख खिदरखान भी इनका शिष्य बन गया। वहा से श्री प्राणनाथ गढा होते हुए १७४० मे पद्मावतीपुरी या परना (पन्ना) पधारे। छत्रसाल ने उनका पूर्ण शिष्यत्व स्वीकार किया। उन्ही की प्रेरणा से शत्रुओ को हरा कर एक विस्तृत राज्य स्थापित किया। १७४४ मे श्री राज चित्रकोट पधारे जहा प्राणनाथ की अतिम बानी उतरी।

७६—इनमे से दो पत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है जिन्हें बीतककार ने बड़ी पत्री और छोटी पत्री की सज्ञा दी है।

७७—इस समे पातसाह नें । करी मुहीम रानें पर। ४८.४
जब नौरगा चढ़ा राने पर। हुआ मुलक चलविचल। ४६.१

संवत् १७५१ श्रावण बदी ४ रात्रि ४ बजे इहलीला समाप्त कर प्राणनाथ श्री परमधाम सिधारे।७८

प्राणनाथ के जीवनवृत्त वर्णन करने के साथ साथ लालदास ने बीतक में उनकी कृतियों की रचना-तिथि, स्थान आदि का भी उल्लेख किया है। प्राणनाथ की वाणी से सर्वप्रथम हवसा के बदीगृह (प्रबोधपुरी) में रास१ के पद सं० १७१२ मे प्रस्फुटित हुए जिसे बीतककार ने अजीर के नाम से भी अभिहित किया है। वही प्रकास२ नामक ग्रन्थ मे सग्रहीत बानिया भी उतरी। जैसे-जैसे बानिया उतरती थी, बंदीगृह मे उन्ही के साथ उनके छोटे भाई ऊधव जी लिखते जाते थे (लालदास ने ऊधव जी को गोलोक की उत्तमबाई की वासना कहा है) बाद मे उन्हे पुस्तक मे चढाया जाता था। इसी समय 'खटरूती'३ नामक किताब मे सग्रहीत बानिया भी उतरी। दीवबंदर मे (स० १७२२) बेहदबानी४ उतरी। मेडते मे (सं० १७३१) राम५ की कुछ बानिया और लिखी गई और पद यात्रा के समय कीर्तन६ के अनेक पद रचे गए। सूरत में (स० १७२६) कलस७ नामक ग्रथ की रचना हुई और अनूप सहर (सवत् १७३५-३६) मे सनध८ ग्रथ समाप्त हुआ। वही कलस और प्रकास का मूल गुजराती से हिन्दुस्तानी९ भाषा मे अनुवाद हुआ। इसी प्रकार कुछ बानियाँ रामनगर (१७३८) और पन्ना मे उतरी१०। खुलासा, खिलवत, मारफत सागर, छोटा तथा बडा क्यामत नामा आदि अन्य फिरको११ से सबधित बानियां पन्ना मे (स० १७४०-५१) रची गई। पन्ना मे खिलवत और सागर भी लिखे गए। अतिम बानी चित्रकोट मे लिखी गई थी, किन्तु उसे लालदास पन्ना के ही अतर्गत लिख देते हैं। इस प्रकार बीतक में प्राय 'कुलजम स्वरूप' या 'तारतम्य सागर' मे सग्रहीत समस्त ग्रथो का रचना काल दे दिया गया है।

७८—सवत् सत्रहसे इक्यावना। सावन बदी चौथ मे।
गत पीछली घडी दोएमें। आया फिरस्ता धाम से। प्र० ७.१६

१—दे० ला० बी० प्र० १५.१,५३
२—वही १५ ५६, ५७
३—वही १५ ५८
४—वही १५ ६०
५—वही ६१
६—वही वही
७—वही १५.६२
८—वही वही
९—वही ,, ६३
१०—वही ,, ६४
११—वही ,, ६५

बीतक मे सहस्त्रों व्यक्तियों, सैकडों स्थानो तथा अनेक ऐतिहासिक घटनाओ का उल्लेख हुआ है। इनमें से कुछ व्यक्ति, स्थान और घटनाये ऐसी हैं जिनके सत्यासत्य की परीक्षा इतिहास के आधार पर हो सकती है। अतएव बीतक की ऐतिहासिक परीक्षा बीतक की प्रामाणिकता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सर्वप्रथम ग्रन्थकार ने मगलाचरण[१२] मे सतयुग, त्रेता, द्वापर के राजाओं के नामोल्लेख के बाद कलियुग के बीस नामों का उल्लेख किया है। ये नाम निम्नलिखित हैं जदुनाथ, अजयपाल, महिपाल, गधर्वसेन, और वीर विक्रमादित्य, विक्रमाचद्र, भोज, गौरी पातसाह, (मुहम्मदगोरी) अलाविदीन (अलाउद्दीन), नसीरुद्दीन, लोढा महमूद, बडा महमूद, सुरखा (शेर खा) तिमिर लग (तैमूर) बब्बर, हिमाऊँ, अकबर, सलेमसाह (जहागीर) साहजहा और अवरग जेब। इनमे से हिन्दू राजाओ के कुछ नाम बहुत स्पष्ट नही होते हैं, किन्तु शेष हिन्दू और मुसलमान राजाओ के नाम प्रसिद्ध एतिहासिक नामावली के अनुकूल ही हैं। अवरग के युग मे ही बीतक की रचना हुई अतएव यही तक नामगणना की गई है। मध्यकालीन जन समुदाय मे जिस रूप मे ये नाम प्रचलित थे उसी तद्भव उच्चारण के साथ उल्लेख भी हुआ है जिससे बीतक की प्रामाणिकता को और बल मिल जाता है। देवचंद तथा श्री प्राणनाथ के कुटुम्बियो के नामो की ऐतिहासिक परीक्षा नही हो सकती, क्योकि इतिहास की वहाँ तक पहुच ही नही हुई। हिन्दी साहित्य तथा हिन्दू धर्म से सम्बन्धित कबीर-कमाल, नानक, रामानिज (रामानुज) नीमानिज (निम्बार्क) विस्नुश्याम (विष्णुस्वामी) माधवाचारज स्वामी, हरिदास आदि नाम भी इतिहास विरुद्ध नही सिद्ध होते हैं। उपर्युक्त नामो की प्रामाणिकता के आधार पर स्वामी हरिदास के पुत्र वृन्दावन का नाम भी ऐतिहासिक दृष्टि से सत्य ही मानना चाहिए। अवरंगजेब-काल के हिन्दू राजाओ मे जसवंत[१३] (जसवतसिंह राठौर) उदयपुर के राजा राजसिह[१४] तथा उनके पुत्र राना भीमसिह,[१५] भगवतराय (५६१३) बूदी के भावसिह (भाऊसिह) और छत्रसाल के नाम ऐतिहासिक ही है। सभवत अन्य हिन्दू राजाओ के नाम भी ऐतिहासिक ही होगे। अवरगजेब दरबार से सम्बन्धित अनेक अमीरो के नाम दिए गए है जिनमे से शेख इसलाम (३८·३), रजवीखान (रिजवीखान) सेखनिजाम (शेखनिजाम) अकलखान (अकिलखान) (३८-२४, २५) अत्यत महत्वपूर्ण हैं। शेख इसलाम (शेखउल इसलाम)[१६] अवरग का प्रमुख काजी था। धार्मिक समस्याओ मे अवरग इसी से सम्मति लेता था। यदुनाथ सरकार के अनुसार अवरग के समस्त अमीरो मे इनका चरित्र 'श्रेष्टतम' था, ऐसा सच्चा काजी भारत मे फिर नही हुआ। रजबीखान[१७] (रिजवीखान) सदरउल सदर या प्रधान न्यायाधीश था। जो मई १६६७ से

१२—दे० ला० बी० प्र० चौ० २२, २३, २४, २५, २६

१३—दे० यदुनाथ सरकार, हिस्ट्री आव अवरगजेब

१४—वही पृ० २४८

१५—वही पृ० २४६

१६—दे० यदुनाथ सरकार, हिस्ट्री आव अवरगजेब भाग ३, पृ० ७२

१७—वही पृ० ७१

जून १६८१ तक सदरउल सदर (चीफजज) रहा। अकलखान[१८] (अकिलखान) दरबार का एक प्रभुत्वशाली अमीर था जिसे १६वी सदी के उर्दू लेखको ने अवरग की पुत्री जेबुनिसा का प्रिय अमीर कहा है। सीदीपोलाद (सिद्दीफौलाद) अवरग का नगर कोतवाल था। अपनी उग्रता, प्रचडता और प्रभुता के लिए यह बहुत प्रसिद्ध था। अवरग ने शिवाजी को भी इसी की देखरेख में बन्दी बनाया था। शेख निजाम को बीतककार ने अवरग का उस्ताद कहा है इसे भी ऐतिहासिक ही होना चाहिए। इन पाचो के पास श्री प्राणनाथ ने अपने पत्र पहुचाए थे। शेख इस्माइल से तो अनेक बार उनके शिष्यो का शास्त्रार्थ हुआ था। दिल्ली मे धर्म-सत्याग्रह करने वाले बारह शिष्य भी सिद्दी फौलाद और शेख इस्लाम की देखरेख मे थे। बीतककार ने शेख सलेमान तथा बाद मे सेख निजाम के पुत्र अब्दुल्ला को अवरग का प्रधान वैयक्तिक सहायक बताया है। इनका भी इतिहास मे स्थान होना चाहिए। इसी प्रकार बखतावर (३८·७), शेखखिदर (५४ ७४) पुरादलखान (५ ५६) गुलाम मुहम्मद (५६.१२७), जहानमुहम्मद (५१.८८), पठान फतेमुहम्मद (५१ ६६), इभराहीम (इब्राहीम) (४६.३१), सफजग (५६.१८) और अनेक मुसलमान शिष्यो के नाम आए हैं जिनकी ऐतिहासिक परीक्षा होनी चाहिए। अरब के तत्कालीन सुलतान (इमाम सुलतान) तथा उसके दीवान शेखसला का नाम भी आया है। प्राणनाथ के सैकडो शिष्यो के नाम दिए गए है जिनके नामो तक अभी तक के इतिहास की पहुच सभव नही हुई।

ऐतिहासिक स्थानो मे देवचद जी की जन्मभूमि उमरकोट (आधुनिक अमरकोट) और प्राणनाथ जी की जन्मभूमि जामनगर को ही बीतककार ने नवतन पुरी कहा है—सप्रदाय मे इसे नवतन पुरी ही कहते है[१६]। कहा जाता है कि वहा के चारण उस समय इसे नवतन पुरी ही कहा करते थे। देवचद तथा प्राणनाथ का आविर्भाव-स्थान होने के कारण भी इनका यह नाम हो सकता है। जन साधारण आज सोराष्ट्र मे 'नगर' के नाम से ही पुकारते हैं। सुदामापुरी का नाम ही पोर बन्दर है जो लालदास की जन्मभूमि है। मेडता, (प्र० ३१) जूनागढ (१६-१५) दीवबदर (ड्यूबदर) (प्र० १६) ठट्ठा (प्र० १६-२०) लाठी वदर (प्र० २१) मसकत (प्र० २४) आवासी बदर (प्र० २४-४७) मडई बन्दर (२८-२४) सूरत (२८-३१) अटक (३१-६७) गोकुल, मथुरा (३२-६) दिल्ली (३२-१०) और दिल्ली के अदर उरदू बाजार (३२-२६) साहगज (३६-६) रोहिलाखान की सराय (३२-१२) चादनी चौक (४०-४४) आमेर (४७-१) सागानेर (४७-१) उदेपुर (४७-२) म दसोर (४६-१) रामपुर (४७-२) सीतामऊ (५०-१) उज्जैन (५०-१) बुढान पुर (५१-१४१) बडार (बरार) (५४-३०) एलचपुर (५४-४६) रामनगर (५४ ५१) बिलेहरी (५७-५) परना (आधुनिक पन्ना) (५७-५२) चित्रकोट (५८-१४६) तथा ओडछा (५८-१६१) आदि नाम बीतक मे आए हैं। इन नामो से इन नगरो और मोहल्लो के मध्ययुगीन नामो पर प्रकाश पड़ता है। बीतककार ने अरब को बरारब (५२-२२) कहा है जो सभवत बर्रअरब का तद्भव है।

१८—वही पृ० ५२

१६—हिस्ट्री ऑव औरगजेब, भाग ३० पृ० ४०—४१।

बीतक में वर्णित अनेक महत्वपूर्ण घटनाये ऐतिहासिक कसौटी पर प्रामाणिक सिद्ध होती हैं। (१) जामनगर पर कुतुबखा का आक्रमण--बीतककार के अनुसार कुतुबखा ने जामनगर पर दो बार चढाई की; प्रथम बार सवत् १७१२ और दूसरी बार सवत् १७१६ वि० में अवरग-जेब-युग के इतिहासकार यदुनाथ सरकार के अनुसार सम्राट की आज्ञा से जूनागढ के फौजदार कुतुबद्दीन खान खेशगी२० के सेनापतित्व मे १६६२ दिसम्बर मे नवानगर के जाम पर चढाई की जो बीतक के वि० स० १७१६ से मिलता है। कुदुबुद्दीन को जनसाधारण मे कुतुब ही कहा जाता है (यथा कुतुबुद्दीन की मीनार को कुतुब मीनार) इस प्रकार बीतक मे वर्णित दूसरी चढाई इतिहास सिद्ध है। (२) जसवंत सिह राठौर का अटक पार रहना--बीतक के अनुसार श्री प्राणनाथ जी ने मेडते से अपने एक शिष्य गोबरधन को एक पत्र देकर जसवत सिंह को जाग्रत करने के लिए (१७३१ संवत् मे) अटक पार भेजा था। इतिहास सिद्ध है कि अवरंग ने इसी समय काबुल२१ पर चढाई की थी जसवन्त सिंह भी उस चढाई मे गए थे। ब्रजभूषण कृत वृतान्त मुक्तावली मे भी गोबरधन का काबुल से लौट कर प्राणनाथ जी के पास जाकर सारा वृत्तान्त कहने का उल्लेख हुआ है। (३) दिल्ली मे प्राणनाथ के धर्म युद्ध के समय अवरग का दिल्ली निवास —बीतक के अनुसार प्राणनाथ जी सं० १७३५-३६ बीच १६ माह तक दिल्ली मे रहकर धर्म युद्ध का सचालन करते रहे। बाद को १७३७ मे उदयपुर की ओर चले गए। यदुनाथ सरकार के अनुसार अवरगजेब अफगीदी बिद्रोह को दबाकर हशन शदल से मार्च १६७६ (सवत् १७३३-३४ वि०) मे दिल्ली लौटा और दिल्ली से वह ३० सितम्बर १६७६ (१७३६-३७ वि०) को उदयपुर के लिए प्रस्थान करता है।२८ इस प्रकार प्राणनाथ के दिल्ली-निवास के समय अवरग का दिल्ली-निवास इतिहास सिद्ध है। (४) उदयपुर पर अवरग की चढाई-बीतक के अनुसार जिस समय स० १७३६-३७ मे श्री प्राणनाथ उदयपुर मे थे उसी समय अवरग ने अजमेर होते हुने उदयपुर के राना पर चढाई की। इतिहास सिद्ध है कि अवरग का यद आक्रमण ५ अक्टूबर १६७६ ई० (स० १६३६ वि०) को हुआ था। इस प्रकार बीतककार का आक्रमण सम्बन्धी उल्लेख सब प्रकार से इतिहास सम्मत है। इन घटनाओ के अतिरिक्त भी अनेक अन्य महत्व पूर्ण घटनाओ का बीतक मे उल्लेख है, किन्तु इतिहास उनकी ओर से मौन है। छत्रसाल प्राणनाथ-मिलन का वर्णन छत्रसाल के दरबारी कवि गोरेलाल ने किया है। इतिहास मे इस मिलन को उचित स्थान देना चाहिए। इस प्रकार बीतक मे आए हुए स्थान, व्यक्तिगत रूप तथा प्रमुख घटनाएँ इतिहास के आधार पर प्रामाणिक सिद्ध होती है।२२

भाषा की दृष्टि से लालदासकृत बीतक में १७वी सदी की खडी बोली का जीता-जागता अर्न्तप्रान्तीय रूप सुरक्षित है। इस बोली के द्योतक हिन्दवी हिन्दवीय२३ तथा हिन्दुस्तानी२४ नाम हिन्दी साहित्य मे सर्व प्रथम किसी हिन्दू लेखक द्वारा हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त

२०—वही, भाग ३ पृ० ४०-४१
२१—वही भाग ३, पृ०
२२—वही पृ० ७, ८
२३—दे० ला० बी० प्र० ३७-३६, ४६
वही, पृ० १५, ६३

होते है। छत्रसाल के सम-सामयिक कवि ब्रजभूषण ने इन शब्दो के बदले 'मध्यप्रदेश२५ भाषा नाम लिखा है। ध्वनि, रूपरचना, वाक्यरचना सब प्रकार से बीतक १७वी सदी की खडी बोली-का प्रतिनिधि ग्रन्थ हो सकता है। गौण रूप से ब्रजभाषा प्रयोग भी मिश्रित है, किन्तु मुख्य ढांचा खडी बोली का है। शब्दावली का मुख्य आधार तद्भव रूपो से बना है। गुजराती, सिन्धी, कच्छी के कुछ शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। लालदास श्री प्राणनाथ के उन शिष्यो मे थे जो हिंदू धर्म तथा इस्लाम धर्म की एकता के जोश से परिपूर्ण थे। यही प्राणनाथ की धर्म सभा मे कुरान का पाठ करते थे। इसी धार्मिक जोश के कारण ही बीतककार कुछ फारसी-अरबी शब्दो का विचित्र रूप से प्रयोग करते है। इस्लाम धर्म से सम्बन्धित शब्दो का रूढि अर्थ न लेकर उन्हें अपने नवीन अर्थ मे प्रकट करते है। धर्म के साथ साथ भाषा सम्बन्धी यह क्रान्ति कभी-कभी सामान्य पाठक को उलझन मे डाल देती है। अनेक स्थलो मे बीतककार अपने धर्म को 'दीन इसलाम' के नाम से पुकारते है—

यथा—मोको लेओ साथ मे दाखिल करो इसलाम।२६ तब बिहारी जीए कहा न ए राह नही इसलाम२७। लेओ सिर तुम अपने एदीन इसलाम का काम२८।

श्री प्राणनाथ के वेदाती शिष्यो ने इस भाषा प्रणाली का समर्थन नही किया। उनकी बीतको मे शास्त्रीय परपरा के अनुसार सस्कृत शब्दावली का प्रयोग धार्मिक प्रसगो मे हुआ है।

बीतककार अपने अनुयाइयो को 'मोमिन' कह कर पुकारते है जब कि अन्य बीतककार उन्हे ब्रह्म सृष्टि आदि नाम देते हे—

'श्री जी आप जाहेर करी। दिया मोमिनो को ताम।'२९ इसी प्रकार प्राणनाथ को 'जबराईल',३० 'असराफील' का जोश चढता है। लालदास के अनुयायी ख़ुदा के वास्ते लडते हैं क्योकि उन्हे जुल्म दूर करना है।

'राह खुदा के वास्ते लडे। मेटन को जुलमात।' अपने कुरान के लिए कभी-कभी लालदास जी 'किल्ली अल्लाकलाम' कहते है। चौदहो लोक को सर्वत्र 'चौदेतबक'३१ कहा गया है। अवरग के कट्टर पथी अनुयायियो को वह कभी भी 'मोमिन' नही कहते हैं। लालदासजी के अनुसार तो सत्य धर्म को न समझने वाले, धार्मिक अत्याचार करने वाले ही वास्तव मे

२५—ब्रज भूषण वृत्तान्त मुक्तावली पृ०······चौ
२६—वही ला० बी० प्र०, २७-२४
२७—वही २८, ३
२८—वही २९-७६
२९—वही ३०
३०—वही ३७-१५
३१—वही ३८-७

पूर्ण-मुख, पूर्णेन्दु-सा, लगता अहा,
है सुधा-सौदर्य, जो बरसा-रहा,
सु - नख - रञ्जित - अगुली - युत हाथ-ये,
धाम शोभा-के बने युग साथ ये,
भाग, कटि-का, वक्ष-ने है ले-लिया,
या-सु-कटि ने, अधिक जान स्वय दिया,
हो गया, उरु-युग्म भी सु-विशाल है,
विजित जिमसे हस्तिनी की चाल है,
ऊन-षोडश वर्ष-मे इसने अभी,
पद-दिया, यो-ढग बदला है सभी,
हाथ - इसका सौपकर तारुण्य को,
बालपन सहसा गया है लुप्त-हो
गत - हुआ चाञ्चल्य, लज्जा आ - गई,
साथ - मे गाम्भीर्य - को भी पा - गई,
और - भी साध्वी-सुलभ गुण आ - भरे,
छू-न पाया कुछ इसे, अवगुण अरे !
पा—समय अवकाश-का विधि ने अहा !
यह-रची, सौन्दर्य-की, प्रतिमा महा,
साथ जिसके, सज्जिता-परिचारिका,
कौन है ! यह कान्त-देह-कुमारिका !
दमन इसने सुन्दरी-गण-मद किया,
नाम 'दमयन्ती' उचित ही-तो दिया,
विदर्भाधिप-जो नृपति-वर भीम हैं,
सकल-गुण जिनमे, भरे निस्सीम हैं,
है उन्ही-की आत्मजा, यह - सुन्दरी,
स्वर्ग-देवी आ-गई, बनकर नरी,
नभस्पर्शी सदन जो सम्मुख खडा,
मूर्त्त मानो, सुयश राजा का बडा,

स्वामी श्री लालदास जी के हस्तलेख वीतक का एक पृष्ठ वि० स० १७५१ के लगभग ।

बदल कर परिधान, मञ्चासीन था,
देख उनको, स्वय सुषमा हीन थी,

बाल, काले-व्याल से फटकार कर,
नेत्रहर परिधान, तन पर धारकर,
नाम के अनुरूप, मञ्जुल-केशिनी,
कह उठी, मधु - वचन आली-केशिनी,
आलियो ! प्रस्ताव मेरा है अभी,
पुष्प आभूषण रचे, आओ ! सभी,
फिर कुमारी को उन्हे पहनायँगी,
स्वर्ग - का यो - सुमन, भू - पर लायँगी,
देखना ! फिर अमरपुर से सुर-सभी,
दर्शनोत्सुक आयँगे इसके अभी,
विश्व - मे ऐसी अहा, फिर सुन्दरी,
खोजने से भी न पाये द्युतिभरी,
शत-गुणित हो जायगी यह रूप - सी,
स्वर्ण - मे, शुचि-वास मानो, आ - बसी,
मुस्कराकर कुटिल-भ्रू-धनु तानकर,
केशिनी - को लक्ष्य अपना मानकर,
भीमजा रोके उधर जब तक कही,
इधर पारित हो गया प्रस्ताव ही,
कुसुम गण - पर चल पडी कुसमाङ्गुली,
अब लगी माला बनाने वे भली,
भीमजा साग्रह अहा, लाई गई,
घास पर ही विवश बैठाई गई,
डाल ही तो दी, गले - मे स्रज - अहा,
कर, उरोज-स्पर्श, पुष्प हँसे-महा,

प्रस्तुत पाठ की प्रामाणिकता

पाठ की प्रामाणिकता :—

किसी भी प्राचीन ग्रंथ की पाठ सबंधी प्रामाणिकता मूल लेखक की मूल प्रति मे सुरक्षित समझी जाती है। इस मूल प्रति के लुप्त प्राय हो जाने पर ग्रथ मूल प्रति की प्रतिलिपि परपरा मे विद्यमान रहता है। ये प्रतिलिपिया भिन्न-भिन्न प्रतिलिपि कारो द्वारा भिन्न-भिन्न देश काल परिस्थिति मे की जाती है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मूल प्रति मूल लेखक द्वारा जिस लेखन पद्धति या लिपि पद्धति मे प्रणीत हुई थी, उससे भिन्न लेखन पद्धति मे प्रतिलिपिकारो को अपनी प्रति प्रस्तुत करनी पडती है। लेखन पद्धति मे परिवर्तन का कारण यही होता है; कि प्रतिलिपिकार अपने समसामयिक पाठको को दृष्टि मे रखकर ही अपनी प्रति तैयार करता है और सामान्यतया सामान्य जनता अपने युग मे प्रचिलित लेखन परपरा से ही परिचित रहती है। अतएव विशिष्ट देश-काल परिस्थिति मे जो लेखन पद्धति प्रचलित रहती है प्रतिलिपिकार अधिकाशत. उसी पद्धति मे अपनी प्रति प्रस्तुत करता है। यही कारण है, कि मूल प्रति की लेखन पद्धति और कालान्तर मे लिखी गई इन प्रतिलिपियो के लेखन पद्धति मे अंतर हो ही जाता है। फिर भी मूलप्रति से निकटतम सबध रखने वाली प्रतिलिपि प्रामाणिक मानी जाती है। मूलप्रति से निकटतम सबध शब्दो के वाह्यरूप या वर्तनी (Spelling) द्वारा सुरक्षित रखना संभव नही, क्योकि कालान्तर मे लेखन पद्धति या वर्तनीपद्धति मे परिवर्तन होता रहता है यह निकटतम सबधी मूललेखक द्वारा प्रयुक्त भाषा के नाद या ध्वनि अथवा शब्दो उच्चारण को ज्यो का त्यो प्रस्तुत करने मे सुरक्षित रहता है, क्योकि नाद या ध्वनि ही शब्द की आत्मा है। शब्द की वर्तनी तो मात्र वाह्य शरीर है जो युगानुकूल परिवर्तित होती रहती है। वही प्रतिलिपिकार सच्चा, आदर्श और सफल है जो मूललेखक की भाषा ध्वनि या शब्दोच्चारण पद्धति को शत प्रतिशत सुरक्षित रखता है। एक अर्ध शिक्षित, किन्तु आधार प्रति के प्रति स्वाभिभक्त प्रतिलिपि कार अपनी आधार प्रति को ज्यो की त्यो प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। अत्यधिक स्वामिभक्त होने के कारण कभी कभी तो प्राचीन वर्तनी को भी सुरक्षित रखता है। इससे भी ग्रथ मे कुछ अशुद्धि होती है, किन्तु यह अशुद्धि अधिक हानिकर नही होती, क्योकि समझी या सुधारी जा सकती है; किन्तु ऐसा विद्वान प्रतिलिपि कार जो मूललेखक को अज्ञान समझकर उसकी भाषा मे ही सशोधन करने लगता है, ग्रथ को अधिक अशुद्धि करता है। उदाहरणार्थ आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओ (हिन्दी, पजाबी, मराठी, गुजराती आदि) के विकास से परिचित विद्यार्थी इस भाषा वैज्ञानिक तथ्य से भली भाति परिचित हैं कि मध्यकाल मे हिन्दी, पजाबी प्रदेश में निवास करने वाली सामान्य जनता की भाषा मे—सस्कृत तथा फारसी की 'श' ध्वनि 'स' रूप मे उच्चरित होती थी—यही कारण है कि मध्यकालीन युगमे आविभूत गोरखनाथ, कबीर, तुलसी, सूर, जायसी,

'श' ध्वनि का उच्चारण नही करते थे। इसी से विद्वान होने पर भी तुलसी, सूर, जायसी आदि की कविता मे 'श' ध्वनि नही मिलती। वर्तमान युग मे पुन संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी के प्रभाव से हिन्दी-पंजाबी, गुजराती, मराठी भाषा-भाषी जनता मे यह 'श' ध्वनि पुन. उच्चरित होने लगी है; किन्तु किसी मध्यकालीन ग्रन्थ के पाठ संशोधन मे यदि कोई विज्ञान प्रतिलिपिकार शब्दो मे पाई जाने वाली 'स' ध्वनि को अशुद्ध समझकर उसके तत्सम या सस्कृत उच्चारण की भरती करता है तो वह पाठ सशोधन नही करता, बल्कि अपनी विद्वता के कारण ग्रन्थ को अशुद्ध करता है, मूल लेखक के प्रति तथा पाठको के प्रति अन्याय करता है। प्रणामी सप्रदाय से संबधित प्राचीन ग्रन्थो के पाठ सशोधन मे इस तथ्य को विशेष रूप से ध्यान मे रखना पड़ेगा क्योकि प्रणामी सप्रदाय के प्रवर्तक श्री प्राणनाथजी तो सार्वजनिक भाषा हिन्दी, हिन्दवी या हिन्दुस्तानी का ही प्रयोग करते थे।

बीतक-रचनातिथि

प्रणामी सप्रदाय मे यह सर्वमान्य है, कि स्वामी लालदासजी ने श्री प्राणनाथजी के परमधाम गमन के पश्चात् ही उन्ही के आदेश से, उन्ही की छाप 'मेहेमत' (महामति) लेकर बीतक की रचना की थी। इस प्रकार बीतक का रचना काल श्री प्राणनाथजी की परमधाम गमन तिथि स० १७५१ (१६९४ ई०) के तुरत बाद ही पडना चाहिए। सप्रदाय मे यह भी लगभग सर्वमान्य है; कि बीतक की रचना समाप्त करने के पश्चात् ही स्वामी लाल भी परमधाम वासी हो गए थे।

बीतक की हस्तलिखित प्रतियां :—

स्वामी लालदासजी रचित बीतक की मूल प्रति अभी तक अप्राप्त है—अथवा लुप्त प्राय हो चुकी है। प्रतिलिपिकारो द्वारा हस्तलिखित प्रतियो के रूप में ही बीतक की प्रति सुरक्षित है। बीतक की ऐतिहासिक, सास्कृतिक, भाषा वैज्ञानिक महत्ता को अनुभव करते हुए इसके सपादन की महती आकाक्षा मेरे मन मे बहुत पहले ही उठी थी, 'बीतक की ऐतिहासिक समीक्षा' नामक निबध के प्रकाशन के बाद तो अनेक सम्माननीय विद्वानो द्वारा बीतक के सपादन का आदेश मिला; किन्तु प्राचीन प्रतियो की प्राप्ति तब तक सभध न होने के कारण सपादन और प्रकाशन का साहस उस समय नही कर सका।

बीतक की हस्तलिखित प्रति का प्रथम दर्शन मुझे पन्ना मे ही हुआ था; किन्तु वह प्रति अध्ययनार्थ सुलभ नही हो सकी। इसके पश्चात् प्रयाग निवासी माता कृष्णाबाई से एक प्रति तथा श्री प्रकाशचद मिड्ढा आदि प्रणामी बधुओ से बीतक की एक हस्तलिखित मिली। पर्याप्त समय तक अपने पास रखकर उसे अध्ययन करने की सुविधा मिली। जिसके फल स्वरूप कई निबध लिख सका। प्रस्तुत संपादन में इसी प्रति को 'ह' (हजारीलाल) प्रति से साकेतित किया गया है।

ब्रह्मचारी मोहन मुकुन्द प्रणामी मेरे सम्माननीय और श्रद्धेय होते हुए भी प्रणामी साहित्य के शोध, संकलन और सपादन में आत्मीय सहयोगी से हो गए हैं । आपने बीतक की अनेक हस्त-लिखित प्रतियो को मेरे अध्ययनार्थ अनेक स्थलो से मँगवाया । इन प्रतियो मे एक प्रति प्राचीन तथा महत्वपूर्ण प्रतीत हुई । प्रस्तुत सपादन में इस प्रति को 'च' (चरणदास संवत् १८०५) से सकेतित किया गया है । जैसे-जैसे प्रणामी साहित्य और सप्रदाय से परिचय बढता गया, उसकी महत्ता का बोध होता गया, वैसे-वैसे ही श्री प्राणनाथ जी प्रणीत 'कुलजम' तथा स्वामी लाल दास जी रचित 'बीतक' के संपादन तथा प्रकाशन की आकाक्षा बलवती होती गई; किन्तु प्राचीन तथा प्रामाणिक प्रतियो के अभाव में इस आकाक्षा को प्रायोगिक रूप न दे सका ।

सन् १९६४ के ग्रीष्मावकाश में 'कुलजम' तथा 'बीतक' की प्राचीन प्रतियों की खोज के लिए गुजरात तथा सौराष्ट्र की यात्रा की । इस खोज यात्रा से प्रथम सक्रिय सहयोग तथा सहायता महामगलपुरी धाम सूरत के आचार्य महाराज मगलदासजी से मिली । तन-मन की अस्वस्था-वस्था मे ही उनके मदिर में पहुंचा था, फिर भी अपने सहज सौजन्य तथा आदर्श से महाराजजी ने मेरे शारीरिक तथा मानसिक उपचार की आशातीत व्यवस्था की और प्रणामी मंदिर मे सुरक्षित हस्तलिखित प्रणामी साहित्य संबधी सारी प्राचीन प्रतियो के अवलोकन और अध्ययन की सुविधा दी । इस मदिर मे 'बीतक' की ६ हस्तलिखित प्रतियां मिली और 'कुलजम' की कई अति प्राचीन महत्वपूर्ण प्रतियों के दर्शन यही हुए ।

बीतक के सपादन में प्राचीनतम तथा सर्वाधिक प्रामाणिक सामग्री श्री कृष्ण प्रियाचार्य, भरोडा (भद्रावती), आणंद (गुजरात) के हस्तलिखित ग्रन्थालय से मिली । इस ग्रथालय में प्रणामी सप्रदाय से सबंधित लगभग ५०० महत्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतिया हैं, जिन्हे श्री कृष्ण-प्रियाचार्य जी कंजूस के धन की तरह दूसरे की दृष्टि से भी अस्पर्श्य रखते हैं । कुछ आरम्भिक परीक्षा के पश्चात् श्री कृष्ण प्रियाचार्य जी ने अपने ग्रंथालय का द्वार मेरे लिए खोलने की कृपा की । श्री प्राणनाथ, लालदास, मुकुददास (नौरंग स्वामी) तथा अन्य प्राणनाथ के शिष्यों की कृतियों के अवलोकन का सुअवसर यही मिला । इनके सग्रहालय मे बीतक की दो प्राचीनतम प्रतिया मिली । (१) स्वयं लालदास के हस्तलेख में लिखित एक खंडित प्रति । (२) बीरजी के हस्तलेख मे लिखित एक वृहत बीतक—इन दोनो प्रतियो का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :—

(१) लालदास के हस्तलेख में लिखित प्रति (इस प्रति को प्रस्तुत संपादन में 'ल' प्रति से संशोधित किया गया है) बीतक की एक खडित प्रति है। जिसमें सूरत से—उदेपुर की बीतक २९ पन्नों (५८ पृष्ठ) में वर्णित है। पत्रों का आकार १०'×६' है। एक पन्ने मे २७-२८ पक्तियाँ है कुछ पन्नो मे एक अन्य व्यक्ति के हस्तलेख हैं जिसमें ३०-३२ पंक्तियां हैं। पन्ने अति जीर्ण-शीर्ण हैं, इस प्रति की लेखन पद्धति और 'बीरजी' की प्रति की लेखन पद्धति मिलती है। इन दीनो प्रतियो के एक-एक पृष्ट की फोटो कापी इस संपादिता बीतक के पृ०

मे दी गई है। विद्वान लोग दोनो की तुलना करके मेरे कथन की प्रमाणिकता की जांच कर सकते हैं।

इस खंडित प्रति में कुछ पन्नों की सुख्या नही दी गई है। यह लालदास की 'नोटबुक' सी प्रतीत होती है। ग्रन्थ के हाशिए पर लालदास जी ने कही-कही अपनी व्यक्तिगत जानकारी के लिए कहें यह लिखा है कि ग्रमुक स्थान से इतना सुदर साथ आया, ग्रमुक स्थान से इतना। इसी प्रकार की कुछ अन्य व्यक्तिगत बाते भी है।

७वे पन्ने के दूसरे पृष्ट से जहा से श्री प्राणनाथजी लिखित बडी पत्री की नकल आरम्भ होती है—बहा से किसी अन्य का हस्तलेख मालूम होना है। और यह हस्तलेख आगे के ५ पन्नो तक चलता है।

एह पाती दिल्ली मिने—थे कैद मे हम
तिस बखत ले आइया—कान्ह जी .. ..

यही तक लालदास के हस्तलेख है इसके बाद दूसरे का हस्तलेख है। बडी पत्री और छोटी पत्री मे किसी अन्य व्यक्ति के हस्तलेख हैं। इसके बाद पुन कामा पहाडी के प्रकरण से लालदास का हस्तलेख आरम्भ हो जाता है। और 'आकोट' की बीतक तक मिलना है। इस प्रति की प्रथम पक्ति—'हजरत ने हिजरत करी ....।

अतिम पक्ति—मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए उदेपुर की बीतक।
अब कहो मदसोर की—जो बीतक हुकम हक ॥

× × ×

इस बीतक के अतिम पन्ने मे पुष्पिका नही है—अतएव प्रतिलिपिकार का नाम कही नही मिलना है। यद्यपि लेखन पद्धति को देखकर नागरी लिपि के विकास से परिचित कोई भी विद्वान कह सकता है कि ग्रंथ १७वी शती ई० मे लिखा गया है। इस प्रकार प्राचीनता मे कोई सदेह नही है, किन्तु हस्तलेख लालदास जी के ही है इस बात का कोई वस्तुगत प्रमाण नही मिला। इस हस्तलेख की फोटो कापी लेकर मैंने पन्ना मे सुरक्षित 'कुलजम' की प्राचीनतम हस्तलिखित प्रति की लेखन शैली और अक्षरो के बनावट की तुलना की है। उस 'कुलजम' मे प्राणनाथजी के निकटतम लेखक—नदराम के हस्तलेख मे लिखित सबत् १७३४ मे लिखी हुई 'कलस', 'प्रकास' के गुजराती से हिन्दुस्तानी भाषा मे अनुवाद की प्रथम मूल प्रति सुरक्षित है। 'कलस' और 'प्रकास' ग्रंथो के अत मे पुष्पिका दी गई है उसमे लेखक के रूप मे नदराम का नाम है, मूलप्रति अनुप्म सेहेर (अनूप शहर) मे तैयार की गई है। इसका भी निर्देश है साथ ही अनुवाद की तिथि सवत् १७३४ भी दी गई है। इसी प्रकार इसी कुलजम के अन्य भाग 'बीर जी' द्वारा लिखे गए है—इन ग्रन्थो के अत मे पुष्पिका दी गई है जिसमे 'बीर जी' का नाम तथा प्रतिलिपि काल संवत् १७५८ दिया गया है।

'कलस' (हिन्दुस्तानी) के अंत मे पुष्पिका —

"सं० १७३३ ना भादरवा सुद १ म सेहेर अनुपम में लिष्या छे"

श्री श्री श्री श्री श्री

" " " सपूरन कलस हंदूस्तानी"

प्रकास (हिन्दुस्तानी) की पुष्पिका —

"श्री प्रकास सपूरण ।। किताब जंबूर ।।सबत १७ से ४६ असाढ सुदी १३ ।। ब्रहसपती ।

श्री परना मे किताब लीखी ।। चरनरज नंदराम लीखीतं ।। सुभमस्तु ।। श्री राज ।। परकास सपुरन ।।

पन्ना के गुम्मट मंदिर मे सुरक्षित कुलजम की इस प्राचीनतम प्रति के अंत मे पुष्पिका निम्नलिखित है —

"समत १७५८ चेतसुदी ११ एतवार मुकाम परना किताब कुलजम फेर कै जिल्द बनवाई श्री राज जी ने हुकम साहेब केसे सुधारी बंदा खाकी ब्रमसिष्ट हक हादी रुहो की पाऊं खाक निमवती किताब सुधारत ल बीर जी"

लालदास के हस्तलेख को नदराम तथा बीर जी के हस्तलेखो से मैंने पन्ना मे भली भाति बडी बारीकी से मिलाया—लेखन शैली तो लगभग समान है इससे यह तो सिद्ध हो जाता है कि लेखन तिथि संवत् १३३४-५६ के आस पास है; किन्तु अक्षरों के आकार प्रकार मे ज्ञात हो जाता है कि अक्षर न तो नंदराम के हैं और न 'बीर जी' के। श्री प्राणनाथजी के अन्य शिष्य—मथुरादास (सं० १७४६) मोटा मोरारदास (सं० १६६२) बनमाली (सं० १७६२)

गरीबदास (सं० १७७२) के हस्तलेखो से भीं मैंने इन अक्षरों को मिलाया—जिसके फलस्वरूप यह निष्कर्ष निकलता है कि ये हस्तलेख इन समस्त लेखकों के पहले के हैं। अब श्री प्राणनाथ जी के दो ही प्रमुख शिष्य रहे जो इसके लेखक हो सकते हैं नौरंग स्वामी (मुकुंद दास) और लालदास। मुकुद स्वामी लालदास की बीतक के प्रतिलिपिकार कभी भी नही हो सकते—प्रत्येक प्रणामी सरलता से इस बात को मान सकता है। अतएव ये हस्तलेख लालदास के या लालदास के निकटतम किसी ऐसे लेखक के हो सकते हैं जो उनके लिए लेखक का कार्य करता रहा हो, किन्तु बीतक मे इस बात के ठोस प्रमाण हैं; कि लालदास अपना लेखन कार्य स्वय करते थे—रात दिन जगकर 'तफसीर हुसेनी' की नकल उन्होने की थी—इसीलिए लालदास ही इस हस्तलेख के अधिकारी हैं। इन्ही अक्षरो मे लिखे लालदास की अन्य रचनाएँ भी श्री कृष्ण प्रिया चार्य जी के सग्रहालय में हस्तलिखित रूप मे सुरक्षित हैं—यथा भागवत का अनुवाद तथा लगभग ५०० अन्य पद (हिन्दवी मे)। अतएव जब तक कोई अन्यथा प्रमाण न मिल जाए तब तक इस हस्तलेख को लालदास प्रणीत ही मानना चाहिए। मैंने श्री कृष्णप्रियाचार्य जी

से भी प्रश्न किया था; कि उन्होने कैसे पहचाना कि ये अक्षर लालदास के ही हैं—उसके उत्तर मे उन्होने एक पत्र मे अपना बिचार इस प्रकार प्रकट किया है।

"मै सन् १९२२ मे पद्मावती पुरी गया था। उस समय पजाब कमलिया निवासी चौधरी श्री सुन्दरदास जी के देख रेख मे तारतम्य विद्यालय चलता था।

चौधरी सुन्दरदासजी बडे उत्साही और खोजी व्यक्ति थे। प्राचीन ग्रन्थो से नई-नई बाते ढूढ कर विद्यार्थियो को बताते थे। वे महारारणी लक्ष्मीबाई के गुरू श्री जुगलदास जी के हस्ताक्षरो पर बडी श्रद्धा रखते थे। उन्ही से मुझे भी प्राचीन ग्रन्थो की खोज की प्रेरणा मिली।

पन्ना मे उस समय प्रभूत साहित्य था। श्री गुम्मट जी के बुर्ज मे पुराना साहित्य भरा था, जिसमे पुरानी पत्र-पत्रिकाए, मसौदे कागजात, बादशाही सिक्कावाले तथा राजाओ के मोहर छाप, हस्तलिखित अरबी किताबे, फारसी की किताबे, हस्तलिखित सस्कृत ग्रन्थ, उपनिषद पुराण आदि। उनमे से जो ग्रन्थ चपट गये थे, जिन्हे दीमिया खा गई थी, वे सब खाले कुड मे फेंक दिये जाते थे। उसमे एक ही व्यक्ति के हस्तलेखो की रचना ही अधिक थी।

\+　　　　　　+　　　　　　+

'कागज लालदास को' इन सब वचनो से ज्ञात होता है कि कुरान के रहस्यों को खोलने की आज्ञा श्री लालदासजी को ही दी गई हैं, अत रहस्यो को स्पष्ट करने के लिये अनेक ग्रन्थ बनाए हैं; जिनमे आयतें तफसीरे, और अनेक रहस्य लिखे हैं, जिनको देखने से ज्ञात होता हैं कि कई महान् विद्वान दत्तचित्त व्यक्ति का लिखा हुआ है। न तो वहा भूल ही दीखती है न सदंभ त्रुटि। अक्षर मरोर से पता लगता है कि यह किसी महती लेखक व्यक्ति के हैं। इस भाति इन ग्रन्थो मे लोकोत्तर कौशल देखकर आत्मा गवाही देती है कि ये अक्षर लालदासजी के ही हैं।"

बीर जी के हस्तलेख मे वृहत्तम बीतक —

कृष्णप्रियाचार्य जी के सग्रहालय मे सग्रहीत यह दूसरी प्राचीनतम प्रति है। प्रस्तुत सपादन मे इसे 'ब' प्रति से सकेतित किया गया है। बीर जी के हस्तलेख में लिखित इस वृहत बीतक मे कुल १४८ पन्ने हैं। पन्नो का आकार १०१'×८' है। प्रति अत्यत जीर्णावस्था मे है। लेखन पद्धति बिल्कुल 'ल' (लालदास के हस्तलेख) प्रति के समान है। इस ग्रथ के प्रथम १४ पन्नों मे (परमधाम की) 'बडी वृत' है और इसके पश्चात् बीतक आरम्भ हो जाती है। जिस पन्ने से (१५वें पन्ने) बीतक आरम्भ होती है उसी पन्ने के ऊपर लालदास के हस्तलेख मे लिखा है—"प्रथम केताब को मगलाचरण" मैंने इसी पन्ने की फोटोकापी यहा प्रस्तुत की है।

(फोटो ग्राफर की असावधानी के कारण लालदास की पक्ति नही आ सकी है) लालदास के हस्तलेख के कारण इस प्रति का प्रतिलिपि काल सबत् १७५१ के आस पास ही होना चाहिए । इस प्रति के एक पृष्ट की फोटो कापी ले जाकर मैंने पन्ना मे सुरक्षित 'बीर जी' लिखित 'कुलजम' की प्राचीनतम प्रति से बारीकी से मिलाया है । इम प्रति के अक्षरो की बनावट बिल्कुल वही है जो बीर जी के 'कुलजम' मे है । जिसकी रचना तिथि सवत् १७५८ दी गई है । इसलिए इसके प्रतिलिपिकार वीर जी को ही मानना चाहिए । क्योकि लालदास के इसमें हस्तलेख है अतएव प्रतिलिपिकाल सवत् १७५८ के पहले और १७५१ के आस-पास माना जा सकता है ।

अभी तक बीतक की जितनी हस्तलिखित प्रतिया मिली हैं उनमे यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योकि इसमे पूर्ण बीतक है—अपने वृहत्तम रूप मे ।

यह वृहत्तम वीतक "निजनाम श्री क्रस्न जी अनाद अष्यरातीत........ ...." से आरम्भ होकर 'अक्षरातीत ब्रह्म' की तीनो लीलाओ का वर्णन करती है (१) परमधाम लीला (२) ब्रज रासलीला (३) जागनी लीला । इन्हे को क्रमश परमधाम बीतक रासलीला बीतक तथा जागनी लीला (देवचद-प्राणनाथ) बीतक कहा जा सकता है । इस प्रकार इस बीतक मे परमधाम वासी श्रीकृष्ण, ब्रजरास-रचयिता श्री कृष्ण तथा देवचद-प्राणनाथजी के रूप मे जागनी करने वाले कृष्ण मे एक शृखला, एक अनुवध अथवा तारतम्य स्थापित किया गया है । साथ ही इसमे इन्ही कृष्ण का ईसा-मोहम्मद-इमाम मेहेदी से भी तारतम्य या सबध स्थापित किया गया है ।

इस बीतक के अन्तर्गत परमधाम बीतक मे १७ प्रकरण और ५६० चौपाइया हैं । और रासलीला मे १६ प्रकरण और ५०० चौपाइया हैं । 'रासलीला' के अत मे ... लिपिकार ने स्वय दिया है ।

'रास लीला तमाम'

इसके पश्चात् ५३ वे पन्ने के दूसरे पृष्ट से जागनी लीला-देवचद—प्राणनाथ बीतक आरम्भ हो जाती है । और जो 'भविष पुरान मे राजा केहे जुग चार' से लेकर प्राणनाथ की पूर्ण बीतक देती है । प्राणनाथ बीतक भी निम्नलिखित ४ खण्डो मे विभाजित सी प्रतीत होती है । क्योकि इन चारो खडो की चौपाईयो का योग अलग-अलग दिया गया है । एक खण्ड समाप्त होने पर दूसरे खण्ड के आरभ मे पुनः चौपाई सख्या १ से आरम्भ की जाती है । चौ०, प्र०, की सख्या सहित ये ४ खंड निम्नलिखित हैं :—

(१) प्रथम भाग देवचद जी की बीतक से आरम्भ कर प्राणनाथ जी के सूरत पहुंचने तक २० प्रकरण, चौ स० १३०३ ।

आदि "भविष पुराण मे राजा रहे जुग चार..........
अत—मेहेमत कहे ए मोमनो, ए सूरत करो याद
फेर आगे कहू लाल जो झगड़े की बुनियाद ।

(२) दूसरे भाग मे—सूरत से औरगाबाद तक की बीतक—(पन्ना ८७ के दूसर पृष्ठ से लेकर पन्ना ११६ के पहले पृष्टतक)

कुल १६ प्रकरण और १२३८ चौपाइया हैं ।

आदि—हजरत ने हिजरन करी"

अत—मेहेमत कहे ऐ मोमनो, ए औरगावाद की वीतक
अब आकोट की कहू बीतक बुजरक"

(३) तीसरे भाग मे—आकोट से पन्ना तक की बीतक (पन्ना ११६ के दूसरे पृष्ठ से लेकर १३२ के पहले पृष्ट तक)

८ प्रकरण और चौ० सख्या ५७४ ।

(४) चौथे भाग मे—अष्ट प्रहर की बीतक ७६४ चौपाइया हैं ।

इसके पश्चात् प्रतिलिपिकार ने 'महाराज की सेवा का प्रकरन' दिया है जिसमे ७१ चौपाइया थी ।

१४८ पन्ने के दूसरे पृष्ट के अतिम पृष्ट के नीचे का भाग फट गया है । सभवत इसी कारण इस खड की कुल चौ० सख्या का योग नही मिलता है ।

'कुल[illegible]तक' का प्राचीन प्रतियो की खाज म मैन भरोडा से जामनगर की यात्रा की । नव[illegible]न दत्त[illegible]र) खिजडा मदिर के आचार्य महाराज धर्मराज जी ने बडे अनुग्रह के साथ से प[illegible]जडा[illegible]सुरक्षित प्राचीन हस्तलिखित प्रतियो के अवलोकन का अवसर दिया । इस मदिर मे 'कु[illegible] देखे[illegible] तो अनेक हस्तलिखित प्रतिया हैं, जिनमे कुछ प्राचीन भी हैं, किन्तु बीतक की दो प्रतियाँ (जो यहा सुरक्षित हैं) मे से कोई भी प्राचीन नही है । केवल एक प्रति सवत् १८३५ की है । जामनगर के चाकला मदिर मे भी बीतक की एक प्रति १८५३ सवत् और दूसरी १८८३ की है । लालदासजी की जन्मभूमि पोरबदर (सुदामापुरी) मे महात्मा गाधी के जन्म स्थान (कीर्तिभवन) तथा कस्तूरबा के घर के निकट एक प्रणामी मदिर है । मदिर मे बीतक की एक प्रति १८४७ सवत की है जिसके प्रतिलिपिकार माँधव जी हैं ।

श्रीकृष्ण प्रियाचार्य जी के सग्रहालय मे लगभग ३ सप्ताह तक रहकर मैने 'ल' 'ब' तथा 'ह' प्रतियो का शब्दश तथा अक्षरश मिलान किया । जिसके फलस्वरूप यह निष्कर्ष निकला (१) कि 'ल' और 'ब' दोनो प्रतिया एक ही शाखा की हैं । दोनो मे शब्दश कोई अतर नही है । (२) शब्दोच्चारण या ध्वनि की दृष्टि से इतना ही अतर मिला कि 'ल' मे जहा 'ण' ध्वनि है वहां 'ब' प्रति मे 'न' लिखा गया है । (३) 'ह' प्रति विक्रम की १६वी तथा २० वी शती में लिखी गई प्रतियो की प्रतिनिधि है । सामान्यतया वर्तमान युग मे प्रचलित बीतक 'ह' प्रति के ही समान

स्वामी श्री लालदास जी के समसामयिक श्री बीर जी भाई के हस्तलेख,
बीतक का एक पृष्ठ वि० स०° १७५१ लगभग ।

है। (४) 'ह' प्रति और 'ब' मे विषय विस्तार, शब्दरूप, ध्वनि की दृष्टि से पर्याप्त अतर है। (५) सबसे बडा अतर तो यही है कि 'ह' तथा उसके समान प्रचलित अन्य बीतको के पाठ मे केवल जागनी लीला अर्थात देवचदजी और प्राणनाथजी की बीतक वर्णित है जबकि 'ब' मे परमधाम तथा ब्रजरास बीतक भी है। अर्थात 'ब' मे तीनो 'तकरारो' का वर्णन है, किन्तु 'ह' तथा 'ह' के समान प्रचलित बीतको के पाठो मे केवल तीसरी 'तकरार' का ही वर्णन है। (६) 'ब' प्रति के मगलाचरण तथा भूमिका से तीनो तकरारो का सकेत मिल जाता है। 'रासलीला बीतक' के अतिम छद—से भी प्रतीत होता है तीनो तकरारो का क्रमबद्ध वर्णन स्वय लालदास ही की योजना है। सभव है स्वामी लालदासजी ने पहले श्री देवचद और श्री प्राणनाथजी की ही बीतक लिखी होगी, किन्तु बाद मे उनके मन मे यह विचार उठा हो, कि जब तक श्री देवचद-प्राणनाथ की बीतक के साथ ब्रजरास लीला तथा परमधाम बीतक नही मिलाई जाएगी तब तक परमधाम निवासी अक्षरातीत कृष्ण तथा श्री देवचद और प्राणनाथ का तारतम्य या अनुबध पूर्ण रूप से नही जुडेगा, इसीलिए तीनो तकरारो' या तीनो लीलाओ की बीतक का वर्णन करके लालदास ने प्रणामी सम्प्रदाय की दार्शनिक विचार धारा की पुष्टि की। (७) अभी कुछ महीने पूर्व प्रयाग मे १९६६ ई० मे होने वाले कुम्भ मेले के अवसर पर प्रणामी धम प्रचार के लिए एक धर्म शिबिर का आयोजन किया गया था, उसी अवसर पर मथुरा निवासी महात्मा जगन्नाथ जी से एक प्राचीन गुटका प्राप्त हुआ। इसकी प्रतिलिपि तिथि सवत १७५५ दी गई है धाम की वृत्तकी पुष्पिका निम्नलिखित हे "श्री बरत सपूरण ॥ सवत १७५५ ना अत मे आसू बद श्री परणामधे लिखी छे।" उस गुटके के अधिकाश भाग मे 'बीतक' का पाठ दिया गया था। इसमे सम्पूर्ण बीतक नही है। केवल बीतक का पूर्वाध ही है। किन्तु ऐसा ज्ञात होता है, कि इसमे भी तीनो 'तकरारो' की बीतक देने की योजना बनाई गई थी' क्योकि इसके आदि मे धाम बीतक, फिर ब्रजरास की लीला बीतक दी गई है। इसमे भी रास लीला के अत मे 'ब' बीतक की भाति निम्नलिखित चौपाई मिलती है —

> "मेहेमत कहे ए सखीओ, एह दूसरा तकरार
> अब आगे तीसरे की, जो देखाया —"

इसके पश्चात 'ब' (बीर जी की प्रति) प्रति की भाति देवचद जी की बीतक आरम्भ हो जाती है। किन्तु देवचदजी की अधूरी बीतक तक ही इसका अश मिलता है। आगे की बीतक लिखी ही नही गई। फिर भी ग्रथ के आदि भाग से यह सिद्ध हो जाता है, कि इसमे तीनो तकरारो की बीतक वर्णित होती यदि ग्रथ पूर्ण होता तो।

नौरंग स्वामी द्वारा रचित बीतक का आकार बहुत ही छोटा है, फिर भी उसमे तीनो लीलाओ की ओर सकेत किया गया है। इसी प्रकार बख्शी हसराज कृत 'मेहेराज चरित्र' धाम तथा ब्रजरास बीतक पूर्ण रूप मे दी गई है। इस प्रकार यह सिद्ध हो जा[illegible] कि तीनो 'तकरारो' का वर्णन करने वाली बीतक की परंपरा सप्रदायिक दृष्टि से प्रा[illegible] ऐसा प्रतीत होता है कि मानो लालदास के समय मे ही बीतक के पाठ की दो पर[illegible]

पडी थी (१) केवल देवचंद-प्राणनाथ की बीतक प्रथम "भविष्य पुराण मे राजा कहे जुन चार" से आरम्भ होती है।

(२) दूसरी जिसमे तीनो तकरारो की बीतक रहती है।

ऐसा प्रतीत होता है, कि कालान्तर मे यह अनुभव करके कि धाम-ब्रज-रासलीला का महत्व केवल पौराणिक है बाद के प्रणामी बन्धुओ ने केवल बीतक की पहली पाठ परपरा को ही प्रचलित रक्खा। क्योकि ऐतिहासिक और सॉस्कृतिक दृष्टि से इसी का विशेष महत्व समझा गया। अतएव 'बीतक' के नाम से केवल देवचद-प्राणनाथजी बीतक का ही बोध होने लगा और धाम की वृत्त, ब्रज-रास लीला, अलग-अलग ग्रन्थ के रूप मे प्रसिद्ध हो गए।

बीतक के पाठान्तर का विकास :—

भिन्न-भिन्न तिथियो मे भिन्न भिन्न प्रतिलिपि कारो द्वारा लिखी गई बीतक की सैकडो प्रतियो को देखने का अवसर मुझे मिला है। उसके आधार पर यह निसकोच कहा जा सकता है, कि बीतक (देवचंद-प्राणनाथ बीतक) की पाठ परपरा बडी सुदृढ रही है। प्रतिलिपिकारो ने केवल एक ही पाठ परपरा को सुरक्षित रक्खा है। जिससे बीतक के पाठ भी एक ही शाखा मिलती है। जिसके फलस्वरूप सभी प्रतियो मे चौ० सख्या लगभग समान है। पाठ की सुदृढ परपरा का दृष्टि से हिन्दी मे विरला ही कोई ग्रन्थ ऐसा होगा।

सुदृढ पाठ परपरा के होने पर भी प्रतिलिपिकारो की अज्ञानता के कारण अनेक भूले अनजाने ही हो गई हैं और ऐसी भूलो की सख्या प्रचलित बीतको मे बढती ही गई है यहा तक कि कही कही मूलअर्थ ही उलझ गया है और कही-कही अर्थ का अनर्थ हो गया है। फिर भी ये भूले अनजाने मे ही हुई हैं, जिनका होना प्रतिलिपि तैय्यार करने मे सहज सभाव्य है। यदि प्रतिलिपि करने मे वैज्ञानिक दृष्टि नही रक्खी गई।

बीतक के पाठ मे सभवत. केवल एक बार सचेत होकर सोच-विचार कर पाठ परिवर्तन किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है, कि जब श्री प्राणनाथ जी के समसामयिक सभी शिष्य परम-धाम वासी हो गए, जब हिन्दू-मुसलिम-ईसाई धर्मो के समन्वय की व्यापक दृष्टि प्रणामी भाई खो बैठे, जब कर्मकाण्डी, पुराण पथी हिन्दुओ ने प्रणामी सप्रदाय पर आलोचना का प्रहार आरम्भ कर दिया, और प्रणामियों मे उनका उत्तर देने की न तो शक्ति और सामर्थ्य रहा न जोश, जब सप्रदाय के मुसलिम अनुयायी नही के बराबर रह गए तब प्रणामी सप्रदाय के अनुयायिनो ने बीतक का हिन्दू परपरा के अनुसार शास्त्रीयकरण करना आरम्भ किया। इसलिए प्राचीन बीतको मे जिन शब्दो से इस्लाम धर्म की ओर झुकाव की शका हो सकती थी उन शब्दो स्थान पर हिन्दू सम्प्रदाय की परपरा मे पालित पोशित धार्मिक शब्द रखे गए।

उदाहरणार्थ—(१) मोमिन् के स्थान मे ब्रह्मसृष्टि सहिओ, "साथिओ" की भरती

(२) दीन इस्लाम के स्थान मे निज धाम, निज धरम शब्द रक्खा गया।

(३) श्री प्राणनाथ जी के लिए जहा-जहा 'जी साहेब' उपाधि का प्रयोग किया गया था वहा-वहा 'श्री राज' को प्रतिष्ठित किया गया।

(४, प्राचीन प्रतियो मे कही भी तालव्य 'श' मूर्धन्य 'ष' प्रयुक्त नही है। किन्तु प्रचलित बीतको मे 'श', 'ष' का भी प्रयोग होने लगा।

(५) १६वी १७वी शती मे सस्कृत 'क्ष' का विकास 'ख्य' के रूप मे हुआ था—यही कारण है, कि प्राचीन प्रतियो मे अक्षरातीत शब्द अख्यरातीत (अख्यरातीत) रूप मे लिखित मिलता है, किन्तु वर्तमान युग की प्रचलित बीतको मे अक्षरातीत पुन लिखा मिलता है। प्राचीन प्रतियो मे जहा क्रस्न, क्रिपा, रिसि, स्रिस्टि आदि शब्द मिलते है वहा आज कृष्ण, कृपा, ऋषि, सृष्टि आदि शब्द लिखे जाने लगे, इस प्रकार शब्दोच्चारण का आधुनिक करण किया जाता है। जिससे मूल पाठ धीरे-धीरे अशुद्ध होता जा रहा है। फिर भी इस प्रकार के परिवर्तनो से पाठ मे वैज्ञानिक दृष्टि से अशुद्धि आ ही गई है और मूल ग्रथ के मूल माधुर्य का ह्रास हो गया है। यदि ऐसे ही परिवर्तन होते रहे तो मूल ग्रन्थ का मूल स्वरूप लुप्त हो सकता है।

क्षेपक अथवा अतिरिक्त पाठ :—

बीतक मे क्षेपक अथवा अतिरिक्त पाठ बहुत ही कम जोडे गए है। केवल कुछ ही स्थलो मे प्रतिलिपिकारो ने मूललेखक के उद्देश्य पूर्ति के लिए अथवा मूल लेखक के मतव्य को अधिक स्पष्ट करने के लिए अतिरिक्त पाठ जोड दिया है। इस दृष्टि से 'हरिद्वार प्रकरण' विचारणीय है। यह सत्य है कि सवत् १७३५ मे हरिद्वार मे कुभ पडा था, यह भी सत्य है; कि श्रीप्राणनाथ जी उस मेले मे सम्मिलित हुए थे, यह भी सहज सभावना प्रतीत होती हे कि श्री प्राणनाथ तथा हिन्दू धर्म के अन्य सप्रदाय के अनुयायियो के बीच धर्म चर्चा छिडी होगी, जिसमे दिव्यात्मा प्राणनाथ जी ने सबको पराजित किया होगा। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है, कि लालदासजी हिन्दूधर्म मे सबधित अन्य सम्प्रदायो की भाति अपने धर्म को एक सम्प्रदाय के रूप **में ही** नही मानते थे वरन् इसे तो एक विभाजनीन, व्यापक मानवधर्म या विश्वधर्म के रूप मे मानते थे। उस समय तक प्राणनाथ द्वारा प्रवर्तित धर्म पद्धति का साम्प्रदायिक रूप भी पूर्ण रूप से विकसित नही हुआ था—अतएव लालदासजी ने हरिद्वार की इस धर्म चर्चा का विस्तार से वर्णन नही किया होगा। 'ल' (अतएव लालदास लिखित) प्रति तथा **'ब'** (बीर जी लिखित संवत् १७५१) प्रति मे हरिद्वार की धर्म चर्चा या शास्त्रार्थ का विस्तार से वर्णन नही मिलता है। हरिद्वार प्रसग मे केवल निम्नलिखित पक्तिया—'ल' और 'ब' प्रति मे मिलती है। नौरंग स्वामी ने अपनी बीतक मे भी हरिद्वार प्रकरण मे कुछ ही पक्तियाँ दी है। क्योकि उस युग मे श्रीप्राणनाथ जी की धर्म पद्धति अपने समय की सारे सम्प्रदायो की पद्धतियो से सहज ही सर्वश्रेष्ठ थी। इसकी सूल श्रेष्ठता तर्को के आधार पर सिद्ध करने की आवश्यकता लालदास और मुकुन्ददास किसी ने दन ाद नही समझी, किन्तु श्री प्राणनाथजी के परमधाम गमन के पश्चात् जब एक सम्प्रदाय के गी श्रयन

श्री प्राणनाथजी की धर्म पद्धति स्थिर हो गई उस समय इसकी आवश्यकता समझी जाने लगी। और बाद मे लिखी गई प्रतियो मे यह हरिद्वार प्रसंग विस्तार से लिखा जाने लगा। स्वयं लालदास जी ने कुछ प्रतियो मे इस प्रकरण को जोड दिया अथवा कालान्तर मे वृत्तान्त मुक्तावली के आधार पर लालदास जी की बीतक मे भी यह जोड दिया गया। यह निश्चय पूर्वक अभी तक नही कहा जा सकता है। फिर भी यह कहने मे मुझे तनिक भी सकोच नही है कि ग्रन्थ के आकार की दृष्टि से क्षेपकों की संख्या बीतक मे बहुत ही कम है।

प्रस्तुत पाठ की संपादन विधिः—

बीतक के प्रस्तुत पाठ का सपादन 'ल' (लालदास प्रति सवद् १७५१), 'ब' (बीर जी की प्रति से १७५१) सवत् १७५५ मे लिखित गुटका मे समहीत बीतक की प्रति, सवत् १८०५ मे लिखित 'च' (चरण दास) प्रति तथा 'ह' (२०वी शदी मे प्रतिलिपि की गई हजारीलाल द्वारा लिखित) प्रति तथा अन्य अनेक प्रतियो के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत पाठ मूलतः 'ल', 'ब' प्रतियो के आधार पर तैयार किया गया है। 'च' प्रति तथा 'ह' प्रति मे जहा पाठान्तर मिलता है वहा नीचे पाठान्तर दे दिया गया है जो पाठ 'ल', 'ब' मे नही मिलते किन्तु 'च' और 'ह' तथा अन्य प्रतियो मै मिलता है उसे पुष्पाकित करके दिया गया है।

विषय विस्तार की दृष्टि से प्रस्तुत बीतक के पाठ मे बीतक के दोनो पाठो (एक केवल देवचन्द्र प्राणनाथ बीतक परम्परा) (२, तीनो तकरारो के बीतक की परम्परा) का समन्वीकरण का प्रयत्न किया गया है। ऐतिहासिक, सास्कृतिक, भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अधिक महत्व पूर्ण होने के कारण पहले प्राणनाथ बीतक दी गई इसकी मूल बीतक माना गया है। किन्तु मूल लेखक की साम्प्रदायिक दृष्टि को ठीक ठीक समझने लिए धाम, व्रज, रास लीला की बीतक को देना भी आवश्यक समझा गया है क्योकि स्वामी लालदास जी बीतक की पूर्णता 'तीनों के तकरारो' के वर्णन मे ही समझते है अतएव यदि धाम बीतक और ब्रजरास बीतक को छोड दिया जाता तो लालदास के प्रति अन्याय हो सकता था। बख्सी हस राज के 'मेहेराज चरित्र' की भाति इसमे भी धाम, ब्रज-रास की बीतक को बाद मे दिया गया। 'ब' प्रति की भाति अन्य अनेक पूर्ण बीतको के मिलने पर तीनो तकरारो के पूर्वापर क्रम पर भविष्य मे निश्चय पूर्वक पुन. विचार किया जायगा।

'कुलजम' तथा 'बीतक' के सपादन तथा प्रकाशन की आतरिक प्रेरणा मुझे स्वय ही प्राणनाथजी तथा लालदासजी की वाणी ही से मिली। विश्वधर्म, विश्वभाषा अथवा राष्ट्रभाषा के मध्यकालीन इस स्वप्न दृष्टा को जितना ही प्रणाम किया जाए उतना ही कम है। इस दृष्टि से ही प्राणनाथ तथा महात्मा गाधी के तारतम्य की कडी को एक कदम और आगे बढ़ाया जा सकता है क्योकि प्राणनाथ के स्वप्न को महात्मा गाधी ने जाने अनजाने पूरा करने का प्रयत्न [illegible]। लालदास की दृष्टि को अपनाते हुए महात्मा गाधी के वृत्त को चौथी तकरार की संज्ञा दी [illegible]तो उपमा अनुपयुक्त नही होगी।

भाषा विज्ञान के ग्रष्मकालीन शिविर पूना मे विश्व विख्यात भाषा वैज्ञानिक डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने मेरे 'प्रणामी साहित्य" नामक निबन्ध मे "बीतक" का परिचय पढकर—इसके सपादन की सत समति दी थी। वही श्रद्धेय डा० बाबूराम सक्सेना, डा० धीरेन्द्र वर्मा से इस प्रेरणा को बल मिला। डा० मानाप्रसाद गुप्त से इस विषय मे अनेक सत्परामर्श मिला। इन सब गुरुजनों के प्रति मैं हार्दिक आभार प्रगट करता हूँ। अपने सहयोगी मित्र डा० पारशनाथ तिवारी से इस सबंध मे अनेको बार विचार विमर्श का सहयोग मिला है। उनके और अपने बीच में धन्यवाद की दूरी मुझे पसद नही।

प्रणामी सप्रदाय के अनुयायियों मे इन ग्रन्थो के अध्ययन सम्पादन तथा प्रकाशन की प्रथम प्रेरणा नैपाल के महाराज युगुलदास जी तथा कालिम्पोग के वयोवृद्ध महाराज त्याग मूर्ति मगलदासजी मे मिली। प्रयाग के प्रणामी बधुओ के आग्रह से जबसे श्री ब्रह्मचारी मोहन मकुन्द प्रणामी ने प्रयाग को अपना स्थायी निवास बनाया तबसे इस आकाक्षा को सक्रिय रूप मिलने लगा। प्रणामी ग्रन्थ मे सबधित प्राचीन हस्तलिखित प्रतियो के प्राप्त करने मे मगलपुरी सूरत के आचार्य महाराज श्रीमगलदास जी का सहयोग तथा आशीर्वाद मेरा बहुत बडा संबल रहा है। नौतनपुरी के आचार्य महाराज श्रीधर्मदासजी, पन्ना के प्रणामी बन्धु प० प्यारेलाल जी (चेयरमैन प्रणामी ट्रस्ट पन्ना) श्रीमिश्रीलाल जी शास्त्री, प्रिन्सिपल मुरलीदासजी धामी सभी, प्रणामी साहित्य सबधी मेरी अभिरुचि को साधुवाद देते रहे। उपर्युक्त पन्ना के महानुभावो तथा अनेक बन्धुओ ने प्राचीन हस्तलिखित प्रतियो के अवलोकन का सुअवसर पदान किया जिससे पन्ना में सुरक्षित सैकडो प्रतियो का मै अध्ययन कर सका। मनना के महाराज श्री कृष्णमणि जी का सहयोग सदैव मिलता रहा। प्रयाग के प्रणामी बन्धु श्री प्रकाशचन्द्र मिड्ढा तथा अन्य बन्धु सदैव इस कार्य को पूरा करने के लिए सस्नेह आग्रह करते रहे और मेरे लिए सुविधाए सग्रह करते रहे। कानपुर निवासी पं० श्री कृष्णदत्त जी शास्त्री से एक बार कानपुर मे और एक बार प्रयाग मिलने का सुअवसर मिला—अनेक उपयोगी सुझावो के लिए मैं उनका अनुग्रहीत हूँ। प० कृष्ण प्रियाचार्य जी का बौद्धिक सहयोग सक्रिय सहयोग न होता तो बीतक की प्राचीनतम प्रतियो का दर्शन ही न ले पाता। पिछले कुम्भ मे लगभग एक मास तक मेरे निवास मे ठहरने की उन्होने कृपा की और उनके साथ मिलकर अनेक बीतको से अपनी सपादित प्रति को शब्दश अक्षरश मिलाया और अनेक स्थलो मे सुधार किया।

'कुलजम' तथा 'बीतक' के सपादन तथा प्रकाशन की आकाक्षा स्वप्न के रूप मे ही बनी रहती यदि बाकुडा के धर्मनिष्ट दानवीर सेठ बल्लभ जी लाल जी (बगाल) आर्थिक सहायता न देते। अनेक विघ्न बाधाओ के पडने पर भी इस कार्य मे उन्होने आर्थिक सहायता के अतिरिक्त सक्रिय सहयोग दिया यद्यपि मार्ग मे अनेक बाधाए पडती रही।

संपादित होकर भी 'बीतक' की प्रति प्रेस का मुख न देख पाती यदि मेरे साथी श्री देवकृष्ण जी शास्त्री इसकी सुयोग्य रूप से प्रेस कापी न तैयार करते और अपनी गहरी, सुलझी हुई सूझ बूझ से इसका प्रूफ न देखते। बख्शी हशराज रचित मेहेराज चरित्र का सपादन इन्होने किया—इस अनुभव का बहुत लाभ इस बीतक को मिला। मुझ ऐसे आलसी

पीछे पडकर प्रतिदिन इसका अतिम प्रूफ दिखवाना, और इसकी भूमिका मुझसे लिखवा लेना उन्ही का कार्य था। इस ग्रन्थ के मुद्रण मे यदि कोई शुद्धता है तो इसका श्रेय देवकृष्ण शास्त्री जी को ही है।

श्री 'कुलजम' का मुद्रण श्री प्रकाशचन्द्र जी मिड्ढा ने किया था और बीतक का प्रकाशन सगे भाई श्री हरचरन मिड्ढा ने किया। इस दिशा मे दोनो बन्धुओ की अभिरुचि स्तुत्य है।

स्वामी लालदास जी मुझे श्री प्राणनाथ जी तथा महात्मा गाधी के बीच कडी प्रतीत होते हैं। पग पग मे मुझे इन दिव्यात्माओ से प्रेरणा मिलती रही मेरा यह बाल प्रयास पूर्ण प्रणाम इन दिव्यात्माओ को स्वीकार्य होगा। ऐसा कहने का साहस नही कर सकता हू। प्रस्तुत ग्रन्थ मे यदि गुण है तो इसका श्रेय श्री दिव्मायात्माओ तथा अन्य विभूतियो को है और जो त्रुटिया हैं उसका दोष मेरे ऊपर। इसी विनय पूर्ण रुचि के साथ पाठको के हाथ मे प्रस्तुत ग्रन्थ सौपता हू। मैं प्रणामी नही हू फिर भी मैने इन ग्रन्थो मे हाथ लगाया और श्री प्राणनाथ जी के चरणो मे उन्हे समर्पित किया इसी आशा से कि जिसने 'धारा' को स्वीकार किया भले ही बिहारी जी की नाराजगी के पात्र बने उसी प्रकार मेरी क्षुद्र कृति को स्वीकार करेगे, भले ही सप्रदाय के सुन्दर साथो की नाराजगी उन्हे सहनी पडे।

माताबदल जायसवाल
लेक्चरर, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद
दिनाक ५–७–६६

[विचार वीथिका]

श्री देवचन्द्र जी तथा प्राणनाथ जी के जीवन चरित पर प्रकाश डालने वाले स्वामी लालदास जी तथा स्वामी मुकुन्ददासजी दोनो ही महाप्रभु के हस्त, चरण नेत्र और श्रवण के समान थे। दोनो ही एक दूसरे से बढकर विद्वान् थे। दोनो ही महापुरुषो का जीवन इतिहास, उस नदी के समान है जो समुद्र मे मिल जाने के बाद अपने अस्तित्व को खो देती है। दोनो का पूर्वकाल तमाच्छादित है उत्तरकाल तेज से आच्छन्न। अपने अस्तित्व को मिटाकर लोक हिताय प्राणनाथ जी के जीवन को ऊपर लाने वाले दोनो ही, महर्षि दधिच से बढकर हैं। जीवन पर्यन्त दोनो ही श्री जी के इगित शब्दों के ध्वनि, वाणी, आसू और मुस्कान बने रहे। दोनो ही अद्वितीय विद्वान थे यह उनकी रचनाएँ बतलाती हैं।

\+ \+ \+

कहते है स्वामी लालदास जी बहुत बडे व्यापारी थे। आपके घर मे लक्ष्मी नृत्य करती थी, जिह्वा पर सरस्वती लोटती थी। ऐसे व्यक्ति ने भावाभिभूत या निसाह्य होकर धर्म मार्ग नही अपनाया, बल्कि उस तत्ववेत्ता ने सासारिक वैभव को तुच्छ समझ कर ही ठुकराया होगा।

× × ×

ऐसे महान व्यक्ति की "प्रछन्न रूपेण शास्त्र ही साकार अपने उपदेश का स्वय ही पालन करता ही" सर्वहिता वाणी को व्यक्तिगत पूजी का तरह छिपाए रखना पाप नही है? इसके दोष के भागी प्रणामी बन्धु न होगे? हमार समाज म एक दो ऐसे व्यक्ति भी है जो थोथे, हास्यस्पद और असगत तक प्रस्तुत कर मुद्रण तथा प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगाना चाहते थे। उनकी मनोकामना फलीभूत हुई कि नही यह तो नही कहा जा सकता, परन्तु परिस्थिति की नब्ज को पहचानने भूल की है जिसका परिणाम, समाज का एक शिक्षित वर्ग दोषी समझा गया।

× × ×

यह तो सच है इतिहास घटित घटनाओ का वर्णन करता है। घटनाओ का सृजक समूह नही एक व्यक्ति होता है जिसके परिणाम का भागी सारा समाज प्रछन्न रूप से बन ही जाता है।

× × ×

शिक्षा के क्षेत्र मे आज का समाज काफी आगे बढ चुका है। बहुत दूर दूर की बातें सोचते हैं। ऐसी स्थिति मे तर्क और श्रद्धा मे सघर्ष चलना—स्वाभाविक है। भारतीय सस्कृति से पोषित तथा पाश्चात्य सभ्यता से प्रताडित मस्तिष्क, समुद्र के बीच जैसे नाव गोते खा रही हो। बुद्धि वाद से प्रभावित होने के कारण स्वय गुरु बनने की प्रवृत्ति भी अधिक है। न वह प्राचीन अध्ययन

की परिपाटी ही रही। तब जिज्ञासु, गुरुजनों के पास रह कर वर्षों ज्ञानार्जन मे व्यतीत करते थे। आज का व्यक्ति थोड़े समय मे बहुत सी बाते समझ लेना चाहता है। इन विरोधी परिस्थियो को देखते हुए मुद्रित, परिमार्जित, शुद्ध और सतुलित साहित्य ही, भावनाओ को परिस्कृत कर सकती है। यद्यपि गुरु निकटस्थ ज्ञान कुँए की गहराई है केवल साहित्यार्जित ज्ञान तालाब के समान विस्तृत है, परन्तु सूख जाने की सभावना अधिक रहती है, होने पर भी समय की माग को समझ लेना ही बुद्धिमत्ता है।

यद्यपि कुछ वर्षो से प्रणामी साहित्य का अन्वेषण हो रहा है। आज तक जो कुछ हुआ है सचित साहित्य के भडार को देखते हुए कुछ नही के बराबर है। इस नूतन जाग्रति म सजगता और सतर्कता की बहुत ही आवश्यकता है। हमारी छोटी सी भूल महान बन सकती है, इसलिये गर्जन, तर्जन और तुचकार की प्रवृत्ति को छोड़कर प्रशस्त मार्ग अपनाना चाहिए। साथ ही धर्मानुयायिओ को भी साहित्यिक चर्चा और वाद विवाद को सहन करने क्षमता अर्जित कर लेनी चाहिए। प्राचीन साहित्य के उथल-पुथल मे त्रुटिया रह जाना, असभव नही है। साहित्यिक विवाद एक तथ्य ही प्रस्तुत करेगा। और साहित्य जगत मे अह अहमिका की भावना भी साहित्य को वास्तविक रूप प्रदान करेगी। विद्वानो की दो चार बाते वाग्विलास के अन्तर्गत मान ली जाती है।

\+ \+ \+

इस ग्रन्थ के प्रकाशन काल मे मेरा सयोग घुणाक्षर न्याय से या यो कहिये सौभाग्य से प्राप्त हुआ। मै उन मनिषियो को नही भूल रहा हू जिन लोगो ने आशीर्वाद और शुभ प्रेरणा दी है। इससे मेरी हार्दिक इच्छा की ही पूर्ति हुई।

आदरणीय प्रोफेसर साहब की आन्तरिक इच्छा, कि मै सहयोग दूँ, साथ ही आदरणीय ब्रह्मचारी जी का निश्छल स्नेह पाकर इलाहाबाद मे रुकना पडा। हलाकि ग्रन्थ प्रकाशन मे मेरा अस्तित्व प्रयागराज मे गगा यमुना के बीच सरस्वती के समान है—फिर भी इन मनिषियो के मैत्री भाव ने जो कुछ दिया सभव है उनका गुरुत्व इतना न दे पाता। इसमे सदेह नही, कि साहित्य को देखने की एक नई दृष्टि मिली।

अन्त मे विद्वानो तथा सहृदय सुन्दर साथ से निवेदन है कि बीतक का प्रकाशन बहुत ही सावधानी के साथ किया गया है। अन्तिम प्रूफ प्रोफेसर साहब नियमित देख लिया करते थे और श्री ब्रह्मचारी जी भी, फिर भी त्रुटि रह गई हो तो मेरी ही कमजोरी समझे। क्योंकि मेरे ऊपर दोनो ही माहानुभावो का बहुत विश्वास था। भूल के लिये आदरणीय उभय महानुभाव तथा समस्त विज्ञ पाठकों से क्षमायाचना करता हू।

दो शब्द

श्री प्राणनाथ सतगुरु से, यही विनय शिरनाय।
सहन शक्ति दे उपकार मे, तदपि विघ्न अति आय॥

बीतक का प्रकाशन मेरी चिर सचित लघु इच्छा की दूसरी साकार प्रतिमा है। वैसे तो महापुरुषो की वाणी खुद ही जीवंत और सशक्त है। यहा सर्व साधारण बोध गम्य से मेरा आशय है। 'ईश्वरेच्छा बलीयसी' के अनुसार प्रकाशन कार्य मे विलम्ब होने पर भी मै अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को न छिपा सका।

बीतक साहब के प्रकाशन मे मुझे सर्वत पूर्ण सहयोग मिला। श्री महामंगलपुरी के वर्तमान आचार्य श्रीमंगलदासजी महाराजजी का आशीर्वाद, प्रो० जायसवालजी का साहित्यानुराग, उदार दिल श्री सेठ वलभजी लालजी एवं श्री सेठ मणिलालजी कुवरजी बाकुडा वालो का धर्म प्रेम और द्रव्यदान तथा पं० श्री देवकृष्णशर्मा शास्त्रीजी का संपादन मे पूर्ण सहयोग तथा सर्व सुन्दर साथ की शुभेच्छा साथ ही "स्वामी श्रीलालदासजी" की अद्वितीय कीर्ति "बीतक" जनसाधारण के सम्मुख रखते हुए उपर्युक्त समस्त महानुभावो से पुनः इस प्रकार सहयोग पाने की आशा मे :—

आपका

मोहन प्रणामी

विषय-अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ संख्या
भूमिका	...	१
विचार वीथिका	...	३६
दो शब्द	...	४२
सतयुग के राजा	...	१
त्रेतायुग के राजा	...	२
द्वापरयुग के राजा	...	३
कलियुग के राजा	...	८
श्री देवचद्रजी की बीतक	...	८
श्री निजानन्दजी की परमतत्व जिज्ञासा	...	७
(१) श्री देवचद्रजी को प्रथम दर्शन	...	१०
श्री देवचन्द्रजी की कच्छ मे खोज	...	१५
बाल मूकुन्द द्वारा श्री देवचदजी का परिचय	...	२३
(२) ब्रज दर्शन घुघरी का प्रसाद	...	२७
नौतनपुरी आगमन भागवत-श्रवण	...	३०
(३) कसनी कृष्ण-दर्शन, गागजी जागृत	...	३३
ब्रह्मवासनाओ का आगमन	...	३६
श्री देवचदजी के कुटुम्ब का नाम	...	४२
श्री मेहेराज के कुटुम्ब का नाम	...	४७
धर्म ग्रन्थो की साक्षी	...	५१
दोनो स्वरूपो का मिलाप	...	५३
श्री मेहेराज की तपस्या, गुरु सेवा	...	६०
अरब यात्रा	...	६५
श्री देवचदजी का धाम गमन	...	७२
मत्री-पद तथा प्रबोधपुरी	...	७६
वाणी उतरने के स्थानो का उल्लेख	...	८२
जूनागढ मे हरजी व्यास से भेट	...	८३
श्रीजी का निवृत्तिमय जीवन	...	६१
दीव बन्दर जैराम भाई से भेट तथा उपदेश	...	६८
जैराम भाई को रासका स्मरण कराना	...	६७

विषय

पृष्ठ सख्या

श्रीजी के विरुद्ध फिरगी से शिकायत ...	१००
ठट्ठे मे चिन्तामरण भाई से मूलाकात ...	१०६
चिन्तामरिण भाई को श्रीजी की परख ...	११०
श्री महाप्रभु का लालदास से भेट ...	११३
मसकत बन्दर की बीतक ...	११७
भैरो सेठ से मुलाकात ...	१३२
पुन ठट्ठा आए ...	१३२
नलिया बदर मे धारा भाई से मुलाकात ...	१३६
श्री विहारीजी तथा श्रीजी का वार्तालाप ...	१४४
श्री महामंगलपुरी सूरत का वृत्तान्त ...	१४८
लालदासजी का आगमन ...	१५७
जागनी का कार्य प्रारम्भ ..	१६०
सीदपुर तथा मेडते की बीतक ..	१६३
कतेब का मनन तथा आगे प्रस्थान ...	१७१
दिल्ली की बीतक ...	१७८
हरिद्वार का प्रसग .	१८१
१—रामानुज ...	१८२
२—निमानुज ...	१८३
३—विष्णु श्याम ...	१८४
४—माधवाचार्य ...	१८४
हरिद्वार मे सन्यासियो से संबाद ..	१८५
१—शारदा मठ पश्चिम ...	१८५
२—गोवर्द्धन मठ पूर्व ...	१८६
३—ज्योतिमठ उत्तर ...	१८६
४—शृंगेरी मठ दक्षिण ...	१८६
५—सुमेरु मठ उर्धा ...	१८७
६—पर आतम मठ मूल ...	१८७
७—सहस्रार्कद्युति मठ ...	१८८
सन्यासियो का दीक्षा मत्र ...	१८८
हरिद्वार मे दार्शनिको से चर्चा ...	१९१
षट दर्शन की बिधि ...	१९१
१—न्यायदर्शनी ...	१९२
२—मिमासा दर्शनी ...	१९३

विषय | पृष्ट सख्या

विषय		पृष्ट सख्या
३—साख्य दर्शनी	..	१६४
४—वैशेषिक दर्शनी	..	१६५
५—पाताजल दर्शनी		१६५
६—वेदान्त दर्शनी		१६६
सन्यासी तथा दार्शनिको को उत्तर	..	२००
निजानन्दीय पद्धति	...	२०२
महाप्रभु का हरिद्वार से दिल्ली आगमन	..	२०४
महाप्रभु का दिल्ली मे धार्मिक सत्याग्रह	...	२०७
साथियो मे परियाण	.	२२०
बादशाह से मिलने का निश्चय	..	२२८
मस्जिद मे सनध पाठ	.	२३०
मोमिनो की बादशाह से मुलाकात	.	२३६
श्रीजी का आक्रोश	..	२४७
कुरान की साहेदी	...	२५१
सुदर साथ को धैर्य देना	.	२५४
कामा पपाडी से दिल्ली मे साथियो को समय अनुकूल चलने का सदुपदेश-पत्र	..	२५८
आगे छोटी पत्री वोही पाती मे पुरजी		२५७
अब डिल्ली छोड उदेपुर आए तहाँ की बीतक	...	२८५
बारह जने सत्याग्रहियो का दिल्ली से आना	..	२६०
फेर उहा से आए उदेपुर	...	२६६
महाप्रभु का निरगुण भेष और मदसोर की बीतक	...	३०२
यहाँ से आए सीता मऊ	..	३१२
औरगाबाद मे राजा भावसिंह से मुलाकात	...	३१४
पाच दिन का उल्लेख	....	३३०
लालदास लसकर (ग्वालियर) को गए	...	३४०
आकोट की बीतक	...	३४५
बूढानपुर से आकोट	...	३४६
कापस्तानी रामढेक तथा रामनगर की बीतक	..	३५१
एह बात हरीसिंघ सुनी	...	३५६
गढे की बीतक	...	३७२
मऊ मे श्रीजी की व महाराजा को भेंट का प्रकरण	...	३७८
महाप्रभु श्रीप्राणनाथजी से छत्रसालजी का मिलाप	...	३८०

पद्मावतीपुरी की बीतक

विषय		पृष्ट संख्या
श्री पद्मावतीपुरी की बीतक	...	३९६
अथ मगला चरण	...	४०२
अथ पोहोर पेहेलो सुरू	...	४०९
दूसरे पोहोर की बीतक	..	४२६
तीसरे पोहोर की बीतक	...	४३७
चौथे पोहोर की बीतक	...	४४५
पांचमे पोहोर की बीतक		४५२
छठवे पोहोर की बीतक	...	४६०
सातवा पोहोर की बीतक	...	४६९
आठवा पोहोर की बीतक	...	४७६
दिन आठो पोहोर की	..	४८६
गरमी के दिनो मे	...	४८८

[बीतक का सूत्र]

पेहेले मूल अद्वैत में, मोम जहाँ इसक।
तहाँ प्रेम खद, में भया हुकम हक॥

एह खेल देखन की, इच्छा उपजाई दोए।
अख्यर और सहिअन की, आदि अनादि फल कह्यो सोए॥

ताके तीन तकरार कहे, सो भए तीनों इंड।
ताकी बीतक जुदी जुदी, माया मिथ्या नट-ब्रह्माण्ड॥

स्वामी श्री लालदास जी

। श्री प्राणनाथो विजयते ।

(अथ स्वामी श्री लालदासजी रचित)

बीतक

भविष्य पुरान में, राजा कहे जुग चार ।
ए बचन व्यास[1] के, ताको करो विचार ॥१

सतयुग के र

सत्रह राजा सत जुग में, एक कह्यो राजा क्रत ।
तिन अपनी भुगती, तापर भयो क्रत दत्त ॥२

ता ऊपर अंत भयो, फेर मचकुंदभा होए ।
ता ऊपर भैरवानंद, फेर कम्भो कह्यो सोए ॥३

ता ऊपर आद[2] भयो, फेर हरनाकुस कह्यो नांम ।
ता ऊपर ताके ठोर, प्रहेलाद भयो इस ठांम ॥४

ता ऊपर बल लोचन, तापर बल भोगत ।
इनों अपनी भुगती, लोचन बली इत ॥५

ता ऊपर बानासुर, तापर कपलख्य[3] नांम ।
कपलभा[4] तापर भयो, जरासरी इस ठांम ॥६

१–ह० बचन जो है व्यास के । २–ह० आदि । ३–ह० कपलक्ष । ४–ह० कपलभद्र ।

ता ऊपर धूमरिषी कह्यो, ए सत्रे सत जुग के।
अब कहों त्रेहताए[1] के, उनतीस नाम भए ॥७

त्रेता युग के राजा

प्रथम तो ब्रह्मा भयो, तापर मारीच नांम।
तापर कस्सप[2] भयो, फेर सूरज इस ठांम ॥८
तापर तब छत्र भयो, तापर अखेभा नांम।
ता ऊपर अरणभा, विस्वामित्र इस ठांम ॥९
फेर महामंत्र भयो, तापर भयो चिमंन।
तापर राजा भयो, नाम भद्र उदवंन ॥१०
तापर त्रिसंख भयो, तापर हरीचंद होए।
तापर रोहितासन[3] नाम, मान धाता कह्यो सोए ॥११
फेर राजा सगर भयो, फेर आसामित्र नांम।
ता ऊपर भागीरथ, दलीप जो इस ठांम ॥१२
ता ऊपर रघु भयो, फेर अज इस ठांम।
तापर भयो दसरथ, फेर रामचद्र नांम ॥१३
तापर लव भयो, तापर अंत भांन।
ता ऊपर कइसलखी,[4] तापर बब्बर वांन ॥१४
ता ऊपर सुदरसन, तापर अगिन वरंन।
ए उन्तीस त्रेता मिनें, हुए राजा ऊपर धरंन ॥१५

१—ह० त्रेता। २—ह० कस्यब। ३—ह० रोहितास। ४—ह० कईलखी।

द्वा युग के रा

उनैस भए द्वापर में, इन्द्र नाम प्रथंम ।
तापर भयो चंद्रमां, फेर पूरवा राजा इस ठांम ॥१६
अय राजा तापर भयो, निरमोच्छ तापर होए ।
तापर सातन भयो, चित्र राजा कह्यो सोए ॥१७
तापर विचित्र भयो, तापर भयो व्यास ।
ता ऊपर पांडु[1] भयो, फेर अरजुन राजा आस ॥१८
ता ऊपर अहिवरन कुमार, फेर सेत्र नख नांम ।
ता ऊपर सांतन भयो, बलीवान इस ठांम ॥१६
तापर निरवाण भयो, तापर बली चच्छु[2] होए ।
ता ऊपर परीछित[3] भयो, फेर जनमेजय कह्यो सोए ॥२०
अब कहों बीस कलजुग के, उन्नीस कहे द्वापर ।
उनतीस त्रेता के कहे, सत्रा सतजुग पर ॥२१

कलि के राजा

अब कहों कलजुग के, प्रथम तो जदुनांम ।
ता ऊपर अजेपाल, फेर महीपाल इस ठांम ॥२२
तापर गंद्रपसेंन, बीर बिक्रमा दत्त ।
ता ऊपर बिक्रमाचक्र, फेर भोज कह्यो साबित ॥२३

१—ह० पाडव । २—ह०चक्षु । ३—ह० परीक्षत ।

तापर गौरी पातसाह, सुलतांन अलावदी नांम ।
ता ऊपर नसीरदी, लोढ़ा महमूद इस ठांम ॥२४

तापर बड़ा महमूद, तापर सुरखा होए ।
तामूर लंग ता ऊपर[1], बब्बर कह्यो सोए ॥२५

ता ऊपर हिमाऊं, ता ऊपर अकबर ।
ता ऊपर साह सलेम[2], साहजहां तिन ऊपर ॥२६

ता ऊपर अवरंगजेब, ए कलजुग के नांम ।
आगे अवतार होएगा, बुध कल्की[3] इस ठांम ॥२७

(श्री) मेहेमत कहे ऐ मोमिनो[4], ए सास्त्र कहे यों कर ।
आगे अपनी बीतक, सो लीजो चित्त धर ॥२८

॥ प्रकरण ॥१॥ चौपाई ॥२८॥

श्री देवचंद जी की बीतक

अब कहों फेर के, मूल मिलावे की बीतक ।
जैसी आग्यां हक्की, सो बात बड़ी बुजरक ॥१

पेहेले मूल अद्वैत में, भोम जहाँ इसक ।
तहाँ प्रेम रबद में, भया हुकम हक ॥२

एह खेल देखन की, इच्छा उपजाई दोए ।
अख्यर और सहिअनकी, आदअनादिफल कह्यो सोए॥३

१–ह० तिमर लिंग तापर भयो । २–ह० ता ऊपर सलेमसाह । ३–ह० मेहे कलकी
४–ह० महामति कहे ऐ साथ जी ।

अगर न हित कर सके, अहित तब क्यो करते है,
इनके द्वारा निरपराध, दुख क्यो - भरते है।
इधर लक्ष्य की सिद्धि, उधर है जीवन जाता,
फिर भी देखो, दया - देव मानव कहलाता।
लक्ष्य - सिद्धि - के लिए, अन्य साधन हो-सकते,
और, क्षुधा-भी मनुज, अन्न-द्वारा खो - सकते।
उपकारी मानव ही, मानव हो सकता है,
वही धरा - पर जीव - दुखो को खो - सकता है।
उसको ही कर प्राप्त, देश सु-मुदित होता है,
वही मनुज बस, अन्य-दुखो - मे जो रोता है।
शस्त्र, धनुष, असि, आदि - आततायी के हित है,
दण्ड - व्यवस्था सभी, दुष्ट के अर्थ विहित है।
नही, आज से निरपराध - को मै मारूँगा,
अकिञ्चनो को सता, न मानवता हारूँगा।
वैरसेनि के जगे भाव, ऐसे तब मन - मे,
लखते चले विहार पक्षियो का वे बन - मे।
वातावरण - प्रभाव, हृदय - पर पड जाता है,
अत सिद्धि के लिए मनुज बन - मे आता है।
हुए प्रभावित भूप, इसी - से यह व्रत ठाना,
पक्षी उडते कही, कही - पर चुगते दाना।
जिसे - देख कुछ पूर्व, सभी पशु - पक्षी, भागे,
घूम - रहे अपभीत सभी - वे अब नृप आगे।
मोहक - रूप निहार, जीव तब आगे बढते,
मन - भावो - की छाप, वदन - पर मानो पढते।
पशु - पक्षी, कवि - तुल्य, मनो विज्ञानी - होते,
देख सुखी को सुखी, दुखी को पानी - होते।
आया मन्द - समीर गन्ध - शीतलता - लेकर,
हुए विटप कृतकृत्य, नृपति - को छाया देकर।

एह कथा बहुत है, विस्तार नाहीं सुमार ।
ए पर अब चौथे दिन की, मोमिन करो विचार ॥१३

जब महंमद की, नव सदी बीतक ।
सवा नौ बाकी रहे, दसमी के बुजरक ॥१४

नौ सै नब्बे मास नौ, हुए रसूल को जब ।
रूह-अल्ला मिसल गाजियों, मोमन उतरे तब ॥१५

संवत सोले सै अड़तीसे, आसौ सुद चौदस कों ।
जन्म दिन श्री देवचंद, आए प्रगटे मारवाड़ मों ॥१६

तामें गांव उमर कोट, मतू-मेहेता घर अवतार ।
माता जो कुंवर बाई, कहों ताको विस्तार ॥१७

जब जन्मे मारवाड़ में, घर अति आनन्द नर-नार ।
एह बधाई ब्रह्माण्ड में, त्रेगुन समेत विस्तार ॥१८

आए सुखदाई सबन को, अखड करन हार ।
विस्व वंदे अख्यरलों, सुकें परिछितसों कह्यो विचार ॥१९

श्लोक—देवापिः शंतनोर्भ्राता मरुश्चेक्ष्वाकुवंशजः ।
कलापग्राम आसाते महायोगबलान्वितौ ॥

सतजुग के बीज भूत, इनों बीच रहे विस्तार ।
होवें सब में जाहेर, अखड होवे संसार ॥२०

सोई वेद कतेब में, इने ही लिखी साख ।
और उपनिषद भाग्गवत में, लिखी बानी कै भाख ॥२१

जबको ए ब्रह्मारण्ड, तब के एह बचन ।
जन्म से ले बीतक, जाके सुने पतिजे मन ॥२२

ताके नाम भाषा मिनें, आप अपनें किए सब ।
एक मिलाए खोल दीजिए, एह वस्त पावे तब ॥२३

(सो) सरत कुरान में, लिखी एक सौ बीस बरस ।
चार पांच छठा दिन, तब जाहेर होवे अरस ॥२४

सब सिस्ट[1] सेजदा करे, होवे जाहेर अखंड धांम ।
जो आज नहीं अख्यर को, सो सुध सबे भई तमांम ॥२५

सो दिस्ट[2] सुपन जीव की, नहीं लेखे[3] मिनें लगार ।
सो दिस्ट अखंड सुख में, पोहोंची नूर के पार ॥२६

ए निध जो ल्याइया, रूह-अल्ला चौथे आसमांन
तिनसेती प्रापत भई, त्रेगुन सिस्ट पेहेचांन ॥२७

तिन सरूप की बीतक[4], जन्म से ले कर ।
सो कहों आगे मोमनों, ए चरचा सब ऊपर ॥२८

(इति प्रथम विश्राम)

(श्री निजानन्द जी की परमतत्व जिज्ञासा)

जब वय[5] बरस अग्यार में, तब मन उपज्या ए विचार ।
मैं कौन कहाँ थें आइया, कहाँ मेरो भरतार ॥२९

१–ह० श्रष्ट । २–ह० द्रष्ट । ३–ह० लखी । ४–ह० तीनो सरूपो की बीतक
५–ह० भए ।

पूछत फिरे तिन देस में, कहाँ है परमेस्वर ।
जिन सबकों पैदा किया, सो कहाँ है सब ऊपर ॥३०

कोई कहे वह घट-घट, है व्यापक संसार ।
तब जान्या एह निकट, एही ग्रहों में सार ॥३१

एक देहुरा तहाँ रहे, ताको कहे मूरत पंगल स्यांम[1] ।
आगे इहाँ विराजते, दे परदछिना इस ठांम ॥३२

ले लोटा घर से चले, दंत धावन के काज ।
सुद्ध आकार करके फिरे, ना करें मन में लाज[2] ॥३३

नित्य परदछिना देवहीं, एक पोहर उस ठोर ।
फेर दंडवत करते, नित्य मेहेनत करते अति जोर[3] ॥३४

उस देस में साध संत, आवत नाहीं कोए ।
जल कृष्णीं[4] देख के, इहाँ काहूं न आवन होए ॥३५

एक बेर मतू मेहेता संग, आए थे कच्छ देस[5] ।
तहाँ देहुरे साध बहु, देखे बीच विदेस ॥३६

बात तब की मन में रहे, मैं जाऊं कच्छ में ।
तहाँ जाए के खोज करों, पाऊं परमेस्वर तिनसें ॥३७

घर में खट-पट रहे, नित्य मन में रहे वैराग ।
दुनी सों बैर रहे, उनें देखे लगे आग ॥३८

१–ह० तामे मूरत पिगल स्याम । २–ह० आवे ना मन मे लाज । ३–ह० नित उस परदछिना, देवे एक पोहे.र । फेर दडवत करके, मेहेनत करें अति जोर । ४–ह० कसनी । ५–ह० आऐ-हते परदेस ।

दे सीखापन बहुतक, कर कर थके सब कोए ।
एह फिराए ना फिरे, कहि समझाए सोए ॥३६

(श्री) देवचन्द के मन में, जाऊं कहू विदेस ।
तहाँ जाए के खोज करों, कोई मुझे दे उपदेस ॥४०

पूछत फिरों सब ठोरों, कोई (मुझे) बतावें राह ।
या समें राजा उमर कोट का, ताको बजीर जाए तांह ॥४१

खाँड़ा बिवाहने को, जाता था कच्छ में ।
दो सै असवार एक गाड़ी, उतावले पोहोंचनें ॥४२

सो श्री देवचंदजी ने सुनी, गये पूछने तिनके ।
तिन बजीर ने बातें करी, हम कच्छ जावेंगे ॥४३

तब पूछा उनोंने, क्या अस्वारी तुमारे ।
हम संग क्यों पहोंचोगे, पाऊं प्यादे अस्वारों के ॥४४

तब कह्या (श्री) देवचंद जी, हम चले आवेंगे ।
तब उनने बरजे, जिन आवो संग हमारे ॥४५

तब देवचंदजी विचारिया, मैं काहे पूछों इने ।
पीछे चल्या जाऊंगा, अपने पाऊं से ॥४६

घरों जाए के साज को, राह की लेने लगे ।
एक थाली कटोरा लोहेडा, और लोटा जल के ॥४७

एक नीमचा कंमर को, और कपड़े पेहेनन कें ।
बकुचा बाँध तैयार, खरची बाँधी तिनमें ॥४८

ले परसाद जब पौंढ़ रहे, पिछला दिन रह्यो घड़ी चार।
वह साथ अस्वार भए, ए करने लगे विचार ॥४६

कंमर बाँधते कछु बेर, ढील हो गई इत।
वे अस्वार चले गये, ए पीछे चले जाएं तित ॥५०

चले अति उतावले, मन में पोहोंचों धाए।
वे अस्वार ए प्यादे, क्यों कर पोहोंचो जाए ॥५१

यों करते चले गये, बीच पड़ी आए रात।
ए मुलक रेतीय का, ए किनसों करे बात ॥५२

एक ढेर वाउ से, उठाए धरे दूजी ठौर।
फेर तहाँ वाउ लगे, उठाए खड़ा करे तरफ और ॥५३

वहाँ चीला[1] राह न पाइए, भय चोरों का जोर।
एक दोए निभय ना सके, है इनभाँत का ठौर ॥५४

वय-बालक मन देहेसत, पेट में उठा दरद।
ना जानें आगे पीछें, है कौन जागा सरहद ॥५५

[श्री देवचन्द्र जी को प्रथम दर्शन]

यों करते चले जाते, एक सखस दिआ दीदार।
तब बड़ी देहेसत भई, ऐसो आयो विचार ॥५६

ए चोर मोकों मारेगो, नाहीं बचने का ठौर।
मेरा कछु ना चलहीं, मुझ गई दिस और ॥५७

१—ह० तहाँ चले राह न पाइए, चीला—चीलो (गु०) = लीक

इतने में आए गया, होए गई मुलाकात।
देखत हीं देहसत भई, वह करने लगा बात ॥५८

एह भेष सिपाही का, कंमर कटारी तरवार।
मुह दाढ़ी हाथ बरछी, ऐसो भेष ल्याउन हार ॥५९

मुख ते आए वचन कहे, छोड़ कंमर तरवार।
मुँह-मूंदा देहसत से, कछु न आया विचार ॥६०

तुरत तलवार छोड़के, दई हाथ में चोर[1]।
कह्या छोड तूं गाँठडी, दई बात दिल जोर[2] ॥६१

तब जान्या मुझे मारेगा, उनने कहे सुकंन।
बिछाए पिछोरी सुलाइया, तब काँपने लगा मंन ॥६२

बरछी हाथ पकड़ के, एक साथल पर दे पाए।
बोझ दिया सरीर का, यों कर पूछी जाए ॥६३

दरद भया कछू हलका, सूल पेट का था जोर।
(श्री) देवचंद जी उत्तर दिया, कछुक रहा और ठौर ॥६४

फेर दूसरी जाँघमूल में, दे पाऊं खड़े रहे।
बोझ दिया सरीर का, बोझ बरछी पर दे[3]. ॥६५

फेर पूछा क्या खबर है, सूल मिट्या आकार।
तब उठ खड़े हुए देवचंद, ऐसा किया विचार ॥६६

१—ह० दे हाथ में श्रीराज। २—ह० ए बात देखी इनकाज। ३—ह० इन सरीर पर दे।

पछेड़ी कंमर बंधाए के, बोझ बाँध्या अपनी पीठ पर।
तब जान्या देवचंदजी कुं मारे नहीं क्योंए कर ॥६७
दे बंदी खाने करके[1], करेगा गुलांम।
मारने से तो बच्या, अब क्या करावे कांम ॥६८
मिल दोउ इहां से चले, रव में अति जोर[2]।
लगे बातां लोकीकपूछने, है कोंन तुमारा ठौर ॥६९
नाम माता को पूछत, और कुटुंम परवार।
ताकों उत्तर देत हैं, चले जाएं तिन लार ॥७०
(श्री) देवचंद उत्तर दिआ, रहे उमर कोट के गांम[3]।
मतू मेहेताजी पिता, करें सौदागरी का कांम ॥७१
फेर खबर देस की, पूछने लगे सुकंन।
कोंन राजा तुम देसका, कैसा ताको चलंन ॥७२
कोंन बजीर ताको रहे, क्यों कर चलत बेहेवार।
कै ऐसी बातें लोकीक, एही पूछे विचार ॥७३
यों करते पूछत चले, पंथ करते जाए।
रात रही थोड़ी बाकी, साथ कों पोंहोंचे धाए ॥७४
उस जागा खड़े रहे, पछेड़ी छुड़ाई कंमर सें।
अपनी पीठ पर गांठड़ी, दई देवचंद को इन समें ॥७५

१—ह० दे बदी खानें रखके। २—ह० रवद करते अतिजोर। रव—फा० रव = प्रवाह। ३—ह० उमरकोट गाम।

दई तरवार छोड़ के, देख ए तेरो साथ।
जो पीछे फेर के देखै, मेरा किननें पकड़ा हाथ ॥७६

वहां तो कछू न देखिए[1] ,कोंन कहां गया ए।
ए तेहेकीक मेरा खावन्द, तब रोए याद करके[2] ॥७७

फेर कें एता विचारिया, मेरे एतो हैं सिर ऊपर।
जहां कहू मैं जाऊंगा, ए छोड़े नहीं क्यों एकर ॥७८

ए तो तेहेकीक हुआ, धनी हैं मेरे हाजर।
भले अब कहां जाएंगे, खोज लेऊं इन पर ॥७९

जब सनमुख चले साथ कों, आवत टोके तिंन।
कोंन है कहां आवत, नाम देवचंद लिया इंन ॥८०

तब ले चलै सिरदार पें, उने पूछे सुकंन।
तुम क्यों आए हमकों मिले, बड़ो अचरज भयो मंन ॥८१

क्यों कर तुम राह पाई, क्यों पोहोंचे सवारों संग।
तब जवाब देवचंद जी दिआ, आए चले जैसे बंग ॥८२

तुमारे पीछे चले आए, कदमों पर धरे कदंम।
पाऊं अपने बल से, चले मारग आए हंम ॥८३

सबों बाडे अचरज पाए के, कह्या खोलो कंमर।
वे पुन डेरा डांड़ा पछाड़ी, कोई था आग जलाउने पर ॥८४

१—ह० वहा तो कछू ना देखिया। २—ह० कियो विलाप याद करते।

उन काइथ सिरदारने, रसोई का किश्रा श्रादर ।
चाहो तो सीधा लेश्रो, या श्राश्रो रसोई पर ॥८५

तब देवचंदजीश्रने, यों कर दिश्रा जवाब ।
मैं श्रपने हाथों करत हों, कह्या काइथ तिनके बाब ॥८६

तो हमारे भंडार सें, सीधा लेश्रो तुंम ।
तब देवचंदजी ने कह्या, घर से सीधा लाए हंम ॥८७

तब काइथ दुख पायके, कही हमारी नहीं खेस ।
हमारी न्याताका ले हम पे, हो तुम हमारे खेस ॥८८

तब सीधा तिन का लिश्रा, करी रसोई तब ।
जो दीदार पाया था[१], ताको रसोईश्रारोगाई सब ॥८९

परसाद लेके पौढ़ रहे, फेरकें उठे जब ।
उठ कें गैल चलन कों, हुए तैयार सब ॥९०

तब उन काइथने, कह्या श्रपने लोकों कों ।
दोए उंट पर श्रसवार, केते सामिल हो उनमों ॥९१

तब उनने उत्तर दिया, के हम हैं जने चार ।
तब कह्या ए पांचमा, सामिल करो श्रसवार ॥९२

इन भांत देवचंद जी, श्राए पोहोंचे कच्छ मिनें ।
श्रपने ठोर लोक गए[२], देवचंदश्रापलगेखोजनें ॥९३

१—ह० जो सरूप को दरसन पायो थो । २—ह० गए लोक श्रपने ठोर श्राप लगे खोज मो ।

मेहेमत कहें ए मोमनो, ए देवचंद की बीतक।
आगें खोज करेंगे, सो बात बुजरक ॥६४

॥ प्रकरण ॥२॥ चौपाई ॥१२४॥

श्री देवचन्दजी की कच्छ में खोज

अबकहों कच्छ देसकी, भए श्री देवचंद जी प्रापत[1] ।
तहां आए खोज करी, सोए बताऊं इत ॥१
लगे खोज करने, देहुरे बैठे जाए ।
चरचा कों उत पूछत, वे प्रतिमाही कों ठेहेराए ॥२
तहां मन माने नहीं, राह न आवें नजर ।
कोई दिन रहे तिन में, फेर उठे खोज ऊपर ॥३
आए खोजे संन्यासी, बड़े दंभ धारी[2] ।
आम पूजें तिनकों, 'आवें खलक सारी ॥४
तहां जाए के खोजया, कहें जानत हैं सब हंम ।
देवें नाम सुमरंन, निस्चे कर ग्रहो तुंम ॥५
और चरचा करें दत्त की, लिया नाम सुमरंन ।
पर दिल में कछू न आवहीं, क्यों ए न पतिजे मंन ॥६
कोइक दिन तहां रहे, फेर चले जागां और ।
बड़े दंभ कनफटे, चले गए तिनके ठौर ॥७

१—ह० आप आए पोहोचे जित । २—ह० डिम्भ धारी ।

वे राजगुरु कहावहीं, बहुत चलें तिनके ।
कच्छ देस ताए मानहीं, जाए पोहोंचे उनमें ॥८

कोईक दिन तिनमें रहे, साख ना होए अन्दर ।
पूंछी चरचा तिन की, कछुए ना परे खबर ॥९

फेर वैरागी कापड़ी में, रहे कोईक दिंन ।
वस्त ना देखी तिनमें, फिरे इन्द्रीवस्य है मंन ॥१०

इन भांत मेहेजद में, मुल्लां की करी सोहोबत ।
तहां कछू न पावहीं, कोईक दिन रहे तित ॥११

और ब्राह्मण भेष कै, और भेष सब ठोर ।
खोजत फिरते रहे, मेहेनत करें जोर ॥१२

फिरते भुज नगर[1], आए तिन सेहेर में ।
तहां हरदास जी रहें, भई सोहोबत तिन सें ॥१३

ओ थे राधा वल्लभी, सेवत कारज आतंम ।
सेवा बंके विहारी की, करें रुखीभाव धरंम[2] ॥१४

रहे तिनके सोहोबत में, सेवा करें लिए प्रेम[3] ।
सांचा देख्या तिनको, सेवत हैं अति नेम ॥१५

जब रुत आवे गरमी की, तब सेवा तिन माफक ।
सरदी रक्खें सब भांत की,[4] आगा समें रुत तक ॥१६

१—ह० फेर भोज नगर । २—प्रा० भगत करे, होए सखी भाव धरम ।
३—ह० देखी सेवा अति प्रेम । ४—ह० ठडक करे सब भात सो ।

जाड़े की रुत मिनें, गरमी का करें इलाज।
अब ए वस्त करों, चाहिए गी मोहें आज ॥१७

अस्नान करते दिन में, दोए चार बखत।
जब रूत पलटे में चाहिए, गरमी सीत होए तित ॥१८

तब इनको स्नान का, फेर फेर बखत होए।
एह सांचवटी देखकें[1], ऐसी करें न कोए ॥१६

इन ठिकानें आए के, आतंम पाया करार।
ए सांचवटी देख के, करने लगे विचार ॥२०

मैं इनकी सेवा करों, वस्त ग्रहों इन सों।
तब लगे सेवा करने, रहे इनकी सोहोवत मों ॥२१

नित्याने चरचा सुने, जाए बैठे सोहोवत।
जब ए मतूमेहेते सुनी, धाए के आए तित ॥२२

नसीहत जो केहेनी हती, सो कहे कहे थके सब।
ए क्योंए माने नहीं, बेजार हुए तब ॥२३

देवचंद जी माया के, क्यों ए नजीक ना जाए।
वह सोहोवत रासन आवहिं, बड़ो दुख पोहोंचाए[2] ॥२४

हरदास जी सेवा करें, मनसा बांचा करंम।
कछू सक न ल्यावहीं, रही आतंम के धरंम ॥२५

१—ह० है साचवटी देख के। २—ह० इनको वह गमे नही, बडो जो दुख पोहोचाए।

हरदासजी सांचे देख के, मैं देउं नाम सुमरंन ।
ऐसो विचार करकें, एक दिल में लियो दिंन' ॥२६

मतूमेहेता विचार करें, क्योंए डारों माया मों ।
तो ए हाथ आवें मेरे, छूटे वैराग इनसों ॥२७

एक ठोर नातो करके[1], ब्याह को धरायो दिंन ।
वही दिन था उत्तम, लेंने नाम सुमरंन ॥२८

मारग राधा वल्लभीके, लेंने नाम सुमरंन ।
भद्र भेष होत हैं, देवचन्द विचार किया मंन ॥२६

हरिदासजी ए पूछया, तुमको नाम सुमरंन देवें आज ।
भद्र भेष होए आवो, तो होए तुमारा काज ॥३०

तब ही भद्र भेष होए कर, आए कें बैठे पास ।
पूंछया नाम काहू का लिया हे, कह्या सन्यासी कर विस्वास ॥३१

कह्या सो नाम सुमरंन, चिठी में लिखकर ।
रोटी में चिठी वाय के, देओ सन्यासी को यों कर ॥३२

तब देवचन्द ए कह्या, तिनसे कछू न होए ।
जो नाम जोरावर, क्यों कर निकसे सोए ॥३३

जो नाम तुमारा जोरावर, तो ओ आपें होवें दूर ।
एतो अर्थ ऊपर का, ए आम का मजकूर ॥३४

१—एक ठौर सगाई करके ।

इन चरचा हरिदास जी, बडोज पायो सुख[1] ।
दिछ्या नाम सुमरंन, देख्या सरूप सनमुख ॥३५

भजमन कुंज-विहारी, जो है नित्य विलास[2] ।
यही राखो तुम दिल में, सुमिरो कर विस्वास ॥३६

भाव अस्त्री होए भजिए[3] , उपदेसं करके ए ।
बिदा दै तिन घर कों, देख्या मतूमेहेते ए ॥३७

भद्र भेष देख कें, करने लगे सोर ।
ए कैंसों काम कियो, चाहिए सिनगार इसठौर ॥३८

रोए-पीट दुःख पाए के, खीज डराए कहे सुकंन ।
देवचंद जी उत्तर दिया, तुम क्या चाहो इन तंन[4] ॥३९

मैं ब्याह करना था जिनसों, किया है तिन सों ।
मैं तो तुमको बरजया, मेरे काम नहीं इन माया मों ॥४०

ऐसे में ब्याह भया, खट-पट नित्य होए ।
देवचंद जी हरदास की, सेवा करत हैं सोए ॥४१

रहें सोहोबत हरदास की, दोए पहर रात लगे ।
चरचा किरंतन में, गुजरान करते ए ॥४२

रहें एक पहर घर अपने, पिछली रात रहे जब पोहोर ।
तब हरदास के मंदिर परदछिना, देवे मेहेनत जोर ॥४३

१—ह० बडो जो पायो सुख । २—ह० भंजो मन श्री वृन्दावन, कुन्ज बिहारी नित्य विलास । ३—ह० सखी भाव होए भजिए । ४—ह० तुम क्या चाहत हो दिन ।

एक दिवस हरदास जी, उठे थे देह कारज ।
ऊपरझरोखें सें देख्या, कह्याकोंनफिरतकोंनगरज ।।४४

रात एक पिछली पहर है, एह घर के पीछे फिरत ।
ए कोंन सखस आयो कहां, रहे देख कें तित ।।४५

तब हरदास जी टोकया, कोंन सखस हो तुंम ।
तब देवचंद जी उत्तर दिया, इत आए हैं हंम ।।४६

स्वरपहिचानियांहरदासजी,आएदेवचंदजीतुमकित।
खोल द्वार भीतर लिए[1], तुम क्योंआए इसबखत।।४७

तब जवाब देवचंद जी दिया, सुनिये आप वचंन ।
रात खबर मोहे ना रही, मैं जान्या उग्या दिंन ।।४८

सेवा करें ना जनावहीं, अपनी आतंम के कारंन ।
देखावें नहीं काहू कों, समझावते अपना मंन ।।४९

हरदासजी यों ही जानिया, है माफक परवांन ।
ए नित्य परदछिना देवहीं, दिन की सेवा करें जांन ।।५०

एक दिवस हरदासजी, थे सेवा मिनें हुसियार ।
आगे देवचन्द जी, बैठे थे खबरदार ।।५१

तब एक सखस कों, मारा बिछी ने जोर ।
तिनके आकार में चेतंन, कछू ना रही इस ठौर ।।५२

४—हू० खोल द्वार घर मे लिया ।

तन पर सुन्दर परिधान सुशोभित होते,
मँडराते मुख-पर भ्रमर सुलोभित होते।
कंकरण, खन खन कर रहे, मञ्जु कर हिलता,
उसका आगम-आभास स्वय यो मिलता।
गौरव से भरती धरा, पॉव, जब पडते,
भू-को दे अपनी छाप, अगाडी बढते।
वह इधर उधर अवलोक, चली जाती थी,
अह, हेमलता-सी लहर, भली-जाती थी।
वह देवलोक - की कान्ति, गमकती-फिरती,
उपवन-घन मे, दामिनी, दमकती-घिरती।
भैमी-की थी यह नित्य भ्रमरण-की बेला,
करती वह विधु-सी वहॉ पवित्र-उजेला।

"हे सखी ! तनिक वह लता-कुञ्ज तो देखो,
पत्रो-से आवृत, कुसुम-पुञ्ज तो देखो ।
उभरे ये स्तन, तारुण्य लता पर छाया,
उसने यद्यपि यह अङ्ग सयत्न छिपाया।
पर, छिपा-सकी वह कहॉ फूट-सा पडता,
पाकर यौवन मकरन्द, आप-ही झरता।
तुम भी ऑचल-मे छिपा-रही कुछ दीखा,
क्या-तुमने यह आवरण लता-से सीखा।
तुम कुशल रही, जो छिपा सकी हो पूरा,
रह गया, लता-आवरण परन्तु अधूरा ।
मुस्करा पडी तुम ! देखो, लता खिली वह,
इससे मधुपो-की भीड, समोद मिली वह।
मुँहजले मधुप, मकरन्द-पान करते हैं,
चख रहे लता-सौन्दर्य, गान करते हैं।

जब हो अशेष मकरन्द, पुष्प-मुरझाये,
फटी आँखो तब लता न इनको भाये।
यह है पौरुष-का हाल विश्व-मे आली,
कह-रही यही वह, शुष्क सुमन-की डाली।
केशिनी हुई चुप, नेत्र उधर प्रेरित-कर,
अमिताभा छिटकी इधर भीमजा-मुख पर।"

"केशिनी न है यह बात, तुम्हे क्या सूझा,
पौरुष-का कुछ भद्रत्व न समझा-बूझा।
रजनी-भर मुँदता कभी अली, फलो मे,
बिध-जाता, कभी निरीह अली शूलो-मे।
अपने प्राणो पर खेल, लता को पाता,
करता है इसको मुग्ध, गीत-मधु गाता।
पाकर अलि का सर्वस्व, स्वरस ये देती,
यह क्या-देना ! जो मात्र परस ये देती।
देखो, अलि का भद्रत्व, लता-को छूना—
कर देना उसे प्रफुल्ल, स्वय से दूना।
सखि ! दिन दिन लता-विकास चाहते, ये-तो,
मधु लता-वदन-पर हास चाहते ये-तो।
करते है ये कब हानि पुष्प खिलने मे,
अलि होते-पीडित-सदय, लता-हिलने मे।
ले, स्वरस-मात्र, गौरव प्रदान करते है,
अपना सब स्नेह उँडेल उसे भरते है।
क्या-काम आय मकरन्द ! न यदि ये लेवे,
है व्यर्थ-लता-सौन्दर्य, न यदि ये सेवें।"

"सचमुच सुन्दर दमयन्ति ! तुम्हारा कहना,
पर, यो पौरुष-अनुरक्त तुम्हारा रहना।

[बाल मुकुन्द द्वारा श्री देवचंदजी का परिचय]

हरदासजी एक दिन, निको ठेहेराए कर ।
बाल मुकुंदजीपधराओ, तुम सेओ अपने घर[1] ॥१

ता दिन जो देखे सेवा में, समें प्रात कालके ।
सरूप तहां देखे नहीं, लगे तहां ढूंढने ए ॥२

सरूप कहीं न पावहीं, भए हरदासजी दलगीर ।
सिंघासन सेज पर, पावत नाहीं क्यों ए कर[2] ॥३

लगे पूछने घर में, इहां तो कोई आया नाहें ।
जवाब दिया तिनोंने, इहांकिनकी ताकतजोआए ॥४

हरदासजी विस्मए भए, सेवा बिहारीजीकी कर ।
बालमकुंदजीको ढूंढत, पूछत पस हुए यों कर ॥५

इन समें आए पोहोंचे, देवचंद जी घर सें ।
ए हकीकत सुनकें, दलगीर हुए मन में ॥६

और हरदासजी सों, लगे बातां करने ।
एह चिन्ता तुम जिन करो, भई चूक हमसे ॥७

तुम तो हमको दे चुके, वस्त आईथी हम पास ।
एह भई चूक हमारी, जो टूटी हमारी आस ॥८

१—ह० या समे हरदास जी, दिन नीको ठहराए कर । कह्या बाल मकुन्दजी पधराओ, तुम सेवो अपने घर ॥ २—ह० सेज सिंघासन पर, ढूढ थके सब ठौर ।

हरदासजी माने नहीं, परसाद ना लेऊं लगार ।
जब दरसन करों, तब मोहे होए करार ॥९

विहारी जी कों दोए बेर, बाल भोगराज भोग[1] ।
आरोगाए[2] बाल गोपालको, करदियो संजोग ॥१०
घर में सब लोकने, और हरदास जी ने ।
करने लगे सब एकादसी, देवचंदजी तिन समें ॥११
परसाद न लिया घर में, भया बितीत दिंन ।
इहां-हरदासजी बैठे हते, दुख पायाअति मंन ॥१२
यों करते मध्य रात, भई बितीत जब ।
हरदासजी बैठे हते, कछु आंख जो मिली तब ॥१३
तहां आए बाल मकुंदजी, साख्यातदियादरसंन ।
अरे-प्रभुजी तुमकहां हते[3] ,हम ढूंढत कलपेमंन॥१४
हम तो वहां बैठे थे, तो क्यों न दिया दीदार[4] ।
कह्या तुम मोकोंपधरावते, देवचंदजी के द्वार[5] ॥१५
सो तोकों इन सरूप की, भई नहीं पेहेचांन ।
मैं इनकी सेवा न सेहेसकूं, ना सेहेसकूं आसान ॥१६
दलगीर होए देवचंदजी, एह बात सुनके ।
तोवस्तर सेवा दीजियो, तुम मोहेना दीजो ए॥१७

१--ह० विहारीजी को अरोगाए, दोउ बाल भोग राज भोग । २--ह० आरोगने ।
३--ह० अहो प्रभजी तुम कहा गए ते । ४--ह० कह्या हम तो उत ही बैठे थे,
तो तुम क्यो न दिया दरसान । ५--ह० देवचदजी के द्वारन ।

पद-पद पर 'कर-गत' समझ भीमजा-पीछे—
जाती, लाता हो हस, उसे ज्यो-खीचे ।
वह छाया की ही भाँति, चली-जाती थी,
कर, बार बार भी यत्न, छली-जाती थी ।
पर, होती थी न निराश, न धीरज हारा,
सोचा, पद-पद पर सफल कि, श्रम अब सारा ।
भैमी - के मुख-पर जगे स्वेद - कण ऐसे,
प्रात कमलो-पर लगे, ओस-कण जैसे ।
चलते, चलते, खग पहुँच-गया निर्जन-मे,
तरु-गुल्म-लता से पूर्ण, सघन-उपवन-मे ।
अब, श्वास तीव्र चल रहा, थकित थी बाला,
इस खग-कौतुक को देख, चकित थी बाला ।
सहसा जा-बैठा, हस, कूद शाखा-पर,
पानी-सा फेरा, भीम-सुता-आशा-पर ।
करके उसको अति-चकित-सुधा-सी वाणी,
यो, कहने लगा-खगेश, सुनो कल्याणी !
साधारण समझो मुझे न, दिव्य विहग हूँ,
शारदा-अम्ब-को वहन किया, वह खग हूँ ।
क्या-करो, सुमुखि ! तुम व्यर्थ पकड कर, मेरा,
मै, आया था इस ठौर क्षुधा-से प्रेरा ।
सुजनो-को करके प्राप्त सौख्य-मिलता है,
ज्यो-रविकर का पा योग, कमल खिलता है ।
भोजन तो मिलना दूर हुआ अब आकर,
तुम मुझे पकडने चली अरी ! हरसाकर ।
शिशुता ने हो पर विवश किया यह तुमको,
चचलता ने ही भाव दिया यह तुमको ।
अन्यथा, शान्त हो तुम्ही, विचारो मन-मे,
कर गई भूल तुम बडी सुनयने ! क्षण-मे ।

दोऊ जने बातां करते[1], खुसाल होए के मंन ।
आए हरदास के घरों, होए खुसाल रोसंन[2] ॥२७

उत दीदार करकें, परसाद लिया दोनों इत ।
सब घरके लोकों लिया, हुआ प्रात बखत ॥२८

इन भांत भुज नगर में, भई कै भांत बीतक ।
ताकी एक भांत तुमसों कही, है बात बड़ीबुजरक ॥२९

जामा बंके विहारीजी का, दिया सेवन कों ।
देवचंदजी सिर चढ़ाएं के, ल्याए अपने घर मों ॥३०

तहां जाए एक ठौर कों, बनाई नीके कर ।
तहां वासन सेज सिंघासन, तहां पधराए वस्तर ॥३१

लगे सेवा तिन की करनें, करैं अपनी अंग सें ।
चौका पानी रसोई, अंग[3] पछाड़े तिन में ॥३२

जलभरल्यावेंसिरपर,जो काहूंकीपरछाईपड़ेतिनपर ।
तो फेर ल्यावे और जल, रहे पवित्राई ऊपर[4] ॥३३

चावल मूंग घीउ खांड़, करें जुदी राजके काज ।
अपने वास्ते उतरती, जुदा बनावें साज ॥३४

और रसोई विवेकसों, करें नीके कर ।
आकार को परवाह ज्यों, पालत हें योंकर ॥३५

१—ह० दोउ जने बाते करते । २—ह० मगन होए रोसन । ३—ह० देह।
४—ह० सेवा करें यो कर ।

जब इन भांत सेवाकरें, लगेंलीलबाईकोलोककेहेने ।
तुमऐसीस्त्रीघरमेंरहे, देवचंदजीमेहेनतकरेंहाथोंसे॥३६

क्यों ना तू रसोई करत, ना पानी भर ल्यावत जे[१] ।
तुम चौका क्यों ना देवत, चाहिए तोकों सेवा ए ॥३७

तब लीलबाई आए कें, करी एह अरज[२] ।
सब मोकों ताना मारत,मैं टहलकरूंअपनी गरज[३] ॥३८

तब देवचंदजी ने कह्या, तेरो ना एह कांम ।
कबूं तेरो चित्त दुखाए, जल ल्यावतें इस ठांम ॥३९

या और टेहेल करते दुखाए, तोकों नहीं पेहेचान ।
तब सेवा कहां रही[४], ना होवे मेरे समान ॥४०

[दूसरा विश्राम सम्पूर्ण]

ब्रज दर्शन घुघरी का प्रसाद

ना देउं मैं तिस वास्ते, मैं करों अपने अंग ।
मेरे प्रेम सरूप सों, तामें होए भंग ॥४१

सेवा करने ना दई, सब करें अपने हाथ ।
हमेसां चिन्तवन करें, रहे सेवा के साथ ॥४२

इन भांत एक दिन, हुआ सुपने में दरसंन ।
जानों हम ब्रज में गए, द्वार नंद रोसंन ॥४३

१—ह० जल क्यो ना भर ल्यावो तेह । २—ह० तब इत श्री लालबाई ने, करी आए अरज । ३—ह० कहु सेवा अपनी गरज । ४—ह० तब सेवा धरम कहां रह्यो ।

तहां जसोदाजी बैठी थी, ऊपर माची के।
दूध देखे अवटावते[1], टहल जो करते ए ॥४४
तहां देवचंदजी, ठाड़े रहे जाए।
जसोदाजी कहे वचन, मन में महा सुख पाए[2] ॥४५
जसोदाजीएं कह्या, तुम आरोगो देवचंद इत।
तब पूछया देवचंदजी, हैं क्रिस्नजी कित ॥४६
हैं कहां श्री क्रिस्नजी, मैं करों दरसंन।
कही गए बनमें खेलने, कह्या है उत मेरा मंन ॥४७
मिठाई घर सें मंगाए कें, दई देवचंद के हाथ।
वहां ही जाए के आरोगियो, दोउ मिलके साथ ॥४८
तहां आप देवचंदजी, चले तरफ जहां बन।
तहांबाल-गोपालखेलते, कह्यांश्रीक्रिस्नजीहैंकहोतिन॥४९
कौन क्रिस्न जी तुम कहो, खेले टोले टोले लड़के।
क्रिस्नजी नाम बोहोतों का, कह्या बेटानंदकाजे ॥५०
नंद के बेटे क्रिस्न जी, इहां बोहोत रहत।
तुम किनकों कहत हो, जसोदा बेटा इत ॥५१
आईजी का बेटा क्रिस्नजी, ओ है उनटोले खेलत।
तब देवचंदजी तहां चले, देख क्रिस्नजी उठे इत ॥५२
बुलाए लिए देवचंदजी, बैठाए अपने पास।
बातां लगे पूछने, मुख मीठे प्रेम लिए खास ॥५३

१—ह० ओटावत। २—ह० तह आप श्रीदेवचदजी, ठाढे भए जब जाए, कहैं आईजी आओ श्री देवचदजी, मन में महासुख पाए।

उन समें इत घूघरी, पकाई हांडी मों[1] ।
छेड़े दोएलड़कोंरूमालके[2],पानी निकालने तिनसों॥५४

देवचंदजी मिठाई को, ल्याए थे नंद द्वार सें ।
तिन को ले आगे धरी, दई लड़कोंको बांटने ॥५५

कह्याकिस्नजीएं एबांटदेओ,देओहमको दोबाटोंके।
दई तिन लड़के नें, दोउ भाग इन के जे ॥५६

और सामा सब के, हिस्से दिए दोए ।
देवचंदजीआपआरोगहीं, फिर सपनेसेजागे सोए[3]॥५७

तब इनका विचार कर, तेहेकीक किया मन में ।
हमारा खावंद एही है, चित्त बांधा इन सरूप सें॥५८

आरोगावने लगे इनकों, दिलमें करी बिसवास ।
दिल में एही उपजी, ब्रज लीला की रही आस॥५९

कोइक दिन इन भांत सें, हुआ है गुजरान ।
इन भांत कई बीतकें, कहां लों कहों पेहेचान ॥६०

मेहेमत कहे ऐ मोमिन, एतिन कहे बयांन[4] ।
देवचंद के सरूप की, नेक कही पेहेचांन ॥६१

॥ प्रकरण ॥४॥ चौपाई ॥२५३॥

१—ह० भाजनमो । २—ह० छेडे दोउ छठके ले रुमाल । ३—ह० ध्यान से चौके सोए । ४—ह० ए इतके कहे बयान ।

हालार आगमन भागवत-

अब इहां से आए, बीच हालार देस ।
तहां नौतन पुरी मिनें, बोहोत जमा भए खेस ॥१

इत मां बाप आए रहे, उतवल्लभीमारग था जोर ।
तिनसेती रबद रहे, वे करने लगे सोर ॥२

तहां स्यामजी के देवल मिनें, कथा कहे कान्हजीभट ।
निस्टा ले सुनने लगे, होएवल्लभीओं से खट-पट ॥३

जलपान को तब करें, जब आहार देवें आतंम ।
तब आहार आकार कों, देवें ना करें कंम ॥४

जो कदी एक दोए स्लोक, आगे बांचे होए इंन ।
तो फेर पुस्तक छोड़ाए के[1] , फेर वेहीसुनेवचंन ॥५

ऐसा जान तिन भटने, तौलौं न खोलत पुस्तक ।
जोलौंदेवचंदजीनआवहीं, और बात न करें बुजरक॥६

रहे स्रोता सेहेर के चौधरी, और बड़े साहूकार ।
सोमारगवल्लभी मिनें, होतखटपट हमेसां बेहेवार॥७

भटकोएकदिनपूछिया, है क्याकाएथसे रोजगार[2] ।
जबलौं ओ न आवत, तोलौं तुम करतनहींउच्चार॥८

१—ह० फेर पुस्तक मगाए के । २—ह० तुमारा इनसे क्या है रुजगार ।

तब कान्हजी कह्या, मुझे न काहू की आस।
मैं आगेबांचतस्यामजीएके, केसुने एकाएथखास[1] ॥९

मोहे प्रापततोकहिएतुमसे, होएक्या इन गरीबसें।
पर तुम मोहे कबूं पूछत, आगे पीछे स्लोककहोंमें ॥१०

मैं एक स्लोक आगे कहों, जो ए हाजर न होए[2]।
तोघरों जाए फिर पूछत, पुस्तक छोड़ावत सोए ॥११

तिसवास्ते इन आए सें, मैं करत उच्चार।
मैंकाहूकीआसनाकरों, मोहेचाहिए न कार बेहेवार॥१२

तब सबों मोगें रहें, बोल न सक्या कोए।
कथा सुन पीछे फिरे, धरे रोस मनमें सोए[3] ॥१३

छेद्र को ढूंढत रहे, रहे बाहेर द्रस्ट अहंकार।
मारग कों पावें नहीं, रहें खद कों तैयार ॥१४

औरदेवचंदजीकेप्रणरहे,नाहोए द्वादसीकोभागवत।
तादिनआपएकादसीकरें[4],आजआहरनपाया आतमइत॥

ए तो भांड़ा आहार का, क्यों कर देउं आकार।
भागवत नेस्टा बंध, रहे याही को विचार ॥१६

एह बात उन लोकों ने, सुनी अपने कान।
ए आहारएकादसीकोकरें, बारसउपास रहेंजान ॥१७

१-ह० सुने श्री देवचदजी खास। २—ह० कबहू ए पास न होए। ३—रोसन मन में होए। ४-ह० ता दिन आप उपास करे।

एह निन्दया लेएकें, आप में करने लगे विचार ।
अब दांव हमारा आइया, ए कैसा धरम बेहेवार ॥१८

आए सभा में मिलके, पूछी कांहजी भट सें ।
ऐसाउपेदसतुमदिया, जो परसाद ले एकादसी में ॥१९

करैं बारस को एकादसी, ए कौन सास्त्र बताये ।
यों देवचंदजी करत हैं, सो हमसों कहो समझाये ॥२०

तब कांहजी भट ने, इन भांत दिया उत्तर ।
ओ करत सो समझ के, मैं पूछके देऊं खबर ॥२१

यों करत देवचंदजी, आए विराजे सभा में ।
कांहजी भटें पूछिया, यों देवचंदजी सें ॥२२

करतद्वादसीकोंएकादसी, एकादसीकोकरतआहार ।
मैं तो एह मानी नहीं, देवचंदजी करनहार ॥२३

तब देवचन्दजी उत्तर दिया, यों ही हम करत ।
तिनका अर्थ हमें कहो, हम समझत नहीं इत ॥२४

इतना तो हम जानत, जो भागवत के दरखत ।
ताकी एक डारी कों, कोई विरला पोहोंचत ॥२५

पर तुम पात-पात की रग में, है दरखत विस्तार ।
तहांतुमसबमेंफिरवले, ऐसोऔरनकोनाहींविचार ॥२६

तब देवचन्दजी ने कही, हम लिया ऐसा पंन ।
है भागवतआहारआतंमको, जोलौंसोनपावेमंन ॥२७

साक्षी-हो मेरे द्रुम, सूर्य, शशि, तरु-गण,
ये खिली लतायें, गगन, सरोवर, उपवन।
इस पुण्य-भूमि पर जन्म लिया है मैने,
आर्य्याओ-का सत्सग किया है मैने।
यह सदुपदेश दे रहा, जहाँ कण-कण है,
प्रण के आगे, निस्सार-हीन, जीवन है।
छोडो न अधूरा उसे, कहो जो मुख-से,
साहस को रखना सजग, न डरना दुख-से।
फिर सतियो के पद-चिन्ह कि जिसने देखे,
है बने दु ख भी सौख्य कि जिनके लेखे।
मै करूँ न वे पद-चिन्ह, कलकित उनके,
हाँ, और करूँ दृढ, सती-कीर्ति-पट बुनके।
आ-देखें, अब सब विघ्न मुझे विलमावें,
जीवन-रहते दृढ मुझे स्व-पथ-पर पावें।
हो सकता है निषधेश अनादृत करदे,
पुरुषत्त्व-केन्द्र वे, भले भग-व्रत करदें।
तब विदित अनल-पथ मुझे, सहारा देगा,
हत-भाग्या को वह सदय किनारा देगा।"

"हे भैमि ! समझलो सत्य मिलो, तुम दोनो,
दामिनी-मेघ-से मिले, खिलो तुम दोनो।
जिसने शिव से सयोग किया गिरिजा का,
श्री-हरि, का सुन्दर युग्म, हिमाशु-निशा-का।
उस विधि ने वह अभ्यास, तजा क्या-अपना,
जो हो न चन्द्रिके ! पूर्ण तुम्हारा सपना।
आहा-कितना वह समय मनोहर होगा,
जब नल-कर-मे यह सुमुखि ! कमल-कर होगा।

जब चौद बरस नेस्टा बंध, सुन्यो श्री भागवत जब।
आबेस लीला भई, सब नजरों आई तव ॥२

तब कसनीभईआकारकों, तिन समें इन ठोर।
पर दिल में कछू न आइया, कलि डगाए जोर[१] ॥३

इहां ज्वर आवन लगा, एक लंघन करी दोए।
श्रवन भंग ना करै, कान बुक (बांध) सुनने[२] जाए ॥४

तीन चार पांच भई, ज्वर न छूटे जब।
एह तो जाए सुनने, ए सेवा न छूटे तब ॥५

यों करते दस बारह लौं, लांघन भई जोर।
एक भागवत सुनन का, कछू ना छोड़े ठोर ॥६

मतूमेहेता तबीब कों, बुलाए देखाया हाथ।
तब तबीब ओषद दिया, जतन करो इन साथ ॥७

बाउ लगने ना देओ, जतन करो इन पर।
तव कुंवरबाई कह्या, एह अवै जाए भागवत पर ॥८

तब वैद ओषद कों, इनसे लिया फेर।
इन बाउ से सन्नेपात होए, मैं न आऊं दूजी बेर ॥९

तब मतूमेहेते ने कह्या, करेंगें हम जतंन।
हम क्यों कर जाने देवेंगे, रखना है याको तंन ॥१०

१—ह० दजालें लड़ने लगा जोर। २—ह० कान बांध सुनने आए।

तब देवचंदजी कहा, मैं ना रहों क्योंही कर ।
धरम राखत देह है, जवाब देत इन पर[1] ॥११

वे जवाब यों देत है, देह राखत होए धरंम ।
इनों की मत माया मिनें, आधी न रहे करंम ॥१२

वैद तो तब उठ गया, काढ़ा पिलाया जब ।
हुआ सुनन का, कान मूंद लाठी लेचले तब ॥१३

मतूमेहेता कुंवर बाई, बोहोतक रहे बरज ।
ए कैसेहू माने नहीं, है आतम साधन गरज ॥१४

तब घर में रूंध कमाड़ दे, द्वारे खड़ा मतूमेहेता आप ।
देवचंदजी पुकार हीं, बड़ो दुःख पायो ताप ॥१५

रे मूरखों में रहने का नहीं[2], मेरा देखोगे आकार ।
उत मेरी आतम जाएगी, और नहीं विचार ॥१६

ए क्यों माने नहीं, तब गिरे पिछले पाए ।
खमा खमा माता कहे, गिरे भोम भमरी खाए ॥१७

तब कुंवरबाई बूम दे, गाली दे खोलाए द्वार[3] ।
आकार आंखें फिर गई, कछू न आवे विचार ॥१८

अरे ओ देवचंदजी,. यों पुकार सुनावे कांन ।
ए कछू ना सुनत, ना सके काहू ए पेहेचांन ॥१९

१—ह० जवाब देत यो कर । २—ह० रे मूरखो मे मरने का नही । ३—ह० तब कुंवरबाई सोर करयो, कठिन कहे खोलाया द्वार ।

तुम जाओ सुनने भागवत, भट के बुलाने[1] आए ।
तुमकों कोई ना रोकहीं, चलो पोहोंचाए धाए ॥२०

एक आधा घड़ी पीछें, कछू भए सावचेत ।
तब उठ बैठे भए, मुख हो गया स्वेत[2] ॥२१

जाओ सुनन भागवत[3], कोउ न बरजे तुंम ।
लाठी पकड़ ठाड़े भए, कहो तो पोहोंचावें हंम ॥२२

देवचंदजी बोले नहीं, चले तरफ स्यांम द्वार ।
आए बैठे सभा मिनें, सुनत कान उस्तवार ॥२३

जब भागवत सुनके, फेर के आए घर ।
तब ही चैनज पाइया, ठाड़ा न रहा ज्वर ॥२४

फिर इहां से पथ लिया, होत चली फुरसद ।
दिन दिन चढ़ते गये, एही कसनी की हद ॥२५

दिन दस या ऊपर हुए[4], कथा सुनत हैं कान ।
तहां आए दीदार दिया, तुमको है मेरी पेहेचान ॥२६

वय किसोर अति सुन्दर, सरूप खेला जो वृन्दावन ।
देख देवचंदजी कह्या, जैसी गवाही दे मंन ॥२७

तुम हमारे खावंद, एता जानत हैं हंम ।
गे पेहेचानत हो, कौन कहां से आए तुंम ॥२८

१—ह० बुलउआ । २—ह० सुपेत । ३—ह० जाए श्रवण करो भागव को । ४—ह० दिन दस या पन्द्रह हुएं

इतना हम जानत हैं, हमारे धनी हो तुंम ।
इतना ही तुम जानत, अब बतावें हंम ॥२९

नाम तुमारा बाई सुन्दर, थे[1] तुम ब्रज रास में ।
रहे मनोरथ पीछे, भया तीसरा इंड तिनसें ॥३०

अब साथ बुलाए के, अपने आओ धांम ।
धनी वह साथ कहां है, कह्या में भेजूं तमांम ॥३१

ए भागवत कागद तुमारा, सो तुमें खुले कलांम ।
और कोई न खोल सकें, ए जो खलक आंम ॥३२

अब तुमारे पूंछना होए सो, पूछ लेओ अब तुंम ।
फेर के ऐसी तरह सें, द्रिस्ट न आवें हंम ॥३३

तब पूछा देवचंदजी ने, कहां जाओगे तुंम ।
तुमारे अन्दर आकार में, आए के बैठें हंम ॥३४

तब मोकों कहा पूंछना, ए कहे तारतम बीज वचंन ।
फेर के अद्रस्ट भए, प्रफुल्लित हुआ मंन ॥३५

तबै नजर सत वस्त कों, जाए के पोहोंची धांम ।
ब्रजरास दोउ अखंड़, सुरत पोहोंची तिस्ठांम ॥३६

श्री भागवत सास्त्र की, सब खुल गई नजर ।
विवेक सारी वस्त का, हो गई आतम फजर ॥३७

१—गु० खेले ।

उठके आए आसन, अपने ग्रेहे विसरांम ।
एह बात किनको कहों, को माने इस ठांम ॥३८

एक ठौर कथा में, भाई गांगजी देत सरवंन ।
जब कथा सें उठते, तिन आगे कहे वचंन ॥३९

राह मिनें खड़े होए, चरचा ठाड़े करें दोए ।
पानी भरनेजाएपंनीहारी, फिरआएखड़ेदेखेसोए ॥४०

फेर दूसरी जाए भरने, ए त्योंही ठाड़े कहे वचंन ।
तब वे आपस में बातां करें, याके पाऊं न थके मंन ॥४१

ए चरचा के रस में, देह की ना रखे खबर ।
फेर वे पनीहारी तीसरे, कहे वचन यों कर ॥४२

ए भाई बैठ के, क्यों न बातां करो बनाए ।
कबके तुम ठाड़े हो, हम तीन बेर फेर आए ॥४३

तब जाए सरीर की, बातां आवे याद ।
विचार कहे से दोउ, याद करें बुनियाद ॥४४

यों नित करते रहें, गांगजी भाई देखे वचन ।
एह बात अगाध है, ए कछू अलौकिक रोसन ॥४५

गांगजी भाईए पूछया, हमतुम भागवत सुनते दोए ।
ए प्रस्न तुम कहां से ल्यावत, तुम मोहे बताओ सोए ॥४६

गांगजी भाईको जब देखया, वस्त का पुरा पात्र ।
तब कछू चले बतावते, सत बोए रज मात्र ॥४७

तिन खसवोए से भए, जोर 'जग्यासु जब।
तब कछूक आगे चले, बताया बीतक तब ॥४८

फेर जनम से लेयके, आए नये नगर।
तहां लों सारी बीतक, कहि चले ता ऊपर ॥४६

फेर नए नगर में, ज्यों कर भया दीदार।
सो सारी बताए दई, जो मेहेर परवरदिगार ॥५०

तब बोहोत राजी भए, आए चरचा कों घर।
तहां मंडान होने लगा, बात पसर चली योंकर ॥५१

एक से सुनी दूसरे, तहां से मिल्या साथ।
सोई आवें दीदार को, जाके हकें[1] पकड़े हाथ ॥५२

मेहेमत कहे ऐ मोमिन, ए अपनी बुनियाद।
अब तुमे आगे कहों, ता की करो याद ॥५३

॥ प्रकरण ॥६॥ चौपाई ॥३४१॥

वा ाओं का आगमन

साल नौसे नब्बे मास नौ, हुए रसूल को जब।
रुह अल्ला मिसलगाजियों, मोमिन उतरे तब ॥१

सम्वत सोले सै अड़तीसा, आसो सुदी चौदस में।
जनम दिन देवचंदजी, आए प्रगटे इन समें ॥२

१—ह० धनीएं।

देस मारवाड़ में, उमर कोट है गांम।
मतूमेहता कुंवरबाई, देवचंदजी प्रगटे इन ठांम ॥३

तहां से आए कच्छ देसमें, बीचमहंमददियादीदार।
पोहोंचाए मजल कों, किए खबरदार ॥४

कच्छ देस में आए कें, खोज बड़ी करी।
जबभुज-नगरआएपोहोंचे,तबओहीईलाही[1]उतरी॥५

हरबंस हरदास के, रहें कोइक दिंन।
ता पीछे नौतन पुरी, सुन्याभागवतहोए मगंन ॥६

चौदे बरसलों नेस्टा बंध, बचन ग्रहे सब सार।
चालीस बरसकी उमर में, हकें दिया दीदार ॥७

सुनत भागवत देहुरे, तहां कह्या तारतंम।
तुम आए हो अरस सें, जगाओ अपनीआतंम ॥८

तुम आए ब्रज रास में, फेर तुम आए इत।
रही खेल देखन की, तुमकों इच्छा तित ॥९

तिसवास्ते इंड तीसरा, रच्या तुम कारंन।
ए भागवत तुमकों खुले, तुम्हीं करो रोसंन ॥१०

बुलाएल्याओ सहिअनकों, अपने वतन निज धांम।
इनको इत जगाएं कें, पुरो मनोरथ कांम ॥११

१—ओही ईलाही = अरबी = ईश्वरीय सन्देश।

मोकों फेर ना देखोगे, इन भांत इन नैंन ।
अन्दर तुमारे आऊंगा, पूंछ लेओ अब बैंन ॥१२

हुकम हक सुभानका, मूल श्री देवचंदजी पर ।
खेल देखन को आइया, साथ धाम से उत्तर ॥१३

तिनकों बुलावने, मैं भेजिया तुम कों ।
खेलन में से जगाए के, प्यार करो इन सें ॥१४

संबत सोलसै अड़तीसें, आसो सुदी चतुरदसीकेदिन।
प्रगटे देस मारवाड़ में, गांव उमरकोट उतपंन ॥१५

संबत सत्रह बारोतरे, भादोंमास उजाली पख ।
चतुरदसी बुधबारी, हुए धनी अलख ॥१६

बरस चौंहतर, न्यून, भए एक मास ।
तब सौंप चले मेहेराजकों, उमंत खासल-खास १७

संबत सोल सौ पचोत्तरे, भादोंबदी चौदस नाम ।
पोहोर दिन बार रवि, प्रगटे धनी श्रीधाम ॥१८

संबत सत्रह एक्यावना, सावन बदी चौथ में ।
रात पिछली घड़ी दोए में, आया फिरस्ता धाम सें ॥१९

तीज भई घड़ी रात चौद लौं, उपरान्त भई चौथ ए[1] ।
दोए घड़ी रात बाकी रहो, समें अन्तर ध्यान के[2] ॥२०

१—ह० उपरान्त भई चौथ जब । २—ह० समे अन्तर ध्यान के सब ।

बार था इत सुकर, रहे इत एक दिन।
ता पीछें मंदिर में, पोहोंचाए मोमिन ॥२१

बरस छेहन्तर कम दो मास दस दिंन।
देख्या खेल यहाँ लौं, फिरे तरफ वतंन ॥२२

साथ सोंप्या राज कों, जाहेर में महाराज[१]।
अब हम फिरत धाम को, तुम रहो सावचेत आज ॥२३

महाराजाजी सों कह्या, में देखत हों एक तुम।
तिसवास्ते सब साथ की, सौंप कहत हैं हम ॥२४

अब हुकमें द्वार खोलिया, लिया अपने हाथ हुकंम।
दिल मोमिन के आए कें अरस कर बैठे खसंम ॥२५

अबसाथ अगलें औरबीच के, ओ आखरकीबीतक।
सो सब जाहिर होत हैं, कहावत हुकंम-हक ॥२६

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए मूल इसलाम।
इनों का मजकूर बड़ा है, सो जाहेर किया इमाम॥२७

॥ प्रकरण ७ ॥ चौपाई ॥ ३६७ ॥

श्री देवचंदजी के कुटुम्ब का नाम

पेहेलें कहों श्री देवचन्दजी, कबीले के नाम।
जो कोई कदमों लगे, भए दाखिल दीन इसलाम[२] ॥१

३—ह० मेहेराज। ४—ह० च० निज धाम।

श्लोक देवापिः शंतनोभ्राता मरुश्चेक्ष्वाकुवंशजः ।
कलापग्राम आसाते महायोगबलान्वितौ ॥२

मूल (श्री) देवचन्दजी, उतरे अरस सें ।
वास्तें खास उमंतके, बैठ विहार किया साथ में ॥३

सनमंध जाहेर का, हुआ लील बाई सें ।
सेवा करी सनेह सों, सोभा दई राजें इनें ॥३

तिनके उदर प्रगट भए, बिहारी जी है नांम ।
सफर किया स्त्रीअने, पोहोंची अपने ठांम ॥४

जमुना बहिन कहियत है, थारो मेघो भाई दोए ।
जोरू ठकुरानी थारे की, नागजी बेटा कह्या सोए ॥५

धनीयानी मेघे की, भाईति या को नांम ।
जमुना बाई दीकरी, देवचन्दजी की इस ठांम ॥६

किस्ना स्त्री जोरू, बिहारी जी की होए[1] ।
नागजी की जोरू, रंग बाई कहि सोए ॥७

एह कबीला लौकिक, औ अलौकिक कहों इत ।
जो कोई ल्याया ईमान, करने कों खिजमत ॥८

कहों बात हरदास की, राधा बल्लभी नांम[2] ।
इनकी पेहेले खिजमत, देवचन्दजी किए कांम ॥९

१—ह० किस्ना स्त्री विहारीजी की, धनयाणी घर जाए। २—ह० प्रथम कहू हरदास की।

जब भई इनें पेहेचान, तब फेर ग्रहे कदंम ।
सुख दिया सेवा मिनें, सोंप दई आतंम ॥१०

माता ब्रिन्दावन की, धनीयाणी हरदास ।
वृन्दावन ईमान ल्याइया, करी सेवा खास ॥११

मूली ब्रिन्दावन की, नातो जोरू खसंम ।
एह आई साथ में, जाग खड़ी आतंम ॥१२

बेटा ब्रिन्दावन का, कह्या नाम नरहर ।
और मां ब्रिन्दाबन की, कछू इनकोभई खबर ॥१३

मेहेमत कहें ए मोमिनो, ए साथ बड़ो विस्तार ।
पर कछूक हुकमें कहों, मेहेर परवरदिगार ॥१४

॥ प्रकरण ८ ॥ चौपाई ॥ ३८२ ॥

(तीसरा विश्राम सम्पूर्ण)

गांगजीभाई के परिवार नाम

पहेलें दीन इसलाम में, गांगजी धरे कदंम[1] ।
सेवा देवचंदजी की, कदंमों सोंपी आतंम ॥१

कहों तिनका कबीला, जो दाखिल इसलांम ।
दीदार देवचंदजी के, खिजमत के किए कांम ॥२

माता गांगजीएअ भाई की, गंगा बाई है नांम ।
श्री देवचंदजी तिनके, किए मनोरथ कांम ॥३

१—ह० गागजी भाई धरे कदम ।

भांण बाई धनयाणी, रहे गांगजी के घर में ।
देवचंदजी की जो सेवा, पूछ करे उनसें ॥४

बेटा कहिए स्यामजी, कछू न बोए ईमांन ।
चरचा सुनता बोहोतक, बिना अंकूर न होए पेहेचांन ॥५

वहु भांण बाई की, अज बाई हे नांम ।
सेवा लई सिर ऊपर, करें हमेसा कांम ॥६

बेटा दूजा मान जी[1], करता था खिजमत ।
गांगजी भाई के वास्तें, हाजर रहेवे इत ॥७

हीर बाई का बेटा, धनजी उनका नांम ।
बहिन जो है बाहाल[2] बाई, ए थे बीच इसलांम ॥८

भौजाई हीर बाई, रहें सेवा में सनमुख ।
कै भांतों सेवा करके, इनों लिए अति सुख ॥९

भाई गोविन्दजी रहें, ना दाखिल दीन इसलांम ।
जुदा रहें सबसें, आवें न किसी कांम ॥१०

जीवराज साथी साथ में, बास्ना बाई तान ।
मां उनकी बछाई, भई पुरी पेहेचांन ॥११

सालो रहे स्यामल, गणेस उनका नांम ।
धणयाणी रहे गोमती, करी सेवा उस ठांम ॥१२

१—मणुजी नुजीमो मनुची मानजी मनजी । २—बालबाई गु० बाहालबाई

हीरबाई की बेटी, जसोदा हैं नांम।
बेटी की बेटी, राज बाई इन ठांम ॥१३

देवर मानबाई का, पारपिओ है नांम।
देवरानी जसोदानी, करें सेवा का कांम ॥१४

दो बेटी स्यामजी की, हर बाई लाड़ बाई।
पावत नित्य दीदार को, आगे खिलौंने सुखदाई॥१५

मानजी का बेटा, सुखबाई की बास्ना।
परखी देवचंद जी ने, जान घर अपना ॥१६

समें (श्री) देवचंदजी, चरचा करते जब।
इत काहू कों बोलने, ताकत ना रेहेवे तब ॥१७

चरचा तामस में करें[1], कहें भाव सबे मुख।
ओ समें उन साथ कों[2], कह्यो न जावे सुख १८

भाव काढ़ देखावहीं, सब चरचा को रूप।
बरनन[3] करें राज कों, सुन्दर रूप अनूप ॥१९

ब्रज रास लीला को, बड़ो देखावत बोझ।
सब्द साखी सास्त्र सब, रहस देखावें कर खोज ॥२०

अंग में बड़ो उमंग, साथ मिलावन कों।
एक नया जो आवत[4], तो उमंग न मावे अंगमों ॥२१

१—ह० च० चरचा जोस मे करै। २—ह० या समे ईन साय को। ३—च० वर्णवन
४—ह० एम कोई जो आवत।

श्री महेराज के कुटुम्ब का नाम

अब कहों कबीला मेहेराजका, जोकरी देवचंदजी मेहेर ।
आवें नहीं हिसाब में, ए जो करी फेर फेर ॥२२

केसो ठाकुर पिता कहियत, माता बाई धंन ।
श्री इन्द्राबतीजी की वास्ना, सोंप्या तन मन धंन ॥२३

अस्त्री घरों फूलबाई, दूजी बाई तेज ।
श्रीजीसाहेब कीसोहोवतें,पायाधाम धनीको सेहेज[1] ॥२४

भाई गोवरधनकह्या, जासों पेहेले देवचंदजी मिलाप ।
भई प्रापत जी साहेब को[2], हकें मेहेर करी आप ॥२५

वास्ना गोवरधन की, गुनवंती बाई नांम ।
और भाई ओधव[3] जी, गोविन्द जी इस ठांम ॥२६

और चतुरभुज कह्या, धनीयाणी पदमा[4] ।
एह आए साथ में, थे कबीले बीच जमा ॥२७

अस्त्री ओधवजीएकी, नाम बाई मांन ।
ए आई साथ में नहीं, कर ना सकी पेहेचांन ॥२८

और भाई स्यामलिया, ए पीछे ल्याया ईमांन ।
सीत बाई सेवा करें, ह प्रेम जी को पेहेचांन ॥२९

१—ह० श्री जी साहेबजी धाम धनी को, इनने पाया सेहेज । २—ह० भई प्रापते श्री मेहेराज को । ३—च० उद्धव । ४—ह० घर धनीयान्नी पदमा ।

और बाई सबीरा, आई साथ मिनें।
प्रेमजी की सोहोवत सें, ए फल पाया इननें ॥३०

विस्ना भाई प्रेमजीए,का, आया न इसलाम में[१]।
पर पाया दीदार, जी साहेब सोहोवत सें ॥३१

और बाई पुर बाई, साथ बेटा पिताम्बर।
बेटे कानजी नानजी,तिनके, हुई फिदा जी साहेब पर[२]॥३२॥

मां कानजी नानजीए की, बाई कही रतन।
आई परना बीच में, कहावत हैं मोमिन ॥३३

हरवंस के घर में, मेघ बाई हैं नांम।
हरख बाई की वास्ना, देवचंद जी कही इस ठांम ॥३४

गोकुलदास चल्या, आया था साथ में।
जी साहेब का कबीला[३], जो लगा था इनसें ॥३५

रहे रुद्रो जूनागढ़ में, था दुकानदार।
करी सेवा देवचंदजी की, जान परवरदिगार[४] ॥३६

काहान जी और थावर, और पदमसी जीवा नांम।
जसोदा और कान्ह बाई, पोहोंचे ए दीन इसलांम ॥३७

डोसा और नेण बाई, मेण और मान बाई।
करी सेवा देवचंदजीअ की, सादी दीदार की पाई ॥३८

१—ह० आया नही साथ मे। २—ह० हुई कुर्बान श्री जी साहेब पर। ३—ह० ए श्री जी का कबीला। ४—जानके धनी निरधार।

एक भाई महावजी, और परोसोत्तम ।
रामजी कोठारीअ के, इनें ज़ान्या महात्तम ॥३६

और जेमल कह्या, और जोरू इनकी ।
ए पीछे आए साथ में, सेवा बिहारीजी की करी ॥४०

और लच्छो काइथनी, ए ल्याई ईमांन ।
चरचा सुनने आवै, ताए भई पेहेचांन[1] ॥४१

नारायण सोनी साथ में, और लीलाधर ।
ए सेवा में आवत, रस पीवत स्रवनों कर ॥४२

भाटिया एक भीमजी, था जोरू समेत ।
ए ल्याया ईमान, चरचा नित्य सुनत ॥४३

मूलजी की धनीयाणी, राई कुंवरबाई नांम ।
तारतम सुन्या तिनने, पुरे मनोरथ कांम ॥४४

गुगलण मां दीकरी, हर बाई नाम तिंन ।
कदमों देवचंदजी के, थी दाखिल मोमिंन ॥४५

दीव में जो साथ है, एक कंसारा जैराम ।
और ज़ोरू इनकी, थी दाखिल दीन इसलांम[2] ॥४६

गणेस और जोरू इनकी, भोजा भाई बाई देवा ।
भोजु मुजो गंगाबाई, इनों करी बड़ी सेवा ॥४७

१—ह० मा ईनें भई पेहेचांन । २—थी दाखिल निज धाम ।

जीओ गंगू गोवाल, इनों सोंपी आतंम ।
ए दीव में का साथ था, जिनों सुन्या तारतंम ॥४८

मूलो पोहोकरन ब्राह्मण, हांस बाई बेहेन ।
चरचा में ए आवत है, श्री देवचंदजी निरखे नैंन ॥४९

और काइथ अखई, रहे नौतन पुरी मिनें ।
मलो प्राग[1] मड़ई मिनें, हरबं।र कबीले समेत अपने॥५०

और दूसरा हरबीर, आया अपने कुटुम्ब परिवार ।
तारतंम सुन्या तिनने, पोहोंचा परवरदिगार ॥५१

राधा बाई सोम बाई, सोमाई मड़ई में ।
और बाई कुंवर, सामिल कबीले सें ॥५२

नाथो जोसी ठठे मिनें, संघ बड़ा माहावजी ए ।
और लाला काइथ, और काइथ धना उसके ॥५३

और साथ बोहोत हैं, गांम सेहेर और ।
मैं थोड़े नाम लिए, इनों कहेजाएंगे आगे' ठौर॥५२

मेहेमत कहे ए मोमिनो, इन मोमिनोंकी सीफत[2] ।
सोतो आगे होएगी[3] , बखत रोज क्यामत ॥५५

॥ प्रकरण ६ ॥ चौपाई ॥ ४३७ ॥

१—प्रागमल्ल मल्लो प्राग । २—ह० इन साथ की सिफत । ३—ह० सो तो आगै वौड़ सी ।

सीपारे बार में मिनें, पाना चौबीस में ।
तपसीर तीन सौ एकके, तुम देखियो तिन सें ॥१

श्री देवचंदजी सरूप कों, हकें दिया तारतम नूर ।
तिनका विस्तार क्यामतें, होएगा बड़ा मजकूर ॥२

मूल वेद-कतेब में, साहेदियां लिखी सबंन ।
सो आए मिली सब इतहीं, ताए मोमिन करे रोसंन ॥३

कागद जो भागवत का, ल्याया सुक मुनी ।
इनका अर्थ ब्रह्मसिस्टी, खोले जांन अपनी ॥४

और कागद ल्याइया, मोहंमद अल्लेहसलांम ।
सो बीतक देवचन्दजी, लिखे अल्लाकलांम ॥५

जनम से आखर लों, जो लों मोमिन पोहोंचे धांम ।
सो सारी हकीकत इनमें, सब पूरे मनोरथ कांम ॥६

एक सौ बीस बरस, करी दज्जाल सों जोर ।
इहां लों इनों से लड़ा, करकें बड़ा सोर ॥७

पेहेली लड़ाई मोहम्मद सों[1], फेर उनके यार ।
ता पीछे देवचन्दजी सें, करी खबर परवरदिगार ॥८

जी साहेब और गिरोह सें, लड्या इन दरम्यान ।
बीच में बिहारी बैठे[2], तहां किया कुफरान ॥९

१—ह० पेहली लड़ाई महमद साहेब सो । २—प्रा० बीच विहारी बेटवे

इन सारों की साहेदी, लिखी अल्लाकलाम ।
सो मोमिन बीतक अपनी, आगे खोलें खलक आंम ॥१०

विरोध सारे विस्वका, भागत इन बीतक ।
सबों को पेहेचान होवहीं, पोहोंचे कदम हक ॥११

सेवें सब मोमिनों को, पेहेचान के निसबत ।
भूलमाने अपनी, बखत हुआ क्यामत ॥१२

सीताबी चारों खूंट में, पसर गई पेहेचांन ।
तब सब कोई दौड़िया, ले लेके ईमांन ॥१३

श्री देवचंदजी (सरूप) की, मूल जनमकी बीतक ।
संबत सोलसौ अड़तीसे, सो सत्रा सौ बावनलौहंक॥१४

मास आसों सुदी चतुर्दसी, इत माह सुदी चौदस ।
बरस एक सौ दस, ऊपर मास चार सरस ॥१५

सो सब में जाहेर भई, छिपी न रही लगार ।
दिन क्यामत इनसें, करी जाहेर परवरदिगार ॥१६

मसरक मगरब सें, दौड़ी आवत खलक ।
ताको नियत माफक, दीदार पावत हक ॥१७

जो जैसा मनोरथ, करत है दिल में ।
पूरन सब होत है, सोहोबत मोमिनों सें ॥१८

मेहेमत कहें ए मोमिनो, एह मेहेर है हक ।
जैसा ईमान जिनको, होत तिन माफक ॥१९

॥ प्रकरण ॥१०॥ चौपाई ॥४७६॥

दोनों स्वरूपों का मिलाप

श्री देवचंदजी के अमल में, साथ कों सुख हुआ अंग।
नित्य चरचा सुनते, मावत नहीं उमंग ॥१

गांगजी भाई सेवहीं, ओच्छव रसोई नित्य॥
नई नई भांतों सेवहीं, हुआ अंग में उमंग इत ॥२

कोई एक नया जो आवहीं, बीच दीन इसलांम।
तो देवचंदजी सुख पावहीं, सो केता कहों इनठांम ॥३

कोई नयासाथी को ल्यावहीं, समझाए के दीन में।
तिन ऊपर राजी होवहीं, क्या नेकी कहों इनसें ॥४

दिलमें साथ आवनका, करे मनोरथ मंन।
आदर होए तिनका, ए धामका मोमिंन ॥५

इन भोम में देखया, साथ धनी श्री धांम।
कौन ब्रत इनसों करें, पुरों मनोरथ कांम ॥६

इनकों राजे भेजिया, देउं धाम न्यामत।
ए कौन भांते सुख पावहीं, सोए करों मैं इत ॥७

एधाम से आए, खेल माया का देखंन।
इनकों खबर कछू नहीं, पर मैं पेहेचानत मोमिंन ॥८

ए पड़े माया मिनें, हो गये परवस।
इनकों समझावनें, कोइ लेवें जस ॥६

मैं बाहेर निकलों, ढूंढ के काढों साथ।
मोकों धाम धनी ने, इनके पकड़ाए हाथ ॥१०
तो ए मेहेनत, मोकों करनी जरूर ।
तिसवास्ते साथ आगें, चरचा का चलावें पूर ॥११
नित्याने चरचा होत हैं, सो केती कहों बीतक ।
साथ रहे नजर में, अग्यां दई मोहे हक ॥१२
अजबाई भतीजी मेघ बाईकी, रहे गांगजीके घरमें।
स्यामजी कों ब्याही थी, हुई बातां इनसें ॥१३
मेघबाई हरबंस के, आवें अज बाई ।
देखेगांगजी के घर में, राजकी मेहेरबानगी आई॥१४
राज नित्य देवैं दीदार, आरोगें बेर तीन ।
वस्ता मांगे आरोगने, आज क्यों फीकीखारीकीन ॥१५
तम्बोल दे आरोगते, और मिठाई कै भांत ।
जमुना जल अलाखल, चल दिखावें एकान्त ॥१६
सहिअन को दे कंचन की, एक दिन कसेंडी दी ।
कोई दिन कछू देवहीं, यों करे नित्य सादी ॥१७
अजबाई बातां करें, दीदार परवर दिगार ।
हम तो नित्य देखत हैं, तुम भी करो दीदार ॥१८
तब मेघ बाई ने कही, जाओ गोवरधन तुम ।
ल्याओ खबर इनकी, तब बुलाए ले जाओ हम ॥१९

पदमावतीस्त्री गोवरधन की, सो पेहेलें गई सोहोवत ।
तिन आए बातां करी, मैं देखी लीला इत ॥२०
तब गोवरधन गया, जाए के लगे कदंम ।
मैं सरन तुमारे आइया, जगावने आतंम ॥२१
संबत सोल सतासीए, एह कातक में मजकूर ।
इहां-सेंती सुरू, उदया मूल अंकूर ॥२२
चुगली खाई कोतवाल से, एक काइथ के घर ।
जोरू मरद बैठत हैं, तुम क्यों न लेत खबर ॥२३
दोए चोवदार पठाई दिए, तुम जाए ल्याओ बात ।
मुझसेंती जाहेर करो, जो कछू होए बिख्यात ॥२४
चुगली दिखाए पिछा फिरा, ए चले जाएं सामें दीपक ।
छेह ना आवे तिनका, जहां लगी सक ॥२५
एक फिरा कुएं पर, चार पहर रात ।
दूजा बारह कोस का, पंथ किए जात ॥२६
जाए निकस्या धरोल में, तहां भई फजर ।
पूछा पनहारी को, कौन गांम देखों नजर ॥२७
कैसी बात कहत हो, के ज्यों होत दीवाना ।
ए सेहेर मोंहवड-जीअ का, तें जान्या अपना ॥२८
खिसियाए पीछें फिरा, फेर के आए घर ।
घर में बड़ी दुचताई भई, लगी लड़ाई लग फजर ॥२९

दोनों के घर में, बड़ा जो पडया सोर ।
एक दूजे को लगे पूछन, कहो खबर कछू ओर ॥३०

फजरकों आए के, दोनों कही बीतक ।
ए चुगलें हमको मारया, ल्याया दिलों सक ॥३१

आए के कोटवालकें यहां, बातां करी बनाए ।
जो चुगल हमको मिले, तो मारों गरदन ताए ॥३२

हमको इन चुगल ने, मार डारत आज ।
जागा ऐसी बताई, 'सूझे न कोई काज ॥३३

इन भांत कई माजजे, कै लाखों दिए निसांन ।
पर साथ को इन समें, कछू ना हुई पेहेचांन ॥३४

संबत सोले पचहत्तरा, भादोंवदी चौदस नांम ।
बाररवी चढ़ते पहर, प्रगटे धनी श्री धांम ॥३५

हालार देस पुरी नौतन, उदर बाई धंन ।
केसो पिता की कहियत, तहां राज उतपंन ॥३६

सब भाई मेले रहत हैं, स्यामल तिनमें सिरदार ।
परबड़ागोबरधनकह्या, जो धामलीलामें खबरदार ॥३७

श्री देवचंद जी पुरी नौतन, आए इहां बसत ।
सेवा गोबरधन करें, पोहोंचा नजीक बखत क्यामत ॥३८

पेहेला मिलाप गोबरधन का, श्री देवचंद जी सें ।
तहां राज दीदार की, चरचा करें घर में ॥३९

तब कह्या गोवरधन को, मोहे ले जाओ तुंम ।
ए मोसों ना होवहीं, विन देवचंद जी के हुकंम ॥४०

तब गोवरधन के, संग चले मेहेराज ।
तहां हाथ छोडाए के गया, तब रोए गिरे इन काज ॥४१

अरज करी गोवरधन ने, श्री देवचंदजी सों आए ।
आज रोए पीछे लगा, तब भाग कें आया धाए ॥४२

तब आग्या दई देवचंदजी, ल्याओ बुलाए मेहेराज ।
बाल वय वस्त आवत, सो होवे पूरण काज ॥४३

ध्रुव को चरन भगवान के, भए पांच बरसों प्रापत।
तिसवास्ते मेहेराज कों, आवने देवो तुम इत ॥४४

तब गोवरधन मेहेराज को, लेकर चला साथ ।
तब आए चरनों लगे, सिरपर धरे हाथ ॥४५

बारह बरस दोए मास[1], ता ऊपर भए दस दिन ।
तब देवचंदजीसों मिले, तब पेहेचाना मोमिन[2] ॥४६

मिलाप श्रीदेवचंदजी का, सोहोबत श्रीजी साहेब ।
संबत सोले सतासीए में, सत्रा सौ बारोत्तरे लों अब ॥४७

संबत सोले सतासीए, मगसर सुदी नौम ।
मिलाप श्री देवचंदजीसों, हुए दाखिल कौम ॥४८

बारह बरस मास दोए, ऊपर भए दिन चार ।
तब (दिलमें) मिलाप की, बातिन हुआ विचार ॥४९

१—ह० बारह बरस महीना दोए । २—ह० उन पेहेचाने मोमिन ।

(आए के चरनों लगे, तवहीं दई निध।
ततखिन हिरदें मिने, आए बैठी जाग्रत बुध) ॥५०
सकुंडल सकुमारके ढूंढनकी,एकान्त होए सुनाई बात।
मूल सरूप उनके हंसत हैं, ओ खेलमें हैं अपनी जात॥५१
तब ए चित्त में ग्रह लई, इसारत उन बखत।
और बीज कुरानको, सो देख्यो देवचंदजी में तित॥५२
खोजीबाई यमनकों, कही रईबाई वासना जात।
तब पूछी जी साहेब ए, क्यों इनमें अपनी बात॥५३
तब देवचंदजीएं कह्या,यामें कोई कोई वासना जांन।
और इनके कुरान में, हैं अपनी पेहेचांन॥५४
हम तो इन कुरान को, बोहोत किया पठन।
पर जाहिरी लोक जो, ना हमको देवैं लेवन॥५५
तुमारे आगे केहेत हों, याके वास्ते सब।
ए बात तुमसे होएगी, लीला आगे होए जब॥५६
और इसारतेंकई धामकी, सो सुनके ग्रह लई तब।
बीज मात्र इन लीला को, सो पाया उस बखत सब॥५७
नित्य यों चरचा सुनत हैं, मिलके दोउ भ्रात।
दोउ प्रेम भीगे रहे, करें मूल निसवतं विख्यात॥५८
घरसें चले दोउ मिलकें, आवें मिलकर साथ।
बांध्यो चित्त अति-हेतसों, दो नाते की बात॥५६

तो एक दिन आए घर में, बड़ा भाई करत स्नान ।
कह्यातुमबिगड़े दोउभाईमिल, भए काम काज से अजान ।।
सो सोहोबत गांगजीअसे, और गुरू सोहोबत ।
दोउ को निकालें सेहेरसें, तब तुम सुधरो इत ।।६१
तब गुस्से हुए दौड़े मारने, मिलकें भाई दोए ।
छिपाए माताने घरमें, आए पिताने सुनी सोए ।।६२
तब कह्या केसो ठाकुर ने, जिनकी तुम चरचा सुनत ।
तिनसुनीकान्हजीभटसें, वांचे स्यामजी केमंदिर जित।।६३
उतहीं चलके तुम सुनो, तब दियो जबाब इन इत ।
जो पूछे ताको दे जवाब, तो हम हमेसां बैठें तित ।।६४
तब पिता ले चले तिनपें, वे बैठे जाए के ताए।
कहीभटकेलड़के कछू पूछत,देओजवाबचितदेआए।।६५
तब पूछी दोउ भाईने, भट कितने गुन के लोक ।
तत्व कहो कितने सही, कितने प्रले अलोक ।।६६
तीन गुनथें चौथो गुन नहीं, पांचथें छठो न तत्व ।
चौदहलोक ते लोक न पन्द्रहों, और प्रलेचार है सत ।।६७
तो कह्यो परब्रह्म रूपजो, सो रहत कौन ठौर ।
कही क्षीरसमुद्र अखेंवटपें, रहे अंगुस्टमात्र न और ।।६८
चौथो गुन ना कह्यो, छठो तत्व ना होए ।
लोक कह्यो नहीं पन्द्रहों, रहे कौन ठोर वह सोए ।।६६

तब भटके सुध बुध गई, कही ए जवाब ब्रह्मासे ना होए।
तब कही तहां पिताने, तुमारेचितआवे करो सोए ॥७०*

या भांत पुरीमें भई, दोउ भाई सों चरचा कई ठोर।
सो बीतक कहां लों कहों, भयो प्रेम दोउ में जोर ॥७१*

बरस चौबीस मास दस, ऊपर भए पांच दिन।
तहां लौं सोहोबत रहे, बीच गिरोह मोमिन ॥७२

संबत सत्रह बारोत्तरे, भादों मास उजाला पख।
चतुरदसी बुधवार की, हुए द्रस्ट अलख ॥७३

रहे लौकिक काम में, थे बजीर के कामदार।
पै लौकिक से जुदे हुए, रहे तरफ परवरदिगार ॥७४

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, जिन पर हुआ मेहेराज।
सो खासलखास उमत है, तन मारडारतहक काज ॥७५

॥प्रकरण॥११॥चौपाई ॥५३१॥

[चौथा विश्राम सम्पूर्ण]

श्री महेराज की तपस्या, गुरु सेवा

तेरह बरस माया मिनें, था ऊपर लोकीक बोझ।
राज तरफ रहत हैं, रमे बीच कौसर हौज ॥१

चरचा नित विचारहीं, मनमें बड़ा विलास।
नित्य प्रति श्रीराजसों, करत विनोद कै हांस ॥२

एक दिन मेहेराज के दिलमें, उपजा एह विचार ।
हम आए हैं अरससे, भेजे हैं परवरदिगार ॥३
तो हमारी हुजत राजसों, कछू ना चलत ।
हम क्यों ना देखें धामकों, अपनी जो बीतक ॥४
श्री देवचंदजी देखत, धाम के निसान ।
सो हमारे आगें कहत हैं, कर देत पेहेचान ॥५
हमारा धनी धामका, क्या तिन सें ऐसा न होए[1] ।
हमे अरस अजीम की, ठौर देखावे सोए ॥६
जो हमारा इत खेल में[2], इतना भी ना चलत ।
तो क्योंकहिए हम धाम के, अपनी ना देखें बीतक इत॥७
पर हममें है ओगुन, है तिसवास्ते अन्तराए ।
जब ओगुन हम काढ़हीं, तब क्यों ना देखें हम ताए ॥८
तिसवास्ते ओगुन कों, ढूंढन लगे जब ।
नजरों जो कोई आइया, काढ़ दिए तब सब ॥९
श्रीदेवचंदजी के आगे, आए अरज करते ए ।
मेरे ओगुन मुझको, काढ़ देओ सब इन्द्रियन के ॥१०
तब देते उत्तर, तुझ में न कोई ओगुन ;
तू निरमल आतमा धामकी, इन्द्रावती उतपन ॥११
फेर अपने दिल में, घरों करते विचार ।
धाम धनी यों कहत हैं, मोहे चलना इन पर ॥१२

१—ह० क्या तिनसे एह ना होए । २—ह० सो हमारा खेल मे ।

सुनत श्री मुख चरचा, श्रीदेवचंद जी की जब ।
चरचा की चरचा, करत साथ आगें सब ॥१३
बचन वरनन करते, लेत अपने सिर ।
एह मोकों कहत हैं, मोहे चलना इनपर ॥१४
एह विचार साथ कों, करके देखावत[1] ।
अपने दिल विचारत, ए मोहे करना इत ॥१५
तिसवास्ते अपने नफस पर[2], करते बड़ा जुलम ।
कसत अपने आकार कों, जगावने आतंम ॥१६
उतरत अहार घटाइया, रहा पैसे भर दोए ।
बल घटा इन्द्रियन को, सूख चला आकार सोए ॥१७
नैंनों नीर झरत हैं, जबलों चरचा धांम ।
रंग जरदी का आइया, और न सूझे कांम ॥१८
ढूंढत फिरे ओगुन को, अंजू रहे मेरे और ।
ए मेरे घर में रह्या, पोहोंचाऊं हादी के ठौर ॥१९
तब घर के भूषन, कोई रह्या स्त्री के पास ।
सो भी चित में ओगुन, आया दिल में खास ॥२०
तिनकों भी कांढ़ कें, अरज करें आगे हादी ।
तब ओगुन काढ़कें, दिल आवे साहेदी ॥२१
मेरे आगे मन की, मैं देखूं परख ।
बाजार ही में चलते, ए कहूं चले ले हरख ॥२२

१—ह० एह बिचार करकें, साथ को देखावत । २—ह० तिसवास्ते अपने म नपर ।

फेर खंडनी कर मनको[1], खीझें बेहोत बचन ।
अजहूं रहा सरीखा, फिट रे चंडाल मन[2] ॥२३
इन भांत अंग कों, देत कसोटी जोर ।
अरज करते अंग की, चित न हुआ मरोर ॥२४
राह में चलते, सामें आवै यार[3] ।
तो मोहों फिराएकें चलते, जिन बीच परेपरवरदिगार॥२५
तब श्री धाम मोहे आगें, फिर बलया गिरद ।
अपना आप देख्या, किया आकार कों रद ॥२६
तब बहालबाई आयकें, कह्या श्री देवचंदजी ।
मेहेराज के आकारकी, अरज आए करी ॥२७
एक भाई पेहेले चल्या, अब ए हुआ तैयार ।
तुम क्यों न कहत हो, डर ना लगत लगार ॥२८
तब श्री देवचंदजीएं, स्वाल किया मेहेराज ।
क्या है तेरे दिलमें, सो मुझे कहो आज ॥२९
मेरे औगुन मुझको, देखाए देओ तुम ।
तब कह्या मुझकों, क्या पेहेचानत आतम ॥३०
ब्रजकी बातें सुनते, पानी झरत नैंन ।
तब श्रीदेवचंदजी कहा, क्यों रहे तन सुनते बैंन ॥३१
कहा मेरे आगे धामकी, बातें करो जो तुम ।
तब पानी नैंना झरें, सुख पाऊं इन हुकंम ॥३२

१—ह० परख ऐसी करे मन की । २—ह० अजहू रही सरीखी, मान रे चडाल मन ।
३—ह० कोई सामे मिला यार ।

तब बहालबाई कह्या, क्या पेहेचान, धनी धांम ।
जो बात लोकिक है, तिनसें होवें पूरे मनोरथ कांम ॥३३

जो पेहेचान होवे सरूपकी, तो पलक ना रहेवे नैंन ।
परदछिना फिरता रहे, और मुख ना निकसे बैंन॥३४

जो मुझे देखे धनी धामका, तो पलक न फेरे नैंन।
रात दिन दे परदछिना, और मुख ना निकसे बैंन ॥३५

ए ओगुन नहीं तेरे, क्या कहत ए सुख ।
अगनित देखे ओगुन, कहो ना जाए या मुख ॥३६

श्रीदेवचंदजी पूछया, क्या है तेरे मन में ।
तुम देखो मैं क्यों ना देखहीं, सो क्यों ना होए मुझसें॥३७

एह वस्त हुकम की, सो होवें एक ठौर ।
मोहे उठाओ तुम बैठो, ना होवे जागा और ॥३८

तब चित पिछा पड़या, हुआ मनोरथ भंग ।
फेर के विचार किया, श्रीदेवचंदजी संग ॥३९

इन्हें काम दीजे मायाका, तब पीछें हटे चित ।
कह्या मैं हुकम करत हों, तुम जाओ तित ॥४०

तब गुजरात भेजिया, एक बहाना ले ।
जब चले गुजरात कों, जोस फिरा तित थे ॥४१

मेहेमत कहे ए मोमिनो, सुनियो एह बीतक ।
आगे फेर कहत हों, जो आग्या है हक ॥४२

॥ प्रकरण ॥१२॥ चौपाई ॥५७३॥

अरब

संबत सत्रै सौ तिलोत्तरे मिनें, हुकंम हुआ श्रीराज ।
गांगजी भाई के कामकों, तुम जाओ मेहेराज ॥१

खेता भाई गांगजी का, गया है बरारब ।
पचीस बरस इनको भए, तुम सिताब जाओ अब ॥२

जे ए आवें साथमें, तो सेवा होवे श्री राज ।
तो सोभा होए तुमको, पूरे हुए सब काज ॥३

श्रीदेवचंदजीनें कहा, सो मान लिया हुकंम ।
नाव चलत बरंआरब[1], तामें बैठो तुम ॥४

माह फागुन के बीच में, नाव चले जब ।
सो चालीस दिन में पोहोंचे, बरारब तब[2] ॥५

खेते कों आए मिले, दई पाती हाथ ।
बोहोत सुख पाइया, राखा अपनें साथ ॥६

कारबार बखार का, सारा सौंप दिया ।
तुम नौतन पुरी कों चलो, दुनी बोहोत जमा किया ॥७

तारतम की बातें, सुनाई बोहोतक ।
उनको छाट न लागहीं, सब कही अपनी बीतक ॥८

१—ह० नाव चलत बरारब । २—ह० जाए बरारब तब । विशेष—बरं अरब = बरारब = अरब प्रायद्वीप ।

इनकों उत ले चलो, तो सेवा होए श्रीराज ।
भाई श्रीगांगजी का, इनसें होत है काज ॥९
चार बरस परवारतें, रहे बर आरब जब[१] ।
खेता पोहोंचा अपने ठौर कों, मोंत हुआ तब ॥१०
मालमंता बखार पर, हुई हाकिम की मोहोर ।
एतो रहे बाहेर, किया हाकिम ने जोर ॥११
तब उन हाकिमनें, बुरी करी नजर ।
भागे पिछली रात कों, पहाड़ में भई फजर ॥१२
उहां सेती जायके[२], पोहोंचे सुलतान इमांम ।
फरयाद करी दो मासलों, बीच खेते के कांम ॥१३
जब उतसें पीछे फिरे, एक मिला आरब ।
तिन आगें बीतक कही, तिन लिख दिया तब ॥१४
हिंमत करके कहियो, जब निकले सुलतांन ।
तब छेड़ा पकड़कें, एह सुनाओ कांन ॥१५
मेरे गले में थी, सो मैं डारत हों गले तुम ।
लेऊं हिसाब रोज ईद के, जब होवे हक हुकंम ॥१६
जब चला इमांम निमाजकों, खड़े रहे बीच राहे ।
धाए के दावन झटका, टूट गई. कस ताए ॥१७
था इतमाम जोरावर, सब बरजे सुलतांन ।
ए कहो हकीकत अपनी, मैं सुनों अपने कांन ॥१८

१—ह० रहे बरारब जबं । २—ह० यहा सेती जाए के ।

ला तरवफ या बनी[१], कहो सब तेरी बात ।
तब रुका दिया हाथ में, कहि सब विख्यात ॥१९

मैं अपने गले का बोझ, डारत हों गले तुंम ।
लेऊं हिसाब तुमसें, खुदा के हुकंम ॥२०

जब हाथ तुमारा हाथ में, होवे खुदा कें ।
इन्साला ताला दिन ईदके, तब लेऊं दावन पकड़ कें ॥२१

तब जवाब सुलतांन ने, दिया यों कर इत ।
एह कलाम दुरलभ, है बखत रोज क्यामत ॥२२

छेड़ा झटक अपना, देख तरफ खुदाए ।
एह बानी मोकों कबहूं, मुझे ना सुनाए ॥२३

मैं एता तुमकों ना केहेता, पर मुझपर हुआ जुलंम ।
मैं बोहोत भटका, तब आगे कहा तुंम[२] ॥२४

इंसाल्ल ताला करे, मैं करों तेरा इंसाफ ।
तेरा तुझे दिलाऊं, सब तुझे किआ माफ[३] ॥२५

ओतो गया निमाजकों, ए फिर आए अपनें घर ।
हुआ बखत फजरका, भेजे चोपदार याद कर ॥२६

ल्याओ उस बनिए[४] क़ों, जिन दावन झटका बीच राह ।
इनका हिसाब पेहेलें करों, सो वास्तां खुदाए[५] ॥२७

१—ह० लात खोफ या बनी । २—ह० तब फरियाद करी आगे तुम । ३—ह० कर दिया सब तोहे माफ । ४—ह० सकस । ५—ह० इन का इसाफ पेहेले करो, ए है वास्ता खुदाए ।

चोपदार पुकारत, कौंन वह बनियांन[1] ।
जिन इमाम कों पकड़ा, फरियाद सुनाई कांन ॥२८

जी साहेब खड़े थे, कह्या वह बनिए है हंम[2] ।
दो बाजू दो पकड़ कें, खड़ा किया तले हुकंम[3] ॥२९

पोहोंचे हुजूर इमामके, पूंछी बात हिन्दुस्थान ।
हकीकत पूंछी इसलामकी, यों कर कहे सुलतांन ॥३०

राजी होए बातां करी, तें क्यों फरियाद न करी दीवांन ।
तब बचाया तिन कों, मैं न सुनाई कांन ॥३१

तब वे बोहोत राजी भए, सेखसलाकी करी फरियाद ।
उसी बखत हुकम हुआ, जाहेर उखाडूं बुनियाद ॥३२

सब जोगबाई इनकी[4], सुनत दीजियो तुंम ।
ना तो मार उखाडूं जड़-मूलकी, जो फेरा हुकंम[5] ॥३३

इन भांत लिख करकें, दिया एक चोंपदार ।
आए आगे खड़े रहे, सेखसलाके द्वार ॥३४

कागद दिया हाथ में, करियो इत सिताब ।
हुकंम हुआ मुझकों, इन बनिये के बाब[6] ॥३५

तुरत कुंजी बखार की, और सामा सब ।
काढ़ के हाथों दई, ढील न करी तब ॥३६

१—ह० कोन वह सकस निसान । २—ह० श्री जी आप खड़े हते, कह्या वह सकस हे हम । ३—ह० खड़े किये तले हुकम ।४—ह० सब मताह इन का । ५—ह० जो फेरे मेरा हुकम । ६—ह० इन सकस के बाब ।

सुनी बात देवचंदजी, भेजे बिहारीजी स्यांम ।
पोहोंचे आए बरारब, मुलाकात करी इसठांम ॥३७

तब लेखा दिया हाथ में, पोहोंची सब सामा ।
रोज नामा आगें धरे, जो लिख्या था नामा ॥३८

सब मेहेनत आपनी, कर दिखाई बात ।
पर इनों के मनका कुफर[1] , क्योंए कर ना जात ॥३९

इहां सेती फेरकें, जब आए पुरी नौतन ।
चुगली बाहलबाई करी, सुनाई जाम के कानन[2] ॥४०

संबत सत्रह सौ अठोत्तरे, हुआ ए मजकूर ।
सब सामा गई रावरमें, जिनके लिखी अंकूर ॥४१

इहां सेती फेरकें, गए कला जी पास ।
तहां जाए रुजगार की, दिल में रखी आस ॥४२

कलाजी के पास, रहे बरस दोए ।
या उपरांत गुजरात, आठ महीना रहे सोए ॥४३

फेर आए गुजरात सें, कला से मांगी देओ असीस[3] ।
संबत सत्रै सौ बारोत्तरे, एह पाऊं बगसीस[4] ॥४४

अब मोसे दुनियां का, होए नहीं बेहेवार ।
एक दिल एकान्त में, सेवों परवरदिगार[5] ॥४५

१—ह० पर इनों का कुफर । २—ह० सुनाई हाकिम के कांन । ३—ह० कलापे मागी बकसीस । ४—ह० अब मे पाऊ सीख । ५—ह० सेवो धनी निरधार ।

तब कला (जी ने) कह्या, तेरा है अखतियार ।
जिनें चाहे तिनें सौंप दे[१] , सो चलावे बेहेवार ॥४६

इन समें देवचंदजी, फिरी सुरत निज धांम ।
बुलाए लाओ मेहेराज कों, मेरे हजूर इस ठांम॥४७
आई बाहलबाई बुलावनें, तिनकों दिया जवाब ।
मैं काम छुड़ाए कें, आवत हों सिताब ॥४८

फिर बिहारीजी आइया[२] , मांगी अंबर कस्तूरी ।
सुनी बिहारीजी की बात, दिल बीच धरी ॥४६
मंगाए कस्तूरी अंबर,[३] ले करी हाजर ।
मैं भी कदमों तले, आवत हों फजर ॥५०

अपना कामकाज सब, किया छोड़ने का उदंम ।
मैं इहांसेती फारक होएकें, पोहोंचों जाए[४] कदंम ॥५१
यों करते बिहारीजीएकों, फेर कें भेजा राज ।
तुम सिताबी से[५] , ले आओ मेहेराज ॥५२
वे केहेते सहिअन कों, सिंध की भाषा में ।
मोह मोह कोड़ मंथन, मैं बात करों तिनसें ॥५३
जांन हूंन कोड़ धड़, धड़ धड़ क़ोड़ मथंन ।
मथे मथे कोड़ मोह[६] , मोह मोह कोड़ जिमंन ॥५४

१—ह० जिने जानो बिने सोप देओ । २—ह० आए । ३—ह० मागी कस्तूरी अबर
४—ह० पोहोचो आए कदम । ५—ह० तुम सिताबी जाए कें । ६—ह० मथा मथा
कोड मोह ।

एतरा सभ तोहेजा[1] , ताजे गुन गिनंन ।
भाल तोहेजे हेकडो, पुंजी ता न सघंन[2] ॥५५

आए बिहारीजी फेरकें, बात कही इसारत ।
बाप को दुखत है, कछू औषध चाहिए तित ॥५६

तब कह्या मेहेराज नें, मैं आवत हों तित ।
कछू कांम रह्या है, मैं उनके गले डालत ॥५७

देवचंदजी के दिल में, रही बात अटक ।
फेर फेर कहे बुलाओ, मेहेराज रहा खटक ॥५८

तब विहारीजीए कह्या, तुम फेर फेर करत याद ।
हम तो कहि कहि थके, तुम फेर फेर करत बाद[3] ॥५६

तब देवचंदजी कहा[4] , तुम बुलाए ल्याओ उंन ।
धाम दरवाजे पैठ न सकों, ठाडी इन्द्रावती करे रुदंन ॥६०

एह वचन सुनके, बाहलबाई पोहोंची धाए ।
मेहेराज तुमें क्या हुआ, एते बुलावने आए ॥६१

श्रीदेवचंदजी तुमकों, याद करें फेर फेर ।
मैं धाम जाय ना सकों, रह्या इन खातर ॥६२

तब मेहेराज ने कह्या, मोसों एह ना कही काहू बात[5]।
मैं तो तबही आवत, जो एती जानें विख्यात ॥६३

१—ह० हितरा मीडी तोहिजा । २—ह० पुजी ते न सगन । ३—वर्तसान प्रतियो मे ५६वी चौपाई नही मिलती है । ४—ह० तब बिहारी जी को कह्या । ५—ह० मोसो कही न किन

तब कारभार सब डारकें, हुए बिदा सिताब ।
अपने ठाकुर के, दे आए जवाब[1] ॥६४

संबत सत्रै बारोत्तरे, सावन बदी अस्टमी ।
मिलाप श्री देवचंदजी, कहों बात जमी ॥६५

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए नौतनपुरीकी बीतक ।
याद करो इन समेंको, सो भांन देउं सब सक ॥६६

॥ प्रकरण ॥१३॥ चौपाई ॥६३७॥

श्री देवचंदजी का धाम गमन

आएकें मुलाकात करी, लागे देवचंदजीके कदंम ।
तब पूछा ए कौन हैं, कह्या मेहेराज की आतंम ॥१

नाम सुनत मेहेराज को, बडाज पाया सुख ।
पूछा आए तुम ![2] , बातां करने लगे मुख ॥२

दे[3] दिलासा नरमीं सें, मुख तें कहे सुकन ।
में बोहोत बेर याद किया, तुम तरफ पठए मोमिन॥३

तब जवाब मेहेराज नें, दिया देवचंदजी कों ।
था काम लोकिक का, डाल गले और के मों ॥४

मोकों बुलावने का, किने न कहा वचंन ।
जब मैं सुन्या सुकन, दौड देखे कदंम रोसंन[4] ॥५

१—ह० आप रहे थे जिन के, तिन को दिया जवाब । २—ह० पूछा श्री मेहेराज आए तुम । ३—ह० दई । ४—ह० तब देखे कदम रोसन ।

(अब तो) फेर न जाओगे, लौकिक के कांम पर ।
के फेर जाएके आओगे, काम इसलाम ऊपर ॥ ६

मैं तुम कों इसवास्ते, फेर फेर किया याद ।
जो इन्द्रावती ठाड़ी रोवती, देखी ऊपर बुनियाद ॥ ७

मैं पैठ न सकों धाम में, तहां इनको रोती देख ।
तिसवास्ते मैं तुम को, बुलाया कर विसेख ॥ ८

अब तो भला भया, तुम आए जो इत ।
मोकों सुख उपजा, अब मैं हुकम करत ॥ ९

थाल अंदर से भरके, धरी आगे आंन[1] ।
तब मेहेराज भाई किया[2], विहारीजी का सनमांन ॥१०

आवो बिहारीजी तुम, बैठो हम भेलें ।
एकठा परसाद लीजिए, बैठ कें एकठें ॥११

तब बिहारी जी कह्या[3], मैं न बैठों संग तुम ।
साहेबतें फिर कह्या[4], अरज तलबी हुकंम ॥ १२

तब श्री देवचंद जी कह्या, कहे श्री मुख सुकंन[5] ।
क्या रदबदल[6] होत है, आपुस में मोमिन ॥१३

तब जी साहेब कह्या, बिहारी जी और हंम ।
एक ठोर परसाद लेवें, ऐसा करो हुकंम ॥ १४

१—ह० फेर थाल परसादसो भराए के, धरा आगे आन । २—ह० तब श्रीजीए किया । ३—ह० बिहारीजी ने कह्या । ४—ह० श्रीजी ने फेर कह्या । ५—ह० आप श्री मुख सुकन । ६—ह० रबद ।

तब श्री देवचंद जी कह्या, क्यों न भेले बैठो तुम ।
जो मेहेराज बुलाव हीं, तो क्यों न हो एक आतंम ।। १५

तब बिहारी जी आए बैठे, जी साहेब भेले[1] ।
लिया परसाद एकठे, वातां करने लगे ।।१६

श्री देवचंदजी धनीसों, बातां करी जी साहेब ।
अपनी जो बीतक, बतावत गए तब ।। १७

सुनके उत्तर दिया, भला किया अब तुम ।
कांम माया का छोड़के, आए तले हुकंम ।। १८

इहां से दिन बाइस[2], रहे साथ मिनें ।
फेर नजर करी धाम कों, साथ छोडे इन समें ।। १९

साथ को इन समें, कछू न रही पेहेचांन[3] ।
धाम नातो न देख्यो[4], अपने ठौर इहां ईमांन ।। २०

ए आग्यां यों ही थी[5], करी हक सुभांन ।
लिखया लौमोफूज में[6], भई तेती त्यों पेहेचांन ।।२१

बात जो इसलांम की, रही न दिलमें किन ।
अपने अपने घरों, सब बैठ रहे मोमिन ।।२२

केतेक दिन पीछे, बहालबाई आई ।
मेहेराज के घरों आए, एह खबर ल्याई ।।२३

१—ह० श्रीजी के भेले । २—ह० इन समे यहा बाइस । ३—ह० कछू नही पेहेचान । ४—ह० धाम नातो किन ना देख्या । ५—ह० हती । ६—अरबी .— लौमोफूज =(लौह मौफूज) = हिफाजन की हुई तख्ती ।

मेहेराज सों मसलत, करनें बैठी जब।
अब क्या करना हैं तुमें, रह्या कांम दीन[1] का सब ॥२४

मसनद श्री देवचंदजीकी, सो तो बड़ी बुजरक।
सो खाली क्यों रहे, देखो हुकम सामने हक ॥२५

कोउ (उत) आवत है नहीं, भूल गए सगाई[2]।
काहू को दीन इसलाम की[3], रही न असनाई ॥२६

किन को बैठावें इनपर[4], किनका करें अख्त्यार।
निसबत नसल की, बिहारीजी सिरदार ॥२७

तब मेहेराजें कह्या, एही बात सिरें।
सब साथ मिलकें, एही कांम करें ॥२८

ए बात बैठी दिल में, ए काम करना जरूर।
साथ सों भलीभांत सों, मैं करों मजकूर ॥२९

पेहेले बिहारी कों, मैं बैठाऊं चाकले इत।
कदमों लाग सेजदा करों, तब साथ आवें तित ॥३०

एह मसलत करकें, आई बहालबाई अपने घर।
समें दिन देख कें, पोहोंचे उस ऊपर ॥३१

आए के बिहारीजी कों, बैठाए ऊपर मसनन्द।
कदमों लाग के बैठे, फेर घर में भया आनन्द ॥३२

१—ह० धाम। २—ह० भूल गई सगाई। ३—ह० काहू को निज धाम की। ४—ह० किन को बेठाओ इन पर।

मेहेमत कहें ऐ सहिय्रनो, ए बीतक पुरी नौतन।
अब आगे की कहों, याद करो मोमिन ॥३३

॥ प्रकरण ॥१४॥ चौपाई ॥६७०॥

[पांचवां विश्राम सम्पूर्ण]

मंत्री-पद तथा प्रबोध पुरी

संबत सत्रह बारोत्तरे, आसो के महीने में।
सब साथ को खबर, पोहोंची मेहेराज सें ॥१

सब को चरचा करके, चित्त को दिए मरोर।
तुम आए सेजदा करो, खंडनी कर कहा जोर॥२

सब साथ ता दिन थें, आए हुकंम तले इसलांम।
नमाज सांम फजर की[1], करने लगे इसठांम ॥३

जहां तहां साथ में, बात भई जाहेर।
चरचा श्रीधाम की, करें बिहारीजी बाहेर ॥४

सब उच्छव किरंतन, हुआ साथ मिनें।
सरम पड़ी सबको, जान धाम अपनें ॥५

जादा[2] किया दीन कों, एहिया ने इस ठांम।
सब की सुरत फेरकें[3], लगाई इसलांम ॥६

आगें सबके मेहेराज, बैठे चरचा सुनने कों।
सबको खंडनी कर समुझावहीं, इन साथ के मों ॥७

१—ह० चरचा प्रात सभा की। २—ह० ताजा। ३—ह० साथ की सुरत खेचके।

चरचा की चरचा करें, एकान्त एक ठौर।
धाम धनी साथ विन, ना देखावें और ॥८

यों नित्य[1] चरचा करते, खुली आंकड़ी अंतरजामी।
तब आए दिल में, बोए इस्मांइली[2] ॥९

हमतो बैठे धाम में[3], ए खेल नहीं रंचक।
हम सेहेरगसे नजीक, बैठे आगे हक ॥

एह खुसाली दिलमें, उठत कै तरंग।
हमारे धाम नजीक, हक सुभान की अरधांग ॥११

साथ आगें खोलने, दिल हुआ रोसंन।
त्यों चरचा ज्यादा करें, खुसाल होए मोमिंन ॥१२

सेवा करें मोमिन की, ए मनोरथ उपजत।
कौन भांत कीजिए, इनों की सेवा इत ॥१३

इन भांत बंदगी के, लगे करने विचार।
गोविन्द भेड़े के काम में, होइए खबरदार[4] ॥१४

तहां से कमायकें, तब सेवा होए सब साथ।
करी मसलत बिहारीजी सों, लेऊं दिवान वजीरी हाथ[5] ॥१५

बातेंलगाई वजीर सें, जाए तिन का लिया कांम।
कोई बखत आवें साथमों, दीदार कों इस ठांम ॥१६

१—ह० यो नित। २—ह० दिल मे बोए इसलाम्गी। ३—ह० हम तो बैठे साथ मे। ४—ह० वहा ही खबरदार। ५—ह० लई दिवानगी वजीरी हाथ। ६—ह० बात लगाए वजीर सो।

आया बोझ लोकिक का, सिर के ऊपर सब ।
चरचा करने कों, अंतर पड़या तब ॥१७

तब कसाला करकें, चुकै न वखत सुनंन ।
धरम लगे पालने, ज्यों चाहिए मोमिंन[1] ॥१८

उठे पिछली रात कों, करने को दीदार ।
बिहारीजी पास आएकें, चरचा सुनें परवरदिगार॥१९

सरूप चरचा सुनकें, तब आवें दरबार ।
कार भार चलावें लोकिक, होए कें खबरदार ॥२०

ए काम बेहेवार करते, रह्या पिछला चार घड़ी दिन[2] ।
तब तहां से उठकें[3], आए बैठे जमात मोमिन[4] ॥२१

तहां चितवनी धाम की, करत हैं सब कोए ।
सरूप वस्तर बरतवंन[5], होने लगा सोए ॥२२

अहार इसलांम करकें, रूहों को पोहोंचाई खुराक ।
इस ठौर इसलांम की, बुजरकी जाने खाक ॥२३

अब मैं साथ इसलाम का, करों सब एक ठौर ।
उछव रसोई करकें, सेवा करों अति जोर ॥२४

वस्तर भूषन पेहेरायकें, सेवा करों सब साथ ।
मेरे धाम धनीने, इनके पकड़ाए हाथ ॥२५

१—ह० माँचा है मोमिन । २—ह० रह्या चार घडी पिछला दिन । ३—ह० तहां से उठके । ४—ह० मैयन । ५—ह० सरूप वस्तर वरनन । ६—ह० इस बेर ।

गुण्ठित कनक-परिधान-मे था अरुण आनन चमकता,
मानो कि, ऊषा काल मे, बालार्क नभ-मे दमकता।
बेंदी चमकती भाल-पर वे कर्ण भूषण हिल-रहे,
दिव्याभ-रक्त कपोल, जिनको चूमने को मिल-रहे।
वह अमर-शिल्पो की कला को, व्यक्त करती थी खडी,
हँस केशिनी बोली तभी, सखि ! आज शुभ बेला बडी।
यह याचको के सदृश, नृप मण्डल तुम्हे अवलोकता,
'किसको करोगी धन्य' यो प्रत्येक जन है सोचता।
है सब फलोत्सुक, हे शुभे ! यह समुत्सुकता मेट दो,
दिव्यागने ! निज योग्य वर चुनकर अपूर्व स्व-भेंट दो।
सकोच अब किस बात का, आओ ! बढो ! आगे चलो !
पाकर सुयोग्य-सुखद-विटप, हे सुलतिके ! फूलो, फलो !
यो-कह, पकडकर मञ्जु-कर, वह भीमजा को ले चली।
देदीप्यमान हुई सभी जिससे, स्वयबर की स्थली,
अपलक अभी तक देखते सब नृपति वैदर्भी - छटा।
हे वन्द्य नृप-गण! यह वचन सुन, ध्यान उन सब का हटा,
अन्योन्य का मुख देखकर लज्जित हुए सहसा सभी।
हे वन्द्य नृप-गण ! कह रहा था उधर वह वन्दो अभी,
है धन्य ! अतिशय आज-की, यह सुखद-शोभामय-घडी।
की आप लोगो ने यहाँ आकर, कृपा हम-पर बडी,
उससे कृतज्ञ महीप है उनका निवेदन है यही।
उसको नरेश क्षमा करे, त्रुटि हो अगर हम से कही,
उनकी-सुता-के रूप मे, वह पारिजात-सुमन-खिला,
जो, आपके यह पुण्य - स्वागत - का, हमे अवसर मिला।
बहु वर-गुणो से मण्डिता, उपमा न है जिसकी कही,
वह बालिका वरणार्थ, सखियो - सहित अब - आई यही।
उसका स्वयबर - हो सफल, ऐसा, सुयत्न सभी करे,
यदि, विघ्न कुछ आये, उसे-तो, सदय-परमेश्वर-हरे।

नागजी के हथियार, और वस्तर भूषन।
ए सेवा साथ की, उस बखत करी मोमिन ॥३५

सब साथके वास्ते, किया बुलावने का इलाज।
इनको एकठे करके, उछव कीजे राज ॥३६

तिसवास्ते साथकों, किया बुलावने का हुकंम।
मेदा घीउ खाड़ की, एकठे करो तुंम ॥३७

सामा लगे जोड़ने, धरे अपने घर में।
सामा जमा होने लगी, कपड़ा मंगाया उतसें ॥३८

इस बात की चुगली, बजीर आगें गई।
उननें कछू ना विचारया, बात दिल में लई ॥३९

एतो कारज कारन, आहे[1] धनी को करनें।
तिसवास्ते माया का, हुआ धका इन समें ॥४०

तब वजीर ने लेयकें, बैठाए अपने घर।
सामा लई सरकार में, हुआ जोरा इन ऊपर ॥४१

संबत पनोत्तरे[2], भई कुतुब खान की महूम।
जाम वजीर गए तिनपर, खड़-भड पड़ी इनकोम ॥४२

बैठे प्रबोध पुरी मिनें, जाए हवसा लिखा-हक[4]।
तहां विचार करने लगे, थे इसलाम कांम बुजरक ॥४३

१—ह० आए। २—ह० समत सत्रै बारोतरे। ३—ह० सबत् सत्रै वारोत्तरे, चरितामृत मे सबत सत्रे तेरोत्तरे है। ४—ह० जाए हवसा लिखा इत।

उस द्वीप - पर विख्यात, इस भूगोल का न्यग्रोध है,
जिससे कि, सारे द्वीप का स्वयमेव आतप - रोध है।
हिम - तुल्य वह छाया सखी, कलकेलि तुम करना जहाँ,
हे सुमुखि ! अपना सुरत श्रम, तुम सहज-ही हरना वहाँ।
इसके सुयश के सामने, हसावली - की श्वेतता,
रम्भोरु ! है अब हीन - सी उससे स्वय पाकर, धता।
पर, केशिनी तब भीमजा - की, वह मुखाकृति हेर के,
लेकर उसे आगे बढी, उस नृपति से मुँह - फेर के।
उनके गये पर, रह गया यो, वदन पुष्कर - नाथ का,
ज्यो, पद्मिनी पति, निहत सा, रहता गगन - मे प्रात का।
देखो चकोराक्षी ! इधर ये शाक द्वीप - नरेश है,
वे शाक - नामक विटप इनके राज्य - मे सविशेष है।
आह्लादकारी हिम अनिल, उनसे निकल बहता वहाँ,
वह उदय गिरि इनके सुयश को स्तम्भ बन कहता वहाँ।
उदयाद्रि पर करना भ्रमण बनकर शुभे ! विस्मय नया,
सोचे मनुज, रवि स्थान पर, यह विधु कहाँ-से आ-गया।
तुमको जगायेगी खडी उस ठौर ऊषा - सुन्दरी,
गैरिक छटा से पूर्ण है, उदयाद्रि की विस्तृत - दरी।
करना विहार वही सखी, होगा सफल जीवन तभी,
मिलता नरी-को इन्दुमुखि ! ऐसा सु-योग कभी, कभी।
यह नत - वदन निज शीलता को प्रगट करता आप है,
रण-चातुरी को विदित करता, यह करस्थित चाप है।
रहते वहाँ - पर विष्णु है, अचला वहाँ है 'चञ्चला',
रिपु एक का भी तो नही, अब तक जहाँ कुछ वश चला।
भ्रू - क्षेप पाकर भीमजा - का, केशिनी आगे चली,
चलती हुई भीमात्मजा हसी - समान लगी भली।
दर्शन करो कमलाक्षि ! तुम, इस वीर क्रौच - महीप के,
दधि - मण्डकोदधि बह रहा, चहुँ ओर उस वर द्वीप के।

इंजील[1] किताब इन समें, उतरी कही फिरकांन ।
हवसे के पातसाह पर, ए बड़ा लिख्या निसांन ॥ ५३

होते इन किताब के, नूर रोसनी भई जोर ।
तब राज की तरफ कों, छोड़ माया की मरोर ॥ ५४

यों करते चरचा, जबराईल किया जोर ।
आया जोस इन समें, भाजी न रही खोर[2] ॥ ५५

तिनजोस में निकले, कलाम जंबूर के ।
थोड़ी थोड़ी मुख निकसे[3], उत्तम बाई लिखी ए ॥ ५६

[वाणी उतरने के स्थानों का उल्लेख]

ज्यों, ज्यों, उतरते गए, त्यों त्यों किए जमें[4] ।
फेर वहां से उतार कें, लिए पुस्तक चढ़ाए कें[5] ॥५७

ए दोए किताबें उतरी, इंजील और जम्बूर ।
षटरुती इन समें, बिरह का उतरा नूर[6] ॥५८

कलस का बीज इन समें[7], उठा इत अंकूर ।
सो तब तें चढ़े दीव में, हुआ सूरत में मजकूर ॥५९

बेहद बानी उतरी, दीव बंदर की मजल में ।
जब भई त्यार, जाने सिर लगा आसमान सें[8] ॥६०

रास की रामत, हुआ मेरते में बिबेक ।
और किरंतन वेदान्त के, राह में भए अनेक ॥६१

१—ह० अजीर । २—ह० कछू ना रही खोर । ३—ह० ज्यो ज्यो आयते उत्तरी । ४—ह० यो जो उतरती गई, त्यो त्यो किए जमे ए । ५—ह० ले पुस्तक चढाए तिन सें । ६—ह० इसक बिरहका उतरा नूर । ७—ह० फल बीज इन समे । ८—ह० जब त्यार भई, तब जाने सिर लगा आसमान से ।

ओर किताब तोरेत, उतरी बीच सूरत ।
ताकों कह्या कलस, सनंधें अनूप सेहेर बखत ॥६२

गुजराती भाषा फेरकें, करी भाषा हिन्दुस्तांन ।
वास्ते मोमिनों के, इनों को होए पेहेचांन[1] ॥६३

केतीक बानी धनीयकी, रामनगर में भया मूल ।
तहां से विस्तार भया, भया परणामें बड़ा तूल ॥६४

और बानी फिरकांनकी, हदीसा महमंद अलेहसलाम ।
भई सो सारी परणा मिनें, बीच दीनइसलाम ॥६५

जो परदछिना निज धाम की, सातों सरूप श्रीराज ।
सो सारे परणा मिनें, वास्ते मोमिन के काज ॥६६

ए खिलवत और सागर, केतिक बानी और ।
सो हुई मोमिनों वास्ते, मजल परणा ठौर ॥६७

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए हादी मेहेदी इमांम ।
ताकी बीतक और कहों, जो नूर दीन इसलांम॥६८

॥ प्रकरण ॥१५॥ चौपाई ॥७२८॥

[जूनागढ़ में हरजी व्यास से भेंट]

अब फेर कहों हवसा की, जाको प्रबोध[2] पुरी है नांम।
बारह महीने व्यतीत भए, साल पंद्रोत्तरे इसठांम[3] ॥१

कुतुबखां सों सलाह करकें, वजीर आया नए नगर ।
तब अंदर कहा मोहोल में, क्यों ऐसा जुलम किया मेहेराज पर॥२

१—ह० ए जो वास्ते ब्रह्म सृष्ट के, सुख पावे करे पेहेचान। २—ह० प्रमोध।
३—ह० तहा बारा महीना बीतक भई, सबत सत्रै पद्रोत्तरे तमाम।

एक तो घर लूट लिए, फेर बंद किया बैठाए ।
बरस रोज होने आया, क्यों ऐसा सितम[१] पोहोंचाए ॥३

सिताब छोड़ इनको, देओ दिलासा इन ।
दे सिरपाओ घरों पठाओ, एह दलगीर होवे जिन ॥

सिताबी वजीर बुलाए कें, तबही किया खलास ।
किताबें उतरी कादर सें, बिन धाम न रही आस ॥५

ए किताबें लेय के, लगे बिहारीजी के कदंम ।
बात बीतक की करी, पाया सुख आतंम ॥६

लगे बातां करने, अपनी जो बीतक ।
ज्यों[२] किताबें उतरी, हुए मेहेराज हक ॥७

साथ सबों ने इन समें, देखी मेहेर श्रीराज ।
बांहां पकड़ाई साथकी, दई हाथ मेहेराज ॥८

इत बिहारीजी चमके, सुन षटरूती के सुकंन ।
इन तेहेकीक मोंपै लई[३], खास गीरोह मोमिंन ॥९

इन तो सुकनों में कह्या, मैं लेऊं धनी अपना ।
तो इत बाकी क्या रह्या, एह वचनों की पेहेचान[४] ॥१०

करने ना देऊं जाहेर, ए बानी साथ मिनें ।
ऐसा दिल में जान, क्यों किया विरह अपनें[५] ॥११

१—ह० जुलम । २—ह० यो । ३—ह० इन तेहेकीक मुझसे लई । ४—ह० भई या सुकनो की पेहेचान । ५—ह० दिल मे जान ऐसा कह्या, क्यों एता किया ब्रह अपने ।

मैं तो बैठा था एक सेहेर में, तेरे आगे नजर ।
तेरा विरह मुझपर पड़ा, ए सुकन काढ़ दे उजर[1] ॥१२

अब ए बानी रहने देओ, ए चरचा न सुने साथ ।
अपनों जो मारग है, सोई पकड़ो हाथ ॥१३

बानी वहां ना पसरी, वह सरत उस दिंन ।
इंतजार थे मोमिन, सुन सके न एक सुकंन ॥१४

इहां से फारक होएके, सोलेत्रेके साल ।
वास्ते गांम बसावने, आए जूनागढ़ के हाल ॥१५

सत्रोत्तरे वहां रहे, अठोत्तरे बरस ।
कानजी उत रेहेवहीं, सुने वाणी सरस ॥१६

हरजी ब्यास एक ब्राह्मण, रहा तिनका चाकर होए ।
जब वह दुखी पड़ा, भोम उतारा सोए ॥१७

लगे दान करनें कों, तब भया साव चेत ।
ए कैसा काम करत हो, मैं नहीं इन खेत ॥१८

क्यों मोहे दान करावत, जमपुरी का साधंन ।
मैं नाही इन इंड का, मेरा क्यों कलपाओ मंन ॥१९

दोए दाझ ले जात हों, इन इंड मिनें सें[2] ।
जाको मैं हां कही, सो ना न कही किननें ॥२०

१—ह० ए सुकन को दे उत्तर । उजर = उज्र, किसी बात के विरुद्ध निवेदन करना ।
२—ह० दोए बात की झाल इन समे, लिए जात हो मैं ।

जाको मैं नाहीं कही, सो हां ना कही किन ।
इन दोउ बात की दाझ, रहे गई मेरे मंन ॥२१

ए सुकन कान्ह जी सुनकें, बड़ी उपजी दाझ ।
ए कैसे इननें कह्या, क्यों ए हैं हमारे मांझ ॥ २२

ए तो सुकन सो कहे, जो होवे वासना धांम[१] ।
कैसे हूं जीवता रहे, तो याके पुरें मनोंरथ कांम ॥२३

यों करते ए बातें, कान्ह जी अरज करी ।
मेहेराज ए सुनकें, बातें दिल धरी[२] ॥ २४

जो जीवता ए रेहेत हैं, कहों चरचा के सुकंन ।
सब सकें मानूं इनकी, तू गवाह[३] रहियो मोमिंन ॥२५

फिर उसी बात को उठाया, दूर होवे गुमांन ।
सेवा लगा कान्ह जी करने, ए इन्हें होवे पेहेचांन[४] ॥ २६

नित्य तरकारी ल्यावहो, सोधके बागों से ।
तब राजी होवें कान्ह जी पर, कहों स्यावास मैं ॥ २७

मांग जो कछू मांगना, मैं देऊं ताको ।
मैं राजी बोहोत किया, इन सेवा के मों ॥ २८

कोई हजार रुपया देवे पै, मैं राजी न तिनपर ।
तेरी तरकारीअ मों, खुसाल हुआ तुझ पर[५] ॥ २९

१—ह० ए तो सुकन जो कहे, ज्यों कहे वासना धाम । क्यो वे जीवता रहे, याके पुरे मनोरथ काम । २—ह० यो करते कान्हजीऐ ऐ बाते, श्रीजी आगे करी । श्री जीए ए सुनके, दिल बीच धरी । ३—ह० साख । ४—ह० क्यो होए इन्हे पेहेचान । ५—ह० जो हजार रुपया देवही, मे राजी न तिन पर । तेरी तिरकारी की सेवा मे, खुसाल हुआ तिन पर ।

कहा कान्हजीय, मैं मागूंगा आगे तुम सें।
तुम तो मोंको देओगे, जो हे मेरे मन में ॥३०
यों करते नित्याने, होए बोहोत राजी[1]।
तब कान्हजी सों फेर कहा, तेरी कौन करो कारसाजी ॥३१
तब कांजी बोलया, मे मांगो एक वस्त।
एक साध को सुनाओ चरचा, एही पाऊं में कस्त ॥३२
स्यावास कान्हजी तुम कों, क्या तें मांग्या मुझपै।
एक तो राजी किया सेवा मिने, फिर चरचा सनन कै ॥३३
बुलाओ साध वह कहां हे, मे चरचा सुनाऊ ताए।
मैं तो बहुत राजी भया, जो कोई ऐसा अहार पोहोचाए ॥३४
तब कान्हजीए मेहेराज कों[1], करके दिया मिलाप।
भेटते[2] ही सुख पाइया, करने लगा चरचा आप ॥३५
पूंछी खबर तिनकों[3], कहां बसो तुम साध।
हमतो हे परदेस के, सुन्या तुमारा मता अगाध ॥३५
भले साध तुम आए, मैं चरचा सुनाऊ तुमको।
जो चरचा कहो सो करों, तुमे राजी करों तिनमों ॥३७
ठौर दई उतरने, अपने बाग में।
अब होने लगी चरचा, भागवत के बचनों सें ॥३८

१—ह० तब कान्हजीए श्रीजीमसो। २—ह० मिलते ही। ३—ह० पूछी खबर उन इनकी।

सुनत मास एक भया[1], दोऊ राजी हुए मंगन।
एक दिन ठौर नारायन की, ताके कहे सुकंन[2] ॥३९

एक हीरे का मंदिर, ताको बडो विस्तार।
चौरासीलाख जोजनपड़साल[3], ताको करो विचार ॥४०

एह ठौर है किनकी[4], सो मोहे कहो सुकंन।
तब जवाब ब्यासे दिया, होएके दिल मंगन ॥४१

एह ठौर अख्यर की, लिख्या सास्त्रों में।
तब कदमों लाग फेर कह्या, ए ठौर पाऊं तुमसें ॥४२

ए ऊपर तले माहे बाहेर, के ए ब्रह्माण्ड तीत।
सो मोकों समझाओ, ए जो ठौर अतीत ॥४३

पांच तत्व तीन गुण को, और मूल प्रकृत।
इनको नास तुम कहो, ए ठौर अख्यर की कित ॥४४

हमसों अंतर ना करो, ए बताओ तुम।
फेर फेर विनती करें, सुने तुमारे मुख हम ॥४५

तब जवाब ब्यासें दिया, ए ठौर आदि नारायन।
खीर[5] सागर में रहत हैं, लिखी सास्त्रों में पेहेचान ॥४६

तब जी साहेब ने कह्या, ए तो बताया मिने इंड।
ए महा परले में ना रहे, उडे त्रगुण समेत ब्रह्माण्ड ॥४७

१—ह० सुनत मास दो हुआ। २—ह० वचन। ३—ह० चौरासी लाख जोजन। ४—ह० अक्षर। ५—ह० क्षीर। ६—ह० ए तो कह्या मे तो इड।

फेर फेर विनती करें, हम सों ना करो अंतर।
हमें तुम बिन कौंन समझावहीं, दिखावे पटन्तर॥४८

तब ब्यासें कह्या, उठ मोहे कहत क्या[1]।
सास्त्रों में ऐसा लिख्या, तो क्या उत्तर देऊं इनका॥४९

गाल दिया आचारजों को[2], उनों ऐसे लिखे सुकंन।
तो मैं इत क्या करों, क्या निसां करों मोमिन॥५०

तब कान्हजी बोलिया, अख्यरातीत की पूछो बात।
क्या जुवाब करत हैं, सुनों इनके मोहों विख्यात॥५१

आया जोस जी साहेब को, दिया धका कर हाथ।
क्या पूछें क्या है इनमें, थका ख्यर के साथ[3]॥५२

ए तो थका ख्यर में, सुध नहीं अख्यर।
अख्यरातीत की तिनकों, ए क्या देवे उत्तर॥५३

तब रीस कर कह्या, जी साहेब सुकंन।
तब ब्यास की सुध गई, ए बात बडी मोमिंन॥५४

तब जी साहेब ए कह्या, सुनो ब्यास वचंन।
ना मैं आया तुम पे[5], सुनने चरचा के सुकंन॥५५

तुम वंचन अंत समें, कह्या था मुख थें।
मैं नहीं इन इंड का, क्यों दान करों मैं॥५६

१—ह० तब व्यासे झुकके कह्या, मोहे कहत तुम क्या। २—ह० कह्यो कुटक वचन आचारजो को। ३—ह० क्या इनको पूछे क्या हैं इनमे, थका छर के साथ। ४—ह० अ क्षरातीत। ५—ह० जो मै आया तुम पे।

और मैं जाको हां कही, ताको ना न कही किन ।
तिस वास्ते गुमांन भांनने, भेज्या तुम पर मोमिंन ॥५७

हम को भेजे[1] हकनें, तुम को राखे तिंन ।
जिन पर मेहेर भगवान की, गुमांन भान करे रोसंन ॥५८

तब ब्यासे वचन कहे, ए भगत हे भगतराज ! ।
मैं कह्या योंकर, मेरा अर्थ था इन काज ॥५९

कई गुलर लगे दरखतकों, बोहोत बेसुमार ।
तामें जीव अनेक है, एक दुसरे ना जानन हार ॥६०

मैं उन गुलर में का नहीं, मेरा और गुलर ।
आगे पंडित में सब जीते, हारा न काहू सरभर ॥६१

सो आज मैं छोड़े हथियार, आगे तुमारे सब ।
तुम तेहेकीक भेजे उनकें[2], आए मेरे सबब ॥६२

मोकों बताओ तुम, वह जो राह मुस्तकींम ।
मैं तो कछू ना जानत, मोहे देखाओ अजींम ॥६६

जितना[3] अंकूर इनका, तहां लौं भई सोहोबत ।
फेर तहां से जुदे पड़े, आए नौतन पुरी तित्त ॥६४

संबत सत्रै सै उनईसें, देस पर आया कुतुबखांन ।
उत हुआ इलहाम, थी मोमिन[4] पेहेचांन ॥६५

१—ह० पठए । २—ह० हकके । ३—ह० जेता । ४—ह० ब्रह्म सृष्ट ।

कसाला उत साथकों, देख उत बैठे ।
तब दौड आए बिहारी पे, आए बातां करी ए ॥६६

फेर बीसोत्तरे जामसत्ता की, ले दीवनगिरी सब ।
सारा कसाला सिर पर, खींच लिया तब ॥६७

इहां से गुजरात गए, वजीर संग जाम ।
तहां से माया छोड़के, लिया मोमिनों का सिर काम ॥६८

आए दीव गुजरात सें, राजे कियो फारक ।
माया पुरी देखाएं के, नजर करी तरफ हक ॥६९

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, माया में खेल की कहो ।
अब आगे की कहों, एजो बीतक भई ॥७०

प्रकरण १६ ॥ चौपाई ॥८०८॥

[छठवां विश्राम सम्पूर्ण]

[श्रीजी का निवृत्तिमय जीवन]

[तीन सिस्ट कही वेदने, तीनों कही फिरकांन ।
और तीनों बानी साथों में, तामें सहियों में पेहेचांन ॥१

एक जीव ईस्वरी ब्रह्मकी, तीनों के जुदे मुकाम ।
आम खास खासल-खास, कही बीच निजधाम ॥२]

ब्रह्म सिस्ट है मोमिन, ताए महंमद दिया पैगांम ।
ल्याए कुंजी ईसा रूह अल्ला, दई सो हाथ ईमांम ॥३

करै विजय अभय दे आनन्द, बुध(जागृत) बुद्धि औतार।
कलि मेटे निहे कलंक कर[1], अखंड किया संसार ॥४
एक साहेब वेद कतेब में, सब तिनकी लिखी मजकूर।
सो साहेदी नेक हुकमें, जाहेर किया नूर ॥५
हकें भेज्या मोमिनों पर, पैगम्बर आखिरी।
लिखी हकीकत फुरमान में, सो ब्रह्म सिस्ट दिल में धरी[2]॥६
उनो आगूं दिल में लिया, आवें रुहे बीच इन्सांन।
खेल किया इन वास्तें, जाने इनकी आवे ईमांन ॥७
महंमद हकके नूर सें, भई दुनियां महंमद नूर।
चाहें कायमं तिनकों करें, ईमांन बका मजकूर ॥८
पैगम्बर का माजजा, देवें सबों ईमांन।
एक दीन दुनी करी, ए सब क्यामत निसांन[3] ॥९
रुह अल्ला की आवसी, खोलने बका द्वार।
अंत सदी दसमी के, अग्यारे अंत कार गुजार[4] ॥१०
मिलावा रूहन का, कही गाजी[5] मिसाल सोए।
होवे खिलवत खाना जाहेर बका पेहेचांन सबों होए॥११
ईस्वरी सिस्ट फिरस्तें कहें, सो पोहोंचे नूर मकांन।
और सिस्ट आंम जो, आवे आठों भिस्त निदांन॥१२*
मोंमिन अरस अजीम के, बैठे खेल देखत।
मांयने खोल जाहेर किए, एही बखत क्यामत* ॥१३

१—ह० करे विजिया अभिनन्दन, बुध जागृत अवतार, कलक मेट नेहेक नक करें। २—ह० सो लिषी हकीकत कुरान मे, जो ब्रह्मसृष्ट दिल धरी। ३—ह० किए जाहेर सानो निस न। ४—ह० सब होए बारही कार गुजार। ५—ह० गाजियो।

एही सायत हजूर की, तहां बेर नहीं लगार ।
चार घड़ी दिन पिछला, ए जाने परवरदिगार* ॥१४
श्री मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, ए बेवरा तीनों का कह्या तुम ।
कहों आगे और मजलकी, जो देखाया खेल हुकंम* ॥१५

॥ प्रकरण १७ ॥ चौपाई ॥ ८२३ ॥

[दीव बन्दर जैराम भाई से भेंट तथा उपदेश]

फेर कहों श्रीजीय की, जो बीतक बीच इसलांम ।
लड़ाई करी दज्जालसों, सो कहों मुकाम और ठांम* ॥१
जब जाम वजीर विदा दई, देख कसाला दुख ।
हुआ हुकंम हक सुभान का, अब ए पावें सुख* ॥२
गुजरात से दीव में, जै राम कसारा के घर ।
उठ मिला आनद सों, आदर किया फेर फेर[1] ॥३
लगा खेम कुसल पूछनें, कहां से पधारे मेहेराज ।
हम सों कहो हकीकत, इत पधारे कौन काज ॥४
तब जवाब दिया राजने, हम आए तुमारे काज ।
हमकों भेजा हकने, हुकम दिया श्री राज ॥५
ढूंढ काढों साथ को, माया को खबर ।
याद करो अब धाम कों, चलो राह इसलाम पर ॥६
हुई चरचा इन समें, श्री देवचंदजी से लेकें ।
साथ की खबर पूछते, एते दिन दिल में रहे जे ॥७

१—ह० तब गुजरात मे आए दीब मे, भाई साथी जैराम के घर । उठ मिले आनद सो, बडो सुख पायो देख कर ।

कौन साथ तुम काढ़या, किन को राह समझाई ।
तुम साथी श्री देवचंदजी के, नूर रोसनी न दिल में ल्याई ॥८

तुमें ऐसा क्यों चाहिए, जो कर बैठो अंधेर[1] ।
धाम धनी कों देखकें, तुमें सरम न आई फेर ॥९

एक पाती कबूँ ना लिखी, के हमारो नातो श्री धांम ।
श्री देवचंदजो सफर किया, तु आए न तिन ठांम ॥१०

बैठे बिहारी जी चाकले, ना गए तुम तित ।
कबूँ खबर ना पूछी तिनकी, क्या हाल तुमारा बखत॥११

मिल गए माया मिनें, जाने अनादि के इत ।
हम कबू ना जाएंगे, धाम लीला में तित ॥१२

तुमकों ऐसा न चाहिए[2], अपनी देखो बुनियाद[3]।
तुम श्रीदेवचंदजी के साथ, गिरो पेगंबर आए थे आद[3]॥१३

तिन सामू तुम न देख्या, खावंद हमारा कित।
हम आए माया देखने, तुम क्यों भूले इत ॥१४

यों वचन खंडनीय के, कहे बेसुमार ।
कई द्रस्टान्त देय के, किया जीवता खबरदार ॥१५

कबलों कांसा कूटेगा, कबलों हथोरा अहेरण ।
कबलों घर में बैठेगा, आई सिर पर क्यामत रोसन* ॥१६

---

१. ह० तुमको ऐसा ना चाहिए, कर बैठे ऐती अधेर । २. ह० तुमें ऐसा ना चाहिए।
३. च० ह० ग्रोहो पैगबर आद । ४ ह० तिन समे देखना ।

एह मुद्दा चौदे तबक, सो अब होत है नास ।
कछू सरम न आई हक की, तुम कहावत गिरो खास*॥१७

बोहोत दिन मुरदार में, तुम किया गुजरांन ।
अब केतेदिनजियोगे, अब कछुक घरकोकरो पेहेचांन*॥१८

कोई न अघाया इनमें, चचोरत ठौर मुरदार ।
श्री धामधनी सुख छोड़कें, क्या हमेसा होओगे खुवार॥१६

एह इन्द्रियन के स्वादकों, लगा सब संसार ।
ए मोह के जीव रेहे मोहमें, तुमको तो चाहिए विचार*॥

तुमसें माया जीवसें, एता भी ना होए फ़रक ।
श्री धाम धनी की जिकर में, हुए चाहिए गरक ॥*२१

सो वोय न आवत तुम को, ना चरचा चितवंन ।
ना साथ मिलवा सहिअन, नादिलको किया रोसंन*॥२२

ए बचन सुनके रोइया, भूल मानी अपनी सब ।
मुझ सें कछू न हुआ, करे धिकार आपकों तब ॥२३

हमकों इन माया ने, भूलाए दिया धांम ।
हमको याद न आइया, आड़े माया के कांम[1] ॥२४

ना जानी हम निसबत, ना कछू भई पेहेचांन ।
नातो हम ऐसा क्यों करें, जो होता ईमांन[2] ॥२५

१—ह० हमको इन माया मिने, याद ना आया, धाम हम भूले तेहेकीक, आड़े माया के काम । २--ह० जो कछू बोय होती इसलाम ।

अब मेहेर देखी राज की, जो भेज दिए तुम कों ।
हमारी तरफ देखिया, हमतो डूबे संसार मों ॥ २६

इन भांत चरचा भई, सब मिला घर का साथ ।
सब आए कदमों लगे, जाके धनी पकड़े हाथ ॥ २७

आदर सों रसोई करी, न्हवाए मेहेराज ।
बैठाए रसोई मिनें आरोगाए श्री राज ॥ २८

प्रसाद सबों लेयकें, करी पौढ़न की अरज ।
हम न आए पौढ़ने, हमारे तो और गरज ॥२६

तुमें माया से काढ़ने, हम आए इन काज ।
तुम छोडो इन मुरदारकों, याद करो श्री राज ॥३०

फेर बैठे चरचा करने, ब्रज की जो वर्णवन ।
देखो पगले अपने, क्यों कर भरे मोमिन ॥३१

कैसा प्रेम तुम सों, ब्रज में करते राज ।
कौन भांत तुम चलते, करते माया काज ॥३२

कुटुंम परिवार सब थे, रहते बड़ा उदास ।
तुमको एक राज बिना, और न रहती आस ॥३३

बैठे थे अपने घर, चित्त राज के चरंन ।
होरे फिरे टेहलमें, रहते स्वरूप में मंगन ॥३४

कोई न लगै तुमको, इन माया का नेम ।
रहो सदा छके जोस में, आठों जाम इन प्रेम ॥३५

जब आए रास में, किया गौपद वछ संसार ।
नजरों कछू न आइया, आड़े परवरदिगार ॥३६

क्योंकर जोग माया मिनें, बदले तुम आकार ।
जोग माया के बीच में, नए क्यों कराए सिनगार ॥३७

क्यों उथले किए राजसों, साम सामें वचन ।
क्यों कर तुम को राजने, देखाया ब्रन्दाबन ॥३८

क्यों कर खेले तिन में, मिल के सब साथ ।
क्यों कर राज रमें तुमसों, क्यों खेले लेकें बाथ ॥३९

क्यों कर तुम सुख में, होए गए मगंन ।
क्यों अंतरध्यान होएकें, विरह की दई अगिन ॥४०

मेहेमत कहे ए साथ जी, ए दीव की बीतक ।
अजूं और बोहोत है, सो कहों ग्रहे मांफक ॥४१

॥ प्रकरण ॥१८॥ चौपाई ॥८६४॥

[जैराम भाई को रास का स्मरण कराना]

फेर कहे सुकन जैराम कों, दीव में श्रीजीएं जब ।
रासलीला याद करत हैं, पेहेलें कहा सनमंधका सबब ॥१

फेर तुम्हीं पे प्रगटे क्यों कर, क्यों कर भांना सोक ।
फेर राज सों मिल कें, करने लगे जोक ॥२

फेर झीलना करकें, बैठे आरोगन जब ।
बिरह ताप याद आइया, इत सवाल किए हैं तब ॥३

कब, देखकर सौन्दर्य तुम निज-पर नियन्त्रण रख-सके,
है खेद, अब तक भी न जो, तुम हाय ! छल पथ-से थके।
ठग-कर निरीह दधीचि को फिर भी नही लज्जित हुए,
जो, आज भोली-बालिका छलनार्थ यो सज्जित-हुए।
साक्षी तुम्हारी-दे रहे, शत नेत्र ये उस रात-की,
फिर भी न अपनी प्रकृति हा ! तुम तज-सके उत्पात की।
थे शूर यदि यम ! तो न क्यो, तुम शूर-सम्मुख डट-सके,
कैसे, तुम्हारे महिष-के तब शृङ्ग रण-मे कट-सके।
भागे बचाकर प्राण तब, अब शूर-बनकर हो-डटे,
है सामने अबला, अत तुम आज तनकर हो डटे।
हे अनल ! क्या-तुम भूलते-हो जब गये हिम गिरि तले,
शिव-को सजग करने कबूतर बन, स्वय पर ही जले।
यह सर्वभुक्ता आज-भी उसका ज्वलन्त प्रमाण है,
रे ! धूम-का होना तुम्हारे शौर्य-की पहचान है।
हे वरुण ! तुमको याद होगा, जब गये थे तुम छले,
यह पाश उलटा पड - गया था, तब तुम्हारे ही गले।
स्थिरता तुम्हारी आज की, थी उस-समय रण-मे कहाँ,
आती न अब भी लाज तुमको, पापियो ! बैठे यहाँ।
मै प्राण तजती हूँ अभी, पर वचन तज-सकती नही,
भज एक-पति अति-दीन, सुर फिर भूल-भज सकती नही।
पीछे-मरूँगी किन्तु, पहले शाप मै-दूँगी तुम्हे,
काली-मसी से जो तुम्हारे, मुख पुते दीखे-हमे।
तुम हो पिता, मै हूँ सुता, जाना सदा मैने यही,
हाँ, हाँ, पिता के भी पिता, माना सदा मैने यही।
तुम आज यो अपनी सुता-से ब्याह करना चाहते,
धर कर कपट का रूप, मुझको आज हरना चाहते।
यदि, तुम सफल इसमे हुए, तो विश्व यह जल-जायगा,
अमर व भी अमगो ! तुम्हारा श्वास-से गल-जायगा।

फेर चरचा करने लगे, बड़ोज पायो सुख।
ता समें इन साथ की, सिफत कही न जाये इन मुख ॥१४

संबत सत्रे बाईसे, दीव पधारे श्री राज।
दोए बरस तहां रहे, सब पूरे मनोरथ काज ॥१५

नित्य चरचा इन भांत की, होवे दीव मिनें।
बड़ा सोर पड़ा सेहेर में, दोड़ आवे सब सुननें ॥१६

अपने अंकूर माफक, हिस्सा लिया सबंन।
पर आए केतिक साथ में, जो निस्वती मोमिंन ॥१७

इत जुध किया दजालने, बड़ाज किया सोर।
हाथ पांव अपने पटकें, कछू न चल्या जोर ॥१८

धका दिया बड़ा साथ को, पर जाए डग्या नहीं ईमांन।
सो तो खास मोमिंन, जा को पुरी थी पेहेचांन ॥१९

अब कहों साथ आवन की, मिले जीवा और जैराम।
रतन बाई घर में रहे, किया माया मिनें आराम ॥२०

चरचा सुनके आइया, रहे गणेस इन घर में।
एह आया इसलाम में, सुन राजजी की चरचा सें ॥२१

गंगा दास आइया, इन चरचा के सङ्ग।
आए बैठा साथ में, कर कलजुग सों जङ्ग ॥२२

नरसिंगदास गुवालजी, ए आए बैठे बीच इसलांम।
जङ्ग भया दजाल सों डगे नहीं इन कांम ॥२३

गरीबदास साथ में, था पहेले का भोज भाई ।
आवत नित्य राज पास, चरचा के सुखदाई ॥२४

इत सरूपदे आई साथ में, बीर बाई और तेज ।
और तेज बाई गेल बाई, इनों का सेवा में बड़ा सेहेज ॥२५

चंपा और सोहासन, बेल बाई और बाल ।
ए आई चारों साथ में, हुए राज अति खुसाल ॥२६

यों साथी साथ में, भए संगी चरचा के ।
पचास साठ आए साथ में, अहार चरचा पावें ए ॥२७

बड़ो विलासज होत है, सो क्यों कर कहों इन मुख ।
लाह लिया साथ में, सो कहो न जाए एह सुख ॥२८

बड़ो सोर हुआ सेहेर में, कांप्या कलि दजाल ।
ए आए मेरे दुस्मन, मोकों करें बेहाल ॥२९

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, ए बीतक दीव बंदर ।
लड़ाई दज्जाल सों, पहोंचाई सकती मोमिनों पर ॥३०

॥ प्रकरण ॥१९॥ चौपाई ॥८९४॥

[श्रीजी के विरुद्ध फिरंगी से शिकायत]

फेर कहों दीव बन्दर की, जो लड़ाई दजाल बीतक ।
तो मेहेर तले रखे मोमिन, करी सुभानुल हक ॥१

कथा वाचने के आसन, सो हुए दुस्मन ।
स्रोता जो थे उनके, ते तहाँ देने लगे स्रवन[1] ॥२

स्वाल पूंछे जांए तिनकों, हमको देओ जवाब ।
उनकों अर्थ आवे नहीं, रख ना सकें ताब ॥३

तब चुगली को चित में लिया, कोई करें उपाए ।
इनको इहां से काढ़िए, सब झगड़ा कीजे धाए ॥४

एक चुगल ठाढ़ा किया, करो फिरंगी को अरज ।
ए देव तुमारे निन्दत, एथी करो हमारी गरज[2] ॥५

चुगल केतेक दिन पीछे, गया फिरंगी पास ।
एक सकस मिला दरबार में, कोई कारज लिए आस ॥६

तब उनने कह्या[3], [तुम कहाँ जात कौन कांम ।
आए उतावले दरबार में, इन बेरा इस ठांम] ॥७

तब कह्या चुगल ने, कोई नया साध आया इत ।
सो निन्दत सब देवों को, ताकी चुगली को जात ॥८

तब उनने कही, तुम निंदा सुनी अपने कांन[4] ।
के तुम कही कहत हो, विना करे पेहेचांन ॥९

तब उनने कहा मोकों, नहिं उन साध पेहेचान ।
मैं निन्दा कानों ना सुनी, कही कहों औरों की जान ॥१०

१—ह० सो आय देने लगे श्रवन । २—ह० करो हमारी गरज । ३—ह० तब उन सकसने कह्या । ४—ह० तब उनने कही तें निंदा, सुनी अपने कान ।

ऐसा काम कोई करत है[1], बिन देखे नैन अपने ।
फिरंगी ऐसे जालम, पूछे न गुहाही किनसे[2] ॥११

तुरत अमल करत है, बहुत बुरा ए कांम ।
तिन साथ कों कसाला, जो देवे फिरंगी इन ठांम ॥१२

तो क्या हाल तुमारा होवही, कछू होयगा तुमें दुख ।
उनके दिल भली लगी, बड़ाज पाया सुख[3] ॥१३

वह ऐसेही पीछे फिरा, यह केहेके भया अलोप ।
फेर वह देखन न पावहीं, होयके गया गोप ॥१४

साथ में खड़ भड़ पड़ी, हुआ चुगल का डर ।
भागे चारो तरफों, खाड़ी गए उतर ॥१५

कोई सेहेर में छिप गए, कोई कहें हम न जावें उत[4] ।
कोई कहे हम चरचा ना सुनें[5], कबूं न गए तित ॥१६

इन भांत दजाल ने, सब के लिए हथियार ।
कोई खड़ा न रह सका, तरफ परवरदिगार ॥१७

एक जैराम खड़ा रह्या, और इनके घर के लोक ।
इनों आपोपा दिया, रहे अपने जोक ॥१८

एतो नजर दजाल की, देखाए अजमाए इन ।
खड़ भड़ पड़ी साथ में, डगे उत मोमिन ॥१९

१—ह० ऐसा काम करत हो । २—ह० सुनत तुमे मुख बेन । ३—ह० बडो जो पायो सुख । ४—ह० इत । ५—ह० कोई कहे हम ना सुने । ६—ह० कबहू । ७—ह० डगे इस सैयन ।

वह तो सोर ऊपर का, स्याह मुँह हुए चुगल।
फेर साथ बैठा सब मिलके, करने लगे नकल ॥२०

हांसी हुई साथ में, कहने लगे बीतक।
भूल मानी भागने, आगे बैठ के हक ॥२१

फेर राजें लिया दिल में, क्यों इहां से पावें निकसंन।
साथ जुदा जुदा काढ़ना, क्यों इकठे होएं मोमिंन ॥२२

इन उपाय के वास्ते, आए दीव मारी आरवन।
आई श्री बाई जी बंध में, तब छुड़ावने चले तिन ॥२३

नवी पुरबन्दर पाटन, सब ठौरों देख्या फेर।
कहूं न हुआ मयस्सर[1], कै मोहजल की उठी लेहेर ॥२४

साथ में खड़ भड़ पड़ी, दजालें किया जोर।
ठौर ठौर फितने उठे, करने लगे सोर ॥२५

इहां सेंती आए कच्छ, थावर दिया साथ।
मड़ई मिनें आएकें, साथ के पकड़े हाथ ॥२६

तहां प्रागमल कुंवर बाई, कितनाक[2] रेहेवे साथ।
भूल गए चरचा को, लई दजाल सों बाथ ॥२७

तहाँ खंडनी करकें, फिर जीवते किए तिनकों।
ऐसा हाल तुमारा क्यों हुआ, रेहेकें माया मों* ॥२८

१—ह० मवसर। २—ह० केतेक। * प्राचीन बीतक में १८, १९ और २० प्रकरण एक ही में सामिल है।

अब जागो दिन आइया, धाम चलने का ।
अब कहाँ लों खेल देखने, रहोगे तुम माया ॥२९

ए काहू के रही है, इनकी कौन प्रतीत ।
तुम क्या करोगे इनमें, रहो दुख देखने जिन इत[1] ॥३०

तुम तो चतुर प्रवीण हो, है तुमारा वतन धाम ।
तिनको भूल माया मिनें[2], क्यों करो कुफर का काम ॥३१

तुमको ऐसा न चाहिए, जो भूलो अपने ठौर ।
धाम लीला को छोड़ के, जाए काम करो और ॥३२

तुम धाम देखो अपने[3], हमकों क्या बताया श्रीराज ।
हम खड़े कौन भूमि में, हम आये थे कौन काज ॥३३

वहां एक दिन रहि के, किए जीवते सब ।
चरचा कर समझाए कें, कपाइए आए तब ॥३४

हरवंस ठाकर तहां रहे, अपने कबीले समेत ।
तहां आए वासा किया, जान धाम का खेस ॥३५

चरचा करी तिनके घर, कहे खंडनी के वचन ।
सब हुए जाग्रत, दो दिल हुआ रोसन ॥३६

भेजे बिहारी के कने[4], जाए करो दीदार ।
तुमकों ऐसा न चाहिए, जो छोड़ो परवरदिगार[5] ॥३७

१—ह० रहो दुख देखने इत जित । २—ह० तिनको भूल कें माया मे । ३—ह० तुम देखो भो घर अपना । ४—ह० पास । ५—ह० धनी निरधार ।

तँहां से आये भुजनगर, आए घर ब्रन्दावन ।
मिलाप किया तिनसों, हुए खुसाल मगंन ॥३८

कर आदर भली भांति सों, आरोगाए श्रीराज ।
लगे बातां पूछने, कहो हमसों काज ॥३६

कहो बात बीतक की, भई चरचा तिन समें ।
खंडनी के कहे बचन, सुख पाया इनसें ॥४०

फेर के चरचा भई, वचन खंडनी के ।
वेराग पुरा राज कों, सो घात बतावें ए ॥४१

सब कों मीठी लगें, होए चरचा जो हाल में ।
मकसूद होवे तिनसे, सब सक जाए उनसें ॥४२

जो मलीनता मनकी, सो सब हुई दूर ।
बड़ा सुख पाया इन समें, करते धाम मजकूर ॥४३

दिन दो एक रहेके, फेर नलिए पोहोंचे ।
तहाँ सेंती चलके, आए ठठे नाथे के ॥४४

पूछत घर उनका, नाथे सों भया मिलाप ।
भेटत ही सुख उपज्या[१], मिट गया सब ताप ॥४५

बात लगे पूछने, कौन भाग है हम ।
वहां सेंती इहां लों, धरे मुबारक कदंम ॥४६

१—ह० मिलते ही सुख उपजया ।

मेहेमत कहे ए मोमनो, दीव सें ले ठठे में ।
अब फेर कहों ठठे की, लाल हुई बीतक जो हमसें ॥४७

॥ प्रकरण २० ॥ चौपाई ॥६४१॥

[सातवां विश्राम सम्पूर्ण]

[ठट्ठे में चिन्तामण भाई से मुलाकात]

[अब कहों बीतक ठठे की, याद करो मोमिन* ।
जो देखाया खेल तुमको, बीच जिमी नासूत सुभान ॥१]

जी साहेब आए ठठे में, रहे दिन दस बार ।
फेर लाठी बन्दर आए, हुए इत हुसियार ॥२

विस्वनाथ भट मिले, आए देवा के दुकान ।
उन आदर बड़ो कियो, थी उपली[१] पेहेचान ॥३

इहाँ से चढ़े नाव में, सत्रह दिन लगा तूफान ।
ओ नाव[२] फेर आई, ज्यों था हुकंम हक सुभान ॥४

इहां फेर पधारे साथ वास्तें, अजूं तिंनसों न भया मिलाप[३] ।
तो नाव जाए न सकी, तब फिरके आये आप ॥ ५

फेर लाठी सें ठठे आए, नाथा जोसी मिल्या धाए ।
बंधन सों मुलाकात भई, उन अपने घरों पधराए ॥ ६

१—ह० उपर की । २—ह० जहाज । ३—ह० मोमिनो सो ।

फेर जिन्दा दास मिले, सुनी चरचा बाई ठाकुरी ।
ओ आई साथ में, मेहेर राज की उतरी ॥ ७

तब होने लगी चरचा, आनंद बड़ो हुओ साथ ।
चरचा जोस में होत है, धनीए पकड़े हाथ ॥ ८

इस समें लोक आवत, चरचा सुनने कों ।
सोर पड़या सेहेर में, एक साध आया ठठे मों ॥ ९

जो कोई साध सुनत, सो करने आवे दीदार ।
चरचा सुन राजी होवे, कहे सुकर परवरदिगार ॥ १०

सुने साध चिन्तामन, रहे कबीर धरंम में ।
कीजे दीदार तिनका, सुने चरचा उन मुखसें ॥ ११

घरों गए उनके, तिनसों करी मुलाकात ।
देखते ई पाया सुख, करने लगा बात ॥ १२

कहां से आए तुम, चरचा करो हमसें ।
हमको सुनाओ तुम कहो, जो कछू आवे तुमें ॥ १३

जो देने आए होतो देओ, लेने आए होतो देवें हंम ।
तुम सुनो हम कहें, चिन्हार होवे आतंम ॥ १४

के तो चतुर भुजका, देखावें तुमें दरसन ।
के तो जोती सरूप का, के सेस नाग सहस्त्रफन ॥ १५

के झिल मिल अनहद, ए सब देखावें हंम ।
ना तो तुम हमको कहो, ज़ो कछू पाया होए तुंम ॥ १६

तब जी साहेब कह्या, हम लेने आए वस्त ।
हमको तुम बताए देवो, हमारी यही कस्त ॥ १७

जो कछू तुम कह्या, सो अहे तुमारे वचंन ।
तिनका निरणय कर देवो, दिल कों करो रोसंन ॥१८

एक कमाल की साखी पर, चरचा हुई जोर ।
जोस में जी साहेब कह्या, तब खाई[1] चित्त मरोर ॥१६

कह्या कोड़ी थे हीरा भया, हीरा से भया लाल ।
आधा भगत कबीर है, सारा[2] भगत कमाल ॥ २०

तब जी साहेब कह्या, तुम क्या जानो कबीर ।
तो आधा भगत इनकों कह्या, चित नाहीं तुम धीर[3] ॥२१

कहां मजल कबीर की, केती अकल कमाल ।
तोल देखो दोनों कों[4], किनका कैसा हाल ॥ २२

बिन पेहेचांने बोलत, नहीं तुम सराफ ।
तो दोख नाहीं तुमको, ताको गुनाह माफ[5] ॥ २३

एक कबीर की किरंतन, सुनाए दिया जब ।
तब चिंतामने कह्या, आया सबद आगे सब[6] ॥२४

[एक पलकतें गंग जो निकसी, हो गयो चहुं दिस पानी ।
वह पानी दो पर्वत ढांपे, दरिया लहर समानी ॥

१—ह० पाई । २—ह० पूरा । ३—ह० जो चित नाही तुम धीर । ४—ह० तोल देखो अकन को । ५—ह० च० कहा कबीर कहा कमाल, विचार देखो आप । ६—ह० निकस्या सबद देखो अब ।

उड़ मक्खी तरवर चढ़ बैठी, बोतल अमृत बानी ।
वह मक्खी के मक्खा नाहीं, बिन पानी गर्भिनी ॥

तिन गरभे गुन तिनों जाए, वह तो पुरुष अकेला ।
कहे कबीर या पदकों बूझे, सो सतगुरु में चेला] ॥

[देखो सबद आगे चला, सो सकस मिल्या आए ।
अब देखो सबद इनके, ए सबद पार पोहोंचाए[1]] ॥२५

में तुमसों केहेता था, चलत सबद आगें ।
सो सकसो आए मिल्या, देखो सबद इनकें[2] ॥ २६

एती मुलाकात करकें, उठे जी साहेब ।
आए अपने आसन, करी साथ में चरचा सब ॥ २७

कलू मिसर के घरों, कथा में गए एक दिंन ।
असनाई[3] वह कच्ची, उते बातां सुनी मोमिंन[4] ॥ २८

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, ए ठठे की मजकूर ।
संबत सत्रह चौबीसे, कहों आगे और जहूर ॥ २९

प्रकरण २१ ॥ चौपाई ॥९७०॥

१—च० मे यह चोपाई नही । २—ह० मे तुमसो केहेता था, जो सबद आगे चलत। अपने सेवको को कही, वह सकस पोहोचा इत । ३—अर्थ सम्बन्ध, मित्रता
४—ह० उत चरचा सुनी सैयंन ।

[चिन्तामणि भाई को श्रीजी की परख]

चिन्तामन ढूंढत फिरै, कहां है उन[1] साथ का ठोर ।
आया पूछत कथा में, मोहे ढूंढत भई भोर ॥ १

कलू मिसर बताइया[2], नाथा जोसी का घर ।
तहां से खबर लेयके, आय पोंहोंचा अटारी पर ॥ २

जहां साथ बैठो हता[3], बीच में बैठे श्रीराज ।
चरचा के बखत में, लगा कदमों इन काज[4] ॥ ३

साथ सेवक[5] अपनें, चरचा लगे सुनने ।
स्रवन दई भली भांत से, निस्वत थी अपने[6] ॥ ४

सुख पाया चरचा में, अपनी मूल गई भूल ।
चरचा देखी अधिक, असल अंकूर का मूल ॥ ५

इनके जो सेवक थे, पड़ी खड़ भड़ तिन में ।
फिरे चित्त जो तिनके, इन चरचा सुननें सें ॥ ६

दिन दोए तीन लग, चरचा सुनी बनाए ।
तब सब लगे कदमों, हुई पेहेचांन ताए ॥ ७

खंडनी भई भली भांत सों, देखत साथ सबंन ।
तब चिन्तामन छाने कह्या, सरम राखियो बीच मोमिंन।

१—ह० वह । २—ह० तब मिसरे बताइया । ३—ह० तहा साथ सब बैठे
४—ह० चरचा के बखत कदमो लगा, चितामन कदमो इन काज । ५—ह० र
६—ह० निज वतन अकूर अपने । ७—ह० हुई पेहेचान हक जाए ।

एकान्त मोहे कहो, जानो तैसी खंडनी ।
पर मेरे सेवकों मिनें, सरम राखो जान अपनी ॥ ६

तब राजे इनसों कह्या, तुमारी क्यों न राखें [१] रम ।
तुमको जो कछू कहेंगे, दे पड़दा ओट [२] मरम ॥ १०

वे सबे गए अपने घरों, राजे रात में किए किरंतन ।
सुनो रे सत के बनजारे, ए सुकन ग्रहो मोमिन ॥ ११

तिनमें सुकन खंडनी के, छोड़ो ग्यान गुमांन ।
प्रात आए पढ़ देखिया, तब वाको भई पेहेचांन ॥ १२

अब मारो काले कुत्ते को, लाठी सिर ऊपर ।
सेवकों आगे तब कह्या, मैं खाली कछू न खबर ॥ १३

तब राजे सराहिया [४], स्यावास चिन्तामंन ।
पाई तें निसवत कों, ए सुकन मोमिन ॥ १४

कहा तारतम इनकों, सब सेवकों समेत ।
परहेज कराया चार बात का, ए कबूल कर लेत [५] ॥ १५

एक हराम कह्या मांस को, दूसरा हराम सराब ।
तीसरे औरत विरानी तजै, सो पावें हयाती आब ॥ १६

चोरी झूठ बोलना, इनका छोड़ा उदक [६] ।
अब हम कबूं न करें, मों पाया बेसक हक ॥ १७

१—ह० हम । २—ह० परदावोट । ४—ह० प्रात को आए तब पढिया, तब चितामनि को भई पेहेचान । ४—ह० तब श्रीजीए सराहिया । ५—ह० ए कबूल कर दिल लेत । ६—ह० छोडाया ।

इन समें चरचा, बड़ी जो होवे तित ।
साथ की आमदनी, हुई जो इन बखत[1] ॥ १८

चतुरा एक पोहोकरण, आवे राज की सेवा में ।
ल्यावे दूध नित्यांनें, सुनी चरचा कानों सें[2] ॥१६

तहां ब्रज रास को वरनंन, होता था नित्यांन[3] ।
वह देख अचंभा होवहीं, चरचा सुनते कांन ॥ २०

तहाँ उनकी सोहोवत लालसें, नित्यांने बखार में होए[4] ।
तहां आए इननें[5] कही, चरचा सुनी जोए[6] ॥२१

कहा ब्रज अखंड क्योंकर, कहां है रास अखंड ।
एह तो तुम कहत हो, न्यारा जो ब्रह्मांड ॥ २२

तब लालें कह्या, रास ब्रज न हमारी द्रिस्ट ।
चरम आँख क्यों देखिए, इन हाल सब स्रिस्ट ॥ २३

तब चतुरे कहा, क्यों आवे तुमारी नजर ।
कब दिव्य द्रिस्ट पाओगे, क्योंकर होए फजर ॥ २४

पांच तत्व तीनगुन, जब हुवो ब्रह्मांड को नास ।
तब ब्रज और रास की, ठौर कहां रही एह खास ॥ २५

तब लालदास चोंकिया, कहां सुनी ए बात ।
मोकों ठोर बताये दे, एह कहां पाई सिफत जात ॥ २६

१—ह० हुइ बोहोत इन बखत । २—ह० उनें । ४—ह० होत हतो नित्यांन । ४—ह० होवही । ५—ह० चतुरे । ६—ह० चरचा सुनके आया जे ।

दिवस अग्रिम भीम ने कर प्यार।
कहा-नल से वत्स ! दिन दो चार—
और ठहरो, समझ कर निज गेह,
प्राप्त हो दमनादिको का स्नेह।"
"तात ! जाना था यदपि अनिवार्य,
पूज्य का पर वचन शिरसाधार्य।"
मान आग्रह रुक गये निषधेश,
और सब आगत गये निज देश !

योग्य सुन्दर है गुणज्ञ अमत्त,
नृपति नल के अनुज पुष्कर दत्त।
विदर्भाधिप ने उचित ही मान,
योग्य अपनी भ्रातृजा के जान।
कुमुदनी सा सुखद उसका नाम,
बहन के ही थी सदृश गुण-धाम।
कर दिया युग का पवित्र विवाह,
हो गये निश्चिन्त तब नरनाह।
विदित भैमी केशिनी का प्रेम,
साथ रहने मे युगल का क्षेम—
जानकर नृप भीम ने स-उमङ्ग,
कर्ण नामक नल सखा के सग—
किया विदुषी का विवाह पुनीत,
प्राप्त कर लय, सिद्ध से थे गीत।
ठहर कर कुछ दिन वहाँ निषधेश—
चले, सानुज सैन्य-युत निज-देश।
गुरु जनो को पूर्ण दे सत्कार,
प्राप्त उनसे स्वस्तियुत कर प्यार।

देखत ही दीदार कों, बडोज पायो सुख।
मनकी कुलफत सब मिटी, भाग गया सब दुख ॥ ७

भई चरचा सब ब्रज की, देखी सुनी (जो) सब कांन।
तब आपै ईमान की, हो गई सब पेहेचांन ॥ ८

चार घड़ी चरचा सुनी, भई खुसाली मंन।
फेरके घरों आए[1], रह्या दिल कदमों मोमिन ॥ ९

फेर चरचा सुनने, आए बेर दोए चार।
बाग में जिन्दादास कह्या, धाम पैठे बिना विचार ॥ १०

फेर चरचा मारकंड की, कही देखाया द्रस्टान्त।
फेर[2] नजर खुली बातिन की, देखी द्रस्ट एकान्त ॥ ११

गीता और भागवत के, खोल दिया (सब) द्वार।
आई वस्त अखंड, देख्या परवरदिगार[3] ॥ १२

आया जोस वस्त का, रही ना कछूए सुध।
लोकीक द्रस्ट उतर गई, आई जाग्रत बुध ॥ १३

और सुध कछू ना रही, वहीं आवे याद।
द्रस्ट फिरे उतथे, अपनी जो बुनियाद ॥ १४

इन समें दज्जालने[4], बड़ा जो किया सोर।
लोकीक जो उन मुलक के, तिनों[5] किया जोर ॥ १५

१—ह० फेर के लाल घरो आए। २—ह० तब। ३—ह० देखे धनी निरधार।
४—ह० कलजुगने। ५—ह० उनों।

कछू न चल्या काहू का, रहे सिर पटक।
निन्दा करी बोहोतक, थे इत मदत हक॥ १६

इन समें आइया, मोहनदास दलाल।
रामदास वैद, ए भी हुआ खुसाल॥ १७

खट्टू मट्टू खत्री आए, और आए चतुर।
और मङ्गल आइया, हुई खुसाली खूबतर॥ १८

और भगत सामल, कुंवरजी और गोवरधन।
सुख देव और जेठा, और द्वारका मोमिन॥१६

रामचन्द बूला धीरा, और थिर दास।
और साथी केतेक, ल्याए ईमान खास॥ २०

किसन बाई बसई, सेहेज बाई बाई राम।
वलभी चतुराई करे, चरचा में आराम॥ २१

और चिन्तामन के सङ्ग, आया सारा साथ।
तामें ईमान दाखिल वह भए, जाके धनीएपकड़े हाथ॥२२

इन चरचा का मारका, बडाज पड़िआ आए।
वल्लभी मारग के, लोग लड़ने को उठ धाए॥ २३

दजाल[१] डरा देखकें, मेरे ए दुस्मन।
मेरा कछू ना चले, ए मारत मेरा मन॥ २४

१—हृ० कलजुग।

गुसाईं के बालक रहे, होए निंदा तिन में ।
वस्त को[1] समझे नहीं, फरियाद करै सब सें[2] ॥ २५

मास दस इत[3] रहे, हुआ चलने का दिन ।
सो समें भई मसकत की, बिदा हुए साथ मोमिन ॥२६

अरज करी साथ सबनें, ए कारज करें हंम ।
तुम[4] इत विराजे रहो, ए कारज होवे हुकंम ॥ २७

तब कहा साथ कों, उत है मेरा कांम ।
क्या जानें किन कारजें[5], मेरा जाना होत उस ठांम ॥२८

बोहोत विनती साथें करी, मानी नाहीं कोए ।
तब आग्यां पर धरी, कहा कारज करना सोए ॥ २९

फेर ठठे से लाठी बंदर, नाव ऊपर चढ़े ।
तहां से पोहोंचे मसकत, सरत थी वायदे ॥ ३०

मेहेमत कहें ए साथ जी, ए ठठे की बीतक ।
अब कहों मसकत की, (लाल) जो आग्यां है हक ॥ ३१

॥प्रकरण २३॥ चौपाई १०२८॥

१—ह० में । २—ह० फरयाद लगी तिनसे । ३—ह० यहां । ४—ह० आप ।
५—ह० कारने ।

[मसकत बन्दर की बीतक]

आप पोहोंचे मसकत में, उतरे नाव से ।
कांठे दुकान महावजीअ की, आप बैठे उनमें ॥ १

पूछी खबर उननें, उठकें मिले धाए ।
कुसल खेम पूछनें लगे, भले आप पोहोंचे आए ॥ २

इत बडो आदर कियो, लोकीक नातें सें ।
आदर भाव करने लगे, खबर बंद की पूछी इन समें ॥ ३

विस्वनाथ सङ्ग था, बाई जी की दई खबर[१] ।
रूपा धारा सङ्ग थीं, धाए पोहोंची घर ॥ ४

ठौर पास दिया रहने कों, सब मिल होए खुसाल ।
बातां लगे करने, बीतक अपने हाल ॥ ५

महावजी रसोई का, आदर किया इत ।
लगा आप सेवा करनें, हाल भाल उन बखत ॥ ६

काहानजी बेटा उनका, रहे दुकान पर ।
आरोग कें फेर बैठे, साथ ठठे की कही खबर ॥ ७

लगी होनें चरचा, जो ठठे की बीतक ।
उन समें जो सुख भया, मेहेर सुभानूलहक ॥ ८

१—ह० बाई जी दई खबर ।

तिनकी बातें करते, बडोज[१] हुआ सुख।
कसाला उन बंध का[२], सो भाग गया सब दुख ॥९

रूपा बाई राधा, सुनी जु चरचा तिन।
श्री राज की तरफों, रोसन हुआ मन ॥ १०

चरचा मीठी होत है, कोई कोई देवें कांन।
महावजी ने चरचा सुनी, होने लगी पेहेचांन ॥ ११

और लोक आए सुननें, लगी बातें चलने।
दीदार कों लोक आवहीं, बातां लगे सुनने ॥१२

इहां दिन दस बीस में, भई जो चरचा जोर।
दजालें इत सुनया, लगा जो करनें सोर ॥ १३

दजाल अपनें सिपाह में, निंदा लगा करनें।
ए कहां सें आए, मेरे मारनें का मनमें ॥ १४

में करों लड़ाई इनसों, ए क्या करें मुझ कों।
पैठ बाजे दिल में, आए लड़ने कों सामों ॥ १५

इहां चरचा किरंतन होत है, हांस विनोद विलास।
साथ को धामधनी बिना, और ना दिल में आस[३] ॥१६

इहां[४] दोए चार किरंतन, नए किए बीतक।
तूं दुनी कों क्या पुकारहीं, देख तरफ हक ॥ १७

१—ह० बड़ो जो। २—ह० कसाला बद का। ३—ह० मोर ना कछूए बात। ४—ह० इत।

रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गंमार ।
दुनी को कहा पुकारै, ए तो करें विहार[1] ॥ १८

तूं भूल न मेहेमत, संभाल अपना आप ।
सबस्यानेअपनेंकाममेंलगे,लगातोहेविरहधामकाताप[2]।१९

इन चरचा होते भया, माहावजी का बीच कांम[3] ।
चरचा लगी इनकों, दाखिल हुआ इसलांम[4] ॥ २०

और भी केतेक साथी, आए पोहोंचे इन ठौर ।
श्री राज की चरचा बिना, सूझत नहीं और ॥ २१

एक दिन चरचा में, आई खंडनी महावजी पर ।
वाकिफ पुरा न था साथ के, औगुण भासा दिल ऊपर ॥२२

मैं नां जाऊं इनपें, चरचा सुननें कों ।
मुझ पर करी खंडनी, क्या देख्या औगुण मुझमों ॥२३

रिसाए के अपनें[5], रह गया घर में ।
चरचा समें न आइया, हुआ दिलगीर राज सें ॥ २४

जब सोया रात कों, अपनें दुकान मों ।
रातको मारा तमाचा राजनें, हुई देहेसत जोर इनकों ॥२५

क्यों रीस करी इनसों, क्यों ना दिआ कांन ।
तूं जा फेर उतहीं, कर देख पेहेचांन ॥ २६

१–ह० दुनिया को कहा पुकारही, ऐ अपने करे अहार । २–ह० तोहे धूहे धाम का ताप ३—ह० भाई महावजीका इत काम । ४—ह० दाखिल हुआ निज धांम । ५—ह० रिसाए के आप अपने ।

जागे पीछे रोइया, प्रात बैठा आए द्वार ।
जगाए मेहेराज कों[1], करने लगा मनुहार ॥ २६

रोए के कदमों लगा, अपनी कही बीतक ।
मुझे तमाचा मार कें, मोहे फिराया हक ॥ २८

मैं खंडनी सुनकें, हो गया बेजार ।
मैं तो कच्चा साथ में, ना पेहेचांन परवरदिगार ॥ २६

इहां से चरचा मिनें, भया पक्व प्रवीन ।
चरचा सुनते सुनते, बडा भया आकीन ॥ ३०

बेटा जोरु बाप महतारी, और कुटुंम परवार ।
सो सब लगे लड़ने, ले दज्जाल हथियार ॥ ३१

और लस्कर दजाल का[2], करने लगा सोर ।
जोर लड़ाई इनों करी, जो था इन में जोर ॥ ३२

एह ना डग्या इन समें, थे राज इनके साथ ।
जाको मदत हक की, धनीए पकड़े हाथ ॥ ३३

किने ना चला तिनसों, सिर भान्या दजाल ।
इनकों धाम धनीय का, बडाज हुआ हाल[3] ॥ ३४

इन समें साथ आइया, कहों जो तिनके नांम ।
पेहेलें सबसे आइया, विस्वनाथ इन कांम ॥ ३५

१—ह० जगाऐ श्रीजीयको । २—ह० सो तो लस्कर दजाल को । ३—ह० बड़ा जो हुआ हाल ।

राधा बाई रूपा बाई, और भाटिया प्रधांन ।
और आया खट्टू, मेहेराज कों पेहेचांन[1] ॥३६

और हीरजी भाटिया, और महावजी इन समें ।
और नारायन काइथ, रामो सुनी उनसें ॥३७

और सूरजी खंभालिए का[2], संघजी आया इसलांम ।
कान्हजी महावजीय का, आई हीर गङ्गा इसठांम ॥३८

और लखमन रङ्गा नाथी, और मनजी जीवा बे ।
और रूपजी कामदार, और बेरसी सुनी ए ॥३९

ए आए इन समें, तामें चरचा बड़ी होए ।
सुख लिया इत साथने, क्यों कर कहों मैं सोए ॥४०

उद्धव चरचा नित्यांने, होत साथ मिनें ।
हाथ पटके दजालें, ए मगन धाम मिनें ॥४१

बंदीवान के पैसे कों, आये दरोगा करे पुकार ।
काफर गरजे सिरपर, क्यों होत न खबरदार ॥४२

सिर पर साहेब जो, वह है खबरदार ।
हमकों फिकर न कछूए[3], ओ कादर है भरतार ॥४३

बड़ो द्रढ़ाव देख कें, वह हो गया जेर ।
जिनकी ऐसी चरचा, फेर केहेनी आवे फेर ॥४४

१—ह० पेहेले राज को पेहेचान । २—ह० और जीवा खभालिय का । ३—ह० हम को खबर ना कछू ए ।

भेजे अपने आदमी, मसकत बंदर में ।
छुड़ाए ल्याया न्यात कों, आया अबासी बदर अपनें ।।२

भई मुलाकात भैरों सें, जी साहेब सों जब ।
अपने घरों ले गया, खिजमत करनें लगा तब ।।३

खेंम कुसल बातें पूछी, अपने देस परदेस ।
सब बात का उत्तर, बताए दिए खेस ।।४

भई पेहेचांन आपस में, हुआ रसोई का आदर ।
जागा अपने नजीक, उतारे अपनें घर ।।५

उहां बिछौना बिछाए कें, तहां बैठाले राज[१] ।
रसोई होत एक तरफ, लगे चरचा के काज ।।६

आए आगे बैठा[२], अपने कबीले समेत ।
ब्रजलीला की चरचा, भैरों स्रवन सों लेत ।।७

सुन चरचा सुख पाइया, भई दो पहर बैठक ।
काहू कों ना खबर कालकी, ना रही सुख आड़े सक ।।८

रसोई की अरज भई, उठे राज उन बखत ।
भैरों गया अपने घरों, बोहोत खुसाल हुआ इत ।।९

राज आरोग फेर बैठे, साथ सुख मिलाए ।
कोई कोई नए इत आए मिलें, चरचा कों ललचाए ।।१०

१—ह० तहां पधराए श्रीराज । २—ह० आए आगे बैठा भैरो सेठ ।

फेर होने लगी चरचा, बखत भया लेल ।
फेर किरंतन करनें लगे, भए मगन ब्रजके खेल ॥११

इहां बोहोत रात बीत गई, हुआ उठने का समें ।
भैरों सेठ गया अपनें घरों, भए साथ मगन चरचा सें ॥१२

फेर चरचा होते होते, होए गई फजर ।
उठे दातून पानी कों, भैरों की खुली नजर ॥१३

कोई इत सोए रहे, कोई बैठें पास राज ।
कोई आवत दीदार कों, रह्या चरचा का काज ॥१४

तब आए भैरों ठाकुर, उन संग आए कै लोक ।
होने लगी चरचा, भागा सारा सोक ॥१५

दोए मुलतानी भैरों संग, आए उन बखत ।
थे जोगारंभ में माहिर, बताए नानक के तित[1] ॥१६

पोथी साखी कबीर की, रहे उनके पास ।
अरथ ना सूझे तिनका, तापर चरचा हुई खास ॥१७

कोई दिन चरचा सें, बे दोउ लगे कदंम ।
जेता था अंकूर उनका, सोंपी उन आतंम[2] ॥१८

तेज बाई इन समें, आई करन दीदार ।
ल्याई कबीला अपना, नरसी के किरंतन बिहार[3] ॥१९

१—ह० थें जोगारभ मे मेहेरम, चेला नानक के तित । २—ह० जेता था अकूर, इनको सोपी आतम । ३—ह० ना रही सक किरतन बिहार ।

तिनकों सुन गलित भई[1], संग आई सही जेती ।
किरंतन उनें मीठे लगे, राजके चरन चित लेती ॥२०

फेर वे आवन लगी, छोड़ दिए सबों घर ।
बैठी रही चरचा मिनें, घर दिल न लगे क्योंएकर ॥२१

अब भैरों सों राजे कह्या, तुम हमें बुलाए इत ।
उहां सेंती छुडाए कें, सेवा करो इन बखत ॥२२

अब हम तुमारे आगें, कौन सी राखें बस्त ।
जि[illegible]ों होवे बदला, हम ताका किया कस्त ॥२३

जो कछू हम पे वस्त है, सो आगें धरें सब तुंम[2] ।
सो ग्रहो तुम चित में, ज्यों फल पावें आतंम ॥२४

तब भैरों ठकरे, वचन आगें जी के कहे[3] ।
मेहेर करी मुझ ऊपर, वो सुनावने मुझे ए भए[4] ॥२५

तब जी साहेबने कह्या[5], तुम इतना करो परहेज ।
होए प्रापत चरन भगवान के, घरों बैठे सेहेज ॥२६

एक महीना की मुदत, इत मों आगें करो तुंम[6] ।
जो न होवें चरन प्रापत तुमकों, कहो वचन हंम[7] ॥२७

तब अपना परहेज तोड़ियो, बिदा कीजो हम कों ।
हम जावें अपने घरों, रहो मगन अपने मों[8] ॥२८

१—ह० तिन को सुन गलतान भई । २—ह० सो आगे राखे सब तुम । ३—ह० तब भैरो ठकर ने, बचन आजीजी के कहे । ४—ह० जो सुनावने के तुम भए । ५—ह० तब श्रीजीने कह्या । ६—ह० इत मुझ आगे करो तुम । ७—ह० ज्यो होवे चरन प्रापत तुमको. कहते सुनाबत हम । ८—ह० हम जावे ठोर अपने, रहो मगंन माया मो ।

पीना तमाखू छोड़ देओ, और मांस मछली सब ।
सराब और सब केफ, परदारा चोरी न कब ॥२९

इतनी बात का परहेज[1], करो इन बखत ।
तो तुमकों प्रापत, पाओ सुख नित ॥३०

ए सुन भैरों कह्या, एह तो बात है सेहेल ।
ए अवस्य मोहे करना, मैं छोड़ दई दजाल की गैल[2] ॥३१

इतनी मेहेनत सें, जो जागे अपनी आतंम ।
तो और क्या चहिएत है, हमको कही देखाओ तुंम ॥३२

उस बखत आगे हुका था, सो दिया तुरत फोड़ ।
उदक धरा चार वस्त का, दई स्रवन आतंम जोड़ ॥३३

रसोई मिनें मने भई, मांस ल्याओ जिन कोए[3] ।
हमारी रसोई जुदी करो, हो गया विरक्त सोए ॥३४

घर के लोक अन्दर, लगे बड़ बड़ करनें ।
एह कौन आया हमारे घरों, क्यों परहेज कराया इनें ॥३५

इनका पिंड तो इनही पर, रहता था गुजरान[4] ।
ताको क्यों छुड़ावत, सुकन कहें लिया ईमांन[5] ॥३६

भैरों सुनके कहे, लिया परहेज कोईक दिन[5] ।
फेर परहेज तोडोंगा, जो दाखिल न होउं मोमिन ॥३७

१—ह० ईत ऐती बात का परहेज । २—ह० ऐ सुकन सुन भैरो ने कह्या, एह बाते है सेहेल, अवस्य मोको करना, ऐ छोड दे दिजाल गेल । ३—ह० मांस मछली करो जिन कोए । ४—ह० था ईन पर गुजरान । ५—ह० भैरो सेठे खीज कर कह्या लिया मे परेज कोई दिन ।

समझ उस हुकार को घन-घोष,
मोर कितना पा रहे-परितोष।
नाचते ग्रीवा किये है भग,
मुग्धभावा वे प्रियाये सग।
पँखो मे कितने भरे है रग,
देख होती मनुज मति तो दग।
लग-रहे नीलम जडे-से पक्ष,
कुशलता यह प्रकृति की प्रत्यक्ष।
हे प्रकृति की तूलिके! तू धन्य,
धन्य, तेरा कार्य-क्षेत्र अरण्य।
चलो! अब तो कर चुकी विश्राम,
झील देखो, दिव्य-शोभा-धाम।
और देखो, जा रहा वह ऋक्ष,
इधर यह विकसित वकुल का वृक्ष—
कर रहा तुमको समर्पित फूल,
श्रेष्ठ का क्षण-सग भी सुखमूल।
गन्ध इनसे उड-रही सर्वत्र,
कर-रहे नृप-लोग मानो सत्र।
झड रहा यह मुग्ध आप पराग,
इष्ट इसको प्रिया-पद अनुराग।
सामने शाल्मलि-विपिन उस ओर,
छू-रही वह गिरि-शिखा नभ छोर।
भर अहा, बहु पक्षियो से गोद,
प्रगट करता वृद्ध वट यह मोद।
सभी तरु-वर-कृत्य अपना जान—
कर रहे निस्स्वार्थ छाया-दान।
तन रहे आकाश-मे बन धीर,
बाँटते पर-हित, स्व-तन-धन वीर!

लगे लुगाइयों से लड़नें, क्यों तुम जाओ तित।
ऐसा ना चाहिए तुमकों, घर छोड़ो रात बखत ॥४७

तब जवाब दिया उनों ने, हम से बुरा ना हुआ कोई कांम।
चरचा सुनने भगवान की, जात हैं तिस ठांम ॥४८

एक तो इन देस में, कबूं ना चरचा होए।
इत चरचा करनें, कबूं ना आवे कोए[1] ॥४९

एतो पूरब अंकूर तें, प्रापत भए चरन।
[तिन आड़े तुम होत हो, हमारे दुस्मन ॥५०

हम आतंम सोप चुकी, भगवान के कदंम।
देह तुमारे भाग की, सो छोड़ देत है हंम] ॥५१

क्या करोगे हमको, यों बरजी ना रेहेवे कोए।
तब तेज बाई के घरों गए, मिल लड़ने को सोए ॥५२

वह थी सेहेर में सिरदार, तिन आगे करी अरज।
तुम जिन जाओ साध पें, हमारी एह गरज ॥५३

तब तेज बाईएं कह्या, क्या मोहे बरजत तुंम।
मेरी अवस्था ना देखत, दोष न कछूए हंम ॥५४

तब उनों सबों कह्या, हम तुमें क्यों बरजें।
पर तेरे पीछें सब लगी, जात हैं चरचा में ॥५५

१—ह० इत्त कोन आवत करने, आई भाग हमारे सोई।

तिस्वास्तें हम तुम कों, बरजत हैं इन कांम ।
ना जाओ हमारी खातर, सुननें चरचा उस ठांम ॥५६

तब तेज बाई ने कह्या, तुम अपनें बरजो लोक जाई[1] ।
मैं तो वहां जाऊंगी, तुमें करनें होय करो सोई ॥५७

साथ के नाम कहत हों[2], अबासी बंदर के ।
एक तो भैरों ठक्कर, और देवचंद भाई जे ॥५८

और भाई अमरीया, और अमोलक ।
मेरबाई बाई इन्द्रावती, राधा बाई बुजरक ॥५९

सुताई और फूलबाई, और बाई रतंन ।
लछो बाई और सखी, ए आई भली जतंन[3] ॥६०

तेजबाई और बाई किसुनी, और जसोदा बाई ।
पेहेले ए आई साथ में, खुस खबरी इनों पाई ॥६१

और साथ बोहोत हैं, सो केते लेऊं नांम ।
आगे जाहेर होएंगे, जो दाखिल निज धांम ॥६२

यों चरचा होंने लगी, एक दूजे के संग ।
साथ को आनन्द भयो, अंग न माए उमंग ॥६३

चरचा चितवनी ओछव, होनें लगा जोर ।
चित साथ के राज तरफ, बढ़ते चले ओर[4] ॥६४

१—ह० तुम अपनें बरजो घरके जाई । २—ह० साथ नाम केता कहो । ३—तले । ४—ह० चित्त राज को साथ तरफ, बढ़ते चल्या ग्रोर ।

नयो साथ आवत है, सो करत हैं हेत ।
रमण ब्रजरास को, सो बानी भली भांत लेत ॥६५

भैरों ठक्कर आदर, बड़ा जो किया हाथ ।
जी साहेब सें दिल बांधिया[1], धनीएं पकड़े हाथ ॥६६

तब[2] मास दोए तीन भए, रजा मांगी जब ।
हम जाएँ उन देस में, उन रोए बातां करी तब ॥६७

हमकों क्यों इत छोड़ोगे, कर असनाई धांम ।
हमारी सुरत बांधी एक तुमसों, रह्या न कोई कांम ॥६८

जी साहेब विचारिया[3], जो कदी रहे बरस एक ।
तो साथ आवे सनेहसों, एक सें होवे अनेक ॥६९

बात बड़ी है करनी, आवें सकुंदल सकुमार ।
विस्तार होवे ब्रह्मांड में, जाको वार न पार ॥ ७०

हम ऐके बंदर अटके, क्या राज करना इत ।
ए तो हमें ना छोड़ हीं, आज इन बखत ॥७१
ए विचार नित्य करें, देखें तरफ श्री राज ।
साथ का चित बंध चला, धम के सुख काज ॥७२

एह तो कारज कारन, साथ काढ़ना ठौर ठौर ।
तिसवास्तें ऐसा चाहिए, तब आई ए बातिन और॥७३

१—ह० श्रीजीसो दिल बाधिया । २—ह० इत जब । ३-ह० श्रीजीऐ बिचारिया ।

हुकम हुआ तागीर का, हुई नए की आमदन ।
रइयत लागी भागने, जहां तहां निदान[1] ॥७४

संकोच भयो भेरों को, रखने लड़के आपनें ।
इनकों कहां छिपाऊंगा, बात आवै न दिल में ॥७५

तब रजा दै राज को, नाव को बैठ गए बसरे के ।
तापर चढ़ाए साथ कों, उत आये पोहोंचे ए ॥७६

वस्तर भूषण पैसे, भली भांत दिए साथ ।
जैसी उनकी सकती, तैसी भली चलाकी करी हाथ ॥७७

जिन का जैसा अंकूर, लाभ लिया तिन माफक ।
ताकों तैसी सोभा भई, जो आग्यां थी हक ॥८५

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए अबासी बंदर की बीतक ।
अब फेर कहों ठेठे की, लाल जो बीतक हुकंम हक ॥७९

॥ प्रकरण २५ ॥ चौपाई ॥११५७॥

१—ह० हुकम हुआ तागीर का, वहा नए की आमदान, तब रात लगे भागने, जहां तहा निदान !

[पुनः ठट्ठा आए]

अबासी बंदर थें, आए कोग बंदर ।
तहां थें फेर नाव चढ़े, पोहोंचे खाठी बंदर ॥१

तहां चार दिंन रेहेकें, आए नगर ठठे ।
नाथा जोसी ने सुनी, दोड़ा लेनें कों आगे ॥२

साथ सब दोड़े सामें, मारग में किया मिलाप ।
साथ सबे सुख पाइयां, मिट गई दुनियां ताप* ॥३

ठाकुरी बाई के घरों, ओ डेरा दिए उतार ।
साथ सब दौड़िआ, किया मिलाप खूबतर[1] ॥४

साथ सबे आए मिल्या, हुआ साथ रसोई का आदर ।
साक तिरकारी बजार सें, सब साज ल्याए ततपर[2] ॥५

श्री जी और बाई जी, और साथ सब ततपर ।
बैठे इत आरोगनें, ठाकुरी बाई के घर ॥६

इत उछरंग साथ को, हुआ है ठौर ठौर[3] ।
सामां ले ले दौड़ हीं, अपनें घरों सें और ॥७

अबासी बंदर की, कही सब बीतक ।
इन भांत साथ आइया, सुकर बजाइया हक ॥८

१—ह० ठाकुरी बाई जिन्दादास, आए डेरा किया तित, और साथ सब आए मिले, आए डेरा किया मिलाप इत । २—ह० ठाकुरी बाई इन समे, भए साथ रसोई के कांम, साक तरकारी बाजार सें, सब साज ल्याई इस ठांम । ३—ह० हुआ बड़ा ठौर ठौर ।

मन बढ़े सब साथ के, सुनते एह बीतक ।
राह जानी अपनी, सब पर बुजरक[1] ॥९

इत दीदार कों आवत, ठठे के जो लोक[2] ।
देखा साथ तिनकों, भजत सारा सोक[3] ॥१०

ए संबत सत्रे अट्ठाइसे, महीने पूस के[4] ।
पधारे ठठे मिनें, राजें रजा मांगी ए[5] ॥११

ठठे के साथ के सङ्ग थे, आया मटहरी में साथ ।
चरचा सुनी धाम की, जाके हके पकड़े हाथ ॥१२

ताके नाम लेत हों, सुनियो तुम मोमिंन[6] ।
जिनके दिल हकने[7], किए अपने तरफ रोसंन ॥१३

भगतीदास और साहजू, और अड़न मरकन ।
पारन मोटन तुलसी, और कह्या[8] गोवरधन ॥१४

जेठमल और बालचंद, दयाल धरमदास ।
सुखानन्द सामल श्रीनन्द, सिवदास मीठा खास ॥१५

टोडर मल और नन्दलाल, और दूसरा मोहन ।
लड़क गवरी गरीब दास, बाई ग्यान और खेलन ॥१६

समाबाई सुहाग बाई, और बाई कल्यान ।
समगी बाई मेघबाई, बाइ सेसमन पेहेचांन[9] ॥१७

१—ह० राह जानी निजधाम की, देखी सबो पर बुजरक । २—ह० ठठे के सब लोक
३—ह० देखा साथ तिनको, भागत सब का सोक । ४—ह० मास बैसाख का होए ।
५—ह० तब साथ रजा न देवे कोए । ६—ह० सुनियो सब सैयन । ७—ह० हके
इनो कें दिल को । ८—ह० भाया । ९—ह० भई सहजमल पेहेचांन ।

थारी बाई पारवी बाई, और बाई कही परी।
अजबाई आई बाई इन पर, भई धनी की खुस खबरी॥१८

और भाई धरमदास, और कह्या बंधन।
प्रथीमल और अमल, माधोदास दिया मन॥१९

और आया जेठमल, बालचंद गोकुलदास।
वंसीधर और गिरधर, बुलचंद राएचंद खास॥२०

और तीसरा मूलचंद, हरपाल हीरा नांम।
बालभोग सूरजी, खेमदास राजन इस ठांम[1]॥ २१

थारा और कमाल, सुमार चंद हरवंस जे।
कस्नदास जेठी आनंद, मूल बाई राम बाई ए॥२२

मखा बाई उमर बाई, मलूक बाई जीवनी।
सामबाई सहोद्राबाई, रुईचंद हरबाई जाने धनी॥२३

लखमीबाई सामही बाई, ए आई बीच इसलाम।
पर पूठे कानों सुनी, ल्याई ईमान इसठांम॥२४

ए साथ ! उस जागा, करी चरचा जोर।
एह देख दजालनें, (इत) किया बडा सोर॥२५

साथ सब कोई कों, पोहोंचा कसाला इत।
ए समय भया कठण, आया बखत है रोज क्यामत॥२६

१—ह० खेमदास आया बीच निजधाम। २—ह० ए साथ मटोद मे, इत भई राज की चरचा जोर।

अब फेर कहों बात ठठे की, भेजी खबर पुरी नौतन ।
हम आए उतसें[1], सब खबर लिखी मोमिंन[2] ॥२७

ज्यों साथ आए मसकत में, और अबासी बंदर ।
सो सब पाती में लिखी, श्री बिहारी जी ऊपर ॥२८

और नसरपुर के साथ की*, लिखी सब खबर ।
सामलदास थासाथ में, तिन पैगामपोहोंचाया यों कर[3] ॥२९

और साथ सब दीब का, सब लिखे नौतन पुरी ।
हकीकत पाती लिखकें, बिहारीजी कों खुसखबरी ॥३०

हम आवत हैं कच्छ में, तहां करें मिलाप[4] ।
तहां इत आवन का[5], इलाज कीजो आप ॥३१

ए पाती भेजकें कह्या, हमको रजा देओ तुम साथ ।
हम जावें कच्छ में, होए बिहारीजी सें मिलाप ॥३२

साथ बिदा ना देवहीं, भई रदबदल कोई दिंन ।
मास एक तहां रेहे, फेर विदा दै मोमिंन ॥३३

इन समें लखमण, गये थे पोर बंदर ।
वहां जाए साथ काढ़िया, तहां पोहोंचाई खबर ॥३४

मेहेमत कहे ए साथ जी, ए बीतक ठठे की जांन ।
अब याद करो नलिए कों, लाल आगे कहों पेहेचांन ॥३५

॥प्रकरण २६॥ चौपाई ११६२॥

१—ह० हम आए बदर अबासी से । २—ह० मोमिन । ३—ह० *और न सेहेर पुर के साथ की, तिन पैगाम दिया सब पर । ४—ह० तहा तुम्सो होए मिलाप । ५—ह० बहा से इत आबन का । ६—प्रा० इन समे लखमन पुर मे, जाए साथ काढ्या एह, तहा जो चरचा भई, लिखी खबर पाती मे तेह ।

[नलिया बंदर में धारा भाई से मुलाकात]

अब जी साहेब जी ठठे से, नलिए आए पोहोंचे ।
धारेने ए बात सुनी हती, आए पोहोंचा धाए कें ॥१

नलिए में आए पोहोंचे, किस्सा कह्या अपना ।
मैं खंभालिए रहता था हुआ साथ मिनें रहना ॥२

भाई सूरजी मस्कत सें, आया जब इत ।
तब साथ का मंडान, हुआ जोर बखत[1] ॥३

नया साथ केताक आया, और आया मेरा कबीला सब ।
तहां दीदार देवहीं[2], ब्रजलीला भए तब ॥४

मोकों आवे आवेस, दिन में होवे दीदार ।
मैं राज की बातें सब कहों, श्री धाम लीला विस्तार ॥५

तब साथ सब मिलकें, लगे पूजने मोकों[3] ।
गादी बिछाए बैठाया, मोकों सेवें साथ मों ॥६

जहां कृपा होय राज की, तहां साथ सब पूजें ।
तहां सक ना रहे काहू को, मिल सेवे चित दे ॥७

ए बात सुनी बिहारी जी, अकरास लगा दिल[4] ।
ए कैसी राह चली, आई माया भई सामिल[5] ॥८

ए तो पंथ गोलों का*, हुआ सब में नांम ।
कोई ना ले देवचंदजी, मारग नांम इस ठांम[6] ॥९

१—ह० आया सूरजी मसकत से, खभालिए मे जब, साथ का मडान चरचा को, हुआ बखत तब । २—ह० तहा श्रीराज का दीदार । ३—ह० लगे पूजन मोको । विशेष—गोला गुजरा मे शूद्रों की एक जाति है, धारा भाई इन्ही मे से एक थे । ४—ह० अकरास लागी मन । ५—ह० मई माया सामल सबन । ६—ह० मारग नाम निज धाम ।

(तब) बुलाए नागजी कों, कह्या बिहारीजी इत ।
पाती लिख सूरजी पर, सिताब पोहोंचो इस बखत ॥१०

वह पाती सुनकें दौड़िया, पोहोंचा नए नगर[१] ।
मुलाकात करी बिहारी जी सों, डरया धारे के खातर ॥११

पूछी खबर साथ की, सब बताई इंन ।
मेहेर भई साथ ऊपर, कही खुसाली मोमिंन ॥१२

तब बिहारीजी खंडनी करी, तुमकों माया लागीजोर ।
तुमारे घर मिनें, किया कल जुगे सोर ॥१३

धारे को तुम काढ़ देत्रो, रहे न साथ मिनें ।
न राखो इनका कबीला, जो रहे साथ मिनें ॥१४

तो हमारे तुमारे, नाता रहे ना धांम ।
नातो तुमें निकालें साथ सें, हम सों न तुमें कांम[२] ॥१५

ए बात सूरजी सुनकें, हुआ धारे से बेजार ।
मैं काहे को इने रखों[३], हम दाखिल बारे हजार ॥१६

मेरा नाता धाम का[४], क्यों कर तोड़त तुंम ।
हम कबीला ना राखें धारेका, ना छोड़ें तुमारे कदम ॥१७

ए रदबदल करकें, फेर आया खंभालिए ।
धारा कबीले समेत, इलाज किया निकालने के ॥१८

१—ह० पोहोंचा सूरजी नए नगर । २—ह० जो हम सुन्या तुमे ए काम । ३—ह० हम काहे कों इने रखें । ४—ह० मेरे नाता श्रीधाम का । ५—ह० धारा कबीले समेत इलाज, किया निकालनें के ।

सब साथ कों केहे कें, धारे को रजा दई[1] ।
तब बाइयां जो थी साथ में, तिन ए अरज को गई[2] ॥१९

कहा हमारा गुनाह है, कौन बुरा किया हम कांम ।
जो हमकों साथ सें निकालत, साथ में सें इस गांम[3] ॥२०

हुकम नहीं विहारी जी का, इत क्या चले हंम[4] ।
अरज करो ऊत साथ में, हजूर जाओ तुंम[5] ॥२१

धारा कबीला लेयकें[6], गया नौतन पुरी ।
आजिजी करी बोहोतक, चित में कछू ना धरी ॥२२

रोए धोए पीछा फिरा, आज मोहे बरस भया एक ।
आजिजी में बोहोतक करी, कै किए संकल्प अनेक[7] ॥२३

तब इलाज में देखया, है ठौर एक मेहेराज ।
में उत जाऊं कदमों, जो मेहेर होवे राज ॥२४

सुन तुमारी आदनी, मोहे आनन्द भया मंन ।
मैं दौड़ा उत सुनके[8], आए कदमों लगा मोमिन ॥२५

अब ज्यों जानो करो, मैं तो आए ग्रहे कदंम ।
मैं तो कहूं ना जाऊंगा, रहों तुमारे तलें हुकंम ॥२६

[नौवां विश्राम सम्पूर्ण]

ए बात धारे की सुनकें, जी दिया ऊत्तर ।
खातर जमारख तूं, कछू दिल में ना कर फिकर ॥२७

१—ह० मोको रजा दई तब । २—ह० बेनी बाई जो थी साथ मे, अरज करी साथ आगे सब । ३—ह० देस ठौर ऐ गाम । ४—ह० इत क्या चले साथ हुकम । ५—ह० अरज करो उत जाए के, हजूर जाओ बिहारी तुम । ६—ह० तब मे कबीला लेय कें । ७—ह० विनती मे बोहोतक करी, कै किए उपाए अनेक । ८—ह० मे दौड़ा इत धाय कें ।

बिहारीजी इत आवत, जाय देऊं साहेदी मैं[१] ।
मेहेरवांन होवे मुझ पर, ऐसे काम किए सें ॥२८

पेहेलें विहारीजी कों, कागद का देओ जवाब[२] ।
हमतो कहूं न आवहीं, तुम जाय के कहो सिताब ॥२६

तब फेर विस्वनाथ कों, पठाया नए नगर ।
हम चले आवत हैं, तुम रेहे ना सको इन पर[३] ॥३०

तब बिहारीजी चले, बैठे नाव ऊपर ।
मड़ई में जब उतरे, धारा दौड़ा ले खबर ॥ ३१

दई बधाई आए कें, आए विहारीजी इत ।
जी साहेब सुन खुसाल भए, देनें लगे बगसीस उत[४] ॥३२

तब इननें कह्या[५], मैं एही पाऊं बगसीस ।
कदमों विहारीजी के, मैं नमाऊं सीस[६] ॥३३

मोंकों लेओ साथ में, दाखिल करो इसलांम ।
मेरे दिल एही रहे, पुरो मनोरथ कांम[७] ॥३४

इन समें साथ सूरत सें, आए थे आठ जने ।
जी साहेब कें दीदार कों[८], ले चले कबीले अपने॥३५

एक भगवान था[९], और नागजी नाहाना ।
वल्लभ और धनजी, ले कबीला अपना[१०] ॥३६

१—ह० जाय खबर देऊ मे । २—ह० पेहेले बिहारीजी को कागद, ताको दियो जवाब । ३—ह० तुम रेहे ना सको क्योए कर । ४—ह० लगे बगसीस देनें तित । ५—ह० तब धारे नें कह्या । ६—ह० जाए नमाउ सीस । ७—ह० तुम पूरो मनोरथ काम । ८—ह० ते श्रीजी के दीदार को । ९—ह० एक आकल भगवान था । १०—ह० ले चले कबीला अपना ।

सुन्दर बाई साथ में, और बाई रतंन ।
और बाई मटालालो, आई भले जतंन ॥३७

और बिहारीजी साथ, संघजी और अखई ।
हरवस और लाला, ए सोहोबत एकठी कही ॥३८

और जी साहेब के संग, एक बाई तेज[1] ।
रूपा और राधा बाई, उनकों सेवा सेहेज[2] ॥३९

आए ठठे सें सग राजके, नाथा और खेमा ।
ए आए थे पोहोंचावने, रहे साथ में जमा ॥४०

सूरजी और हीरजी, और थीरदास जीवराज ।
अजबाई बेहेन धारे की, ए आई विनती के काज ॥४१

और आया हरवंस, और आया नरहर ।
संग अस्त्री अपनी, आए दीदार के खातर ॥४२

ए आए मिले नलिए में[3], सब मिलकें हुए खुसाल ।
बिहारीजी का आगा लिया, दौड़े दीदार के हाल[4] ॥४३

एक ठोर मांग लई, नलिए के कामदार पास ।
थी उनसे न्यात की हुजत, तिन सगाई जानी खास ॥४४

उन हवेली में उतरे, साथ सबे एक ठौर ।
बिहारीजी की खिजमत में, सब करने लगे जोर ॥४५

१—ह० और श्रीजी की सोहोबत में, एक बाई कही तेज । २—ह० उनो को सेवा में हेज ।३—ह० आए मिले नलिऐ सेहेर मे । ४—ह० दौड़े दीदार को ले हाल ।

अपनी जो बीतक, जी साहेब लगे केहेनें।
बिहारीजीने सारी सुनी, हंसने लगे मिनो मिनें ॥४६

सब साथ एक ठौर हैं, सुन चरचा पाया सुख।
सब सोक दिल के गए, जो देखे माया दुख ॥४७

उछव रसोई होने लगीं, हुआ अंग उछरंग।
सब साथ हुए एक ठौर, अंग न माए उमंग ॥४८

जी साहेब की चरचा, होनें लगी जोर।
भाव देखाए वचन कहे, चित माया सें देवें मरोर ॥४६

रूपा राधा बाईजी, एकान्त बेठाया तिनकों।
सिखापन 'देने लगे, करो सेवा इन बखत मों ॥५०

धाम का धनी जानियो, बिहारीजी को राज।
इनकी आग्यां में रहो, तो तुम सब मेरे किए काज ॥५१

जो इनकी आग्यां भंग करो, तो मेरो तुमसें नहीं कांम।
तो तुम सें मैं जुदा होऊं, तुम मेरा न लीजो नांम ॥५२

इन भांत इनकों, दई सिखापन जोर।
अब मैं कही छूटत हों, तुम मेरी ना काढ़ियो खोर ॥५३

इन भांत सब साथ कों, सिखापन लगे देनें।
सगाई धाम वतन की, दै अपना इत पनें[१] ॥५४

१—हु० दे कर अपनाइत अपने ।

एक ठौर एकान्त में, करनें लगे मसलत ।
बिहारीजी जी साहेब, क्या करना इन बखत[1] ॥५५

पेहेनाए साथ सबकों, काहू वस्तर काहू भूषन ।
काहू बासन काहू कछू, यों सेवें सब मोंमिन ॥५६

और सामा सब ले कें, धरी बिहारीजी कें आगें ।
नगद वस्तर भूषन, पेहेन पोतिया जुदे हुए ॥५७

बाईजी के भूषन, और वस्तर सिनगार ।
सो सब आगें रखा, जानके परवरदिगार[2] ॥५८

आए आगें अरज करी, धारा के वास्तें[3] ।
इनका हों मैं रिणिया, वास्ते लेनें साथ में[4] ॥५९

मैं इनसें वचन हारिया, मोहे[5] दई बधाई जब तुंम ।
जीव निछावर इन पर करों[6], तो आवें पटंतर हंम ॥६०

तिस वास्तें इनकों, लेओ साथ में तुंम ।
इतनी अरज करत हैं, इन सोंपी आतंम[7] ॥६१

तब बिहारीजी कह्या, ए अरज न सुनें हंम ।
तुम अरज ना करियो, जिन फेरो मेरा हुकंम ॥६२

बोहोत खीझ कें कह्या, इनें करों न दाखिल साथ ।
इनका दुख मोहे बोहोत है, याके कबूं ना पकड़ों हाथ ॥६३

१—ह० विहारीजी और श्रीजी, क्या करना आई साइत । २—ह० जानके धनी निरधार । ३—ह० धारा साथ दाखिल होए । ४—ह० तुमारी दई बधाई सोए । ५—ह० मोकों । ६—ह० जीव निछावर इन पर करी । ७—ह० इन तुमारे चरनो सोंपी आतम ।

फेरजी साहेब नें, दिन दोए चार बीच डार ।
फिर अरज बिनती करी, तुम इनको करो विचार ॥६४

क्या गुनाह है इनका, और जो बाइयां दोए ।
तिनों को कौन गुनाह सें, साथ से निकालना होए[1] ॥६५

कदी गुनाह किया धारेने, दोए क्यों निकलें इसलांम[2] ।
एतो जुलम होत हैं, वे रोए कल-कलै इसठांम[3] ॥६६

तब बिहारीजी कह्या, मै तुमें बरजे तब ।
तुम फेर उनकी अरज, करत हो मिल सब ॥६७

में तो कबहूं न मान हों, वास्तें उनों के ।
लाख बेर मोसों कहो, तो मेरा जबाब एक ए ॥६८

तब जी साहेब सों, सब साथ लगे केहेनें ।
तबीयत तो तुम जांनत, क्यो ना डरो वास्तें अपनें ॥६९

और रूपा बाई का, ना लगे चित सेवा में ।
आवै जी साहेब पै[4], सक बढ़ चली इनसें ॥७०

मेहेमत कहें ए साथजी, ए नलिए मे मजकूर ।
और भी अर्ज़ बोहोत है, सो आगे कहो जहूर ॥७१

॥ प्रकरण २७ ॥ चौपाई ॥१२६३॥

१—ह०काढी इन्हे गुनाह कोन से, साथ से बाहिर होए । २—ह० बदले और क्यो निकालों इसलाम । ३—ह० सब दुख पाए इस ठाम । ४—ह० वहा से श्रीजी साहेब जी के ।

[श्री बिहारी जी तथा श्री जी का वार्तालाप]

देख नूर चरचा रोसनी, भई बिहारीजी को दिल सक ।
ए तेहेकीक मसनन्द मेरी लेयगा, ए बात बड़ीबुजरक ॥१

फेरकें बैठे मसलत करनें, जागा एकान्त एक ठौर ।
अब क्या करना हमकों, चलो ढूंढ़ काढ़िए साथ और ॥२

तब बिहारीजी कह्या, ए राह नहीं इसलाम ।
जो माया कों छोड़कें, कीजे विरक्त के कांम[१] ॥३

जो कदी हालार देस में, पैठ ना सको तुंम[२] ।
तो करो चाकरी कच्छ में, ए सिखापन हंम[३] ॥४

तब जी साहेबएं कह्या[४], मुझे देवचंदजी दई निध ।
तिनसें मेरे हिरदे मिनें, आई जाग्रत बुध[५] ॥५

तिनसें ऐसे राजाओं कों, जब देवें प्रबोध हंम ।
सो सेवा तुमारी करें, उठावें तुमारा हुकंम ॥६

अब तो हम माया कों, क्यों पकड़ें कोए[७] ।
रद किए चौदे तबक, हम क्यों काम करें जाए[८] ॥७

सकुमार सकुंडल की, श्री देवचंद जी नजर ।
वे आवें जब साथ में, लैल मिट होवे फजर ॥८

तिस वास्तें आपन[९], मिल निकसैं बाहिर ।
श्री देवचंद जी कों प्रताप[१०], करें सबमें जाहेर ॥९

१—ह० जो आपुन माया को छोड़ के, कीजे भक्त का काम २—ह० जो इत हलार देस मे, रही न सको तुम । ३—ह० ए सुकन मानो हुकम । ४—ह० तब श्रीजीऐं कह्या । ५—ह० तिन से मेरे दिल मे आई, बतन कां जागृव बुध । ६—ह० चले तुमारे हुकम । ७—ह० क्योए पकड़े नाहि । ८—ह० हम क्यो काम करें सोए । ९—ह० ताके वास्तें आपन । १०—ह० प्रकाश ।

एजो इस्ट फिरकें चले, किया मूल बिना विस्तार ।
अपनी अखंड वस्त धामकी, खड़े सिरपर परवरदिगार[1] ॥१०

सो विस्तार क्यों ना करें, जाकों मूल है हक ।
चाहिए लीला परवरे, होवे ब्रह्मांड पर बुजरक ॥११

और तुम दिल में कछूए, सकुच न राखो लगार ।
हम तुमें बैठावें अटारी पर, तले हम रहे खबरदार॥१२

चरचा सब सों मैं करों, सबकों देऊं जवाब ।
जब धाम के जोग होई, सो पावें सबाब[2] ॥१३

ताकों पठाऊं तुम पै, आवै करन दीदार ।
तुम कों यों कर सेवहीं, करके परवरदिगार[3] ॥१४

तब बिहारी जी कह्या, मेरा निकलना क्यों होए ।
मेरे संग रंग बाई, कही बोझल सोए[4] ॥१५

तिन की महतारी तिन संग, और कुटुंम परवार ।
सोतो निकल न सकै, मेरा क्यों चलना होए तुम लार॥१६

तिस वास्ते मेरा चलना, होए नहीं क्योंएकर ।
धनी को जो होएगा करना, सो आए जुड़े त्यों कर॥१७

इन भांत की रदबदल, होत रहे निस दिन ।
मास डेढ़ लगे इहां रहे, करें परियान मिल मोमिन ॥१८

१—ह० धनी निरधार । २—ह० सो इत आवे लेने सबाव । ३—ह० जानके धनी निरधार । ४—ह० है बडी बोझल सोए ।

और कोईक साथी साथ सें, किए थे उनों से दूर[1] ।
अरज होत रही तिनकी, सो ना मान्या मजकूर ॥१६

रूपा बाई ऊपर, भई बिहारी जी कों सक ।
ए सेवा में न आवहीं, दिल में पैठी अनख ॥२०

जी साहेब के दिल में, ऐसी उपजी आए ।
इत आवेस है राज का, मेरा दिल ए क्योंए न समझाए॥२१

इत से दोउ दिल में, होए चली अंतराए ।
पर बाहेर जाहेर ना हुई, एक दूजे रखा छिपाए ॥२२

जी साहेब अपना चित, समझाइ किया फेर ।
ओगुण उठा सो भांन के, फेर सुध किया दूसरी बेर ॥२३

इहां सेंती चलकें, आए मंडई बंदर ।
तहां साथ सब आए मिल्या[2], बाग में लईजागाउताराकर ॥

गए बिहारीजी खंभालिए, देख दजाल ने किया बड़ा सोर ।
मोमिन एक ठोर भए, इनें पोहोंचाऊं जोर ॥२५

तब एक सकसें, कह्या राजा आगें ।
तुमारे गांव में श्री मेहेराज, इत उतरेंगे ए ॥२६

वह रखता था दुसमनी, दिल में असल की ।
तिन चोकी बैठाए सब ठोरों, करी बड़ी हराम खोरी ॥२७

१—इ० किये थे दूर । २—तहा साथ सब आई मिले ।

सब साथ चढ़े नाव पर, रहे जी साहेब आप अकेले।
जब चढ़ने लगे नाव पर, छींक भई तिन समें ॥२८

तब जी साहेब पीछे हटे, हम ना चढ़ें इसठांम ।
सुकन मोकों ना भयो, और राह चले इन कांम ॥२९

जब नाव चल्या, लगा बाव ज़ोर ।
खंभालिए आए पोहोंचे, किया दजालें सोर ॥३०

साथ सबे पकड़े गए, उत राज द्वार[1] ।
साथ सूरत का सब था, सो हुआ खबरदार ॥३१

बोहोत जापता तिन किया, चल्या न कछू लगार ।
खलास किए दूसरे दिन, तरफ हुए परवरदिगार[2]॥३२

मेहेमत कहें ऐ मोमिनो, ए नलिए की बीतक ।
अब सूरत की कहों, जो आग्यां है हक ॥३३

॥प्रकरण २८॥ चौपाई ॥१२९६॥

---

*१—ह० उत माहे राज द्वार । २—ह० हुए तरफ धनी निरधार

[श्री महा मङ्गलपुरी सूर का वृत्ततान्त]

श्री जी साहेब जी खुसकी चले, रण आए उतरे ।
चीरक भेष करकें, धौरा जी मारग पंथ करे[१] ॥१

ए जो साथ सूरत का, खंभालिए से चलके ।
धोरा जी में उतरे, जी साहेब जी सों आए मिले[२] ॥२

प्रेम जी थावर सुनी, गाड़ी लेकर दौड़े ए ।
आए मिले मारग में, साथ कों चढ़ाए लिए ॥३

पदमसी सेवा मिने, तहां रहा दस दिन[३] ।
तहां से आए घोघे में, तीन दिन रहे मोमिन ॥४

तहां से सुहाली उतरे, फेर आए सूरत ।
गए सैयद पुरे भगवान के, मोहनदास कें रहे इत ॥५

तहां सिवजी के, था घर के जोड़े घर ।
उतारे तिन मिनें, हुआ सेवा को ततपर[४] ॥६

सत्रह महीना तहां रहे, कहों ताकी बीतक ।
जिन भांत लीला करी, सो याद करो बुजरक ॥७

मोहनदास अमीन के, तित चरचा हुई जोर ।
तहां दजाले देख कें, करने लगा सोर ॥८

तब वहां सें उठकें, आए सैयदपुर में ।
तहां सिवजी भाई थे[५], सेवा भली हुई इनसें ॥६

१—ह० धोरा जी मारग पथ चढे । २—ह० जी साहेब सो आन मिल । ३—ह० रहा हुता दस दिन । ४—ह० हुआ सेवा मे ततपर । ५—ह० तहा सिवजी भाई हुते ।

पेहेलें का साथ था[1], सिवजी राम जी नांम ।
तिनकों समझाएं कें, भेजे बिहारी जी ठांम ॥१०

तुम दीदार जाए उत करो, जोलौं उत ना लगोकदंम ।
तोलौ तुमारे अलोकीक, सुध ना होए आतंम ॥११

इन भांत समझाएं कें, भेज्या सिवजी कों[2] ।
फिर पाती लिख दई रामजी कों, सो चला इन काममों ॥१२

सिवजी पाती दे मिला, जायकें लगा कदंम ।
पांच मोहोर खरच करी, उन निरमल करी आतंम ॥१३

राम जी पाती ले गया, उनकों न दे आवनें ।
पाती ना लई तिन की, साथ में न दिए पैठनें ॥१४

रोए धोए विनती करी, और तीन किए उपवास ।
दया न करी किननें, तब टूटी इनकी आस ॥१५

उन पाती फेर दई, कही अपनी बीतक ।
जी साहेब तब दलगीर भए, दिल में भई सक ॥१६

रहे धारा जी साहेब संग, सो बिहारीजी सुन्या मजकूर ।
कही जिनकों हम निकालत, ताए न करत क्यों दूर ॥१७

इन बात की उनकें, दिल में रहे सक ।
मेरा हुकंम ना मानत, ए आप कहावें बुजरक ॥१८

१—ह० पेहेले एजो साथ था । २—ह० भेजे भाई सिवजी को ।

राम जी हम काढ्या, इनों तिनको रखा साथ में ।
ए भली न करी इनों ने, दुख पाया इन बात सें ॥१९

तब जी साहेब ने सुनी, बिहारी जी पायो बड़ा दुख।
मैं काढों ताए रखें, इन हमसों फेरया मुख ॥२०

तब जी साहेब ने कह्या, जो कोई लूला पांगला साथ।
श्री इन्द्रावती न छोड़े तिनकों, पोहोंचावे पकड़ हाथ ॥२१

इन समें गोवरधन, आया अबासी बंदर सें ।
सो भी आथकें इत रह्या, भेला साथ मिनें ॥२२

तिन सेवा जी साहेब की, सिर लै अपनें ।
सब खरचने लगा साथ में, सुफल जनम करनें ॥२३

सोर पड़ा सेहेर में, चरचा कों आवें खलक ।
सास्त्रवेदान्त पढ़े ए, देखै इन बात बुजरक ॥२४

भीम स्याम भट सुनी[२], करने आए दीदार ।
चरचा इत बड़ी भई, उनों किया बड़ा प्यार ॥२५

इन प्यार के बांधे, करनें आवें दीदार ।
भया रस चरचा को, हम समझे परवरदिगार ॥२६

उनों एक पख वेदान्त का, ते सिस्य संन्यासी संभूनाथ।
ताए वस्तु गते दूसरा नाहीं, इन चरचा लागे साथ ॥२७

१—ह० ले दिल मे सक आवही, कर दीदार होए बेसक । २—ह० ए सुनके स्याम भट
३—ह० तिन गुरू सन्यासी सम्भूनाथ।

जो खोज करे आतंम की, ताए दिल में ना होए बिकार।
सब का आतंम देख हीं, एही करें करार ॥२८

ए लगे चरचा समझनें, इत सर्व देसी चरचा होई।
ताए सुनकें अचरज, पावत हैं सब कोई ॥२९

वेदान्त की चरचा, वह तो जानत सब।
ए चरचा तिन ऊपर, कौन है मतलब[1] ॥३०

ए सुनने को स्याम भट, करने लगा विचार।
भीम भाई कों कह्या, तुम होओ खबरदार ॥३१

वेदान्त के खोज की, इनों से छीपे नहीं सुकंन।
तिन ऊपर बतावत, ए कौन राह रोसंन ॥३२

एह बिचार करते, भीम की खुली नजर।
एतो अख्यर पार के, नजरों आई फजर ॥३३

अपुन थे व्यापक लों, जानी सूरत एक।
जब नींद उड़ी अख्यर की, ए जो फेली उड़ी अनेक ॥३४

ए तिन अख्यर के पार की, लीला बताई अखंड।
त्रगुन विस्नू महाविस्नू की, वो इन लोक ब्रह्मांड ॥३५

भीम की नजर खुली, जाय पोहोंचो लीला में।
तब आए कदमों लगा, अपने कबीले सें ॥३६

१—ह० कोउ नही मतलब।

पहेलें गुरु से तोड़कें, आया बीच इसलांम ।
चरचा का सुख पाएं कें, रह्या मोमिनों के कांम ॥३७

एक ब्यास गोबिन्द जी, रहे बल्लभी मारग में ।
उननें चरचा सुनी, वचन भागवत सें ॥३८

इन समें भागवत के, मारग बल्लभा चार ।
तिनके टीका मिनें, था मोमिंन का बिचार[1] ॥३९

इनकों कछू न खुलहीं, चालीस प्रस्न तिनमें ।
सो लिखके धर उतारिए, ए लिया चाहिए इनसें ॥४०

एजो दलाल बल्लभ, रहे अपनें साथ ।
सोमेहेनत कर ल्याइया, आन दई जी साहेबके हाथ॥४१

तिन पत्रों की चरचा, केहे भाई गोविन्द जी के मुख ।
तिनसे तिनें समझाइया[2], तिनों पाया बड़ा सुख ॥४२

सो तब ही कदमों लगा, आया साथ मिनें ।
तब दजाल के लस्कर, लगे निन्दा करनें तिन में ॥४३

एह किरंतन हुए तिन पर, मीठी वल्लभा चारज बांन।
कोई भली बुरी केहेने लगे, काहू काहू हुई पेहेचांन ॥४४

कोई आवे लड़ने, कोई आवे निन्दक ।
जब पावे दीदार, तब सुकर केहेवे हक ॥४५

१—ह० इन समे भागवत के, मारग बल्लभा चारज ।
तिनके टीका मिने, सैयो का कारज ॥३९॥

२—ह० तिनको तिनसे समझाइया ।

ईनकी निन्दा जो करे, सोई होवे खुवार ।
ए तो साध बड़े हैं, हैं तरफ परवरदिगार[1] ॥४६

मानक आवे दीदार कों, सोहोबत सङ्ग भगवांन ।
इनकों चरचा सुनते, हो गई पेहेचांन ॥४७

बिहारीजी इन समें, पाती लिख भेजे कलांम ।
तीन बात को बंधेज, हम कियो इसठांम* ॥४८

सो तुम भी कीजियो, ए बात बोहोत सिरें ।
ए बात तुम उत करो, तो इत भी आण फिरें* ॥४६

एक तो नीच जात कों, सुनावो नहीं तारतम ।
दूजो राण अस्त्री कों, त्रीजो कहें हम तुम[2]* ॥५०

ए तीन बात कों, जरूर कीजो उत ।
धरम उजल देखिए, कोई करे न निन्दा कित* ॥५१

एह बात पाती की सुनकें, श्री जी लिखो खबर ।
तुम बाहेर द्रस्ट छोड़कें, देखो अन्तर की नजर* ॥५२
जवाब तीन बातको, हम तुमें लिख्यो बनाए ।
ताको विचार कीजियो, श्रीदेवचंद जीए राह चलाए॥५३

उननें जात भेष कों, मांन डारया सीस ।
देख्यो जित अंकूर को, तित करी बकसीस ॥५४

१—ह० है तरफ धणी निरधार । २—ह० दूजे राड स्त्रीय को, तीजे कहे हम तुम ।

सो देखो तुम जाहेर, खोजी बाई मुसलमांन ।
और ओ स्त्री रांड थी, वकसो रईबाई बासना जांन* ॥५५

सो ए बात तुम देखी है, उनकी द्रस्ट जात भेष पर नाहिं ।
जित देख्योअंकूरधाम को,गरयो ऊंचनीच ना ताहि* ॥५६

और उननें ए कही, ए लीला आई अखंड ।
या लीला के प्रताप तें, होए बका ब्रह्मांड* ॥५७

[दशवां विश्राम सम्पूर्ण]

सो हम तुम वस्त कों, कहाँ लों कहते फिरें ।
जिनकों पोहोंचे तारतम, सोई प्रकास करें* ॥५८

जित होए अंकूर निज धामको,गणिए ऊंचनीच तित नाहें।
ए राह श्री देवचंदजीए, कही आतम द्रस्ट की इत* ॥

सोई लिखी वेद पुरान में, जहाँ भगत प्रगट होए ।
तिनकी जातपांतनादेखिएएबैकुंठवालोंकीराहसोए* ॥६०

एह राह श्री देवचंदजीएं, हमकों तुम आगें दई देखाए ।
सोई तुम सब साथ कों, अब यों ही देओ बताए ॥६१

तो राह एह चलसी, होसी बड़ो प्रकास ।
साथ सबे दोड़सी, ले दिल जागनी की आस* ॥६२

साथ सबे उतरयो, चारो वरणों मांहें ।
ए बंधेज बांधनें सें, होए अकराज तांहें* ॥६३

इन भांत की हकीकत, लिखे जवाब बिहारीजी ऊपर।
और भेजी किताब कलस की, लेनें मसनन्द खबर* ॥६४

सुनकें बिहारीजी ने, बड़ोज पायो दुख तब।
ना मानों कलस कों, देखी पाती जब* ॥६५

उन लिख भेजी पाती कों, तुमारी राह भई और।
और हमारी भी और है, भई जुदायगी इस ठौर* ॥६६

हमतो तुमकों चीनया, तुमारे माहें कलांम*।
तुम नाहीं हमारे साथमें, हम काढ़े तुमें इसलांम[1] ॥६७

हम जिन साथकों काढ़त[2], क्योंतिनकों लिया बीच दीन।
तो इत तुमकों हमारा, छूट गया आकीन ॥६८

तिसवास्तें तुमकों हम, किए साथ सें दूर।
हमारे तुमारे नाता ना रह्या, जिन पाती करो मजकूर ॥६९

इन भांत पाती लिखी, आए पोहोंचे सूरत।
तब जी साहेब बिचारिया, एह ऐसा हुआ बखत ॥७०

ऐसा तो ना चाहिए, जो हमकों ऐसे लिखे सुकन।
हमसें तकसीर ना पड़ी, ए काम नहीं मोमिन ॥७१

इन समें सब साथनें, करी ए मसलत।
बैठे देवचंदजी किनके हिरदें, तुम तोल देखो इत ॥७२

१—ह० हम काढ़े तुमे इस धाम। २—ह० हम जिन साथ को काढिया। ३—ह० ऐसा हुआ बखत।

कही ए जी साहेब से[1], तुम लेओ हक सिरकांम ।
साथको जमां करना, बीच दीन इसलांम ॥७३

कोई उनसे साथ में, ल्याया नहीं ईमांन ।
चरचा राज की करकें, काहू ना भई पेहेचांन ॥७४

जिनकों तुम समझाए कें, भेजत हो उन तरफ ।
सो बिकार पाएं कें, खाए आवत सब हरफ[2] ॥७५

अब तुम क्या देखत, नजर करो तरफ धांम ।
लेओ सिर तुम अपनें, दीन इसलांम का कांम ॥७६

साथ सब लागू हुए, आगा किया भाई भीम ।
चरचा करकें सिर लई, लिया जस अजीम ॥७७

तब पाती का जवाब, लिख भेजे कलांम ।
तुम हमकों काढ्यो साथ सें, हम सिर पर लिया कांम ॥७८

जो हम स्वारथ कों, दौड करेंगे इत ।
तो सीधा कबहूं न होएगा, जो हम जाएं जित ॥७९

और साथ कें वास्तें, जो हम करत मेहेनत ।
तो हमारा सीधा होएगा, नजीक हैं सायत ॥८०

इन भांत के जवाब, पाती में लिखे कलांम ।
हमतो कमर बांधी, दीन इसलांम के कांम[3] ॥८१

१—ह० कही ऐ श्रीजी साहेबजी सो । २—ह० खाए आवत सब सक । ३—ह० श्री निजधाम के काम ।

इन समें लालदास, गया था ठठे सें[1] ।
सुदामा पुर पोहोंचिया, कहों बीतक तिन सें ॥८२

[लालदास जी का आगमन]

संबत सत्रे से अठ्ठाइसे[2], पोहोंचे सुदामा पुर ।
तहाँ भीम पीताम्बर मिले, हुई चरचा तिन ऊपर ॥८३

कछूक इन ठठे मिनें, चरचा देखी जब ।
वहां एह दोऊ लागूं भए, सुनायो तारतम तब ॥८४

कोई दिन पीछें, उनें सुनाया तारतम ।
ए दोऊ जनें तबहीं, सोंप चुके आतंम ॥८५

तब दजाल इन समें, लगा जो करनें सोर ।
बिट्ठलेस्वर गुसाईं के, लगे निन्दा करने जोर ॥८६

वल्लभी मारग में, खड़ भड़ पड़ी उत ।
ए कौन मारग पैदा भया, एचले जात सेवक उत[3] ॥८७

हमारो तो बडोज मारग, चारों खूटों रोसन ।
तिन भांत के और कों, बतावत है मोमिन[4] ॥८८

राज के दरसन की, चरचा होवे जोर ।
दजाल निन्दा तिनकी करे, अपनी सिपाह में सोर ॥८९

धरम उंदरीयो पैदा भयो, पाऊं बांधत घूंघरी ।
थाल धरें परदा करें, देखो ऐसी राह फेरी ॥९०

१—ह० साथ आया ठठे से । २—ह० समत सत्रै से सताईस । ३—ह० ए चले सेवक इत । ४—ह० बतावत साधू जन । ५—ह० देखो ऐसी राह चली ।

कहे हमारे घरों, क्रस्नजी पधारत ।
सो अरोगाए कें, ऐसी राह चलावत[1] ॥६१

इन भांत सेहेर में, निन्दा नित्य सब में होए[2] ।
पूछे प्रस्न भागवत कें, ताको अरथ ना करै कोए[3] ॥६२

काहू कों सांची भासें, कोई चरचा सुन होवे गलित ।
कोई अस्तुत करे, जो देखे आए कें इत ॥६३

रबद प्रस्न चरचा को, रात दिन उत होए ।
जवाब काहू ना आवहीं, क्यों उत्तर देवें सोए ॥६४

यों करते लोग इन समें, लगे चरचा सुनने कों[4] ।
गोपी साथ में आइया, खेंमजी जोसी इन मों ॥६५

दामा और सूरचंद, और बस्ता नांम ।
लाल बाई धणियाणी, भए दाखिल इसलांम ॥६६

यहां होए चरचा उद्धव, आया इत प्रधान ।
और आया मसकत सें, महावजी का बेटा काहान ॥६७

यों एक गांठ होए चली, आवनें लगा नया साथ ।
ते चरचा सुनत हैं, जाके धणी पकड़े हाथ ॥६८

लालदास को इन समें, भई माया की उरझन ।
इनकों राजें काढ़ कें, चाहिए कदमों पोहोंचे मोमिन ॥६९

१—ह० एही राह चलावत । २—ह० निद्यया सब दिन होए । ३—ह० ताको अरथ न केहेवे काए । ४—ह० यो करते लोग इन समे, लगे चरचा को ।

तब माया की तरफ का, हुआ धका जोर।
दजालें जोरा कर[1], ऊपर करनें लगा सोर ॥१००

जब कछू ना रह्यो हाथमें, तब माया दिया छोड़।
तब नजर करी तरफ राजके, चितकों लिया मोड़ ॥१०१

अन्नका नेंम लेके[2], जब मैं करों दीदार।
नौतनपुरी जाय कें, देखों परवरदिगार ॥१०२

तब लों अनाज न लेऊं, तोलों करों फल अहार।
इन भांत चलने लगा, ऐसा किया वेबहार[3] ॥१०३

जब मांगरोल पाटन, आई पोहोंचे उत।
तहां दजाल बैठा था, कहे तुम जाओ सूरत ॥१०४

बोहोत रदबदल भई, ना मानें सुकंन।
तब देखा तरफ राजकी, हुई आग्यां ऊपर मोमिंन ॥१०५

तब वहां से दीव आए, तहां रहे पंनर दिंन[4]।
साथ सों मुलाकात करी, फेर घोघे पोहोंचे मोमिंन[5] ॥१०६

तहां से नाऊं चढ़कें, आए बंदर सूरत।
संवत्त सत्रे से ओगनतीसे, एह आए पोहोंची सरत ॥१०७

आय कें जी साहेब कें, लगे दोउं कदंम।
नेंम था अनाज का, सोंपी थी आतंम ॥१०८

१—ह० दजाले जोरा किया। २—ह० अन का नेंम लिया। ३—ह० ऐसा किया बिचार। ४—ह० तहा रहे पन्द्रह दिन। ५—ह० फेर घोघे पोहोचे ततखिन।

जी साहेब ने दिल में[1], बडाज पाया सुख ।
परसाद लेओ उठो अब, यों कह्या श्री मुख ॥१०६

तब लालदासें कह्या, हमकों अगड़ है अनाज ।
जाए बिहारीजी के कदमों, अनाज छोड़े तिन काज ॥११०

तब जी साहेब मुख कह्या[2], भया पूरा तुमारा पंन ।
कछू फिकर ना करो, पोहोंचे मिलावे मोमिंन ॥१११

श्री मेहेमत कहें ए मोमिनो, ए सरत करो याद ।
फेर लाल आगे कहों, जो झगड़े की बुनियाद ॥११२

॥प्रकरण॥ २६ ॥चौपाई १४०८॥

[जागनी का कार्य प्रारम्भ]

हजरत ने हिजरत करी[3], लेनें कों मका ।
फते करी दजाल की, कूच करे दारुल बका ॥१

सेहेर मदीना सूरत, तहाँ सेंती चले जब ।
महाजरों मदत करी, जो साथ सेवा में चले तब ॥२

तिन मोमनो की सिफत, पोहोंची बका में हक ।
कुरान हदीसों में कही, सबों ऊपर सिफत बुजरक[4] ॥३

१—ह० श्रीजी अपने चित्त मे । २——ह० तब आप श्री मुख कह्या । ३——ह० हज रते हज इत करी । ४——ह० बिन मोमिन की सिफत, पोहोची बका मे जब, कुरान हदीसों में कही, सबों ऊपर सिफत अब ।

सो लओमोंफूज में[1], कहत अल्ला कलांम।
अग्यारे सौ बरस आगूं हीं, सब पढ़े खलक तमांम[2] ॥४

धनी देवचंदजी ल्याएआ, कीली अल्ला कलांम।
जी साहेब जाहिर करी[3], दिया मोमिनों कों तांम ॥५

मोमिन सुंनत जमात में, बातां करें बीतक[4]।
हकका प्यार इन पर, बात बड़ी बुजरक[5] ॥६

जिनों सेवा करी सनेहसों, तन मन दे[6] धन।
सो आए इसलाम में, ए खासल-खास मोंमन ॥७

उतरी अरवाहें अरस सें, तिनकों ढूंढन काज।
और जबरूती फिरस्ते, हुकम दिया श्रीराज ॥८

एही थे ब्रज रास में, हुए नहीं पूरे मनोरथ।
तब तीसरो ए रचनों पड़यो, इन देखावन अरथ[7] ॥९

तीसरो उपज्यो अख्यर को जाने तेसो ही इंड।
सब जाने हम वाही हैं, काहू खबर ना पड़ी ब्रह्मांड ॥१०

तामें आई स्रिस्ट ब्रह्म की, एजो खासल खास उमंत।
ताकों जगावे जुगत सों, दावत कर क्यांमत ॥११

सकुन्दल सकुमार को[8], चले जगावन काज।
श्री मुख देवचंदजी कही, बुलाए ल्याओ मेहेराज ॥१२

१—ह० सो लिखी लोमोफूज मे। २—ह० सब पढे खलक आम। ३—ह० श्रीजी आप जाहेर करी। ४—ह० बाते कर वीतक। ५—ह० ऐ बात बडी बुजरक। ६—ह० दिया। ७—ह० इने दिखावन अरथ। ८—ह० सकुन्डल साकुमार को।

कुली कालिंगा दजाल से, जंग करो जाय तुंम ।
देह बुध छोड़ाय कें, ल्याओ बुध आतंम ॥१३

धरम विरोध धरा मिनें, करत कुली दजाल ।
ताकों मारो सिताब सों, ज्यों होवे सब खुसाल ॥१४

एक दीन होए एक का, सब भजन करें भगवान ।
देओ वेद कतेब की साहेदी, ज्यों ल्यावे सब ईमांन ॥१५

गाजी बनी असराईल, तामें देवचंदजी सिरदार ।
लड़या राह खुदाय के वास्तें, महिनें जो हजार[1] ॥१६

तिन सें भी बेहेतर कही, जी साहेब बांधी कमर[2] ।
जाहेर करी जगत में, एह लड़ाई सब पर ॥१७

तिन लड़ाई के बखत, जिनों करी मदत ।
तिन की मेहेनत इन जुबां, कही न जाए सिफत ॥१८

तिन के नाम कहत हों, सुनीओ चित दे साथ ।
कूवत दई कादर नें, पकड़े इन के हाथ[3] ॥१९

संग चले सेवन कों, ए जो मोमिन खास[4] ।
इनकों धाम धनी बिना, और न उपजे आस ॥२०

॥प्रकरण ॥३०॥ चौपाई १४२८॥

१—ह० लडे राह खुदाए के वास्ते, ऐ जो माहने हजार । २—ह० श्रीजी बाधी कमर
३—ह० पकड़े अपने हाथ । ४—ह० ऐ जो मोमन खासलखास ।

[सीदपुर तथा मेड़ते की बीतक]

जी संग बाई जो[1], और भट गोवरधन।
सेवा करी तन धन सों, तो हुआ साथ में धंनधंन।।१
भीम भाई भली भांत सों, निकस्या तन ले धन।
सेवा करी उमर लों, गाए प्रेम वचन।।२
नागजो अति नेह सों, छोड़ी कुटुम्ब की आस।
तन मन धन सब ले चल्या, पाया खिताब गरीबदास।।३
स्यांम भट संग चल्या, रह्या केतेक दिंन।
वचन वेदान्त सुनावत, कर ना सक्या बस मंन।।४
नाहना और पांखडी, चले श्री राज के साथ।
आखरलों निवाहिया, धनी एँ पकड़े हाथ।।५
काहान जी रामी चल्या[2], ले कबीला संग।
आखरलों निवाहिया, कोई रह्या ना पीछे अंग।।६
जमुना बाई संग चली, छोड़ कुटम्ब परवार।
सेवा करी सनेह सों, जांन के परवरदिगार।।७
छबीलदास संग चल्या[3], सेवन के सुख काज।
बेटा जमुना का जानकें, सब सेवा दई श्री राज।।८
कोईक दिंन धारा रहे, आए जाए पीछें[4]।
पत्रीआ पोहोंचावे साथ को, एह कांम रहे इनके।।९

१—ह० श्रीजी सग बाई जी। २—ह० कानजी रामजी चल्या। ३—ह० छबील दास सग चले। ४—ह० कोई दिन धारा रहे आए, फेरके जाए पीछे।

लाल बाई ले चली[1], स्यांम बाई कों ले।
श्री बाईजी की सेवा मिनें, काम करती ए[2] ॥१०

लालदास संग चले, खाली लेकर हाथ।
निबहें आखरलों, चले राज के साथ ॥११

सुखदेव सूरत सें चले, ले संग मांनक।
अपना आपा डारिया, पोहोंचे मेड़ते बुजरक ॥१२

प्रेमजी अति प्रेम सों, मारग में मिल्या धाए।
हाजर रहे हजूर में, सेवा की चित ल्याए[3] ॥१३

सूरत सें चल कें, आए पोहोंचे गुजरात।
राह खुदा के वास्ते, लरें मेटन कों जुलमात ॥१४

गुजरात कें बीच में, चार दिन रहे ए।
तहांसेंती कूच करकें[4], सीदपुर पोहोंचे ते ॥१५

लखमण कबीला लेकर, पोहोंचे हैं गुजरात।
कबीला भारी भया, कही रहण की बात ॥१६

तिसवास्तें रह्या बीच में, माया के सुख काज।
उमर खोई तिन में, फेर सुरत करी श्री राज ॥१७

सीदपुर के बीच में, रहे बाईस दिंन।
भगवान उपादेने[6], होए सेवा करी मंगन ॥१८

१—ह० लालबाई सग चली। २—ह० काम जो करती ए। ३—ह० सेवा करी चित्त ल्याए। ४—ह० तहा सेती चलके। ५—ह० कही रेहेने की बात। ६—ह० भगवान उपाध्याने।

और भाई भगवान का, रेवा दास है नांम ।
पोहोंचा पालन पुर, पूरे मनोरथ कांम[१] ॥१६

ए तीरथ गुरु होय मेले, कछू ना कही खबर[२] ।
एक मोहोर दे विदा किए, फेर लालच करी ऊपर ॥२०

तव गोवर धन (नें) कह्या, करो इन (सरूप) को पेहेचांन ।
इन से मांगो अलोकीक[३], तुमकों देय ईमांन ॥२१

तब अरज करी भगवान नें, लागे[४] दोऊ कदंम ।
पर आतंम पेहेचान के, जगाओ हमारी[५] आतंम ॥२२

तब चार सुकंन चलते कहे, याद करो निजधांम ।
जमुना ताल घाट पाट की, और अख्यर मुकांम ॥२३

ब्रज रास में हम थे, भी तीसरे आए इत ।
अब खेल देख पीछें फिरे, जाए लगे हम तित ॥२४

ए बात चित धर कें, फेर आए अपने ठौर ।
एह बात दिल में रखी, काहू न केहेवे और ॥२५

बोला न छ मास लग[६], रहे केसो भट सोहोबत ।
तिनसों चरचा करते, एक छत्री निकला इत ॥२६

तिन हमको परबोधया[७], दोएक कहे बचन ।
केहे के सब हमको[८], तिनके दो एक सुकन ॥२७

१—ह० पोहोचा पालन पुर मे, इनके पूरे मनोरथ काम । २—ह० ऐ तीरथ गुरू होए मिल्या, कछू ना हुई खबर । ३—ह० मागो आलोकिक इनसो । ४—ह० लगा । ५—ह० मेरी । ६—ह० बोला नाही छे मास लो । ७—ह० तिनने हमे परमोधया । ८—ह० सोई वचन हमसे कहो ।

तब दोएक सुकन, कहि देखाया धांम ।
तब केसव पेहेचांनियां, कहा कहों तुमें इन ठांम ॥२८

एतो अख्यरातीत था, तुम ना करी पेहेचांन ।
अब मैं उत हीं जात हों, मुझे आया ईमांन ॥२९

ओ ऐसे ही उत तें चल्या, ढूंढत फिरे सब ठौर ।
ढूंढते दिली पोहोंचया, खोज करी अत जोर ॥३०

रामचंद पसारी हाट सें, पाई (इने) खबर[1] ।
लाल दरवाजे मिल्या, अत आतुर होए कर[2] ॥३१

कोईक दिन तहां रह्या, सुने सुकन सुभांन ।
तारतम नीके जानियां, कछू ज्यादा भई पेहेचांन ॥३२

तब लड़ने दजाल सों, बांधी कमर जोर ।
फेर आए सीदपुर में, किया साथ काढ़ने का सोर ॥३३

भगवान रेवा को नसीयत, फेरकें दई इन्हें चिन्हार ।
तिनों को ल्याया साथ में, किया खबरदार ॥३४

केसवजी परबोधीया, और द्वारका दास ।
धांम लीला देखाई, तब छूट गई सब आस[3] ॥३५

ए भी घर कों छोड़कें, चले[4] श्री राज के पास ।
दिली मिनें आए मिले, सेवा की दिल में आस ॥३६

१—ह० रामचद पसारी के यहा से, पाई इने खबर । २—ह० लाल दरवाजे आए मिल्या, अति आतुर होए कर । ३—ह० धाम लीला देखाए दई, तब छूट गई सब आस । ४—ह० गए ।

दूजे केसव दास कों, दई तारतम सुध।
तब लोक अलोक की, छूट गई सब बुध ॥३७

त्रीकम[1] गंगादास नें, चरचा सुनी कांन।
तब ए दिल में धरकें, पौंचे ले ईमांन[2] ॥३८

बीठल चरचा सुनकें, कछुक भई पेहेचांन।
घर कबीला छोड़कें, पौंचा ले ईमान[3] ॥३९

जब जुध भया दजाल सों, तब बीठल उपज्या डर।
भाग चल्या पीठ देयके, पोहोंच्या अपने घर ॥४०

थाणा थाप्या सीदपुर में, केसव भट के घर।
धांम चरचा तित होवहीं, साथ को रह्या पकर ॥४१

अब सीदपुर सें चलकें[4], मेड़ते पौंचे धाए।
लाभानन्द जतीअसों, चरचा करी बनाए ॥४२

दस दिन चरचा में भए, ठौर ठौर हुआे जब बंध* ।
तब कही महातम मेरो गयो, मेरे मारग को परबंध* ॥४३

मारों दाव के पहाड़ में, इनकों डारों उलटाए।
सब दैतों मंत्र सें, भांत भांत किए उपाए* ॥४४

घर परवत उठ्यो नहीं, तब हार के बैठा ठौर।
पंचवासना सबदेव जहां खड़े, तहां मंत्र चले क्यों और* ॥४५

१—ह० टीकम। २—ह० तब ए दिल मे लेयके, पोहोचा ले ईमान। ३—ह० पोहोचा ले ईमान। ४—ह० अब सीदपुर से।

रामचंद आए मिले, मेडते के ठौर ।
सेवा में सामल रह्या, तब आस ना रही और* ॥४६

देखा उनें डगाय कें, आसन कर बैठा सुंन ।
खोज खोज खाली भया, ग्रहे के बैठा मुंन* ॥४७

एक हवेली लेयकें, तहां विराजे श्री राज ।
चरचा बड़ी होवहीं, और न कोई काज[1] ॥४८

सोर बड़ा सेहेर में[2], आवत सब खलक ।
घेर रहे मध माखी ज्यों, कोई आए दीन बीच हक ॥४६

आया चांपसी चित सों, और आया रघुनाथ ।
छोड़ कुटुम्ब कबीला, चला राज के साथ ॥५०

अगरवारे वणीए मिनें, आया राजा राम ।
समेत कबीले अपने, सेवा करी तमाम ॥५१

झांझण आया साथ में, लिए कुटम्ब परवार ।
ल्याया ईमान अरस पर, पोहोंच्या परवरदिगार ॥५२

और आया मकरंद, और सिंघ मान[3] ।
और मोहन मनोहर, ए ल्याए ईमान[4] ॥५३

और सादुल आइया, और नन्द राम ।
और आया रेषेस्वर[5], दो जीवन दास नांम ॥५४

१—ह० रह्या ना कोई काज । २—ह० सोर पडया सेहेर मे । ३—ह० और भाई मानसिंध । ४—ह० ऐ आए ईमान ले अग । ५—ह० और आया रखेसर ।

और आई सरूप दे, और बाई लखमी[1] ।
रमा बाई आई, इनों पाई कायमी ॥५५

जादी और कुसली, और बाई चांद तथा मोज ।
ए आई इसलांम में, करके बड़ी खोज ॥५६

भाग बाई और तेज बाई, अनूपी राधा नांम ।
बेंन बाई मुरली धर, ए दाखिल इसलांम ॥५७

ए आवत चरचा कों, बानी सुनत स्रवंन ।
खुसाली होवे अंग में[2], सिफत सुने मोमिन ॥५८

और इनकी सोहोबत सें, आया केतिक साथ ।
तिनके नाम ना लिखे, पर धनीएं पकड़े हाथ ॥५९

[ग्यारहवां विश्राम सम्पूर्ण]

इनकी खरची पाती, पोहोंचत लड़ाई में[3] ।
पतली कमरी ओढ़न की, आवत थी इन सें[4] ॥६०

इत सब साथ में, राजाराम सिरदार ।
तारतम बानी सब में, हुआ खबरदार ॥६१

और मनू बाई सेवा में[5], रहे खबरदार ।
पावत हैं दीदार कों, रहत तरफ परवरदिगार ॥६२

अब इन समें मेड़ते में, बड़ा जो पड़या सोर ।
चरचा और दीदार कों, खलक चली आवे इनठोर ॥६३

१—ह० एक बाई लखमी । २—ह० खुसाल होवे मन मे । ३—ह० पोहोचत लडाई मिनें । ४—ह० आवत थी उत सें । ५—ह० और मना बाई सेवा में ।

सुख बड़ो सब साथ कों, उपजत हैं नित्य।
एक मजल इन समें, जो होसी बखत क्यामत ॥६४

ए बातें बोहोत हैं, कहां लों कहों बनाए।
जो इत लीला में हाजर, ए अनभव है ताए ॥६५

सुनी बानी जसवंत की[1], तब पाती लिखी दोए।
भट गोवरधन ले चल्या, पैगांम पोहोंचावने सोए[2] ॥६६

अटक पार पोहोंचके, खबर दई जाए।
बिना अंकूर क्या करे, रस चरचा रही न ताए[3] ॥६७

तहां मास चार लग रहे, मेड़ते में ए बखत[4]।
एक दिन राह चलते[5], मारग खड़े तित ॥६८

बांग मुनारे पर चढ़, मुला देता जब[6]।
कानों सुन बिचारयां[7], दिल बिचार किया तब ॥६९

बांग ऊपर कलमा कह्या, ला इलाह इल्लल्लाह।
मुहंमदुर्रसूलुल्ला, ए (खबर) कहे अल्लाह[8] ॥७०

ला तो नाहीं कों कह्या, इल्ला तो है हक।
ए तो अख्यर अख्यरातीत की, बात बड़ी बुजरक ॥७१

ए तो श्री देवचंद जी कही, तहां से आए तुम।
दूसरा तो कोई है नहीं, इनका कौन दावा करे बिना हम ॥

१—ह० सुनी बात जब जसवत की। २—ह० पैगाम पोहोचावने सोए। ३—ह० ऐ अकूर बिना क्या करे, रह्या रस ना चरचा ताए। ४—ह० रहे मेरते में ईन बखत ५—ह० ऐक दिन बाहेर चलते। ६—ह० दई मुलां ने जब। ७—ह० कानो सुन अवाज को। ८—ह० ऊपर चढ कलमा कह्या, ला ईलाहो इल्लिला हो, महंमद रसल अल्ला तिनकी, ऐ खबर कहे अल्ला।

तेहेकीक हमारा कासद, हम वास्तें ल्याए कलांम ।
सब खबर हमारी होयगी, ल्याए महंमद अलेहसलांम ॥७३

मेहेमत कहे ए मोमिनो, इहां लों ईसे का इलंम ।
अब माहामदकोमिल चल्या, कहोंएकदीनहोएआदंम[1] ॥७४

॥प्रकरण ३१॥ चौपाई ॥१५०२॥

[कतेब का मनन तथा आगे प्रस्थान]

यहां लगे कतेब की, चरचा में ना चित ।
कलमें से हासल किया, लिया माहामद मता इत[2] ॥१

लालदास सूं कहे, आज एक बात पाई ।
तब अरज करी लाल दास ने, हमकों देओ देखाई ॥२

तब बात कलमें की, कर देखाई सब ।
उन महंमद कुरान ल्याइआ[4], सब तुमारा मतलब ॥३

इत महामद को मिल चले, तब अहमद पाया खिताब ।
ईसा और माहामद मिल, मारे दजाल सिताब ॥४

अब लड़ाई करने कों, जाइए पास सुलतांन ।
इनकों दावत करो[5], ए ल्यावें ईमांन ॥५

श्री देवचंद जी कही थी, आवे सकुंडल सकुमार ।
तब खेल देख पीछें फिरो, पोहोंचे परवरदिगार[6] ॥६

१—ह० अब महमद को मिल चला, कहों ऐक दिन आदम । २—ह० लिया महमद मता इन । ३—ह० लाल दास को कह्या । ४—ह० महमद कुरान ल्याए । ५—ह० इनको प्रथम दावत करे । ६—ह० तब खेल देख पीछे फिरे, पोहोचे परवरदिगार ।

तिसवास्ते ढूंढ काढिए, एह होए जाहेर[१] ।
कुली दजाल कों मारिए, करत बदफेली बाहेर ॥७

तब साथ सब कों, होवेंगी खबर ।
दौड़ेंगे आप अपनी, आए मिले आखर ॥८

एह विचार करकें, मेड़तें से चले जब ।
गोकुल मथुरा आगरे, आए पोहोंचे तब ॥९

कोई दिन तहां रहेकें, डिल्ली पोहोंचे धाए ।
केतनाक साथ ठठे का, इत पोहोंचा आए ॥१

हरी राम चौधरी, और चिन्तामन लालमन ।
और रामचंद आए पोहोंचे, रहा कोईक दिन ॥१

ईस्वर दास चोपदार, ए रह्या बरस दोए ।
पीछे माया लेहेर में, रेहे ना सक्या सोए ॥१

मलूक चंद भली भांत सों, लड़ा दजाल सों जोर ।
सोंपो अपनी आतंम, कछू ना आई खोर ॥१

सेख बदल आइया, नीकें ग्रहे कदंम ।
लड़ा दजालसों सनमुख, और न मारी दंम ॥१

बसंत-राए आइया, रह्या कोईक दिन ।
पीछे फिरया घरको, बस होए के मंन* ॥१

१—ह० ए लीला होए जाहेर । *वर्तमान बीतको मे अप्राप्य ।

अनन्त राम आए मिल्या, लड़ाई के बखत ।
सेवा में सामिल रह्या, समय पाया इत ॥१६

तुलसी बिहारीदास, और हिरदे राम ।
कोईक दिन सामिल रहे, फेर घरों किया विसराम ॥१७

हरी-राम भाई का[१], बेटा हीरा नन्द ।
रह्या कोईक दिन सेवा मिनें, पीछे पोहोंचा अपने वतंन॥१८

सूरत से मकुंद दास, सुनके तारतंम[२] ।
आए पोहोंचे सैयद की हवेली, जाग खड़ी आतंम ॥१६

रामचंद मेड़ते में, पोहोंचे इन सोहोबत ।
कोईक दिन रहिकें, फेर घर किया इत ॥२०

और साथी केतेक, आए गए अपनें घर ।
पर बात न छूटें दिल सें, रहे इसलाम पर ॥२१

केतेक मुनकर हुए, सो पैठ न सके इसलांम ।
जो आवे मोह नीचा करे, साथ कोई न कहे कलांम ॥२२

कोईक दिन पीछे आइया, गोवरधन अटक सें ।
लाल दरवाजे आए रह्या, गङ्गा राम के दुकान में ॥२३

तहां वचन तारतंम के, कहे जो गंगा राम ।
आसाजीत परबोधिया, तित पाया विसराम ॥२४

१—ह० एजो हरी राम भाई का, २—ह० भाई श्री मकुंद दास ने, सुन्या सूरत में तारतम ।

नैन सुख महाजन को, कहे वचन चार।
तिननें अपने दिलमें, किया बड़ा विचार ॥२५

फिरते उरदू बाजार में, मिले गरीबदास।
धाए के तिनकों मिले, पूछी खबर खास ॥२६

कहां साथ रहत हैं, जी साहेब हैं कित[१]।
मैं अपनें साथ कों, लेकर आऊं इत ॥२७

बिठ्ठल गुरू के मुहल्ले[२], सैयद की हवेली में।
तहां जी साहेब रहत हैं[३], मैं खबर करों उनसें[४] ॥२८

गोबरधन अपनें घर गया, आया गरीब दास।
खबर कर श्री राजकों, आया गोबरधन खास ॥२९

प्रात समें गोबरधन[५], ल्याया अपनें संगी मिलाए।
सब आए कदंमों लागे, बीतक कही बनाए ॥३०

इन हवेली मिनें, रह्या मास छे[६]।
तहां से लालदरवाजे को, ले चला उत के ॥३१

इहां लग सकुमार पर[७], पाती लिखी बनाए;
बाबीस प्रकरण तिनमें[८], लिखे चितसों ल्याए ॥३२

इन पाती लिखनें में, रहे जी साहेब लालदास।
रात दिन मेहेनत करी, राज सेवन की आस ॥३३

१—ह० श्रीजी आप है कित। २—ह० पुरे बीठल गोर के। ३—ह० तहा श्रीजी रहत हैं। ४—ह० इनसे। ५—ह० प्रात। ६—ह० इन हवेली में आप, मास छे रहे ७—ह० यहा आए साकुमार को। ८—ह० बाईस प्रस्न तिनमे।

ए पाती लेयकें, आए लाल दरवाजा ।
हवेली छत्रीय की, तिनमें रहे आज ॥३४

तहां आए बैठकें, बड़ी करी मसलत ।
पूछा साथ सबकों[1], कहा करनो अब इत ॥३५

आसा-जीत आइया, लगा राजके कदंम ।
तब एह विचार सब पूछया, कहा करनो हंम[2] ॥३६

तब आसा-जीत कों, पाती पढ़ सुनाए ।
सुन ए इन उत्तर दिया[3], ए पाती क्यों देखाए॥३७

एतो हिन्दुओं सों, रेहेत हैं दुस्मन[4] ।
प्रातकों मोंह न देखहीं, आप कहावत हैं मोमिन ॥३८

सोए पाती हिन्दवी (हिन्दगीं) की, क्यों कर सुने कांन ।
सरियत हैं जोरावर, पोहोरा है मुसलमांन ॥३९

मास दोए इत रेहे, होए चरचा वेद वेदान्त ।
ऊपर अटारी में, बैठत थे एकान्त ॥४०

इत सोफी[5] एक आवत, चरचा सुनाई ताए ।
मीठी लागी तिनकों, लालच कों इत आए ॥४१

दया राम इत आइया, चरचा सुनी तिन ।
ईमान ल्याया देखते, एह है खास मोमिन[6] ॥४२

१—ह० पूछा विचार सब को । २—ह० तब ए विचार पूछिया, कहा करनो अब हम । ३—ह० सुनके उन उत्तर दियो । ४—ह० ए तो हिदुअन का, हमेसा रेहेत दुसमन । ५—सूफी सफेद ऊनी वस्त्र धारी मुस्लिम फकीर । ६—ह० दयाराम दिल प्रेम सों, इत आया तिन ईमान, ल्याया सब के देखते, है खास सैयो मे जान ।

दया राम कों ल्याइया, ए जो नैन सुख ।
सुख दयाराम पाइया, सो कह्यो ना जाए या मुख ॥४३

चंचल के आगें, चरचा करी दयाराम[1] ।
एभी ईमान ल्याइया, बड़ा पाया बिसराम ॥४४

हरप्रसाद हरकरन, चरचा सुनी नैक मुख[2] ।
हरप्रसाद हरकरन कों[3], ल्याए बीच इन सुख ॥४५

ए दोउ जने प्रेम सों, चरचा छीप सुनते ।
ईमान पूरा ल्याए, पर बड़कों सें डरते ॥४६

और भीखारीदास नें, कछू चरचा सुनी ।
ऊपर की पेहेचान सें, सेवा करी अपनी[4] ॥४७

राजकों घरों पधराए कें, आरोगाया थाल ।
साथ सबकी सेवा करी, होए दिल खुसाल ॥४८

गंगाराम आवत, खाली हाथों ना कब ।
पावें भली वस्त बजार में, राज आगें धरे सब ॥४९

दयाराम आवत, ल्यावे मिठाई पकवांन ।
नए नए मेवे लेयकें, ल्यावत दिल ईमांन ॥५०

चंचल अपनी दुकान सें, ल्यावत कर चोरी ।
ल्यावें राजके वास्तें, अंग उमंग करी ॥५१

१—ह० चचल आगें चरचा, करी जो दया रांम । २—ह० चरचा सुनी न किनके मुख । ३—ह० इन दोऊ भाइयो कों । ४—ह० चरचा सुनी अपनी ।

कुटुम कबीला लड़ते, बरजत थे हमेंस[१] ।
तिनका मोंह मारकें, काहू न गणते खेस[२] ॥५२

रामचन्द पंसारी ने, करी उपली पेहेचांन ।
खिजमत अपने मांफक, करी ऐसी जांन ॥५३

महाजन जेठा वेदान्ती, चरचा सुनता कांन ।
सुकन भले चीनता, छुटे न सुन्य मकांन[३] ॥५४

इत बिचार करने लगे[४], क्यों बात सुने सुलतान ।
इत बैठे ना बनत, बड़ा अमल सैतान ॥५५

कोईक जागा पकड़ कें, लड़ें इनसें हंम ।
वचन इन्हें सुनावने, कहो ईलाज कोई तुम ॥५६

ऐसा विचार करकें, डिल्ली सों चले जब ।
साहनपोर बोडिया मिनें, आए पोहोंचे तब ॥५७

केतेक साथ डिल्ली मिनें[५], रखके चले[६] ।
हम लेएंगे खबर, वहां से जाए के[७] ॥५८

मेहेमत कहे ए मोमिनो, एह याद करो तुंम[८] ।
उतरी हमेसा हककी[९], जगाओ अपनी आतंम ॥५९

॥ प्रकरण ३२ ॥ चौपाई ॥१५६०॥

१—ह० वरजत रहे हमेस । २—ह० काहू ना गिनत खेस । ३—ह० पर छूटा न सुन मकान । ४—ह० अब ए विचार करने लगे । ५—ह० साह जहानपुर बोड़िया । ६—ह० राख के आप चले । ७—ह० हम लेएगे पीछे से खबर, जाए के उस जागे । ८—ह० याद करो धनी तुम । ९—ह० उतरी हमेसा हकसे ।

इन समें सूरत सें, आए पोहोंचे लखमीदास[१] ।
रूपाबाई कों लेय कें, बेटी जमुना खास ॥१

और नारायन दास, और गोबिन्द दास ।
रामबाई कों लेय कें, दिलराज चरन की आस ॥२

और सभा चंद खेत्री[२], भागवती हरी राम ।
केतेक दिन संग रहे, पीछे किया माया में बिसराम ॥३

लखमीदास के घर में, उपली द्रस्ट भई जोर ।
राज दीदार देवहीं, कछू ना दिल में खोर ॥४

नित्य आरोगन आवहीं, आवत बडा आवेस ।
तिस वास्तें माया का, कछू ना रह्या लवलेस ॥५

और राजके दिल में, हांसी करनें का कांम ।
तिसवास्ते बातां करें, वायदा किया इनठांम ॥६

आजसे सकुमार बाई, आवे आठ में दिन ।
तव राज बडो आदर कियो, बैठाया जोड़े कहे मोमिन[३] ॥

एह राज की क्रपा, काहू ऊपर होए ।
सो मेरे आगे होए, ए काम करे सोए ॥८

जो मेरे आगे होए, या बैठे मेरे जोड़[४] ।
जो देवचंदजी सिरपर हैं, तो करो नहीं चित्तमरोड़[५] ॥९

१—ह० आया लखमीदास । २—ह० और सभाचद छत्री । ३—ह० कहो बैठाओ जोड़े सैयन । ४—ह० जोड़े । ५—ह० मोड़े ।

मुझे न कुछ दुख नाथ ! भले ही हूँ अधनङ्गी,
मेरा दीप्त सिँदूर माँग-मे जीवनसगी।
आया मुझको ध्यान थी कि मै नैषध रानी,
द्रवित इसी से हुआ हाय ! आँखो का पानी।
अबला है हम भरा सबल आँखो-मे जल है,
कल कल करता कही विकल बहता छल-छल है।
व्याकुल तुमको देख, हाल क्या होगा मेरा,
तब-विधु-मुख मुस्कान, मुझे है दिव्य उजेरा।
प्रकृति-भीरु हम दीन-हीन अबला होती है,
स्व-जन-सोच को देख सहज विकला रोती हैं।
पुरुषो पर हम भार रही है और रहेगी,
जीवन का आधार छोड हम किधर बहेगी।
त्यागा तृण-सा राज्य, भाग अपना भ्राता-हित,
किया दुखो को वरण, निबाहा निज-व्रत समुचित।
व्रत पालन के लिए कष्ट यो कौन ! सहेगा,
यदि तुम धिक् धिक् हुए धन्य, फिर कौन ! रहेगा।
आते हैं दुख सदा कलुष मन का धोने को,
दीप्ति-दान ज्यो-अग्नि-शिखा करती सोने को।
हर्षित हूँ मै और रहूँगी, शोक हरो अब,
हो तुम विश्रुत सुभट, ध्यान बस यही धरो अब।
ऐसा कहकर मौन हुई मानो, वह वीणा,
(हो अनन्य तुम धन्य देवि ! है यह ही जीना।)
हुए स्वस्थ से भूप प्रिया का वदन विलोका,
अपना दुख का वेग स-बल हो सहसा रोका।
बोले—यह नारीत्व अबलता स्रोत नही है,
कान्ति-मान नारीत्व-तुल्य, हिम-धौत नही है।
दीन हीन तुम कहाँ, प्रतीक तुम्ही-हो बल का,
तुम्ही निवारण-मात्र देवि ! सशय का छल-का।

विधि की सर्वोत्कृष्ट सृष्टि पुरुषत्त्व यहाँ है,
उसी शक्ति-पर पूर्ण-विजय नारीत्त्व रहा है।
अबला हो तुम किन्तु, विपद मे बल हो तुम ही,
विश्व मरु-स्थल है यह इसमे जल हो तुम ही।
है न मुझे कुछ शोक, राज्य से दीन हुआ मै,
था मेरा वह कहाँ-कि जिससे हीन हुआ मै।
मात्र धरोहर जनता की वह मैने पाई,
आज उसी का सरक्षक है मेरा भाई।
जो मुझसे भी श्रेष्ठ, गुणी सुन्दर मानी है,
पहले से भी अधिक समृद्ध राजधानी है।
नियति-चक्र यह अनवधान गति-शील रहेगा,
मुझे जुआरी किन्तु सदा यह लोक कहेगा।
खेला मै ही द्यूत निकृष्ट कर्म था मेरा,
उसका प्रतिफल-भोग विशुद्ध धर्म था मेरा।
उसमे भी तुम हाय! भागिनी बनकर आई,
भद्रे! है यह स्मरण-मात्र मुझको दुखदायी।
बच्चो-के ही सग, विदर्भ तुम्हे जाना था,
अति दुरुह यह मार्ग, न तुमको अपनाना था।
अस्तु! हुआ सो हुआ प्रिये! अब तुम सो जाओ,
कर निद्रा को प्राप्त शान्ति तुम निर्भय पाओ।
घूम-रहे सर्वत्र हिस्र-पशु आखेटक बन,
सुनो, उधर कर रहा सिह वह गर्जन तर्जन।
धाँय धाँय, कर रहा विपिन, रो रही शृगाली,
से-से-करती बीत गई आधी निशि काली"
"पर, स्वामी! सुख-भोग किया जब साथ तुम्हारे,
सौपा निज सर्वस्व, स्वय ही हाथ तुम्हारे।
आज दुखो-को देख, भीति क्या-उनसे पाती,
वन-मे भटकें आप और मै मौज उडाती।"

हमको आवन दीजियो[1], आय करें विचार।
जैसा लाग देखेंगे तैसा करें करार ॥ २८

मास चार इत रहे[2], फेर चले हरद्वार।
आए हर-द्वार में, ताको कहों विस्तार* ॥२९

[हरिद्वार का प्रसंग]

साका सालबाहन का, सोरा सैं पूरंन।
बैठासाकाविजयाभि नन्दका, तबफिराएफिरकेंसैयंन* ॥३०

विक्रमाजीत के राज सें, बरस सत्रासै पैंतीस।
तब जिद हुए फिरकन सों, बुध ईस्वरों के ईस* ॥३१

हरद्वार के मेला में, चार सम्प्रदा ताहिं।
षटदरसन भी तहाँ मिले, दसनाम सन्यासी जाहिं* ॥३२

चार वरन चार आस्रम, सबे भए एक ठौर।
सबने देखे श्री राजकों, किनी दिल सक और* ॥३३

कह्या तुमारी राह तो नई है, हम सुनी न देखी कांहि।
झाड़ो दीजै आपनों, तुम हम मारग में नांहि* ॥३४

तब कहे वचन श्री राजनें, तुम पराचीन पुरातम।
सो कहो हमें समझाए कें, अपनोइस्ट जो धरम* ॥३५

क्रोध अहंकों छोड़कें, चित्त सों कहो समझाए।
कहो जथारथ बेदलें, सोई गहें हम आए* ॥३६

१—ह० हम को उत आवन देओ। २—ह० मास ऐक इत रहे।

अपनों द्रढ़ाव जो होए, सो हमकों देओ बताए ।
तापर सक हमें होवहीं, सो तुम देओ मिटाए* ॥३७
तब बोले रामानुज, सब सास्त्र वेद मत इस्ट ।
कहो अगोचर पंथ सही, देखो अपनी द्रस्ट* ॥३८
हमारे गुरु धरम में, कही नाम माला उर माहिं ।
अचुत गोत्र अति सुचिपरम, प्रभु अनंतसाखाजो आहिं॥३९
सुकल हमारो वरन है, सब वरनों से बाहेर ।
स्याम वेद द्वार स्रवन, मुक्त समीपी जाहेर* ॥४०
मठ बैकुंठ है हमारो, सुमेरु प्रदछना जान ।
बीज मंत्र निराकार है, नभ सम ब्रह्म मान ॥४१
पदम नाभ जो छेत्र है, मेलकोट सुख विलास ।
लखमी इस्ट अति गोप है, उजल अति प्रकास* ॥४२
ए पद्धति लखमी से चली, ए पद्धति विन भ्रम आए।
चौदे भवन पर बैकुंठ है, सोई अखाड़ा सुहाए* ॥४३
रंगनाथ हम धाम है, नदी कावेरी तीरथ ।
देवी है कमला सही, सारे सबे अरथ* ॥४४
श्री नारायन है देवता, विस्नू आचारज होए ।
गाइत्री है अलख निरंजन, कही पद्धति रामानुज सोए॥४५

[श्रीजी]

सुन पद्धति श्री राज नें, किए प्रस्न जो एह ।
कह्यो पंथ अगाध जो, तुम धंन रामानुज तेह* ॥४६

ए जग मांहें की कही तुम, कहे वेद जगत को नास।
पिड ब्रह्मांड दोऊ प्रले में, तो कहां जीवको वास* ॥४७

[निमानुज]

तब बोले नीमानुज, वेद इस्ट जप धाम।
अपनी संप्रदा सब कहों, मूल ग्रहो बिसराम* ॥४८
मथुरा है साला सही, धरम क्षेत्र गोकुल पुनीत।
सुख विलास ब्रन्द्रावन, धाम द्वारका नीत* ॥४९
नदी गोमती तीरथ, इस्ट रुकमनी होए।
जजुर वेद हरनाम की माला, टारे छल सब सोए* ॥५०
विद्या देवी मुक्त सरूपी, प्रणव मंत्र उहंकार।
चली सप्रदा सनकादिक सें, पराचीन मत सार* ॥५१
गोपाल वंस है गायत्री, गोपाल मंत्र हे जान।
नारद है आचारज, रिषी दुरवासा मान* ॥५२
विस्नु को वाहन सही, गरुड़ देवता सोए।
रछा करे सदा संत की, ए पद्धति नीमानुज होए* ॥५३

[श्रीजी]

तब बोले प्रस्न श्री राजने, तुम में नहीं विचार।
कछू कही जगत के परे की, कछू जगत मंझार* ॥५४
सार असार कों एक किए, मिले नहीं मत वेद।
तुम बिन सतगुरु क्या करो, छूटें नहीं भव खेद* ॥५५

[विष्णु श्याम]

तब विस्नू स्याम आचारजनें, अपनी संप्रदा सब ।
इस्ट उपासना वेद जप, कहों सुनो तुम अब* ।।५६

विस्नू कांची है धरमसाला, सेत गंगा चक्र तीरथ सोई ।
सुख विलास इन्द्र दमन मध, जहां निरमल सब होई* ।।५७

मारंकड है तीरथ, परसोत्तम पुर धाम ।
इस्ट लखमी है सही, जगंनाथ सेवन उपासना नाम* ।।५८

अथरवन वेद हमारो सही, माला नाम की सार ।
अचुत है गोत्र पुन, त्रपुरारी साखा धार* ।।५९

सुकल वरन तुम जानियो, तुलसी मंत्र है जाप ।
जलबिंब रिषी है देवता, वांमदेव आचारज थाप* ।।६०

ब्रह्मगायत्री जानियो, महादेव से संप्रदा आए ।
सायूज मुक्त हमनें ग्रही, ए विस्नू स्याम संप्रदा सुहाए* ।।६१

[श्री जी]

तुम तो ए जगमें कही, कहे वचन श्री राज ।
वेद पुरान जग नास कहे, रहे कहां संप्रदा बाज* ।।६२

[माधवाचार्य]

तब कही माधवा चारज नें, हमारी संप्रदा जोए ।
गोत्र छेत्र इस्ट धाम वेद, सुनो आप तुम सोए* ।।६३

[हरिद्वार में संन्यासियों से संवाद]

पुरी अवंतिका साला सही, नीमखार छेत्र होए ।
सुख विलास हे अग पातमध, बद्रीनाथ धाम हे सोए*।।६४
अलखा नदी तीरथ हमारो, विध उपासना जान ।
सावित्री तो इस्ट है, आद वेद रिग (ऋक) मान*।।६५
हरनाम का माला है उर में, विस्नु गायत्री हे गान।
विस्नु हसरूप मंत्र है, ब्रह्मा आचारज प्रमान*।।६६
हंसरिपी पुन देवता, ब्रह्मा ते संप्रदा आए ।
सालोक मुक्त हे हमारी, ए पद्धति माधवी सुहाए*।।६७

[श्री जी]

तब कहे प्रस्न श्रीराज नें, एतो कही जग मांहि ।
कहे वेद जग भरम है, तब मुक्त कही सो कांहि ।।६८

।। प्रकरण ।।३३।। चौपाई ।।१६२८।।

[बारहवां विश्राम सम्पूर्ण]

अथ दशनाम संन्यासी की विधि

[१–शारदा मठ पश्चिम]

फेर दसनाम संन्यास जो, बोले इस्ट प्रमान ।
मन्या सात मठ चार हमारे, परमहस मत ए जान*।।१
प्रथम मठ मंन्या पछिम की, मठ सारदा तहां आए।
परम द्वारका छेत्र है, सुदेचर देवता सुहाए*।।२
भद्रकाली देवी सही, गंगा गोमती तीरथ ।
अनभूती सरूपा आचारज, सारे सबे अरथ*।।३

कीटवार है संप्रदा, तीरथ आस्रम दो नाम।
ब्रह्मा विस्नु है देवता, ए पछिम मंन्या विसराम* ॥४

[२–गोवर्द्धन मठ पूर्व]

दूसरी मंन्या है पूरवकी, वन आरंन दो नाम।
भोग गोवरधन है मठ, भोगबार संप्रदा ठाम* ॥५
पद परसोत्तम छेत्र है, देवता है जगंनाथ।
बलभद्र और पदमाचारज, विवलाई देवी साथ* ॥६
रोहिन्या महोदधी तीरथ, ए पूरव मंन्या होए।
इन आचारजन के मुख, सुनी श्री राजनें सोए* ॥७

[३–ज्योतिर्मठ उत्तर]

त्रीजी मंन्या सो कही, सुनियो ताकी विध।
जोसीमठ आनंदबार संप्रदा, पदब द्रीनाथ आस्रम है सिध*।
नर नारायन देवता, गिर परवत सागर नाम।
नराटोटका आचारज, पुन्या गिरी देवी ठाम* ॥८
मुक्त छेत्र अलखा नदी तीरथ, ए त्रीजी मंन्या जान।
इन आचारजोंनें कह्यो, अपनों सब प्रमान* ॥१०

[४–शृंगेरी मठ दक्षिण]

चौथी मंन्या दछिन दिस की, तीन नाम है तांहिं।
पुरी भारती सरस्वती, सिंगेरी मठ है जांहि* ॥११

भूरबार है संप्रदा, पद रामेस्वर छेत्र सत।
संकर आदि वराह देवता, कामिछया देवी गत*॥१२

सिंगीरिषी प्रथवी धराचारज, टोक भद्रा तीरथ सार।
चौथो मंन्या को मतो, सुन्यो सब विचार*॥१३

[५—सुमेरु मठ उर्धा]

पांचमी मंन्या जो कही, उरधा जाको नाम।
ताकों मठ सुमेरु है, कासी संप्रदा ठाम*॥१४

ग्यान पद कैलास छेत्र है, निरंजन देवता सत।
माया कों देवी कही, ईस्वर आचारज मत*॥१५

मानसरोवर तीरथ, पांचमी मंन्या सोई।
सुनकें आप चित विचारिया, ए जग बाहेर नहीं कोई*॥१६

[६—पर आत्म मठ मूल]

छठी मंन्या की विध जो, बरनत अगम अगाध।
दसो नाम की इस्ट है, भजत बोहोत विध साध*॥१७

मंन्या छठी कही आतमां, मठ पर आतम मूल।
सत संतुस्ट कही संप्रदा, जोग पद परे न भूल*॥१८

नाभ छेत्र परमहंस देवता, मनसा देवी उर आन।
चेतन व्यापी आचारज, त्रकुटी तीरथ जान*॥१९

सरोवर छेत्र है सही, छठी मंन्या विध एह।
एह बात है साथ की, लेत आप पर तेह*॥२०

[७–सहस्रार्कद्युति मठ]

अब मंन्या सुनो सातमी, जंबूदीप भरथखंड मांहिं ।
ब्रह्मा पुत्र सिखा सही, सूत्र साखा तांहिं* ॥२१

जग्य पवित्र में सूत्र कह्यो, वरने मत मठ चार ।
पछिम मठ पूरव दुती, दो उत्तर दछिन सार* ॥२२

चार मठ के चार ब्रह्मचारी, आनंद सरूप चेतन प्रकास ।
हंस परमहंस बोध कुटीचर, सप्त मठ मंन्या जास* ॥२३

सातो मठ के संन्यासी, बोले सबे विचार ।
उपदेस बोधदिछ्या कहों अपनी, सो देखो तोल निरधार* ॥

[अथ संन्यासियों का दीक्षा मंत्र]

[पश्चिम]

सात मंन्या के सात मंत्र है, मंन्या पछिम प्रथम सुहाए ।
तीरथ आस्रम दो नाम की दिछ्या, सो देखो चित ल्याए * ॥

मंत्र––ॐ ह्रीं नीलहंसः सोहं परमहंसः
ॐ सिद्धान्त भास्करोहं सिद्धेश्वरदेवः सोहं ब्रह्मेति मंत्रः ।

[पूर्व]

पूरव मंन्या को मंत्र है, तारन हमारो जोई ।
बन आरंन दो नाम की, दिछ्या सुनो अब सोई* ॥२६

मंत्र––ॐ सोहं मठः प्रतीच्यात्सर्वदिङ्मुखे नमस्ते
करोम्यहम् । जगन्नाथो देवता सोहं ब्रह्मेति मंत्रः ॥

सुध बुध भूल सभी वे अपनी, क्रन्दन लगी वहाँ-करने,
ईर्ष्या वश, निज शान्ति-सग ही, लगीं शान्ति वन-की हरने।
"जीवनमय ! मेरे सुखदायक ! प्राणाधिक हे प्राणप्रिय !
मुझे छोड इस-भाँति विपिन - मे, किधर गये बनकर निर्दय।
आओ हे प्राणेश्वर ! सत्वर, मुझे बचाओ, दया करो,
हे सत्यव्रत ! तडप रही मै, निज दासी की व्यथा-हरो।
छिपे-हुए हो क्यो-पत्तो-मे, निकलो, दृग दर्शन पावे,
ऐसी हँसी न अच्छी होती, जिससे प्राण निकल जावे।
धर्मात्मा विख्यात आप है, सोचो तो अपने मन-मे—
उचित न है मुझसी अबला को, देना छोड विजन वन-मे।
विदित आपकी अनुव्रता हूँ, आप प्राण हो, मै काया,
छोड सका है कौन ! भला-यो जीवित रहते निज छाया।
कभी न मैने मन से भी हे नाथ ! आपका बुरा किया,
फिर क्यो-यो अपराध-हीन मुझ-सोती ही को छोड दिया।
बिना आपके भी जीवित हूँ, निकले है ये प्राण नही,
वश की बात न है यह मेरे, अबला हूँ, बलवान नही।
पत्र पुञ्ज-मे छिपे खडे तुम, मै भयभीत बुलाती हूँ,
किस कारण से सदय नाथ को इतना निर्दय पाती हूँ।
अ-जल मीन-सी तडप रही मै, बन कर सलिल चले आओ,
तप्तलता-सी सूख रही हूँ, बादल बन इस पर छाओ।
आकर धैर्य मुझे दो स्वामी, विनय पदो मे करती हूँ,
और न इच्छा है कुछ मेरी, ध्यान आपका धरती हूँ,
प्राणाधिके ! स्वर्ग - मे भी मै तुम्हे छोड कर रह न सकूँ,
चन्द्रमुखी ! पल भर को भी मै विरह तुम्हारा सह न सकूँ।
कहते तुम तो सदा यही थे, कहाँ प्रणय की बाते वे,
और कहाँ है हृदय-खण्डिनी छद्म-भरी अब घाते ये।
हारे थके क्षुधा-से पीडित, किसी वृक्ष-के तले कही—
बैठोगे तब नाथ ! अकेलापन क्या - तुमको खले नही।

मंत्र--सोहं हंसः तत्त्वमसि पद, ब्रह्म त्वं पद, माया
असि पद, तत्पद जीवो ब्रह्म परमहंसो देवता
सोहं ब्रह्मेति मंत्रः ॥

[सहस्रार्कद्युति]

सातमी मंन्या जबूदीप में, भरथखंड मध आए।
ब्रह्मापुत्र सिखा सूत्र, तिनकी दिछया सुहाए*॥३१

मंत्र--ॐ ह्रीं नीलहसः परमहंसः सोहं।
सच्चिदानन्दो देवता सोहं ब्रह्मेति मंत्रः ॥

या भांत संन्यास मत, दिछ्या मंत्र सब विध।
औरद्वादस परमहंसगायत्री, सुनी सतगुरु ताकी सिध*॥३२

मात पिता उधारन, अपनें पिंड और प्रान।
पूरव जनम उधारवे कों, मत संन्यास प्रवान*॥३३

जाग्रत कुल गुरु चरनें वरन्यो, नसे कोट अघ पाप।
नारायन की है प्रापती, पारायन सब जग आप*॥३४

पछिम मंन्या के तीरथ आस्रम, पूरव मंन्या बन आरन।
उत्तरमंन्या गिरि परवत सागर, सबके तरन तारन*॥३५

दछिनपुरी भारथी सरस्वती, यों दसनाम मठ चार।
ए मत जुगान--जुग चले आए, जे सुनाए तुमें सार*॥३६

वेद उक्त संन्यास मत, गुरुदत्त उजास।
परमहंस परिव्राज--का, संकर करयो प्रकास*॥३७

[हरिद्वार में दार्शदिकों से चरचा]

संन्यास मत के आचारज, चारो जुग के जेह ।
तिनके नाम कहत हों, सुनियो चित दे तेह* ॥३८

ब्रह्मा विस्नु रुद्र सतजुग में, त्रेता जुग में तीन ।
वसिस्ट सक्त पारासर, ए देखो तुम चीन* ॥३९

द्वापर जुग में दो आचारज, व्यास सुकदेव नाम ।
कलजुग में पुन तीन हैं, गौंड गोविंद संकर ठाम* ॥४०

संकराचारज के चार शिष्य भए, तिन में ब्रह्माचारज एक ।
दूजे पदमाचारज, त्रीजे नराटोटका चारज विसेक* ॥४१

चौथे सिङ्गी रिषी कहे, तिन चारों के हैं सिष्य दस ।
सोई दस नाम संन्यास हैं, मारग बांध लियो जस* ॥४२

ब्रह्माचारज के सरूपाचारज, तिनके हैं सिष्य दोए ।
एक तीरथ एक आस्रम, देखो डंडीवान प्रसिद्ध होए* ॥४३

पदमाचारज के बलभद्र, तिनसे बन आरन ।
नराटोटकाआचारजके, गिरिपरवतसागरतरनतारन* ॥४४

सिङ्गी रिषी के उरथाचारज, तिनके सरस्वती भारथी पुरी ।
ए दस नाम विस्तारकलजुगमें, संन्यासंसंप्रदा प्रकटकरी* ॥

॥ प्रकरण ३४ ॥ चौपाई ॥१६७४॥

[अथ षट् दर्शन की विधि]

षटदरसन बोले तबे, पराचीन हम मत ।
सो देखो तुम समझके, भागवत प्रास सत* ॥१

चतुर मुखी ब्रह्मा सदा, चार वेद नित्यान ।
अध्यायन उत्तर अहेनिस करें, पूरव मुखें रिग जान*॥२

अध्यायन उत्तर मुखें, करें अथरवन वेद ।
पछिम मुख तें बोलहीं जजुर वेद के भेद*॥३

दछिन मुख तें उचरे, स्याम वेद नित्यान ।
तिन के षट अङ्ग हैं सही, कहों तिन के प्रमान*॥४

प्रगट भयो मुख पूरव तें, नइयाइक दरसन ।
पछिम मुखतें प्रगटे, तिनके कहों वचन*॥५

पातांजल और सांख्य मत, वैसेसिक परवान ।
पछिम मुखतें प्रगटे, तीन सास्त्र ए जान*॥६

मिमांसा दरसन चतुर, दछिन मुख तें होए ।
अति निरमल वेदांत मत, उत्तर मुख तें सोए*॥७

एह विध षटदरसन भए, तिन के कहों प्रमान ।
षट आचारज हैं सही, नाम सुनो तिह ग्यान*॥८

गौतम तें प्रतछ हुआ, न्याए सास्त्र प्रकास ।
मिमांसा दो मिल कही, जैमुन अरु व्यास*॥९

करम विवेक जैमुन करयो, सारीरक कृत व्यास ।
मिमांसा की दोए विध, कही तुमें परकास*॥१०

कपिल देव तें सांख्य हैं, पातांजल मत सेस ।
करन देव वैसेसिक कहे, सिव वेदांत उपदेस*॥११

ए आचारज मूल है, छऊ सास्त्र के लेख।
वाद चतुर कों करत है, भिंन भिंन मत देख* ॥१२

नइयाइक दरसन की, भेद बाद विध आए।
माया जीव ईस्वर त्रई, भिंन अनादि सुहाए* ॥१३

बीस एक परनालका, सीढ़ी दुख की जौन।
नास होए तब सुख की, प्रापत होवे तौन* ॥१४

[श्री जी]

प्रस्न कियो श्रीजू तबे, तुम में नहीं विचार।
ईस्वर जीव विनास है, तुमारे वचन मंझार* ॥१५

बीस एक सीढ़िया कही, दुख की भारी जौन।
तिन मध माया जीव सब, कहो सुख की सो कौन* ॥१६

सूछम रूप नित तुम कह्यो, अस्थूल कहत हो नास।
बीस एक सीढ़ीयन सें, कहां नित को बास* ॥१७

[मिमांसा दर्शनी]

तब मिमांसा दरसनी, बोले करम प्रधान।
कारन करता करम है, करम इस्ट प्रमान ॥१८

जीव ईस्वर ब्रह्म है, सब करमन के रूप।
करम बिना कछु और नहीं, सदा अनादि अनूप ॥१६

[श्री जी]

श्रीजी बोले प्रस्न तब, करम विषे है भांत।
ब्रह्म अखंड सरूप है, सदा एक रस जात ॥२०

फा० २५

करम तहां उपजे खपे, थिरता उनमें नांहि।
अहंकार मनका अमल, करम लगत है तांहि ॥२१

अहंकार मन जीव में, तिहिते करमी सोए।
मन पोहोंचे नहीं ब्रह्मकों, करम तहां क्यों होए ॥२२

माया तें पुन रहित है, ब्रह्म सरूप समान।
वेद सास्त्र में यों कह्यो, तुम में ताना तान ॥२३

[सांख्य दर्शनी]

सांख्य सास्त्र के दरसनी, बोले तबे विचार।
प्रकृत पुरष सब के परे, सब को कारन सार ॥२४

प्रकृत पुरष जब मिलत है, जगत प्रगट तब होए।
भिंन भए मिट जात है, हमरो मत एह सोए ॥२५

[श्री जी]

प्रकृत पुरष तें कहत हो, जगत भयो सब एह।
सूरज द्रस्टें तिमर रहे, एही बड़ो संदेह ॥२६

महाप्रले सब जगत को, प्रकृत पुरषलों होए।
रूप रहे नहीं प्रकृत को, मिलें कहां ए दोए ॥२७

निराकार के मूर्त हैं, भेद कहो समझाए।
प्रले मध अस्थान कहां, रहे कहो सब माए ॥२८

जो तुम अपनी बुधकर, निराकार कहो तांहिं।
तो मिलन कहो कैसे भयो, दोऊ भेद पुन नांहिं ॥२९

[वैशेषिक दर्शनी]

वैसेसिक दरसन तब बोले, सबको मूल काल मत खोले।
काल पाए उपजत है एही, ख्याल खेलावत सब कों तेही* ॥

[श्रीजी]

सबकों खाए करत है नासा, एही रूप ब्रह्म को बासा।
श्रीजी प्रस्न कियो तब तिनको, मूलकहतहो कालजू सबकों॥

वेद वाक्या मध काल को नास, कालरहित है ब्रह्म प्रकास।
कह्योस्रुति स्मृति के मांहीं, काल तहां पोहोंचत है नाहीं* ॥

कालपाए उपजे सो विनसे, उपजतलीन होए सब तिनसे।
ब्रह्म मांहिं उपजत लए नाहीं, सबसेंदूर रहे सब मांहीं* ॥

कह्यो सरूप ब्रह्मकोऐसो, तुम तो कहत हो सबलिक जैसो।
अंग सबलिक माया मांहीं, निरविकार सबहीं में नांहीं* ॥

होए कालमध ब्रह्म सो नाहीं, या विध कह्यो वेदके माहीं।
निराकार तुम काल कों कह्यो, तैसो रूपब्रह्म को लह्यो* ॥

[पातांजल्ल दर्शनी]

तब बोलेपातांजल ग्यानी, व्यापकब्रह्म सकल मध जानी।
एही भवन ब्रह्म को लेखो, व्यापक इत हीं है तुम देखो* ॥
पिंड मांहें आठ अंग लेकें, खोज कीजिए जब चित देकें।
नाड़ी चक्र सोधिए जबहीं, मिलें ब्रह्म आपमें तबहीं* ॥

आठ अङ्ग जोग के जेही, नाम कहत हों तिनके एही ।
आसन प्राणायाम जो कहिए, प्रत्यहार धारना लहिए* ॥
ध्यान समाधि नेम जप जोई, आठों अङ्ग जोग के सोई ।
जोत रूप तुम ब्रह्महीं मानो, कारण बीज जगत कों जानों* ॥
उपजे उपजावे सब यामें, जगत रहत किरना सम तामें ।
बुध विषें लेओ ए मत सार, अहो चितमें कर निरधार* ॥

[श्रीजी]

श्रीजी पूछयो प्रस्न विवेकें, मेटो आसंका ए चित देकें ।
ब्रह्मसच्चिदानंद सरूप, जगत असत जड़ दुख कों रूप* ॥
सत्य वस्त तें सत्यही उपजे, द्रव्य असततें असत्य ही निपजे ।
इच्छा रहित ब्रह्मस्तु तिकें माहीं, उपजत खपत तामें कछु नहीं* ॥
उपजत खपत माया तें होई, वेद सास्त्र मध कह्यो जो सोई ।
वेद कहत माया में भास, तातें करत सत्ती प्रकास* ॥
किरना सूरज भेद न आई, माया ब्रह्म बीच बहु भाई ।
परस पर प्रतिवादी दोऊ, एक पात्र मध रहे ना कोऊ* ॥
सत असत की जात है न्यारी, यामें रहे विचार बहु भारी ।
रहे प्रमान वचन सब केरे, एह विध खोलो प्रस्न जो मेरे* ॥

[वेदान्त दर्शनी]

फेर वेदान्ती दरसन जेही, ब्रह्म विना कछु कहत न तेही ।
माया कों अनादि पुन कहें, माया सदा ब्रह्म मध रहे* ॥

माया मांहैं ब्रह्म हैं व्यापक, सर्वदेसी है सब लायक।
ब्रह्म बिना दूजा जो देखैं, तिनकों हम अग्यानी लेखैं* ॥
अणूँ तें तुम हस्ती लों जानो, एक ब्रह्म सब मांहिं बखानो।
इच्छा रहित सब सें न्यारा, करता करम न कछू विचारा* ॥

[श्री जी]

जो तुम सर्वत्र ब्रह्म कह्यो, तब तो अग्यान कछुए नांहिं।
तो षट सास्त्र भए काहे कों, मोहे ऐसी आवत मन मांहिं* ॥
निराकार सब मांहिं बिराजे, इछा रहित सदा छबि छाजें।
होत जगत कौन तें एही, मेटो आसंका तुम अब तेही* ॥
ब्रह्म विषें माया कछू नाहीं, तीन काल रहत नहीं तांही।
पुन अनादि मायाकों कही, ब्रह्म सर्वत्र माया बिध लही* ॥
ब्रह्ममध माया कौन बिध, तीन काल नहीं आई।
सर्वत्र ब्रह्म किहि बिध लसे, भेद कहो समझाई* ॥५२
पुन अनादि माया कही, कौन भांत है सोई।
निराकार साकार के, कहो भेद जो होई* ॥५३

[साखी]

भिंन आतमां जगत तें, संकर कही प्रकास।
पुन आतमा सबमें कही, कहो भेद प्रकास* ॥५४
वेदान्त सें वाद बहु, भयो जो मेला मांहि।
कहां लों कहों बनाए कें, देखो हते जो वांहि* ॥५५

ए सबे षटदरसनी, षटसास्त्र आचारज जोई ।
न्यारे न्यारे मत सबे, सुनें श्री राजनें सोई* ॥५६

तब सब मत मारगनें मिलकें, कही श्रीजीसों विख्यात ।
अपनें मत हम सब कहें, अब आप कहो साख्यात* ॥५७

कौन सास्त्र में कहां कही है, हमें कहो दे साख ।
नई राह है तुमारी, सो कहो हमें विध भाख* ॥५८

[श्रीजी]

कही व्यास हरबंस में, देखो संत विचार ।
जनमे-जै राजा प्रतें, सुनो बोध तज सार* ॥५९

कही अनहोनी व्यासें नृपसों, नृप सुन पूछत सोई ।
ब्रह्मरूप मुनी प्रगट हैं, दुरघट सब थें जोई* ॥६०

नृप तब पूछी व्याससों, सनकादिक सें सोए ।
तुमसों रिषी बहु प्रगटे, क्या ब्रह्मरूप तुम न होए* ॥६१

तब व्यासें नृपसों कही, वे भए नहीं कोई काल ।
हू हैं प्रगट कलजुग में, प्रगटे आए के हाल* ॥६२

उत्तम पुरष बिन और कों, देवी देव न ध्याए ।
अकथ कथा नौतन कहे, जग सुन पूजे ताए* ॥६३

ए व्यासें नृपसों कही, बोहोत विध विस्तार ।
तिनकी साख जो देत हों, देखो संत विचार* ॥६४

श्लोक....अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ब्रह्मरूपिणः
उत्पन्ना ये कलियुगे प्रधान पुरुषाश्रयाः
कथायोगेन तान्सर्वान् पूजयिष्यन्ति मानवाः
यस्य पूजाप्रभावेण जीवसृष्टि उद्धारणः
(हरिवंश पु० भविष्यपर्व अ० ४)

या भांत वेद उपनीषद में, विध विध कही बनाए।
और अस्टादस पुराण में, आगम सास्त्र लखाए* ॥६५

जो ग्राहक या वस्त कों, सो लेवे चित ल्याए।
ताकों वेद उपनीषद में, हम सब दें समझाए* ॥६६

तब सबनें चितमें लई, ए नहीं कहू बंधाई।
पूछिए धाम छेत्र संप्रदा, तब जवाब नहीं आई* ॥६७

स्वामी विध संप्रदाए की, कहो साख दे सोए।
ज्यों हम अपनी सबनें कही, त्यों तुम कहो प्रसंन होए* ॥६८

करके गर्व बोले सबे, प्रस्न विविध विस्तार।
साखा सिखा कह्यो आपनी, फेर कह्यो सूत्र विचार* ॥६९

सेवन आपनों निज कह्यो, गोत्र इस्ट अरु जाप।
साधन मंत्र पुरी कह्यो, कहो देवी परताप* ॥७०

साला कहिए अपनी, छेत्र होए जो कोए।
सुख विलास रिषि देव जो, तीरथ सास्त्र जो होए* ॥७१

ग्यान कहिए कुल आपनों, फल और द्वार प्रकास।
कहां निवास कहां संप्रदा, कहो उक्त प्रस्न उजास* ॥७२

[संन्यासी तथा दार्शनिकों को उत्तर]

[श्रीजी]

कृपा द्रस्टें बोले तबै, सुनो साध सब कोए ।
प्रस्न प्रस्न कों उत्तर, तुमकों देवें हम सोए* ॥७३

अकथ भेद अदभुत एह, चित दे सुनो तुम सब ।
कीजे हीरदे विचार, धरो दोस जिन अब ॥७४

स्रुति स्मृति की साख दे, कहों तुमें समझाए ।
ग्राहक होए चित दे सुनो, तो कलजुग भ्रम जाए* ॥७५

सतगुरु ब्रह्मानंद हे, सूत्र हे अख्यर रूप ।
सिखा सदा इनसें परे, चेतन चिद जो अनूप ॥७६

श्लोक–ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षिरूपं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तन्नमामि ॥

(स्कन्दपुराणे गुरुगीतायाम्)

[सूत्रकी साक्षी]

श्लोक–यदक्षरं परं ब्रह्म तत्सूत्रमिति धारयेत् ।
सूचनात्सूत्रमित्याहुः सूत्रं नाम परं पदम् ॥
तत्सूत्रं विदितं येन स विप्रो वेदपारगः

(ब्रह्मोपनिषद)

[शिखा की साक्षी]

श्लोक—शिखा ज्ञानमयी यस्य उपवितं च तन्मयम् ।
ब्राह्मण्यं सकलं तस्य इति ब्रह्मविदो विदुः ॥
चिदेवपंचभूतानि चिदेवभुवनत्रायम् ।
(ब्रह्मोपनिषद)

श्लोक—आनंदघन एवास्मि तदेव मम परमधाम ।
तदेवधाम तदेव शिखा तदेवोपवीतंचेति ॥
(परमहंसोपनिषद)

सेवन है परुषोत्तम, गोत्र चिदानंद जान ।
परम किसोरी इस्ट है, पतिव्रत साधन मान* ॥७७

श्लोक—द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
(गीता)

[गोत्र की साक्षी]

श्लोक—अनादिमादिचिद्रूपं चिदानंदंपरंविभुः ।
वृन्दावनेश्वरं ध्यायेत त्रिगुणस्यैक कारणम् ॥

श्लोक—सिद्धरूपाऽसि चाराध्या सा श्यामा जीवनंमम ।
यः स्मृत्वा भावयति त्वां तैरहं भावितः सदा ॥
तत्र में वास्तवं रूपं यत्र यत्र भवादृशी ।
ममेष्टं च ममात्मा त्वं राधैव राध्यते मया ॥
(पुराण संहिता)

[साधन की साची]

श्लोक–नाहं वेदैर्न तपसा ना दानेन न चेज्यया ।
भक्त्या त्वनन्यया लभ्य अहमेवं विधोऽर्जन* ॥
(गीता)

[जाप की साची]

श्री जुगल किसोरी जाप है, मंत्र तारतम सोए ।
ब्रह्मविद्या देवी सही, पुरी नौतन मम हैं जोए* ॥७८

श्लोक–राधया सह श्रीकृष्णं युगलं सिंहासने स्थितम् ।
पूर्वोक्तं रूपलावण्यं दिव्यभूषा श्रृगम्बरम्* ॥
(वराह संहिता)

[तारतम की साची]

श्लोक–स्वकृत विचित्रयोनिषु विशन्निव हेतुतया
तरतमश्चकास्स्यनलवत् स्वकृतानुकृतिः ।
अथ वितथास्वमूष्ववितथं तव धाम स मम्
विरजधियोऽन्वयन्त्यभिविपण्यव एकरसम् ॥
(वेदस्तुति–भा० १०–८७, १६)

श्लोक–ब्रह्मविद्यां प्रवच्यामि सर्वज्ञानमनुत्तमाम् ।
यत्रोत्पत्तिलयं चैव ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वराः ॥
(ब्रह्मविद्योपनिषद्)

[निजानन्दीय पद्धति]

अठोत्तर सौ पख साखा सही, साला है गौलोक ।
सतगुरु चरन को छेत्र है, जाए जहां सब सोक* ॥७६

सुख विलास मांहें नित ब्रन्दावन, रिषीमहां विस्नु है जोए।
वेद हमारो सूछम है, तीरथ जमुना सोए* ॥८०

सास्त्र स्रवन श्री भागवत, बुध जाग्रत को ग्यान।
कुल मूल हमारो आनंद, फल नित्य विहार प्रमान* ॥८१

दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अख्यरातीत निवास।
निजानन्द है संप्रदा, ए उत्तर प्रस्न प्रकास* ॥८२

धनी श्रीदेवचंद जी निजानंद, तिन प्रगट करी संप्रदा तेह।
तिन थें हम एह लखी है, हम द्वार पावें अब एह* ॥८३

तो या भांत चरचा बोहोत, भई मेला में जान।
साख दई सब सास्त्र की, अवगत गतिजो प्रमान* ॥८४

तहां पैंतीसा के बरस में, भए निसांन धूमर केत।
खे (त्तय) भई एक मास की, समें जगत भयो अचेत* ॥८५

साके विजिया अभिनन्द के, पुकारत सब कलाम।
ताकों सबे पढ़त हैं, पर भूली खलक तमाम* ॥८६

जीती फौज सिरें संसार की, कारज कारन विस्तार*।
तहां तमासा देख कें, फेर के किया विचार ॥८७

दाउद पांड़े की हवेली में, साथ कों छोड़े जब।
हरद्वार सों होए कें, आए के मिले तब ॥८८

इन समें खिजमत में, रेहेता था गरीब दास।
खांन सामा खिताब दीवान का, कह्या अपनी कलाम खास॥

एह लाल दास कों, हुआ था हुकंम ।
इसी वास्तें आगे कों, धरता था कदंम ॥९०

॥प्रकरण॥ ३५ ॥चौपाई॥ १७६२॥

[तेरहवां विश्राम सम्पूर्ण]

[महाप्रभु का हरिद्वार से दिल्ली आगमन]

फेर राज आए डिल्ली, आए मिले सब साथ ।
मास चार इत भए, फेर साथ के पकड़े हाथ ॥१

इत विचार करके, राखे एक तरफ सारूप दे ।
लड़ें छड़े होए कें, देखें कैसा कांम होवे जे ॥२

तब अनूप सेहेर कों, सब साथ कों ले चले ।
तहाँ एक हवेली लेयकें, सब साथ कों रखे ॥३

इत रहत एक पाठक, अनूप सेहेर का चौधरी ।
दो दिन आया दीदार कों, तिनसों चरचा करी ॥४

सीसा एक गुलाब का, आगें धरा तिन ।
उपली कछूक पेहेचान, और ना चीनया किन ॥५

तहां साथ कों राख के, फेर आए डिल्ली में ।
उतरे आए साहगज में, आए बातें करी साथ सें ॥६

साथ जो डिल्ली का, आए मिल्या सब धाए ।
तिनसों परियाण की, बातां करी बनाए ॥७

तहां सेंती पाती लिखी, बिहारीजी ऊपर।
एक सकस चलाइया, सारी दे खबर ॥८

फेर इहां सें चले, आए लाल दरवाजे में।
साथ सब मिलाए के[1], परियाण किया तिन सें ॥९

आसाजीत बुलाइया, सुनाए सब कलाम।
सिफत जो तिन में लिखी, माहामद अला इसलाम[2] ॥१०

नबी और नारायण की, कछू सुनाई पेहेचांन।
तब ए बात सुनकें, खड़-भड़ पड़ी ईमांन ॥११

हिन्दुओं के तरफ की, कछूं ना रही ठोर।
इन में तो कछू ना रह्या, बड़ा होत है जोर ॥१२

में देखत हों तुम कों, बिन सिर के आदमी।
कानों तो सुने हते, तुम कों देखे इन जिमी ॥१३

अमल अवरंगजेब का, और सरीअत का अमल।
तिनसों तुम लड़त हो, इत मोहे ना पड़े कल ॥१४

तब विचार करकें, छोड़ दिया इन कों।
विचार अपने साथ में, करें आपुस मों ॥१५

कौन नजीक इन का, तिनसों करें मिलाप।
कहें हकीकत अपनी, इत छूट जाए सब ताप ॥१६

१—ह० साथ सबे मिलके। २—ह० महमद अलेहुसलाम।

एह विचार करकें, जाए मिले सेख सलेमान ।
तिनसों कहा हमकों, मिलाओ सुलतान ॥१७

इन मिलाप श्री राजसों, किया बेर दोए ।
इन के दिलमें कुफर, कीमिया मांगे सोए ॥१८

इन कों एक फकीर की, बात कही समझाए ।
बैठा फकीर पहाड़ में, तिनके भेजे हम आए ॥१९

तुमारे दिलके बीच, जेता कोई मनोरथ ।
सो सारे तुमारे, पूरे करे अरथ ॥२०

एक दीन सब होवहीं, भागे सब बोध ।
आपुस में लड़ मरत हैं, सब मिट जावे क्रोध ॥२१

और सब तुमारे दुस्मन, आपे होवे जेर ।
तुमारा सिर ऊंचा हो, जाए लगे सिर मेर ॥२२

और जेता कोई कीमियागर, करने वाले धात ।
ते कदम तुमारे पकड़े, आधीन होए करें बात ॥२३

और डर सुलतान के, रहे ना कोई कित ।
तुम कों खुदा के रसूल का[1], दीदार होवे इत ॥२४

जब ए बातां[2] लिख दई, तब डरया[3] सेखसलेमान ।
तब इत की पातसाही, कौन करे सुलतान ॥२५

१—ह० तुम को खुदा करे रसूल का । २—ह० बात । ३—ह० ड़रा ।

तब जवाब इनकों किया, इन फकीर की पातसाई ।
हकें दई दीन की, जाहेर की न देखाई ॥२६

जो कोई होवेगा फकीर, हक की तरफ[1] ।
सो दुनियां मुरदार की, थूक न काढ़े हरफ ॥२७

एह बात सुन कें, देहेसत भई दिल में ।
ए बात बड़ी बुजरक, क्या मालूम होए मुझ सें ॥२८

मेहेमत कहें ए मोमिन, याद करो हिजरत[2] ।
जो लड़ाई तुम करी, कायम करनें क्यामत ॥२९

॥प्रकरण ॥३६॥ चौपाई १७९१॥

[महाप्रभु का दिल्ली में धार्मिक सत्याग्रह]

लालदरबाजे की हवेली में, राजे किया हुकंम ।
लाल गोवरधन कों कह्या, जाए मुल्ला पूछो तुम ॥१

क्या कुरान में कहत है, कैसी है मजकूर ।
किन कों एह ठहरावत, सो मुझ आगे करो जहूर ॥२

इन समें काम करन की, उरझ रही सब बात ।
कैसे कर पेहेचानेगा, अपनी असल जात ॥३

लाल गोवरधन गए, एक मुल्ला पास मेहेजद ।
बात सुनते मुल्ला की, आपस में भई जिद ॥४

मुल्ला की बातन की, लाले भई पेहेचान ।
ए तो हमारे घर की, तेहेकीक भया ईमान ॥५

१—ह० हक ताला की तरफ । २—ह० याद करो हजरत ।

गोवरधन के दिल में, डर रहे मुसलमान ।
पोहोरा अवरङ्गजेब का, जिन कोई सुने कान ॥६

तिसवास्तें झगड़ा भया, लाल बातें करें मिनें जोस ।
टूक टूक होवे इन बात पर, दुनियां थी फरामोस ॥७

दोउ राह में लड़कें, आए लाल दरवाजे सोए ।
राज आरोगन के समें, दिन रह्या घड़ी दोए ॥८

ऊँचे अटारी पर, बैठे थे श्री राज[१] ।
गोवरधन तहां पोहोंचया[२], कही सुनी चरचा जो आज ॥६

इतनी बेर में, जाए लाल पोहोंचे[३] ।
बातें सुनी तिन की, कही गोवरधन ने जे ॥१०

उहां की बातें सुन के, केहेने लगा जब ।
लालदास नें, अरज करी तब[४] ॥११

हमको इन चढाई पर, मन होत है कछू और ।
इहां सेंती उठ जात है, तब चित न रेहेवत ठौर[५] ॥१२

तब भाई गोवरधन कों, रीस चढ़ी बनाए ।
एह सब मोकों कह्या, तुम जानत नाहीं ताए ॥१३

दोउ बातें राज देख कें, दिलमें किया विचार ।
इनों की अकल ऊपर, मोहे कैसो इतवार ॥१४

१—ह० बैठे हुते श्री राज । २—गोवरधन तहा पोहोचके । ३—ह० इतनी बेर मे तितही, लालदास आए पोहोचे । ४—ह० ऐ जो लालदास ने, अरज करी सब तब । ५—ह० तब चेहेन ना रहेवे ठोर ।

इन समे श्री राज कों, तामस बढ़िया जोर[१]।
आए जब राईलें जोरा किया, किया असराफीलें सोर ॥१५

मोहों आगे विजलीय के, चमकत लेहेरां दई।
तब राज के मुख थें, ए बातां पुकार कही ॥१६

कारखांना कागद का, ए सोंप्या लाल दास।
उदेपुर कों जावहीं, भीम मकुंद मोमिन खास ॥१७

गोवरधन भटसों कह्या, सूरत जाओ तुम।
अनूप सेहेर हम जात हैं, एह हुआ हुकंम ॥१८

दई वस्तां जोस में, सेखबदल कों हुकंम।
कागद लालदास कों, मुकंद दास तारतंम ॥१९

बुध दई भीम कों, गोवरधन सूरत।
मकुंद भीम उदेपुर, हम जाए अनूप सेहेर इत ॥२०

भागी सारी उरभन, कोई न रह्या कांम।
प्रात कों ले चले[२], अनूप सेहेर कें ठांम ॥२१

महीना था असाढ़ का, धारा अखंड बरसत।
पोठी ऊपर बैठ के, पोहोंचे अनूप सेहेर बखत ॥२२

मारग मिनें चलते, दई मानक ओषद।
पेट छूटा तहां जाएकें, कछू ना रही हद ॥२३

१—ह० नूर रोसन चढियो जोर। २—ह० प्रातको उठ ले चले।

इन समें शरीर की, बड़ी भई कसोट ।
डर के लाल बाई रोई, ले धनी की ओट ॥२४

तब दिलासा करी[1], जिन कोई डरो तुंम ।
फिरी न मेरी सूरत, तब तुमें खबर करों हुकंम ॥२५

उस बखत जबराईलें, बड़ा किआ जोर ।
उतरे कलाम कादर सें, करों खेल में सोर ॥२६

तोरेत किताब में, उतरी सनंधे तीस ।
सब खबर कुरान की, हकें करी बगसीस ॥२७

सनंधे लिख तैयार करी, विचार देखे सुकन ।
एह बानी सुन के, पीछा ना हटे मोमिन ॥२८

इन मजल ऐसा हुआ, सब कारज भए सिध ।
अपने निज वतन की, आई जाग्रत बुध ॥२९

अब एह बानी सुन कें, कोई ना फिरे ईमान ।
जब पोहोंचे सकुमार कों, टूक टूक होवे सुलतान ॥३०

इन बखत पाठक के, कछूक दिल में भई सक ।
देखी अंदर विचार के, कैसी बात माफक ॥३१

पधराए अपनें घरों, बिछौनें कर साज ।
बातें राजें सब कही, बीतक अपनी तहांज ॥३२

१—ह० तब आप दिलासा करी ।

तब एह सुन के, बोहोत आप हुआ खुसाल ।
अरज अपनी करनें लगा, माफक अपने हाल ॥३३

इहां सेंती आए के, साथ कों दिआ दीदार ।
तुम कों हुआ हुकंम[1], जो भेजा परवरदिगार ॥३४

हुआ हुकम हक का, सेखबदल ऊपर ।
जाओ तुम सुलतान पे, देओ खुस खबर ॥३५

सेख बदल विदा हुए, चले तरफ सुलतान ।
सनंधे सिर पर बांध के, ले दिल में ईमान ॥३६

पोहोंचे डिल्ली सेहेर में, बखत जुमे निमाज ।
ईदगाह चला गया, मैं पैगाम पोहोंचाऊं आज ॥३७

तहां खलक खड़ी रहे[2], चित ना काहू एक ठोर ।
सेख बोहोत पुकारया, देखा बड़ा दजाल का जोर ॥३८

कोउ कहे हिंदवी मिनें, इनों लिखे कलाम[3] ।
बातां तो वरहक है, पर हमें रवा नहीं इस ठाम ॥३९

इन भांत बाते सुन के, फेर आए अपने ठोर ।
गनीवेग की हवेली में, जाए पोहोंचे और ॥४०

तहां सनंधे बांचन लगे, बिना एक मेहेमद ।
तब एक सैयद बोलिया, बात जेहेल की लिए जिद ॥४१

१—ह० तुम को सैया हुकम । २—ह० तहा खलक ठाड़ी रहे । ३—ह० लिखे ऐ तो कलाम ।

क्यों कुफर बोलत हो, है मेहेमद अलेहसलाम ।
एते पैगंमर भए, काहू का नहीं नाम[2] ॥४२

तब सेख बदल सों, झगड़ा हुआ इत ।
उतते पीछे फिर के, घरों आए तित ॥४३

दिन दोए चार में, अनूप सेहेर से आए राज ।
बुलाया सेख बदल कों, पूछा पैगाम का काज ॥४४

तब सेख बदल ने, अपनी कही बीतक ।
मैं तो बोहोत पुकारया, इनों पीठ दई हक[3] ॥४५

कोई कलाम हिन्दवीअ का, ल्यावत है दिल सक ।
काहू दिल में कुफर, कोई बात करे बुजरक ॥४६

फेर बैठे बिचार कों, इन बातां सुनी न कांन ।
लाल गोवरधन मिल के, जाए कही सेख सलेमांन ॥४७

तब ए फेर उत गए, जाए किया मिलाप ।
सारी हकीकत कही, जाके सुनते मिटे ताप[4] ॥४८

आज मिलाऊं काल मिलाऊं, यों फिरते मास भए दोए ।
कबहूं कछू कबहूं कछू, जवाब करत है सोए ॥४९

कहे पेहेले इन भेष सों, मिलत नहीं सुलतान ।
भेष तुमारी बदलो, तो सुलतान सुनाऊं कान ॥५०

१—ह० है एक महमद अले हुसलाम । २—ह० तिन काहू नाही नाम ।
३—ह० इनो पीठ दई तरफ हक । ४—ह० जाके सुने मिटे सब ताप ।

यों करते विचारते, कछू इनमें न देखी साख[१] ।
तब आपुस में कह्या, अब फिरो इन से आप ॥५१

लाल दरवाजा छोड़ के, आए सराए रोहिला खांन ।
ए कलाम पारसी में करे[२], तब होवे पेहेचांन ॥५२

तब एक मुल्ला पारसी का, हुकम हुआ दयाराम ।
बुलाए ल्याओ तिनकों, लिखे पारसी में कलाम ॥५३

तब लड़के कांइम कों, बुलाए ल्याया दयाराम ।
राख्या चाकर दे महीने, वास्ते लिखनें इन काम ॥५४

सेखजी मीराजी का, लिख्या इत सम्बाद ।
तिन में सारी हकीकत, लिखी जो बुनियाद ॥५५

इन की जिलदें बांध के, और रुक्के किए तैयार ।
ठौर ठौर पोहोंचाए, जो थे सुलतान के यार ॥५६

पुकार करी घर घर, सब देखे मुरदार ।
राह खुदाय के वास्तें, कोई न हुआ खबरदार ॥५७

उस्ताद सुलतान का, एह जो सेख निजाम ।
कोईक दिन तिन के फिरे[३], नालाएक देखा इसलाम ॥५८

एक सोदागर सूरत का, रहे चांदनी चौक में ।
तिन पाया दीदार राज का, मिलाप था तिन सें ॥५९

१—ह० कछू ना देखी साख । २—ह० ऐ कलाम आरबी मे करें । ३—ह० कोई दिन इन को यहा फिरे ।

तिनने कह्या मेरे पास, है दजाल नामा।
तुम को मैं देखाऊंगा, दजाल की सामा ॥६०

तिन लेने के वास्ते[1], लाल जाए बेर एक।
वह नित वायदा करे, बातां करे अनेक ॥६१

केतेक दिन फिराया, तब हुआ मुनकर।
मेरे पास तपसीर हुसेनी, जो बड़ी मातवर ॥६२

तब पूछया लाल ने, उनमें क्या खबर।
कुरान अरथ पारसी, है जाहेर सब ऊपर ॥६३

ए बात लाल नें, आए आगे करी श्री राज।
हुकम हुआ लाल कों, ले आओ तुम आज ॥६४

लाल फेर उनकें घरों गए, फिरते भए दिन चार।
तब लालें आए कह्या, याको झूठो लगत विचार ॥६५

उस बखत में हाजर, बैठा था दयाराम।
तिनने अरज करी, मुझे कहो ए काम ॥६६

तब राजें हुकंम किया, ल्याओ हुसेनी तपसीर।
बड़ा चाह है हम कों, पोहोंचे मजल मीर ॥६७

तब हुकम राज का, चढ़ाया सिर दयाराम।
अपने अस्नाओ रहत थे, तिनसों कह्या एह काम ॥६८

१—ह० सो लेने के वास्ते।

हमारे असनाओ ने, पाती लिखी हम पर।
हुसेनी मगाई है, बोहोत निहोरा कर ॥६९

तब उनने कह्या, मैं करों तुमारा काम।
हुसेनी हाजर करी[1], दई हाथ दयाराम ॥७०

लिए चालीस रुपैया, तामें दिए दो फेर[2]।
खुसाल हुआ दयाराम, जाए लगा सिर मेर ॥७१

वहां से लेकर धाया, आए पोहोंचा श्री राज।
ले तपसीर आगे धरी, एह हुआ सिध काज ॥७२

तपसीर कों देख के, राज भए खुसाल।
बातां लगे करनें, आगे गुलाम लाल ॥७३

उन समें कायम के, तपसीर दई आगें।
देख इन के मायनें, हम को सुनाओ ए ॥७४

प्रथम इंना अंजुलना सूरत पढ़ी, जामें तीन तकरार।
इसारतें सारी खुली, जो लिखी परवरदिगार ॥७५

ब्रज रास में थे, हम तीसरे आए इत।
ए तो ओही बात है, जो हम कों कही तित ॥७६

इंना आतेन सूरत[3], पढ़ी मुल्ला ने जब।
जमुना ताल पाल की, हकीकत पाई तब ॥७७

१—ह० तबही सुन हाजर करी। २—ह० तिनमे दिए दो फेर। ३—ह० इना अजुलना सूरत।

घन कहाँ ! आम्र से भिन्न लता थी प्यासी,
वह हास्य स्वप्न ! अब धरे अनन्त उदासी ।
कितना गहरा यह रग, सफल सब सहकर—
कहता मानो सिन्दूर माँग-मे रहकर ।
आई जिस दिन विधु-छटा, घटा से आवृत—
कुण्डिनपुर-मे थी, इन्दु समान समादृत,
पर, देख राहु-सा ग्रास, उदास हुए सब,
आशा पाकर भी हाय ! निराश हुए अब ।
यह कौन ! इन्हो-सी अन्य सामने आई—
आपाद-मुकुर-गत दिव्य-सती-परछाई ।
वह ही काषायिक वस्त्र, गात्र-निर्भूषण,
फूली सन्ध्या-सी वही सुखद निर्दूषण ।
वे ही मुमुक्षु से व्याल, बाल लहराते,
मुख-विधु पर बादल सदल शोक घहराते ।
दृग रहे अभी, दो बिन्दु धरे नीरज से,
पर था वह अ-क्षम बाँध, अ-बल धीरज से ।
दो नदियो का यह मिलन, उमडती आई,
पावस-जल से परिपूर्ण घुमडती आई ।
पानी का घाटा कहाँ, रहेगा अब-तो,
टूटे फूटेगा बाँध बहेगा सब तो ।
वे एक अन्य का बनी हुई थी दर्पण,
थी देख रही सामने सभी निज-तन-मन ।
चिरदिन पीछे प्रतिबिम्ब आज निज दीखा—
वह दीन हीन कृश, लता-वितप्त-सरीखा ।
भरने को मानो हानि, हुई एकत्रित,
दोनो मिलकर ही एक-तुल्य हो चित्रित ।
भर कौली, लिपटी, सिमट मिली, सुधि भूली,
आहा, दो सन्ध्या साथ गगन-मे फूली ।

ए आए डिल्ली मिनें, सराई हवेली रोहिलाखांन ।
ए दावा ले बैठे ईसे का, ईनों का तापर था ईमांन[1] ॥८७

थे गिरोह जहूदन में, इनों था मसनंद का कांम ।
राखते दीन सें, जो बरहक इसलांम ॥८८

रसूल साहेब की बात कों, कबूं ना सुने कांन ।
खुदा एक मेहेमद बरहक, तापर ना ल्यावे ईमांन ॥८९

आए मजलस मोमिन की, इहां बिना मेहेमद और न बात ।
ए देख ताजुब भए, बड़ी चरचा हुई खुदा की जात ॥९०

जब रूबरू भए राज के, तब बातां कही मिनें जोस ।
आप आड़े कछू न देखहीं, इलम था फरामोस ॥९१

जब राजें चरचा करी[2], दई श्री देवचंद की पेहेचांन ।
मेहेमद साहेब का, रोसन किया ईमांन ॥९२

जो बात कही मेहेमद ने, और रूह अल्ला कलांम ।
मिलाए देखाए दोनों के, हुआ एकै इसलांम[3] ९३

जब ईसा मेहेमद मिल गए, कलमा और तारतंम ।
भागा दिलका कुफर, जाग देखी आतंम ॥९४

कहे सुकन राज ने, बड़ा देखाया जोस ।
तब दिन जहूदन का, होए गया फरामोस[4] ॥९५

१—ह० इन का तिन पर था ईमान । २—ह० जब चरचा करी हजूर ने । ३—ह० मिलाए देखाए दोनी इनकों, ऐ हुआ दीन ऐक इसलाम । ४—ह० सब हुआ फरामोस ।

तब आपनी जुबांन सों, बातां कही ईमांन ।
हम देवचंदजी इत देख्या, भई हमें पेहेचांन ॥९६

खुदा एक मेहेमद वरहक, हम कों रही न सक ।
सुनाई सब सनंधे कलस की, एह तो है माफक ॥९७

हम तो तेहेकीक किया, तुम हो बीच इसलांम ।
तुमारी किताब का, हम लिख पावें कलांम ॥९८

हम भी सब साथ कों, लिखेंगे सुकन ।
हम अब लों भूले थे, है इत बात मोमिन ॥९९

श्री धणी देवचंदजी कों, हम देख्या है इत ।
तुम ईमान ल्याइयो, जो कोई होवे जित ॥१००

इन भांत सब साथ पर, पाती लिखी बनाए ।
सो पाती सब ठौर कों, दई सबों पोहोंचाए ॥१०१

सेख बदल नागजी, एक ठौर किए जब ।
संगजी सामल होएकें, ताम खिलाया तब[1] ॥१०२

कुफर सारा दिलका, भाग गई सब सक ।
एक दीन होए मिले, ल्याए ईमान हक ॥१०३

[चौदहवां विश्राम सम्पूर्ण]

इन भांत बाइस दिन, रहे सोहोबत में ।
प्रेम दास ने देखया, बात इन किस्से से ॥१०४

१—ह० ताम पिलाया तब ।

कह्या प्रेमदास नें, हम सों बातां करते और ।
रुबरु मैं देखया, ईमान ल्याए इस ठौर ॥१०५

प्रेमदास रहे गया, ए दोए चले अपने मुकांम ।
जिन बात को आए थे, सो कर चले कांम ॥१०६

जब इससे पीठ दई, तब घेरे सैतान ।
बस बसा करने लगा, छीन लिया ईमांन ॥१०७

साथ में जहाँ जहाँ मिले, तहां बातां करे दुदली[१] ।
सब कोई लागे पूछने, तुम क्यों कर जात फिरे[२] ॥१०८

तिन को कछुक बतावहीं[३], कछू ल्याए के सक ।
श्री देवचंद बिना, और न कोई हक ॥१०९

जब नौतन पुरी पोहोंचे, अपने मित्र के पास ।
तहांजायकेकह्या, बिना श्रीदेवचंदजीऔरनाआस ॥११०

श्री देवचंदजी कों हम देख्या[४], बैठे उस मुकांम ।
एक दिन करन का, दिया[५] उनकों कांम ॥१११

इतनी बात सुनके, उठ भागा मेहेतर[६] ।
रहों ना पास तुमारी, झगड़ा हुआ यों कर ॥११२

ए पीछे सब दोड़े[७], फिराए से क्यों न फिरे ।
कदमों लाग करें आजिजी, बात भूल कही हम ए ॥११३

१—ह० तहां बाते दुदली करे । २—ह० तुम काहे जात फिरे । ३—ह० तिनसें कछू बातें करे । ४—ह० हम देखे । ५—ह० सोंप्या । ६—मेहेतर = बिहारी जी । ७—ह० ए सब मिल पीछे दोडे ।

तीन दिन लगे, रहे, कोई काहू सुने न कान[1] ।
बड़ो दुख भयो साथ में, सुनके बात ईमान ॥११४

ए सब ज्यों त्यों करके, फेरके ल्याए घर[2] ।
बात जो इसलाम की, यों उठी दिल उपर ॥११५

फेर ठौर ठौर पाती लिखी, अपने फिरेकी ।
जिन कोई ल्याइयो ईमान, तरफ साहब जी ॥११६

ए किस्सा इत का कह्या, जो आया बीच दरम्यान ।
अब कहों फेर बीतक, जो लड़ाई सुलतान ॥११७

मेहेमत कहें ए मोमिन, जो तुम में बीतक ।
लिखी लओमोंफूज में, तुमारे ताले हक ॥११८

॥ प्रकरण ३७ ॥ चौपाई ॥१६१०॥

[साथियों में परियाण]

रोहिला खांन की सराय में, बैठ किया विचार ।
हमकों अब क्या करना, हुकंम परवरदिगार ॥१

घरों रजबी खांन के, फिर दिन दस बीस ।
चरचा बात रसूल की, उमेद न रही जगदीस ॥२

सेख निजाम के घरों, फिरते रहे मास एक ।
बातां कोढ उतारने, कहि देखाई अनेक ॥३

१—ह० तीन दिन तहा रहे, बाता काहू ना सुने कान । २—ह० ल्याए अपनें घर

इन बात के वास्ते, कछू बात सुने इसलांम ।
पर आरब उनको ए कही[1], दुनियां तरफ तमांम ॥४

सेख बाजीद एक फकीर, सुन्या निगा रखो इत[2] ।
दस बेर उनके गए, बातें सुने क्यामत ॥५

करी सोहोबत सागरमलसों, घरों गए दस बेर ।
चरचा सुनाई बीतक, पर हुआ ना आगे जेर ॥६

पर इनकी सोहोबत सें, गए बखतावर के घर ।
तहां जाए चरचा करी, सुनावने ॥७

यों और कै जागा, फिरे घर घर केहेने कों ।
पर ईमान बोए बिना, क्या करें तिनसों ॥८

तब करक बैठक[3], करनें लगा विचार ।
एह पोहोरा दजालका, कोई होवे न खबरदार ॥९

फरज आपन ऊपर है, पोहोंचावने पैगाम ।
जो कोई ईमान ल्यावहीं, सो दाखिल होए इसलांम ॥१०

तिसवास्ते पैगाम को, पोहोंचावना जरूर ।
नलूआ लिख पोहोंचाइए, तब ए सुने मजकूर ॥११

पास रोहिला खांन के, रहे मास चार ।
चांदनी चौक में आए के, करनें लगे विचार ॥१२

१—ह० और आज उनको ऐ कही । २—ह० सुनाए निगाह राखत इत । ३—ह० तब करके बैठक ।

तहां सेंती आए के, रहे हवेली दुलीचंदके।
भयो सोर सराबा उतहीं, भागे उन हवेली सें[1] ॥१३

सब जागा दजाल नें[2], गुलवा किया अति जोर।
रेहेने ना देवहीं[3], बोहोत करने लागा सोर ॥१४

बैठे एकान्त नेहर पुर[4], करने लगे परियान।
अब कासद भेजिए, इनको दीजे निसान ॥१५

बैठे एकांत एक ठौर, पांच किए तुमार।
नलूए पांच बनाए के, हाजर किए तैयार ॥१६

हकीकत क्यामत की, और पेहेचांन इमांम।
हजरत ईसा आइया, हकीकत दीन इसलांम ॥१७

असराफील जबराईल, उतरे अरस सें।
और लड़ाई दजाल की, सब लिखी उनमें ॥१८

आजूज माजूज जाहिर, उगा सूर मगरब।
दाभा हुई जाहिर, ए सब लिखे सबब ॥१९

राह सरातल मुस्तकींम, जो रसूलें करी सरत।
सो ए सबे आए मिले, फरदा रोज क्यामत ॥२०

इन भांतको हकीकत, ए होए एक दीन इसलाम।
इन सेंती काफर फिरे, रखें रबानी कलांम ॥२१

१—ह० टरे उन हवेली से। २—ह० तब इत दजाल ने। ३—ह० काहू रेहेने ना देवही। ४—ह० बैठे जाए एक ठौर।

कुरान हदीसों की साहेदी, देकें लिखे बनाए।
वास्ते फरज उतारने, ए पोहोंचाओ जाए ॥२२

कान्हजी कों कासद कर, नलूए दिए हाथ।
केतेक और सामिल किए रहियो इनके साथ ॥२३

एक नलूआ सेख इसलाम पर, दूजा रजबी खांन।
तीसरा सेख निजांम पर, ए किनकों होए पेहेचांन ॥२४

चौथा आकल खांन कों, पांचमा सीदी पोलाद।
खबर करो तुम इनकों, लिखी तुमारी बुनियाद ॥२५

एह कान्हजी ले चलया, राज बैठे एकान्त।
पैगाम पोहोंचावने की, रखते थे खान्त ॥२६

जाए काजी के द्वारे खड़ा, मुझे भेजा सैयद महंमद।
तुम उपर ल्याया, कलाम रब्बानी खुद ॥२७

काजीने नलूआ लिया, पूछी फकीर की बात।
कहां फकीर रहत है, कौन तुमारी जात ॥२८

हम कासद पेटारथू, करें खिजमत अपने अरथ।
हम मेहेनत तिनकी करे, गांठ से छोड केदेवे ग्रथ ॥२९

पहाड़ से भेजा फकीरने, तुमे पोहोंचावने पैगाम।
क्या और भी काहू पर, के मुझही पर इस ठाम ॥३०

कही चार नलूए और हैं, तिन के लिए नाम।
तिनके डेरे जात हों, पोहोंचावने पैगाम ॥३१

तब काजी रजा दई, लेके जाओ तुम ।
तिन का जवाब ल्याओ, कैसा होत हुकम[1] ॥३२

कान्हजी उहां सें चल्या, द्वार आया सेख निजाम ।
नलूआ पोहोंचाया अंदर, हम आए लेकर काम[2] ॥३३

सेख निजाम बुलाए के, पूछी हकीकत ।
तुम को किनने भेजया, लिख के दौर क्यामत ॥३४

तब जवाब दिया काहान, हमकों भेजा फकीर ।
सैयद माहमद इबन इसलाम, बैठा गोसें एक तीर ॥३५

और भी काहूं के कागद, के लिखे हमही पर ।
तब कान्हजी दिया, है पांचों ऊपर ॥३६

नाम कहे देखाए तिनकों, एक दिया काजी इसलाम ।
अब में जात औरों घरों, पोहोंचावने पैगाम ॥३७

तब सेख निजामने, दिया एह जवाब ।
पोहोंचाओ सबन को[3], मिल बिदा करें सिताब ॥३८

गया के, उने किया इनकार ।
ना मेरा नाम नलूए पर, हुआ ना खबरदार ॥३९
फेर दिया नलूए को, लिखी लांनत जिन ।
वास्ते बोहोत पढ़े के, मोहोर लिखी कानन ॥४०

१—ह० तिन का जवाब लाओ, कैसा होत हुकम । २—ह० हम आए ले करो काम ।
३—ह० पोहोंचाओ सिताबी तिनको।

गया रजबी खांन के, नलूआ दिया हाथ ।
उनने खबर पूछी औरों की[1], केते नलूए तेरे साथ ॥४१

तब कान्हजी भाई ने कह्या, मैं पोहोंचाए चार पैगाम ।
रह्या एक सीद्दी पोलाद का, जात हों तिस ठाम ॥४२

तब जवाब इनने दिया, पोहोंचाए के आओ तुम ।
हम भी जवाब देएंगे, जैसा होवे हुकम ॥४३

उहां सेंती चल के, आया सीद्दी पोलाद के घर।
नलूआ दिया हाथ में, कही सारी खबर ॥४४
सुनो इनोंका उत्तर, मैं पाऊं सिताब ।
तब कह्या सीद्दीयने, औरों का ल्याओ जवाब ॥४५

पांचों पैगाम पोहोंचाए के, आए मिले मोमिन ।
सारों की खबर, बीतक कहे वचन ॥४६
ए हकीकत लेयके, दौड़े पास श्री राज ।
कही सारी बीतक, जो गुजरी है आज ॥४७
फेर सकारे पोहोर में[2], कान्हजी फिरा सबन ।
एक डारे दूसरे पर, जवाब न दिया किन ॥४८
यों करते सबन के, फिरया पन्नर दिन[3] ।
बोए ईमान रहे नहीं, बिना खास मोमिन ॥४९

१—ह० उनने खबर पूछी तिनकी । २—ह० फेर सवारे पोहोर में । ३—ह० फिरे पन्द्रहे दिन ।

जाए झुक्या सेख निजाम के, मोहे देओ जवाब ।
तब जवाब इननें दिया, ए काम नहीं सिताब ॥५०

हम सब मिलकें, एक ठौर करें जवाब ।
इत कै खलक मिलेगी, न होवे काम सिताब ॥५१

गया काजी के घरों, किया जवाब तलब ।
न होवे काम मुझ एक सें, में जवाब करों अब ॥५१

बात बड़ी ल्याए तुम, ए मुकदमा क्यामत ।
में पढ़त पढ़त आजिज भया, डारया कागद तित ॥५३

हम पांचों एकठे मिलकें, देवेंगे उत्तर ।
तब तुम फकीर कों, जाए के देओ खबर ॥५४

सीही पोलाद के घरों, जाए के पोहोंचे तित ।
तलब करी जवाब की, मुझे फकीर न देवे मेहेनत ॥५५

सीही ने जवाब दिया, ए काजी मुल्ला का काम ।
में क्या जानों कुरान की, हकीकत दीन इसलाम ॥५६

तब जवाब किया कान्हजीनें, तुम खबर करो सुलतान ।
ओ आपही जवाब देवेंगे, उन्हें सब पेहेचान ॥५७

कह्या हमारा बूता नाहीं, बात न निकसे मुख ।
भूल चूक वचन कहे, तो बड़े पावें दुख ॥५८

१—ह० जाए पुकारे सेख निजाम के यहा ।

तहां सेंती फेरके, गया रजबी खांन ।
तहां जाए पुकारया, जवाब देओ दीवान[1] ॥५६

मैं तुम पर ल्याइया, सादी के सुकन[2] ।
तुम सुन अपने दिल में, करो खुसाली मन ॥६०

तब जवाब इनें दिया. क्या सादी करें हम ।
आजहीं क्यामत ल्याया, चाहिए मारया तम ॥६१

अजूं हमारे दिल में, रहे दुनियां की उमेद ।
जोरू लड़के घर की, छूट जात सब कैद ॥६२

हम कछू कहत हैं, लिख देओ दो कलमें ।
तो हम आगे फकीर के[3], रुजू होवे तिन सें ॥६३

एह बात पांचन की, नहीं अकेले मेरा काम ।
एह बड़ा मुकदमा, काम दीन इसलाम ॥६४

इन भांत आजिज होए के, फेर आया पास राज[4] ।
जवाब कोई न देवहीं, मैं बोहोत फिरया इन काज[5]॥६५

मेहेमत कहे ए मोमिनो, सुनियो नलूओं की बीतक[6]।
अब कहों आगे परियाण की, कहों हकीकत हक[7] ॥६६

॥प्रकरण २८॥ चौपाई ॥१६७५॥

१—ह० तहा जाए जवाब को, पुकारा देओ दीवान। २—ह० सादी के वचन। ३—ह० तो हम जाए फकीर पे। ४—ह० आया पास श्री राज। ५—ह० बोहोत फिरा इन काज। ६—ह० श्री महामत कहे सुनो मोमिनो, ऐ नलूओ की बीतक। ७—ह० कहो सो हकीकत।

[बादशाह से मिलने का निश्चय]

रामचंद वकील के, फिरे कोईक दिन ।
चरचा सुनाई बोहोतक, ना दिख्या अंकूर मोमिन ॥१

ऊधो दास गोड़िया, बड़ा भाई गंगाराम ।
दोए दिन सेवा करी, उत पाया बिसराम ॥२

सुन्दरी एक संन्यासण, मिली रेती में आए ।
दीदार कर पीछें फिरी, और नजरों न आया ताए ॥३

मास दोए नलूओं मिनें, किया जो गुजरान इत ।
पोहोंचावने पैगाम कों, दावत जो क्यांमत ॥४

फेर बैठे परियाण कों, जुदे रहे श्री राज[1] ।
आपुस में मसलत करी, क्या करना है आज ॥५

साथ केतिक डिल्ली का, और केतेक महाजर ।
मसलत करी बाग में, क्यों ए पावे खबर ॥६

एक बात दिल में, ल्यो तुमारी बीतक ।
श्रीदेवचंदजी तुम पर, भेज दिया हक[2] ॥७

और मेहेमद साहेब आईया, लेकर हक कलाम ।
सो ल्याए तुमारे वास्ते, कोई और न लेवे नाम ॥८

एह[3] कलाम तुम बिना, और ना काहू खुलत ।
ए मेहेर कादर की, हुई तुम को इत ॥९

१—ह० जाए दूर बैठे श्रीराज । २—ह० भेज दिया है हक । ३—ह० ऐक ।

पतझड बीते, ऋतुराज आप ही आये
निज कनक लता, अलिराज असशय पाये,
नल-दण्ड सरस हो, अमल-जलज फूलेगा।
निज निर्जलता के भाव सहज भूलेगा।
होगा आमूल विनाश, वियोग-रूजो-का,
पा मधु-स्पर्श, प्रिय-के पीयूष भुजो-का।
सखि ! लता-मञ्जरी, आम्र-विटप पर छाये,
तब भूल न जाना मुझे, सु-फल जब आये।
तुम नेत्र-निमीलित आह, स्वय भर लेना,
मधु-चितवन ही बस मुझे दया कर देना।
यह इन्दु-किरण लो फूट घटा-मे निकली,
अह गगन-तिमिर मे हुई दीप्त-सी बिजली।
आ गईं वहाँ पर तभी नारियाँ अन्या,
कुण्डिनपुर मे थी सती समाहृत धन्या।
वह सती योगिनी-रूप, वियोगिनि होकर,
निज सदृश बहन के सग रही हँस-रोकर।
मन-मे प्रियतम की मूर्त्ति नाम जिह्वा-पर,
बन गया तपोवन, पुण्य पिता-का ही घर।

चल-रही अब तू-फिर लेखनी !
कह भला लिखना कुछ शेष है।
निरख, मञ्जु सु-मूर्त्ति कहाँ-अरी !
अनलता यह, तापद वेश है।

दुर्दिन-मे वे ही दुख बनते, सु-दिनो मे सुख जो रहते,
शरद के शीतहर साधन ही, ग्रीष्म मे अङ्गार बन, दहते।

यों करते संझा समे, उठ आए अपने घर ।
फेर रात को मिलके, बैठे मेहेजद पगथी पर ।।१

तहां जाए के सनंधें, गावत है कलांम ।
जोस भरे न देखहीं, दुसमन खलक जो आंम ।।२

नितही उत जायके, गावत है बानी ।
सक दिल न ल्यावहीं[1], करें सब अपनी मांनी ।।३

जोस धनी सिर ऊपर, नजर नहीं संसार ।
निसंक चरचा करत हैं, परवाह नहीं लगार ।।४

नंदलाल घड़ीयालची, ल्याया कबीले समेत ईमांन ।
खिजमत में ठाढ़ा रहे, रेहेती थी पेहेचांन ।।५

और राजाराम जो, और बेटा सिवराम ।
दरसन कों आवे नित, करे चरचा में आराम ।।६

मिल भाइयों मसलत करी, रुका लिख सुनाए कांन ।
घड़ीयालची ले जाएंगे, चोहोडे दरवाजे गुसलखान ।।७

तिन रुक्के में लिख्या, जो कोई मुसलमांन ।
तिनकों खबर करत हों, तुम ल्याइयो ईमांन ।।८

रुह अल्ला मिसल गाजिओ, आया अरस सें उतर ।
रसूल इनके सामिल, आए अपने वायदे पर ।।९

१—ह० सक दिल मे न आवही ।

औौर असराफील आइया, जोस जबराईल संग ।
तुम उतरे अरस अजीम से, खुद खसम के अंग ।।१०

सुन सावचेत होइयो, जिन करो गफलत ।
जो कोल तुमसो किया था, सो आया फरदा रोज क्यामत।।

बिन सुने इन रुक्के कों, जो बैठे दरबार[1] ।
जिनकों लानत खुदाय की, पोहोंचे न परवरदिगार ।।१२

हम अपनें सिर का, उतारत हे फरज ।
सो हमकों सोध लीजियो, जिनको होए गरज[2] ।।१३

एह रुक्का लिख के, दिया हाथ नंदलाल ।
गोंद लगाए रात कों चौड़ियो, होए के दिल खुसाल ।।१४

तब घड़ीयालची ने, सिर चढ़ाया हुकम ।
रात को रुक्का चौड़ते[3], कछू ना खाया गम ।।१५

जब हो हुई फजर, रुक्का हुआ जाहेर ।
रुक्का पढ़ पैठहीं, जो आवते थे बाहेर ।।१६

यों करते पढ़ते पढ़ते, दिन हुआ पोहोर एक ।
बांचत बांचत रुक्के कों, कै पढ़ गए अनेक ।।१७

सोर भया दरबार में, भई खबर सुलतान ।
मगाए लिया रुक्के कों, तब भई पेहेचांन ।।१८

१—ह० जो बैठे इन दरबार । २—ह० सो हम को ढूढ लीजियो, जाको होए गरज।
३—ह० रात को रुका चोहोडिया ।

खिजमत सेखसलेमान की, रुक्का पोहोंचावत जब ।
गुस्सा किया सुलतान ने, सलेमान पर तब ॥१६

क्यों ए रुक्का आइया, तैं न करी खबर ।
इन रुक्के से मालूम भई, ए फिरियाद तुझ ऊपर ॥२०

पहेले तेरे घर में, भटक फिरे हैं जब ।
तें कानों ना सुनी, इनों रुक्का चोहोड़ा तब[1] ॥२१

तोकों मैं रख्या था, इसी काम ऊपर ।
जिन इतमाम कों करे, सब की दे खबर ॥२२

दूर करों खिजमत सें, है नहीं काबिल ।
दोसदी मनसब काढ्या, इनमें नहीं अकल ॥२३

ढूंढेरा फिराइया, होए फिरयादी जे कोए[2] ।
मैं जाऊं जुमे निजाम कों, आए हाजर होवे सोए[3] ॥२४

एह खिजमत इन से, तब ही लई छुड़ाए ।
बेटा अबदुल्ला सेख निजाम का, दई खिजमत ताए ॥२५

जब निकल्या जुमे निजाम कों, खड़ा अबदुल्ला आए ।
रुके फिरीयाद के, सब लेता जाए ॥२६

आप खड़ा देखत, भए फिरीथाद अनेक ।
तामे लाल निरमल दास, ले गए रुका अपना एक ॥२७

१—ह० ते कानों जब ना सुनी, उन रुक्का चोहोडा तब । २—ह० होए फिरयादी जो कोई । ३—ह० सोई ।

रुका लेते बखत, अपना दिया इन[1] ।
पढ़ रुका फाड़िया[2], एह ना सुनों कानन ॥२८

एह रुका फाड़ के, ले डारया बीच जेब ।
ए तो बात मोमिन की, करनी है मोहे गैब ॥२६

बोहोत पुकारे मोमिन, क्योंए न सुने कांन ।
ए हमारे वास्ते, खड़ा है सुलतान ॥३०

रुक्का चोडन वाले हम हैं, ऊपर गुसलखान ।
गुस्सा हम वास्ते, किया ऊपर सलेमान ॥३१

क्यों तुम ऐसा करत हो, डरते नहीं खुदाए ।
दिल मोहोर कान आंख ऊपर, क्यों अकल आवे ताए॥३२

एक दोए तीर लगे, चले घोड़े पीछे घसेट ।
तब विचार किया मोमिनों, ए बात ना सुने नेट ॥३३

एह खबर राज को, लिख के भेजी उत ।
हम पैगाम पोहोंचावने, कमी करी न तित ॥३४

पर हम क्या करें, पोहोरा बड़ा दजाल ।
बात हमारी ना सुने, सब पड़े वस दजाल के हाल ॥३५

जिन भांत हम गए, सब लिख भेजी बीतक ।
पर हम इनकों ना छोड़हीं, तुम सिर पर खड़े हैं हक ॥३६

१—ह० अपना लिया इन । २—ह० पढ रुका फाड़ डारिया ।

एक लड़ाई हमारी, अब देखियो श्री राज।
हुकम तुमारे सें करें, पैगाम का काज[1] ॥३७

अब हम लड़ने जात हैं, तुम रहियो खबरदार[2]।
तुम सिर पर हमारे खड़े, समरथ परवरदिगार ॥३८

ए क्या करे हम कों, हम ग्रहे तुमारे कदंम।
तो इन कों मारत हैं, कोई हटे ना पीछे दंम ॥३६

एह पाती लिख के, दई कान्हजी के साथ।
कान्हजी जाए के पोहोंचया, पाती दई हाथ ॥४०

राज पाती बांच के[3], भेजा तुरत जवाब।
तुम अकले ना होइयो, मैं आवत हों सिताब ॥४१

[पन्द्रहवां विश्राम सम्पूर्ण]

मोसों मिलाप करके, तुम कीजो एह काम।
फेर बैठ मसलत करें[4], एक जागा इन ठाम ॥४२

पाती पोहोंची आए के, मिल बांची सब साथ।
राह देखें श्री राज की, इहाँ लेणी दजालसों बाथ ॥४३

यों करते दूसरे दिन, आए पोहोंचे श्री राज।
चांदनी चौक की हवेली, खत्री के घर इन काज ॥४४

रहत लाल बाई उनमें, तहां आए कियो मिलाप।
साथ बैठे मसलत करी, तब जवाब किए आप ॥४५

१—ह० पैगाम का हम काज। २—ह० तुम रहियो हुसियार। ३—ह० श्रीराज पाती लिखके। ४—ह० फेर बैठ मसलत करके।

अब तुमें क्या करना, पोहोंचावने पैगाम ।
साथियों जवाब दिया जोस में, हम टूक टूक होवे इन काम ॥

कोई बात की फिकर, हमारे मन में नांहें ।
जो डरे इन बात से, सो एक तरफ हो जाएं ॥४७

हम कों एक हुकम, तुमारा दरकार ।
हम और बात न जानहीं, बिना परवरदिगार ॥४८

हमतो अपने वजूद कों, करे कुरबान ऊपर इसलाम ।
हम कों और न सूझहीं, बिना करे एह काम ॥४६

जोस इनों का देख के, राज भए खुसाल ।
दै दिलासा बड़ी, देख मोमिनों हाल ॥५०

इनों को देखे आसक, ऊपर दीन इसलाम ।
एह बगसीस हक की, नाहीं और का काम ॥५१

बातां करें जोस में, एक पें एक सरस ।
हुए मगन दीन में, करते हैं हंस हंस ॥५२

रसोई कर राज कों, अरोगाए इत ।
स्याम बाई रामराए, कदमों लगे उन बखत ॥५३

कोई ल्यावत मिठाई कों, कोई और साज[1] ।
सब खुसाल होए के, अरोगावत राज[2] ॥५४

१—ह० कोई और और साज । २—ह० अरुगावत हैं श्रीराज ।

इत खुसाल होए के, रजा दई श्रीराज।
जाए पधारो एकान्त, अब देखो हमारा काज ॥५५

मेहेमत कहे ए मोमिनो, सुनियो एह बीतक।
अब आगे तुमकों कहों, जो हुआ हुकम हक ॥५६

॥ प्रकरण ॥४०॥ चौपाई ॥२०४८॥

[मोमिनों की बादशाह से मुलाकात]

साथ सबे मिल बैठ के, लगे करने परियाण।
अब हमकों कहा करना, ए क्यों ल्यावे ईमान ॥१

बिना आपा दिए, और ना लिया जाए।
एह दिल में विचारिया, नाहीं और उपाए ॥२

कायरों के दिल में, बड़ा जो पेठा डर।
दिल में मुनाफकी थी, बनाई बातां करें ऊपर ॥३

एक आसक इन भांत के, पर आगे धरे न कदंम[1]।
पीछे खड़े रेहेने वाले, सोंपी अपने आतंम ॥४

एक आसक इन भांत के, तन मन दिया वार।
कुरबांन हुए सुनते, ऊपर परवरदिगार ॥५

एक लखमन इनमें, और सेख-बदल।
सिताब करें पोहोंचावने, इनको न परे कल ॥६

१—ह० आगे धरे कदम।

और मुल्लां कांइम, चाकर पैसों का।
सो रह्या पेट वास्ते[१], था ए नानिया फिरका ॥७

और भीम भाई रहे, था सूरत का महाजर।
छाड़ कबीला संग रहे, हैं फिदा इसलाम पर ॥८

सोम जी सूरत से, आए मिल्या था इत[२]।
घर इनके खंभात में, था कुरबान ऊपर बखत ॥९

नागजी सूरत सें, चले छोड़ कबीला खास।
इनकों धाम धनी विना, और न थी आस ॥१०

खिमाई बुंदेल खंड से, आया ले ईमान।
ऊधो की निसवत से, इनको भई पेहेचान[३] ॥११

चितांमन ठठे मिनें, ल्याया था ईमान[४]।
खिजमत करी तन धन सों, पूरी भई पेहेचान ॥१२

दयाराम डिल्ली मिनें, था ईमान लिए जोस।
सेवा खिजमत में रहे, कबहूं ना थी फरामोस ॥१३

चंचल बड़े ईमान सों, रहे खिजमत्त में हुसियार।
आस कबीला छोड़ के, मिला परवरदिगार ॥१४

रेहे दुकान अपनी, ए जो गङ्गा-राम।
ईमांन से खिजमत करे, रहे सेवा के काम ॥१५

१—ह० इनको उपली पेहेचान। २—ह० भाई सोमजी खभात से, आए मिले थे इत। ३—ह० खिजमत करी तन धन से, पूरी भई पेहेचान। ४—ह० ल्याए थे ईमान।

वणांरसी ओगाही करे, ताजा ल्याया ईमान।
आए खड़ा खिजमत में, ऊपर की पेहेचान[1] ॥१६

और साथ बोहोतक थे, कोई ईमान कोई मुनाफक।
बैठे ए परियाण कों, पोहोंचावने पैगाम हक ॥१७

आपुस में मसलत करी, जाए जुमा मेहेजद।
तहां बेठ सनंधा पढ़ें[2], सिफत जो मेहेमद ॥१८

तब पुकार आपुस में पड़े, सुनेगा सुलतांन।
तब हमकों बुलावेगा, तब पैगाम सुनावें कांन ॥१६

एह मसलत करके, जाए खड़े मेहेजद में।
गावत सनंधा जोस में, आसक होने सें ॥२०

इमाम जो मेहेजद का, तिन सुनी पुकार।
उतर आया ऊपर से, सुनी सिफत परवरदिगार ॥२१

नाम सुनत इमाम का, बोहोत हुआ खुसाल।
मोमिनों का मुख देख के, जोस भरे लिए हाल ॥२२

देखे तारा दिन को, नजर करे आसमान[3]।
रेहेमत रेहेमत कहत है[4], हुई हक सुभांन ॥२३

मैं जाऊं सुलतान पे, ले के अपने साथ।
बात तुमारी मैं कहों, ले चला पकड़ हाथ ॥२४

१—ह० आया ऐ खिजमत मे, कर धनी की पेहेचान। २—ह० तहा जाए सनधे पढ़िए। ३—ह० नजर करी आसमान। ४—ह० रेहेमत रेहेमत करके।

अंदर जाए खबर करी[1], आया पैगाम इमाम।
मैं ल्याया लोग तिनके, तुम आओ इनके काम[2]॥२५

मोहोल में से सुनके, निकल आया सुलतान।
हुआ ठाड़ा चबूतरे पर, हाथ आसा टेक सुने कान[3]॥

मोमिन तले चबूतरे, जाए खड़े निकट।
लिखा लओमोंफूज में, औरों भई खट-पट॥२७

तब पूछा सुलतान नें, इसारत सों आए।
तब बोले इत मोमिन, कलमा जुबांन चलाए॥२८

फेर इसारत करी[4], क्या मतलब है तुम।
तब इनें जवाब दिया, दीन इसलाम के आसक हम॥२९

कछू मतलब अपना कहो, कछू मांगो मुझ पै[5]।
एक बात हम मांगत, रूबरू बातां करें तुझ से[6]॥३०

हमारी बातों मिने, आवे ना कोई दरम्यान।
पूछो सुनो तुम हमसें, और न सुनावें कांन॥३१

फेर मोमिनों सों पूछिया, कछू है तुमे और मतलब[7]।
तुम कलमा कह सुनाइया, हम नहीं मुरदार के तलब[8]॥३२

आसा लेके चूमियां, तीन बेर सुलतान।
तबमोमिनबोलेजोस में, हमचोहोड़ारुकासुनायाकान॥३३

१—ह० अदर जाए के ऐ कही। २—ह० तुम आइयो एंह काम। ३—ह० हाथ आसा एक सुने कान। ४—ह० फेर इसारत करी सुलतान ने। ५—ह० कछू मागो हम सों। ६—ह० तुमसे। ७—ह० कछू और कहो सबब। ८—ह० तुमे तो केहे सुनाया, हमे नही मुरदार का मतलब।

पांच नलूए पांचन पर, भेजे तुम खातर।
एक काजी सेख निजाम के, रजबी खांन ऊपर ॥३४

चौथा सीदी पौलाद पर, नलिया आकल खांन।
सो सब तुमारे वास्ते, सुनो तुम सुलतांन ॥३५

उत खड़ा सेख सलेमान[१], कांपे आगे खड़ा सुलतान।
जिन ए मेरी बातको, अब सुनावे कान ॥३६

फिर पूछया सुलतान ने[२], है तुम पे किताब।
तब इनों यारों कह्या, हम मगावें सिताब ॥३७

फेर सुलतान नें कह्या, कछू मांगत हो तुम।
मागें दीन महमदी, और न चाहें हम ॥३८

मोमिन बोले अपनें जोस में, डर दिल भया सुलतान।
और दूर खड़े सब कांपत, सुन सखत कलाम दरम्यान ॥३९

इनमें दस तन एक खिल के, दो तन मुसलमान।
तब इसारत करी, घर पोहोंचाओ पोलाद खांन ॥४०

तब मोमिन दुदले भए, आया गुरज बरदार।
तिनने कह्या कोटवाल सों, सुनो एह विचार ॥४१

तब से आज दिन लों, ऐसा सखत न बोल्या कोए।
के मोहों ऊपर, मजाल न काहूं होए ॥४२

१—ह० इत खड़े सेख सलेमान। २—ह० तब पूछा सुलतान ने।

इनों बातां करते, कछु न आया द्रस्ट ।
इनकी बातां सुनते, कांपत सारी स्रिस्ट ॥४३

ओतो कहि पीछा फिरया, इसारत भई सीदी पोलाद ।
तुम इनकी बातां सुनियो, पूछ देखो बुनियाद ॥४४

इनों कों नीके राखियो, खाने पीने की खिजमत ।
दिलगीर होने न पावहीं, मैं सोंपे तुमकों इत ॥४५

इन समें डिल्ली में, पड़ी खड़ भड़ घर-घर ।
जिनके घर के बीच थे[1], तिनें भया बड़ा डर ॥४६

दयाराम के घर में, बड़ा जो हुआ सोर ।
दयाराम के बदले, पोहोंचावे हम और ॥४७

खानो पीणे की बात जो, पुछाई कुतवाल इनसें ।
मोमिनों मन विचारिया, करें परियाण आपुस में ॥४८

दसतन कों लेय के, किए दो तन बराबर ।
संध्या के समे मिनें, तब जाहिर हुई खबर ॥४६

एह खबर सुनी काजी ने, दिन दूसरे सेख इसलाम ।
तब बुलाए आदालत में, पूछी बात तमाम ॥५०

काफरों ने सुलतान कों, सक ल्याए बीच ईमान ।
तुमकों ऐसा ना चाहिए, जो रुबरु बातां सुनो कांन ॥५१

१—ह० जिनके घर के सग थे ।

क्या जाने किसी फंद पर, भेजे होए दुसमन ।
तुम तिनसें बाते क्यों करे[1], रुबरु अपने तन ।।५२

पुछाओ बात गुलाम से, वह आए कहेगा तुम ।
जब मालूम होएगा, तब देखेंगे हम ।।५३

जो साहजहां के बखत में[2], कोई ऐसा ल्यावे तूफान ।
तो तबहीं मारे गरदन, और बात ना सुने कांन ।।५४

इनकों रहे उमेद, देखने को इमांम ।
तिस वास्ते चुगली ना सुनी, बात रद करी तमाम ।।५५

रुबरु बात करने का, मान लिया सुकन ।
पाजी का पाजी डार के[3], हकीकत पूछी मोमन ।।५६

तब इन बात से, हुए मोमिन हुसियार ।
जी साहेब के ठोर का, किया न खबरदार ।।५७

तब सेख इसलाम सों, जब हुआ मजकूर ।
तब तिनसों कह्या[4], देओ जवाब कर दूर ।।५८

हमारे पैगंमर ने, क्या फुरमाया तुम ।
हदीसा कुरान में यों कह्या, दीजे कसाला तिनको गम[5] ।।५९

जो खुदा और रसूल पर, ल्याया होए ईमान ।
तापर कसाला पोहोंचत, सुनो कलमा कान ।।६०

१—ह० तुम तिनसे बाता क्यो करो । २—ह० जो साहजहा के अमल मे । ३—ह० पाजी का पाजी भेज के । ४—ह० तब तिनो से कही । ५—ह० जो दीजे कसाला गुम ।

वह भैमी, जो पति-हेतु सुखो-से हीना,
प्रिय-सग राज्य-को छोड बनी जो दीना।
वह भैमी, जिसका सुयश मुग्ध-सब गाते,
खोजे से भी उपमेय न जिसका पाते।
जल सकती जो पति-हेतु अनल-मे हँसकर,
क्या-आज पथच्युत वही ! दुखो-मे फँसकर।
देवो को जो दे चुकी चुनौती अपभय,
कहते उसकी श्रीमान स-शोक पराजय।
हिमगिरि ने छोडा स्थान मान निज सारा,
बह चला सिन्धु-सा छोड स्वकीय किनारा।
यह सूर्य प्रसवनी हुई दिशा पश्चिम-सी,
हो चली अनलता देव ! आज तो हिम-सी,
हो जाये धर्म-विलुप्त, प्रलय-सी होगी।
अह, सती-मान-भव-भूति, विलय-सी होगी,
साधारण की क्या-कथा सती-भी जब यो,
है पुन स्वयवर-हेतु समुद्यत अब यो।
यह सत्य, पुरुष का भाग्य, गति-स्त्री मन की,
सुर भी न सके है जान, कथा क्या-जन की।
है जग-मे ये विख्यात, सहज-चञ्चल-मन,
कर निज पति-हत्या स्वय, जलादे निज-तन।
क्या-कहूँ किन्तु यह हृदय न मान-रहा है,
इस समाचार को मिथ्या जान-रहा है।
है भैमी सचमुच सती, सु-सन्तति-वाली,
वे करेगी न निज शुभ्र-कीर्त्ति, यो-काली।
बन सकती वज्र कठोर कही कुङ्कुम-भी,
क्या कहता है मन स्वय कहो-कुछ तुम भी।"
"बाहुक ! तुम बह-से गये व्यथित क्यो-ऐसे,
मर्यादा अपनी छोड, गिरी वह कैसे !

भाई काजी के घर गए, जोस जोर हुआ बदल कों।
तिनका जहूर देख के, भागा अपने घर मों ॥७०

फेर दिन तीसरे काजीएं, बुलाए अपनें पास।
दई किताब एक हदीस की, जिन में[1] मजकूर खास ॥७१

तब काजी केहेने लगा, ए किताब बनाई तुम।
तुमारी हकीकत सब लिखी, ए जो पढ़त हैं हम ॥७२

तब जवाब मोमिनों दिया, ए हम सें ना होए।
तुम तो स्यांनें बोहोत हो, क्यों ना बिचारत सोए ॥७३

हम उरदू बजार सें, ल्याए हदीया दे।
वे[2] बैठे है जाहिर, जाए तुम पूछो उनके[3] ॥७४

तब काजी न बोलिया, पूछने लगा बात।
एक पेहेलें दिन का किस्सा, कर देओ विख्यात ॥७५

खिलवत अंदर बैठके, सुनी जो सनंधे दोए।
बिना एक मेहेमद की, नेक कहों दोजक की सोए[4] ॥७६

तब राजी होए के, फेर फेर गवावे सोए।
खड़ा दरोगा बेतल मालका, सो नागर जात का होए ॥७७
तिनकों प्यार करके, कहे सुन ए कांन[5]।
देखो तुमारे खिलके, कैसा ल्याए ईमांन ॥७८

१—ह० तिनमे। २—ह० ते। ३—ह० उनसे। ४—ह० कहे फेर फेर गाओ सोए।
५—ह० कह्या सुनो ऐ कान।

ओ भागा इन भांत सों, जानों पैठे जिमी में ।
मो ऊपर जुल्म भया, कह्या कहों उन सें ॥७९

बड़ी दलगीरी करके भागा अपने ठोर ।
छोड़ दिया काजीअने, बड़ा जो हुआ सोर ॥८०

अब लगे बातां पूछने, क्यों कही ए क्यामत ।
दसमीए ग्यारे बारही, तेरही लों लिखत[1] ॥८१

तब जवाब मोमिनों दिया, ए बात सबे वरहक ।
मिनें दसमीए ग्यारमी, लिखी इसारतें हक[2] ॥८२

तेरही में भी तेहेकीक, सब मायनें साबित ।
ए हादी से पाइए, खोल दे हकीकत ॥८३

तब एक दूसरे के, सामे लगे देखन ।
ए तो बड़ा मुकदमा, बीच गिरोह मोमन ॥८४

स्वाल सकसें किया[3], तुम कों एते दिन बीच दीन ।
क्यों कजा करी निमाज कों[4], तुम ल्याए थे आकीन ॥८५

तब जवाब मोमिनों दिया, हमारी निमाज कजा न होए ।
जो मतलब दुनियां वास्तें, काम किया होए सोए ॥८६

तब निमाज कजा होए, जो हम पकड़े मुरदार ।
हम वास्तें दीन इसलाम के, काम करे परवरदिगार ॥८७

१—ह० दसही ग्यारही बारही लो, लिखी किन सरत । २—ह० मिनें दसमी ग्यारे बारमी, है लिखी इसारतें हक । ३—ह० स्वाल ऐक सकसे किया । ४—ह० क्यों न करी निमाज को ।

तब हमारी निमाज कों, कबूँ ना होए नुकसान।
बैठें उठें चलें बातें करें, सो सब निमाज हीं जान ॥८८

तब एक दूसरे सों, कहे देखो इन कों जवाब[1]।
मोहवाए सारे रहे, मोंगे रहे विचार किताब ॥८९

फेर तीसरे दिन कों, बुलाए के पूछी बात।
सुनाओ मोहे सनंधे, हम पावें अपनी जात ॥९०

लखमन भीम बैठ के, सुनाई एक सनंध।
इमाम के मिलाप की, पर देखे ना हिरदे अंध ॥९१

मिलाप हुआ मेहेदीअसों, तब कहा मेहेमती नाम।
तब मैं भई जाहेर[2], देखा वतन निज धाम ॥९२

एह बात सुनके, कह्या अब रखो किताब।
तीन बेर फेर फेरके, पूछा इनके बाब ॥९३

मिलाप भया इमाम से, एह बात वरहक।
हम तो उमेदवार हैं, तिनमें नाहीं सक ॥९४

पर अब बात तुम छिपाओ, जिन करो जाहेर पेहेचान।
जब जाहेर होएंगे, तब हम कदम ग्रहे ले ईमान ॥९५

मोमिन तो हैं गरीब, बकरी जेता बल।
पढ़े बाघ ज्यों बोलहीं, ए सीधे निरमल ॥९६

१—ह० तब कहया ऐक दूसरे सों, देखो उनको जवाब। २—ह० अब हुई मे जाहेर।

मेहेमत कहें ऐ मोमिनो, ए काजी के घर की बात ।
अब कहों हादीय की, जिन खबर सुनी विख्यात ॥६७

॥ प्रकरण ॥४१॥ चौपाई ॥२१४५॥

[श्रीजी का आक्रोश]

मुलाकात सुलतान की, जब सुनी जी साहेब[१] ।
कान जी पोहोंचा उसी दिन, बोहोत गुस्से हुए तब ॥१
मैं भेजे तिनको, दिया कसाला जोर ।
अब लिए कहा जात है, मारों इस ही सोर ॥२
मैं भेजे मोमिन कों, दे अपना पैगांम ।
तो गुनाह बैठा इनों ऊपर, कोई न बचावे इन कांम ॥३
जैसा मारना पैगंम्बर, तैसा तिनके दोस्त ।
जाहिर होसी जहान में, इनो ऊपर अपसोस ॥४
सबों की लानत इनों पर, लिखी अल्ला कलांम ।
मेहेमद से मुनकर हुए, इनों छोड़ा दीन इसलाम ॥५
पर ए इत क्या करे, जो लिखी लओमोफूज ।
तिसी माफक होत है, और ना आवे बूझ ॥६
पेहेलैं सिपारे मिनें, पानें बासठ में बयान ।
वरक तपसीर का चौदमां, तहां लिखी ए पेहेचान ॥७

१—ह० सुनी श्री राज ने जब ।

आयत–"मा यवद्दुल्लज़ीना कफरू"
मायने–खुदा न,दोस्त तिनका,जो बुनियाद काफर[1] ।
जिननें ढांप्या हक कों, किया पड़दा सब उपर ॥८
आयत–"मिन् अहलिल्किताबे वल्मुश्रेकीना"
मायने–ए जो एहेल किताब हैं, बीच गिरो जहूदन ।
न मुसरक कहिऐ तिनको, खुदाए भेजे तुम पर इन ॥९
आयत–"अइयुन्जुल्अलएकुम् मिन् खइरिन् व निर्वकुम्"
मायने–भेजे उन जहूदन कों, उपर पैगाम इसलांम ।
बड़ी नेकी जानियो, पावे राह खलक तमांम ॥१०
इन सेंती नजीक, होवे परवरदिगार ।
ए वही मुराद माहमद की, ए हुजत कुरान उस्तवार ॥११
जाए जमां सब चीजों का, ए जो रबानी कलांम ।
जहूद ताके दुसमन[2], बिन एहेल किताब तमांम ॥१२
करे जहूद लड़ाई मुझसों, दुसरे जाहिरी मुसलमान[3]।
मैं पाई सिफत महंमद की, सो छाड़ें नहीं फिरकान[4]॥१३
एह हैं झगड़ादीन का, मसनंद पैगम्बर ।
बाजे इसलाम की नकल करें, देवे ता उपर ॥१४
और मुसरिकों के दिल में, खाइस थी और[5]।
पैगंमर की वारसी, वलीद मुगीर के पोहोंचे ठौर ॥१५

१—ह० के जो हे काफर । २—ह० जहूद तिनके । ३—ह० दूजे सरियत मुसलमान ।
४—ह० अब छोड़ो नही फिरकान । ५—ह० खाइस थी कछू और ।

आयत–"वल्लाहो यरव्तस्सो बेरहमतेही-मिन् यशाओ" ।
मायने–देवे खुदाए खासतर, वही अपनी पैगंमरी ।
जिस किसी कों चाहें, तिन उपर उतरी ॥१६

आयत– "वल्लाहो जुल्फजलिल अजीम" ।
मायने–खुदाए बुजरक साहेब, चाहे जिसे दे फजीलत।
दै पैगमरी तिनको, भांत करामात अजामत ॥१७

बुजरकी जो इसकी, ना आवे बीच शुमार ।
मेहेर-बानगी उसकी, ज्यादा गिनती पार ॥१८

"आयत–मा नन्सख मिन् आयतिन् औ नुन्सेहा ।
नाते बेखैरिन् मिन्हा औ मिस्लेहा अलम् तालम् ॥
मायने–जिनकों मैं रद करों, ले मांयने कुरान से ।
ऊपर माफक मसलत, है जैसे खलकों में[1] ॥१६

और माफक जमाने उसके, भुलावना करे उनकों ।
निकाले इनों के दिल सें, फरामोस होवे इनमों ॥२०

ल्याऊं बेहेतर उससे, मनसूक जो आइतें ।
तिनका द्रस्टांत देत हों, तुम सुनिओ चित दे ॥२१

[सोरहवां विश्राम सम्पूर्ण]

एक गाजी मांनद, साथ दसतन के ।
तिन दसों कों रद करके, किए दो तन बराबर ॥२२

१—ह० होसी खलकों मे ।

मैं ल्याउं मांनद उनके, और जाए करों मैं रद।
वास्ते नफे मोमिन के, माफक सबाब इनके कद ॥२३

साथ रिवाइत मसलत के, ए फिरना किबले का।
बेतल मुकदस सें, तरफ काबे के हुआ ॥२४

न जानत लोक सरियत के, खिताब मुनकरों का रद।
ए मुनकरी करी पैंगमर सें, तो हुए स्याह मोहों जरद ॥२५

बीच रद करनें जहूदों के, काफर लड़ाई करते।
होवे इन बात से पसेमान, खुदा परवाह नहीं इनके ॥२६

एह है इलाही[1], करी पातसाह मसलत।
जो गाफल हुकम पैगाम के[2], सो रद बीच क्यामत ॥२७

फुरमाया खुदाए ने, ए थे भूलने वाले।
तो ए हुए मुनकर, तैयार हुए लड़ने के ॥२८

नहीं रखते हैं मालूम, अब जानोगे तुम।
जब खराब होगे, हक के हुक्म ॥२९

आयत "अन्नल्लाहा अला कुल्ले शैईन कदीर अलम् तालम्"

मायने—नेस्त करनें उपर, इनों के ताई खुदाए।
है सब चीजों पर सावती, कादर है इप्तदाए ॥३०

चाहें ताकों रद करें, करे चाहे नहीं पैदाए।
सकता है सब के ऊपर, जो चाहे सो करे खुदाए ॥३१

१—ह० ऐह हिकमत इलाही। २—ह० से।

आयत-"अन्नल्लाहा लहू मुल्कुस्सामावात्ते वल्अर्दे"।
मायने-साथ मोमिनों के, तेहेकीक, है वेसक खुदाए।
सब लायकी तिन कों, ए लिखा इप्तदाए ॥३२

पातसाही जिमी आसमान की, है उनको सजावार।
जैसा चाहे तैसा करें, कोई न वरजन हार ॥३३

आयत 'वमालकुम् मिन् दूनिल्लाहे मिन् वलीइन् वला नसीर'
मायनें-छूट खुदाए तुमकों, कोई ना दोस्त होए।
नफा पोहोंचावे दीन में, ढूंढ़ पाइए न कोए ॥३४

मेहेमत कहें ऐ मोमिनो, ए कुरान की साख।
यों तुमारी बीतक, कै भांतों लिखी लाख ॥३५

प्रकरण ॥४२॥ चौपाई ॥२१८०॥

[कुरान की साहेदी]

ऐसी साहिदियां कै हैं, बीच अल्ला कलाम।
सब बातें एही लिखी, सब अब पढ़ेंगे इसलांम ॥१

ए जो किस्से कुरान के, अलफ लांम मींम से लेकर।
सो जहाँ लों खतम हुआ, सिपारे आमलों योंही कर[१] ॥२

छत्तीसमी सूरत लों, कुल अउन जो बेरब्बि नास[२]।
जहाँ कुरान खत्म हुआ, सब किस्से मोमिनों के खास ॥३

१—ह० आम लो एही खबर। २—ह० कुल अउज विरभंनास।

ए साहेदी इंना इंनजुला, लिखी बीच सूरत ।
रसूल साहेब बांता करते, आगे असहाबों के इत ॥४

एक गाजी बनी असराईल ने, लोहा बाध्यों महीने हजार ।
बीच राह खुदाए के, तरफ परवरदिगार ॥५

तब यार तजुब भए, या रसूल अले हसलाम ।
हम छोटी उमर सें, क्यों पोहोंचेंगे इसलांम ॥६

एह सकस कौन था, जिनका एह मरातब ।
तब जवाब रसूलें दिया, जबराईल ए सूरत ल्याया तब ॥७

आयत–"इन्नाअंजल्ना हो फी लैलतिल्कदरेवमा अदराका मा लैल तुल्कदरे, लैलतुल्कदरे खैरुम् मिन् अल्फे शहर तनज्ज रुल्मलाऐकतो वरुंहो फीहा बेइज्ने रब्बेहिम् मिन्कुल्ले अम्रिन् सलाम हेय हता मतल्इल्फजरे" !

मायने–मैं उतारे बीच रात के, करो तुम विचार ।
किए साथ लेलत कदर के, ब्रज रास में किया विहार ॥८

फेर तीसरे लेलत कद्र कहि, सो तीसरा तकरार ।
हजार महीने सें बेहेतर, बांधे इने हथियार ॥९

हजार महीने के तेरासी बरस, भऐ ऊपर महीने चार ।
इनते कहे बेहतर, ताको मोमिन करो विचार ॥१०

घर छोड दौड कमनीय रमणि निकली-सी,
वे गमक चमक से दमक रही बिजली-सी।
कच कुच नितम्बिक भार कहाँ, झिलता था,
वह काम-कनक-तरु झुमक झूम हिलता था।
खिचती-सी आती भीड घोष-से रथ-के,
भर गये खचाखच पार्श्व, जनो-से पथ-के।
रथ-बढा, निकट जा-रहा राज-तोरण-के,
ज्यो-चला स्वर्ण-गिरि,निकट सुरेश-भवन के।

सुन, वह श्रुतपूर्व सुघोष भीमजा चौकी,
उर-को आतुरता हर्ष-वेग-से रोकी।
निज अर्थ-पूर्ण प्रिय-दृष्टि बहन-पर डाली,
खञ्जन ने की ज्यो, इन्दु-कला रखवाली।
नीरव उत्तर ही मिला दृगो-से मानो,
(जीजी ! कष्टो का अन्त निकट अब जानो।
हो गई तपस्या पूर्ण, अभीष्ट समागत,
धुल चुके कलुष, हो गये पुण्य सब जागृत।)
वे क्षुब्ध हृदय से उठी क्षीण विधु-रेखा,
वातायन-मे झुक झाँक, काँप कर देखा।
केशिनी कुमुदनी साथ अधीर झुकी-सी,
श्वासो की गति भी, हृदय-समान रुकी-सी।
रथ दीख-पडा प्रिय-हीन, रिक्त घन-सा ही,
माना, मन मे निष्प्राण उसे-तन-सा ही।
रह गई सती-की दृष्टि, सशोक फटी-सी,
पद-युग नीचे से धरणि अनन्त हटी-सी।
चिर भूखी-की रह गई—रिक्त-ही झोली,
वे शोक रोक, कुछ सँभल क्षीण-सी बोली—

इन लैलकों सब कोई, ढूंढत चौदे तबक।
किनों न पाई आज लों, सो मोमिन ली मेहेर हक[1] ॥२०

सबों पोहोंचाए कदमों, खोल भिस्त के द्वार।
सब दोड़ी खलक टीड़ ज्यों, तिनों पाया परवरदिगार ॥२१

एही सिफ़त मोमिनों की, सो आवत नहीं जुबांन।
कहि कहि केता कहों, नहीं सुनने ताकत कांन ॥२२

सब देख अपनी आँख सों, सब पुकारेगी आंम।
उठा पड़दा मोहों मुसाफ सें, सबों खोले अल्ला कलांम ॥२३

जुध किया दजाल ने, जाहिर हुआ सोए।
तुम सों मैं केता कहों, अब सब में जाहिर होए ॥२४

मेहेमत कहें ऐ मोमिनो, नेक साहिदी कही तुम[2]।
अब तुमको बीतक कहों, तुम याद करो मिल कुंम ॥२५

॥प्रकरण ॥४३॥ चौपाई ॥२२०५॥

[सुन्दर साथ को धैर्य देना]

अब तुम सुनियों मोमिनों, कहों बीतक तुम।
लड़ाई करी दजाल सों, जमा एक ठौर थे हम ॥१

जब सरे तोरे कों, हम ले गए पैमाम।
तब ढाक्या जिन गिरोह ने, मरातबा इमाम ॥२

१—ह० सो मोमिन खोले मेहेर हक। २—ह० नेक साहेदी दई तुम।

खुदा रानत है तिनकों[1], तापर फिरस्ते करे[2] लांनत ।
सब मोमिनों की लांनत, हुई बखत क्यामत ॥३

सब आंम लानत देत हैं[3], जिन इस इसलाम ।
हुई खुआरी सब में, पुकारत खलक आंम[4] ॥४

ए लिखी सिपारे दूसरे, सएकुल जाको नांम ।
बैठा दजाल दिल पर, भांनी राह इसलांम ॥५

सब खलक राह पावती, जो फेरत ना पैगांम ।
दीदार होता दुनीअ कों, पढ़यो भान दिया वह कांम ॥६

कांनों तो बेहेर कहे, भई आँखों ऊपर मोहोर ।
दीदे दिल अंधे कहे, तो सुन्या न एता सोर ॥७

मोमिनों फरज उतारिया, पोहोचावते पैगांम ।
हुआ मसरक मगरब जाहिर, सब सुन्या खलक आंम ॥८

तो भी ए ना देखहीं, दिल में नाहीं विचार[5] ।
हम सें क्या गया और क्या रह्या, हुए नहीं खबरदार ॥९

बेतअला पुकारही, सो भी सुने ना कांन ।
वसीयत नामे आए चार, ताकी भी न करे पेहेचांन ॥१०

वास्ते मतलब दुनी के, छोड़ दिया इसलांम ।
पैगमंर कों पीठ दई, रहे बीच दुनी के कांम ॥११

१—ह० जिनको । २—ह० फेरे । ३—ह० देवही । ४—ह० तमांम । ५—ह० दजाल मे नाही विचार ।

मोमिनों ऊपर कसाला, किया इनोंने जोर।
उन लड़ाई के बखत में, किया दजालें सोर ॥१२

तिन बखत हादीय ने, लिख भेजी पाती उत।
सुनियो सोए हकीकत, नेक कहों में इत ॥१३

जब थे कोटवाल के हवाले, तब लिख भेजे खास कलांम।
वास्ते दिलासा मोमिनों, जिन दिलगीर हो इन काम[१] ॥१४

ए पैगंमर हक का, तुमें भेजे ऊपर इसलाम।
जो इनों मारया पैगांम को, हुई लांनत तमांम ॥१५

अब होत हैं सरमंदे, गरम होत दोजक।
तुम पर मेहेर हादी की, है नजीक तुमारे हक ॥१६

तुम बैठे नजीक हकके, तुमें पलक ना करें दूर।
तुमारे नूर सरुप सों[२], जो हमेसा था मजकूर ॥१७

तिसवास्तें तुमें, अजमावत है इत।
दिखाई बलाए कसालें, ए मुकदमा क्यामत ॥१८

जो लड़ाई तुम करी, होसी रोसन चौदे तबक।
मौत दजाल की इनमें, सो तुमहीं मांनो सब सक ॥१९

ए भूले तुमकों देख के, ले मांयने ऊपर के।
इबलीस रान्या इनसें, ले ऊपर के अरथे ॥२०

१—ह० जिन दलगीर होवे इन काम। २—ह० तुमारे मूल सरूप सो।

सूरत देखी आदम की, बीच निसवत थी हक ।
तासों रह्या गाफल, हुई लानत ऊपर सक ॥२१

सो इबलीस सबों दिल पर, करत पातसाही ।
तो इलहाम फेरा इमाम, दुसमनी से आई ॥२२

जान बूझ कोई आप कों, बुरा ना चाहे कोए ।
पर ए कांम इबलीस के, मारी राह इसलांम की सोए ॥२३

लिख्या लओमोफूज में, सेजदा आदम पर ।
सो इबलीसें ना किया, आप को बड़ा जान्या यों कर ॥२४

सेजदा सब जिमी पर, किया ऊपर खुदाए ।
सो सारे सेजदे रद हुए, तोक लानत गले हुआ ताए ॥२५

देखो कौन आदंम कौन इबलीस, सब जिमी सेजदा किया कित
बची न दो आंगुल जिमी, सो कहाँ जिमी है इत ॥२६

ए विचार देखो दिल सें, कौन आदंम बिना रसूल ।
सेजदा न किया किनने, किनने भान्या एह सूल ॥२७

मेहेमत कहे सुनो मोमिनो, ए बीतक सरियत ।
हुए स्याह मोंहों सरमिंदे, हुआ दोर क्यांमत ॥२८

॥प्रकरण ॥४४॥ चौपाई ॥२२३३॥

॥ महाप्रभु का पत्र ॥

[कामां पहाड़ी से दिल्ली में साथियों को समय-अनुकूल चलने का सदुपदेश]

अब कहों मैं मजल की, जो हुई लड़ाई सरिअत ।
भया कसाला मोमिनों पर, साबित करने कयांमत ॥१

तब पाती लिखी हादीअ ने, करने खातर जमां मोमिन ।
सि सब विध की, सुनिओ दिल रोसन ॥२

ए पाती डिल्ली मिनें, थे कैद में हंम ।
तिस बखत ले आइया, कान्हजी बदल हुकम ॥३

लड़ाई के बखत में, जो उलटी भई फते ।
तब दिलासा मोमिन की, पाती लिखी ए ॥४

अपने हाथें दसकतो, लिखे मिनें कलांम ।
तिनकी नकल कहत हों, सुनो मोमिन इसलांम ॥५

मेरे प्रान के प्रीतम, साथ मेरे सिरदार ।
आतम के आधार, जीव के जीवन उस्तवार ॥६

मेरे प्रेम भीने साथ जी, मेरे सावचेत[1] सूरधीर ।
पांउ भर देखावत रूहों कों, तुम बैठे हो हकके तीर ॥७

१—ह० सावचेत ।

जिन लज्जा बैराट बंधया, तिन लज्जा दिया सिरमांन।
सब साथ को सिर ऊंचा किया, सो हुई तुमें पेहेचान ८॥

आपोपा निसंक डारया, मेरे साथ सब सोभा जोग।
एक दूसरे सिरोमन[१], आगे कदम धरे इन लोक चोग[२] ॥९

साथ भाई लखमन, भाई भीम नागजी दोए।
चिंतामन दया-राम, ए चारों कहे सोए ॥१०

चंचल गंगा-राम जो, वणारसी जो सोम।
और भाई खेमकरण, ए दसों दाखिल बीच कोम ॥११

और भाई अनंत-राम, तुम सांचे सूरधीर।
लालबाई स्यामबाई रामराए, तुम रहत हो तीर ॥१२

तथा साथ समस्त सूरधीर, और जो लड़नेवाले इन समें।
और जो कोई आसा करे, ए कह्या तिन सें ॥१३

वे सब राज के चरन तले, रहियो आरोग तुम।
सुख समाधान आनंद मंगल, ए पाती लिखी हम ॥१४

द्रिस्ट तुम पर राज की, हूजिओ सदा सनकूल।
लिखी वे जे मजल[३], साथ सब का मूल ॥१५

इंद्रावती की वासना, लिखे प्रनाम कोटान-कोट।
अवधारिओ तिन को, लीजो धनी की ओट ॥१६

१—ह० एक दूजे से सिरोमन २—ह० इन भोग। ३—ह० लिख भेजी मजले।

इहां राज की दया सें, मिल मेला होएगा साथ[1] ।
तब सुख समाध आनंद[2], होए धनी पकड़े हाथ ॥१७

सुख समाध आनंद, पाती का चाही जे ।
तुमारी हकीकत सब, कही भाई बदले ॥१८

ए जो मूल सें कही, सो सब भई मालूम ।
बड़ा जुध किया दजालें, तैसा लिख्या रसूलें वास्ते तुंम॥१६

तैसा जुध भया[3], और भी होएगा इत ।
लिखे माफक होएगा, ए जो मुकदमा क्यामत ॥२०

और आखर को तुमारा, ऊपर होएगा बोल ।
रसूलें भी यों लिख्या, कुरान हदीसों कोल ॥२१

हकीकत एक समझिओ, अपन माथासों होए बेजार।
सिताबी काम क्यों न होत है, सब मिल क्यों न होत तैयार ॥

पर भाईजी एह काम, बोहोत बड़ो तुम जान ।
जो दीन जिन जमात लिखा है, सो तैसाही होए पेहेचान[4] ॥

तुम सूरधीरपना किआ, सो तुम जिन जानो किआ हम ।
ए हकें सोभा दई तुमकों, ए होत ना बिना हुकम ॥२४

एह काम बोहोत बड़ा हुआ, अजूं तुमारे मन।
तुमकों हलका लगत है, है बात बड़ी मोमिन ॥२५

१—ह० मिल भेला होयगा साथ । २—ह० तब सुख सावधन आनद । ३—ह० तैसा ही ए जुध भया । ४—ह० जो दिन जिन भात लिखा है, सो तेती होए पेहेचान ।

एते दिन इन जहांन में, बोहोत डरतें लेते नाम ।
हम को गरदन मारेंगे, नाम लेत इमाम ॥२६

अपन छिप छिप रल-झलते, फिरते थे सब ठौर ।
अब तुम जाहेर भए, लसकर महामदी करो जोर ॥२७

अब तुम इन जैसे होए के, पैठो इन अंदर ।
थाना मेहेदी का थाप्या, बैठे इनके मंदर ॥२८

जब जाहेर तुम करी, अपना जो लसकर ।
गांम गांम सेहेर सेहेर, थानें थानें जाहेर होवे इन पर ॥२९

अब तुमारो तेज, दिन दिन बढ़ता जाए ।
चढ़ती चढ़ती रोसनी, सब खलकों पोहोंचाए ॥३०

और दजाल की कला, दिन दिन पल-पल ।
घटती घटती घटहीं, उड़ जासी ख्वाब अकल ॥३१

द्रिस्ट दजाल की बाहेर, तुमको दई द्रिस्ट अंदर ।
तुम ऊपर उतरा असराफील, सब्दों इन ऊपर ॥३२

तुम जुध करते रहियो, तुमकों लोचन दिए अनंत ।
और दजाल को आंख एक, और आखर इनका अंत ॥३३

और एक समझिओ, तुम दजाल सों ।
जुध किआ भली भांत, सो सब हुकमे हुओ[1] ॥३४

१—ह० और ऐक यह समझियो, तुम दजाल सो जुध किया, भली भात सो, सो सब हुकमे हुआ ।

जाल .ी लड़ाई में, ज्यों पेहेली सूअर की चोट ।
: , लड़ाई इन सों, आखर आएगा धनी की ओट[१] ॥३५

सो चोट पेहेले बचाइए, पीछे कै घाव मारो पीठ पर।
मरोड़ न सके कांध कों, लड़ न सके कोई कर[२] ॥३६

तिस वास्ते यों कह्या, सब जानवर कांध में संध ।
एकै नली सूअर गले[३], हक तरफ है अंध ॥३७

एह बात तुम समझियो, बचाई सामी चोट ।
सो तो तुम बचाए लई, अब होए तुमारे कदमों लोट पोट ॥

दाभतल अरज का मजकूर, लिखा रसूल अलेहसलांम ।
तहाँ छाती लिखी सेर की, सींघ पहाड़ी बेल इन ठांम[४] ॥३९

और पीठ लिखी गीदड़ की, तुमे लड़ना तिनसें ।
ए सूरत सब ब्रह्मांड की, तिस वास्ते लिख्या तुमें ॥४०

तिस वास्ते तुम इन से, छले करना जुध ।
तिस वास्ते ऐसा लिख्या, बस ना होय बिना बुध॥४१

पेहेलें इनके रुचता, तुम बोलियो जुबांन ।
इनको होए इनें बस करो, रुचता करो बयांन ॥४२

इनके गुलाम होए के, तुम करीओ कांम[५] ।
ए थोड़ी इसारत लिखी, वास्ते दीन इसलांम ॥४३

१—ह० आखर धनी की ओट । २—ह0 लड़ न सके क्योए कर । ३—ह० इन के ऐकै नली गले मिने । ४—ह० इस ठाम । ५—ह० उत काम ।

पीछे तो तुम बुधवान हो, खिजमत कै भांत दिखाश्रो रंग।
वचन चोखा कहिश्रो, हम रहें तुमारे संग ॥४४

जो खेरत पातसाही[1], लेते हैं फकीर।
हम गुजरानें तिन पर, तुम हमारे मुरबी पीर[2] ॥४५

तिस वास्ते तुमारे कदंम, छोड़ें ना कब हम।
तुमकों कछू देने कहे, तब मांगीश्रो हवेली तुम ॥४६

खाने को पेट माफिक, श्रौर मुल्ला पढ़ावनें कलांम।
श्रौर कागद वेतल माल सें, होए रसूल श्रले हसलांम ॥४७

सो तुम इनसों मांगिश्रो, हमको दें तालीम।
हम को तरबीश्रत करो, जो कलाम श्ररस श्रजींम ॥४८

जो तुम को ना देवही, श्रपने जान-पनें।
पर तुम खिजमत ना छोड़िश्रो, कीजो चाह होए एते[3] ॥४६

इन का रुचता नाचिश्रो, रिझाश्रो भली भांत।
इतनी श्ररज कीजिश्रो, बात कहे एकांत ॥५०

कोई लड़क बुध सों, राखिश्रो न सोहोबत[4]।
भारी कर बुलाइयो, जब तुमें पूछे इत ॥५१

बुलाश्रो श्रपने लड़कों को, एह जवाब करो तुम।
जो सवाब तुम लेत हो, तो श्ररज सुनो तुम हम[5] ॥५२

१—ह० खेरात पातसाही। २—ह० तुम हमारे मुरबी मीर। ३—ह० ज्यो चाह होए इने। ४—ह० कोई लड़काई बुधसो, राखियो नही सोहोबत। ५—ह० तो श्ररज सुनावे हम।

जब कहे के कहो तुम, तब काजी हजरत ।
तिनसों तुम यों कहिओ, बात सुनो हमारी एकांत ।।५३

जो कोई आवे हमारा, ताए सुनावें सनंधें कुरान ।
ओ आकीन ल्यावें रसूल पर, जिनको होए पेहेचान ।।५४

जिन भांत हम कों, आकीन दिआ मेहेराज ।
हम रसूल देखाए कें, यों करें इसलाम का काज ।।५५

हमसों मुलाकात करे, खाए पिए हम में ।
साफ दिल होए रसूल पर, होए आकीदा इसलाम सें ।।५६

तब कलमा कहे मुख थे, मांगे नहीं तुम सें ।
आस तुमारी ना करे, न डर देखाओ उनें ।।५७

और जो तुम इन कों, खिलानें लगो गोस्त उनें ।
तो ढिग न आवे तुमारे, बड़ा दोस होवे उन सें ।।५८

एक ठौर लेकें, जागा होने दो तुम ।
जब उने होवे पेहेचान, तब फुरमाया करे सब कुंम ।।५९

तब रसूल उपर आकीन, ल्यावेंगे सब कोए ।
तब फुरमाया क्यों ना करें, आवे हुकम तले सब सोए ।।६०

हम पेहेलें मिलाप किआ, सेख सलेमान सें ।
तब भी हम एही कह्या, पर ओ बात ना सुने ।।६१

हम हाथ सेख सलेमान के, एही बात केहेलाई सुलतान ।
रखो हमारे भेष को, तब सब खलक सुने कान ॥६२

तो' हम बोहोत खलक को, समझावें कलाम ।
तब कलमा कहे रसूल का, ए सब खलक तमाम ॥६३

पीछे हलके हलके सब कोई, कइने फेरे फुरमान[1] ।
कबूल करेंगे तेहेकीक, जब इनको होए पेहेचान ॥६४

पर तब सेख सलेमान ने, सुनाई नहीं सुलतान ।
अब पातसाह को सुनाए के, जो आवे इनें ईमान ॥६५

पीछे तुम निकालोगे, हटे न कोई पीछे ।
सब दौड़ेंगे आपै सें, पैठने इसलाम में ॥६६

[सत्रहवाँ विश्राम सम्पूर्ण]

जो फुरमाया रसूल का, सिर चढ़ावते तब ।
हमारा साथ बोहोत है, आवे दौड़ के सब ॥६७

मेहेराजें तिन कों, रसूल पर दिया ईमान ।
पर हम पर कसाला पड़ा, ताथें हटे न बिन पेहेचान ॥६८

खुद कों पूछ के काजी, मनावे तुमारा मन ।
तुम जानो त्यों समझिओ[2], ज्यों दाखिल होवे इन ॥६९

१—ह० कोई ना फेरे फुमान । २—ह० तुम जानो त्यो समझाओ ।

तिन पर जोर जुलम ना करें, ना पकड़े कलमें कों ।
हदीसा कुरान देखे[१], होवे कलमा केहेनें मों ॥७०

कोई पकड़ काहूकी ना करे, ठौर ठौर समभावे सेर ।
तिनों को[२] कुरान से, सब करें हम जेर ॥७१

ठौर ल्यावे सब मन कों, तब आवे मेहेराज ।
तब आवे वह फकीर, जहां खड़े तुम आज ॥७२

ए भी वही इसलाम है, हम खड़े उन पर सब ।
तुम चाहत दीन मेहेमद का, बड़ी करत तलब ॥७३

चाहिए कूबत हक सुभान की, फकीर करत जो काम ।
सो तो सब हिकमत सें, रास होवे इस ठाम ॥७४

जोर सें कीजे मुसलमान, तो साफ न होए दिल उन ।
राजी न होवे इन पर, तो क्यों पावे कदम मोमिन ॥७५

तिसवास्ते एती तुम, जब केहेके बुलाओ लड़के ।
तब समभाओ तिन कों, पीछे दिल माफक कहिओ ए[३] ॥७६

और बोहोत केहे कें, मता न जानो तुम ।
थोड़ा थोड़ा कहिओ, फेर लिख कर भेजें हम ॥७७

पर एक बात बड़ी हुई, सो करे तुमारा विस्वास ।
अपनी भी भेष राख के, काम करने की थी आस ॥७८

१—ह० हदीसा देखे होवे । २—ह० तिनको । ३—ह० पीछें बुध माफक करियो ए ।

और हिन्दुओं के भेष सें, होए नहीं ए काम।
इन भेष सों मजलस, परतीत न करे इसलाम ॥७९

ना इनें आवे परतीत, ना मजलस बैठे।
सो तो होने का नहीं, ना इनें विस्वास जेठे ॥८०

तिसवास्तें तुम इन के, होए के सेवक।
एक मित्रपनों करो इनों सों, तब ए पेहेचानेंगे हक ॥८१

तब होगे मुरबी इन के, सिध होवे सब काम।
पर ए आस्ते आस्ते होवहीं, दाखिल होवे दीन इसलाम[1]॥८२

जब ए एती बात कों, करें कबूल मोहों सें।
तब बुलाइयो लड़के, भेले रहो इन में[2] ॥८३

तुम हिन्दुओं के भेष सें, जिन करो सरम।
पेहेले तुम सिर मान्या सरम क्या, तुम जानत एह मरम ॥८४

जब कोई तुमकों मिले, तो ए चोखा दीजो जवाब[3]।
देखो सब सास्त्रों कों, क्यों लिखा इन के बाब ॥८५

तीन कांड वेद वेदान्त के, वल्लभा चारज के मत।
संकराचारज क्या कह्या, क्या कह्या गीता में इत ॥८६

अदित पुरान भागवत में, जैसा लिखा कलाम।
तिन ऊपर तुम चलो, बीच दीन इसलाम ॥८७

१—ह० दाखल इत इस्लाम। २—ह० भेले रहियो इनमे। ३—ह० ताए चोखा दीजो जवाब।

तौलो मत सबन की, और मेहेमद अलेहसलाम ।
ज्यादा कम है किन की, सब मिल बैठो इन ठाम ॥८८

नवी नारायन की सनंध, मारिओ मोंहों पर ।
तब होवेंगे सरमिंदे, तुम करो चरचा यों कर ॥८९

ए तो सब में रसमें, लड़ते हैं अहंकार ।
जब कुरान[1] के मायने, जाहेर खोले परवरदिगार ॥९०

तब सब सरमिंदे होएंगे, रहे ना काहू गुमान ।
जो बसबसा छाती पर, करत[2] है सैतान ॥९१

पकड़ बैठे अंधेर कों, और बढ़ता है गुमान ।
सो सबे गल जाएंगे, तब[3] मरेगा सैतान ॥९२

तब सिर नीचा करके, आवेंगे भेड़ों न्यात ।
अब सब जमा होत है, पर इनों अब उलटी ग्रही बात ॥९३

दरवाजा इसलाम का, कुंजी गंज खुदाए ।
सो हकें मेहेर कर, दई तुम कों पोहोंचाए ॥९४

तुम सिर ऊंचा देखिओ, जिन नीचा देखो तुम ।
जो तुम में एक दोए भेष बदले[4], तो दावा लेते कुंम ॥९५

गोविंद भेड़ा तुम जानत, ताको बल न चले लगार ।
एक पाँच बरस होए बालक[5], ताए न सके मार ॥९६

१—ह० फुरमान । २—ह० करता । ३—ह० और । ४—ह० जो तुम पर एक दोष ए भेष बदले । ५—ह० एक पाच ब्रस को बालक ।

तुम तो साथ सिरोमन, एक दूजे से सिरदार[1]।
गोविंद भेड़ा तुमें क्या करे, हकें पेहेलें किए खबरदार ॥९७

अब तुम तो जने बार हो, और भागें तुम सें।
सो अबहीं आन मिलत हैं, सब एक होए तुम में ॥९८

अब तो तुम बार हो, तुम मिलसी बारह हजार।
और तावे तुमारे होएंगे, तुम ही हो सिरदार ॥९९

तुम अपने सुकन कों, अब जाहेर करो तुम।
तामें तुमारा आवेस, इसक जाहेर होए बीच कुंम ॥१००

गाम गाम देस देस, हिन्दू मुसलमान।
कदम तुमारे वंदहीं, करके पेहेचान ॥१०१

तुम तुमारी नजर कों, जिन करो तुम और।
जो कदी तुमें दिल में, आवे नहीं ए ठौर ॥१०२

तो हम और ठौर जाए के, मारें मोरचा फेर।
लड़ाई करें दजाल सों, फेर आवें दूसरी बेर ॥१०३

एह विचार तो करें, जो तुम उलटे पड़े होए[2]।
जेते कोई मुसलमान, सब चरन वंदेंगे सोए ॥१०४

तुम कों सब कोई धनं धनं, करेगा संसार।
जो बानी इसक देखेंगे, एह तरफ परवरदिगार ॥१०५

१—ह० एक दूजे थे सिरदार। २—ह० जो तुमे उलटे होए।

जो जोस तुमारा देखहीं, तो मारे बिना मरें ।
जोलों तुमारी बात कों, सुलतान चित से न करे[1] ॥१०६

सो भी इसवास्तें, सुलतान ना दिश्रा कांन ।
एक तो नजर उपर की, दूजी बातिन की ना पेहेचांन ॥१०७

और इन के दिल में, हुआ है चौकस ।
जो हम पर दगा करने, आए मेटने मेरा जस ॥१०८

और तीसरा एह, जो जाहेर होत इमाम ।
तब सरा तोरा दोऊ उठे, ताकों न पकड़े काम ॥१०९

और बाहेर के अरथ में, मेहेदी ईसा दजाल ।
पकड़ेंगे वजूद कों, मिट जासी सब हाल ॥११०

वे लड़ेंगे तरवार सों, बड़ा जुध होए दारुन ।
सत्तर हजार काफरों कों, मारेंगे मोमिन ॥१११

लोहू सब वैराट में, होए जाएगा तब ।
हाथीअन के खड़ीआन[2], एह जुध होवे जब ॥११२

न दाना पानी रहेगा, ना कछू रहेगा घास ।
तिस वास्ते इनकों अरथ उपलो, जानत नाहीं खास ॥११३

और क्यामत की, बड़ी लिखी देहेसत[3] ।
सो करामात मेरे सरूप पर, मोहें देखे आदमी इत ॥११४

१—ह० सुलतान चित सो न धरे । २—ह० हाथियो के खरयान । ३—ह० बड़ी जानी देहसत ।

जैसे और आदमी, मोहे देखे तिन माफक।
तो क्यों कर आवे ईमान, भागे क्यों कर सक ॥११५

जब तुमारे सुकन, अब फेर करे पुकार।
तुम कों इसही वास्ते, किए बाहेर खबरदार ॥११६

अब तुम छिपे न रहो, बड़े उमराह होए आधीन।
सो तुमसों तालीम लेंगे, जिन चिंता करो बीच दीन ॥११७

और कहूं नजर जिन करो, ना बैठक ए बंध।
तुमारी बात छिपी ना रहे, बड़े ठौर मिल हुए अंध ॥११८

जैसे काम पर गए हो, तैसाही देखाओ बल[1]।
ना तो सक आवेगा इनको, वही राखिओ कल ॥११९

मैं तुमारे सिर पर, खड़ा हों एक पाए।
और दिस हिंदूअन की, हुकमे रखों बनाए[2] ॥१२०

तुमारे बल से, उत मेरो जोरा होए।
और मेरे बल सें, ए तुम कों माने सोए ॥१२१

सब भला होएगा, तुम जिन हो दलगीर।
जो मोरचा तुम लिया, सो हकें दिया कर धीर ॥१२२

तुम जरा मन में, दग-दगा ल्याओ जिन।
ए लड़ाई है सो बचनों की, करनी सो ले आकीन ॥१२३

१—ह० सो तेंसाई देखाइयो बल। २—ह० नीके राखियो बनाए।

अब वस्त प्रकासहीं, अपने ही बल सें।
अब एह बात को, ना होए सिताबी में ॥१२४

माया छल रूप है, तिन छलही सें जिताए।
आगे भगवान को, बल बोहोत केहेलाए ॥१२५

तो भी असुरन सों, जीते हैं छल सों।
हरजी ब्यास सों जुध किआ, सो तुम जानत हो छल मों ॥१२६

एक वचन हरजी कहे, मैं दस बेर लागों चरन।
जब लाग आयो, तब उठाए किआ मरन ॥१२७

तब फेर तिन ने, पकड़े मेरे कदंम।
तिसवास्ते तुम बार हो, सब सिरे सौंपी आतंम ॥१२८

जैसा बाजा बाजे, तैसाही कीजो निरत।
पर बड़ी एह बात है, हिल मिल एक रस होना इत ॥१२९

पीछे तुमकों सब, आपहीं खुल जाए।
आस्ते आस्ते होएगा, आपहीं हक बताए ॥१३०

पेहेले एह सुचिता कर, सुनने को बैठे जब।
तब उनके हिरदे[1], वचन लागे तब ॥१३१

तब उने दया उपजे, तब वह घायल होए।
तब चित दे जो न सुने[2], तो और तुम पै अनेक आवे सोए॥

१—ह० सोऊ उनके ह्रिरदे। २—ह० तब चित दे इनो न सुने।

तिनको तुम वचन कहो, तब मिट जाय अंतराए ।
ताको होए प्रकास, सो आपे जगाने जाए[1] ॥१३३

तुम आकले होए ना उरझिओ, सब काम दुरस्तताईका होए[2]
आकले काम सैतान के, ठंडे हकसे लेए[3] ॥१३४

भाई बदल कांन्हजी, भेजे तुमारे पास ।
तुम परियाण पकाकीजो, कांनजी साथ राखिओखास[4] ॥१३५

जो होए तुमारी आग्यां, तो हम पड़े बाहेर ।
जो सकडाई में राखोगे, तो हम रहें जाहेर ॥१३६

पर हम उरझे रहेंगे, उपराला तुमें न सके कर ।
अपन ना पाल सकें, तब काम होवे क्यों कर ॥१३७

ज्यों तुम एह मोरचा, सिर ले के ढाया[5]।
सखत दिल करके, मैंने पसार किया[6] ॥१३८

जैसे चित तुमारे, मेहेजद गए थे तब ।
फेर उसी ही चित से, सरीखी करो जब[7] ॥१३९

हम को राजी होए के, रजा देओ जब ।
तो मैं भी साथ दस पनरह, लेके निकलों तब ॥१४०

और मोरचे की तलास, मैं भेजों तुमारे पास ।
या भेजों खुद पे, वे आए करें बात ॥१४१

१—ह० सो आपही जग जाए । २—ह० सब काम दुरस्त से होए । ३—ह० ठन्डे हक से होवे सोए । ४—ह० पास । ५—ह० सिर ले चढाया । ६—ह० तुमने पसारा किया । ७—ह० सरीखी करो अब ।

और फकीर माहमद, और उनके आवे कलांम ।
पीछे जैसी तुम लिखो, तिस ऊपर चले हमारा कांम[1] ॥१४२

जो मैं ठौर वहां करों, तो तुमारा उपराला होए ।
तुमको केहेने कों होए, तुमकों माडवे चाहते सोए[2] ॥१४३

जिस वास्तें हुई इनायत, सो ल्यावते थे तुम पें ।
तब तुम पीछे ही फिरी[3], इसलाम पर खड़े ए ॥१४४

और तुम भी इसलांम पर, ए[4] तुम करो क्या ।
जो दिन रसूलें फुरमाया, सो ढील बीच देखया ॥१४५

तो इनों ने अब, पीठ दई तुमें ।
अब होए रसूल का हुकम, हम जाएं पास उनें ॥१४६

भी हक सुभानें जिनको, सोभा देने वाले हैं और ।
हम को वहां खेंच के, पोहोंचावे उनके ठौर ॥१४७

इन भांत की तुम भी, जनम का चाह किआ ।
ऐसा जांन हम तुम पै, ए मता देने को दिल लिया ॥१४८

सांचा सोई होवहीं, जो हक के दिल में होए ।
जो हमारा सोर सरावा सुने, तब आंख इनकी खुली सोए ॥

और तुम को केहेने को, होवे इसकी ठौर ।
तिस वास्ते विचार के, सिताब पत्री लिखिओ और ॥१५०

१—ह० तिन ऊपर चले हमारा काम । २—ह० तुमको मिलने चाहे सोए । ३—ह० पर तुम पीछे फिरे । ४—ह० एपे ।

आज इस ठौर में, हमारा फिरने का नहीं दिन ।
पर क्या करें हक को, एही गमत है मन ॥१५१

तो हमारा क्या चलत है, भया तेहेकीक ए ।
मेहेमत कहे सुनो मोमिनो, और कहों हकीकत ए ॥१५२

॥ प्रकरण ॥४५॥ चौपाई ॥२३८४॥

आगे छोटी पत्री वोही पाती में पुरजी

समाचार एक सुनिओ[१], हम सूरत और सीदपुर ।
और उदेपुर मेडते, लिखे आए हम ऊपर ॥१

साथ भाई बदल के, भेज कर कहे वचन[२]।
पाती भी लिखी इन विध, करत हैं रोसन ॥२

हम सकुमार बाई की, बात का किया विचार ।
तो साहेबी बोहोत बड़ी, घना घुन नाहीं सुमार ॥३

धुर लगें मजलस, कर न सके कोए ।
और अपनी बात को, क्यों समझें संदेसे सोए ॥४

जो संदेसा देय के, पीछे फिरिए घर ।
जो लों घूटन घूंट सों बांध के, सुनावे इनों पर[३]॥५

एह बात तो तब होए, तिस वास्ते लिखा तुम ।
ज्यों ब्राह्मन गायत्री सूद्र के, कहे सुनावें नाहीं हंम ॥६

१—ह० ए समाचार सुनियो । २—ह० लिख कर कहे वचन । ३—ह० सुनावे ना इन पर ।

त्यों कुरान का मजकूर, हिंदुओं को न सुनावे कांन ।
न उनकी बात आप सुने, तो क्यों कर होए पेहेचांन ॥७

तिस्वास्ते आपन कों, जात भेष उपले ।
सब गोविंद भेड़े की तुम को, पेहेचान जात भेष के ॥८

सो तो सास्त्र वेदांत, साध पंथ पेडों में ।
सब कोई उड़ावे इनकों, सब है चरचा तुम पै[1] ॥९

कुरान देखे पीछे, बात महंमद अले हसलांम ।
सब करी हमारे घर की, है हमारा दीन इसलांम[2] ॥१०

तो अब हम जात भेष का, क्यों ना मांने सिर ।
सकुच करों किस्वास्ते, ए भेष बदला यों कर ॥११

ऐसा जांन हम बारा जनें, पैठे बीच दरबार ।
सो हम कों सकुमार ने, कह्या मजलसे यों कर ॥१२

धंन धंन कहे सब हमकों, पीछें उनो के मन में ।
हमारा भास्या ओगुन, क्यों हिंदू मुसलमांन ऐसे ॥१३

किनके भेजे आए हैं, कछू दगा है इन मन ।
ऐसा जांन के साथ कों, किए कोटवाल हवाले मोमिन ॥१४

काजीए कहा कोटवाल को, जो सांच झूठ देखो तुम ।
कोन है कहां से आए, तुम चरचा कहो हम ॥१५

१—ह० इनमें । २—ह० है हमेसा दीन इसलाम ।

वो तो बातें हम सों करी, तिस पीछें कह्या सुलतांन ।
जो ए झूठे नहीं दगा नहीं, है मोमिन खास ईमांन ॥

तब चौकी बेठाई थी, ताकों दिए उठाए ।
हवेली का हुकम हुआ, इनों को देओ बैठाए[1] ॥१७

विकार इनके मनमें, आया था सो गया ।
अब हम रहे हैं, काम सुचिती का भया ॥१८

जिन सनंधें समझेगा, त्यों समझावें हम ।
अब हमारे काजी सों, मिलाप कर दिया तुम ॥१९

कोटवाल से भी भया है, कागद सब सुलतांने ।
मंगाए अपने पास, जमा किए अपने ॥२०

अब ए उचार करेगा, तब जेती बात जाहेर ।
सो समझावने खलक में, पड़ेगी बाहेर ॥२१

और बात की हम सों, जब करे जोर तलब[2] ।
तब हम तुमको लिखें, तुम एकांत बैठो अब ॥२२

अब तो हम जाहेर, लसकर है इमाम ।
थाना थिर कर बैठे, एते दिन छाना करते काम ॥२३

सुलतान की जांन में, होए बैठे जाहेर ।
अब तो हमको लखे, लख किये जाहेर ॥२४

१—ह० इनो दिऐ बैठाए । २—ह० जब करेगे तलब ।

तिसवास्ते हम भी, एकी तरफ होएंगे।
तुमको डिल्ली के परवांने, खप होए तो भेजें ॥२५

तब लों ए भी चरचा को[1], लगेगा बेसक।
ऐसे कागद और दिलासा, लिख भेजे हुकम हक ॥२६

ज्यों कर उन साथ को, ना उपजे विकार।
गम दिल में ना होवहीं, रहे सनमुख परवरदिगार ॥२७

तुम भी पाती इन को, लिख भेजो निसंक कर।
तुम सब साथ के, मोहोवड़ हुए यों कर[2] ॥२८

और बड़े मोहोरचे मोहोवड़ के, आए लगे तुम।
तिस वास्ते सब साथ को, पाउं भरे हक हुकंम ॥२९

अपना आप निसंक, तुम डारे सब साथ।
तिसवास्ते लाहा लोगे तुमे, पर हकें पकड़े हाथ ॥३०

दजाल के घाउ तुमको, मोह सिर पर लगे।
आपन जुध केहेते हते, सो तुम जुध किया सोए[3] ॥३१

औरों को कहेंने का, पाती का हुआ सोए[4]।
तुमारे केहेनें का, एह करने का होए ॥३२

सो तो तुम किया, अब फोहोम राखियो तुम[5]।
इन मोरचे की खबर, एह लिखते हैं हम ॥३३

१—ह० जब लो इन चरचा का। २—ह० सामे हुए यो कर। ३—ह० आपन जुध करते हते, सो तुम जुध किए ए। ४—ह औरो को केहेनें पातीका, ए जो अब हुआ जोए। ५—ह० अब खबर राखियो तुम।

तुम भेला जो कोई मिले, तिनकी कीजो तलास ।
जेती वस्त तुम पास हैं, जैसे धनी की है आस ॥३४

जैसे तुम आप हो, तैसे फुरमाया धाम ।
तैसे भारी होइयो[1], तैसे कीजो काम ॥३५

तैसे कलांम मोहोंसे, भरो न हलके पाए[2]।
एते दिन तुम मिनें, आकार पकड़े बैठाए ॥३६

तिस वास्ते मेरा, चला जात मुलाज,
अब मरजादा चलियो, राखियो मेरी लाज ॥३७

अब तुम एक दूजे सें, भाई होइओ तुम[3]।
अपने गुन बस कीजिओ, बड़े मोहोरे को लगे हम ॥३८

तिस वास्ते नया जो आवेगा, तुमारी वानी चाल देखे ।
तिस्वास्ते भारी होइए, चाल भारी देखाइए ॥३९

हो तुम जान सिरोमन, हो साथ समस्त[4]।
तुम बुधवान वचिखन इत, तुम पें बड़ी है वस्त ॥४०

तुम बड़ी बुध के खावंद, क्या बोहोत लिखिए तुम ।
अंजान कों लिखियत हैं, इस वास्ते बेर बेर लिखे हम ॥४१

चार दिन आपन को, है पत्री से मिलाप ।
आकर मिलाप ना होवहीं, तिस्वास्ते जानो आप ॥४२

१—ह० हूजियो । २—ह० जैसा कलामो मे है, तेसा ही भरियो पाए। ३—ह० भारी हूजियो तुम । ४—ह० जो तुम साथ समस्त ।

तिस्वास्ते दोई सुकन, चांप के लिखे अल्ला कलाम ।
हम चार दिन जाना पड़े, वास्ते इसही काम ॥४३

सोभी कारज कारन, जांन परत आगे ।
ना तो जाना हमारा ना होए, सो जानो तुम एह ॥४४

तुम पाती लिखिओ, सब साथ उपर ।
और नौतन पुरी, तथा खंभाली पर ॥४५

तथा पोर बंदर पर, तथा मड़ई ठठे ।
तथा सूरत खंभात, तथा अमदाबाद के ॥४६

और भरोच सीदपुर, तथा उदेपुर मेडते ।
सब साथ ऊपर पत्री, लिखते रहिओ ए ॥४७

[अठारहवां विश्राम सम्पूर्ण]

बोहोत खुसाल होए के, वस्त का दिखाड़ो बोज ।[1]
महमद ईसा इमांम, बड़ा बोज दिखाड़ो खोज[2] ॥४८

सब को बस्त देखाय के, खंड़नी कर लिखिओ तुम ।
गल-गलतें रोते जिन लिखो, कहो चोखा लेवे हम ॥४९

जो कोई तुमको, उत देवे दुख ।
तिन का सिर हम भांन के, तुमको[3] देवें सुख ॥५०

१—ह० वस्त का देखाइयो बोझ । २—ह० बडा बोझ देखाइयो खोज । ३—ह० उत ।

अथवा कोई साथ में, उलटा होए देवे कसोट ।
सो तुम हमको लिखियो, ताए बांध मगाई करे चोट ॥५१

हम जो भेख बदल के, बैठे बीच दरबार ।
सो उलटो को सीधा करने, करे तरफ परवरदिगार ॥५२

मुसलमान से हम तो डरें, जो श्री देवचन्द परखी ना होए ।
खोजी रही वासना परखी, सब आप जानत हैं सोए ॥५३

जात भेष जो तुम रखी, ताको श्री देवचन्द जी मान्या सिर ।
सो ना सकते जाहेर कर, अब समझे फिरके बहत्तर ॥५४

सो हम राजकी आग्यां से, जाहेर किए चौदे तबक ।
विकार सारी विस्व का, सब भान दिए हक[1] ॥५५

ऐसी पाती लिखके, उठाए खड़े करो ।
चार वचन जिन भांत के, जैसे जहां कहें दिल धरो[2] ॥५६

तैसी पाती तिन पर, लिख के भेजो तुम ।
जिनको जैसी घटे, वैसी तिनको पाती लिखो सब कुंम[3] ॥५७

एक बिहारी जी को, और नांग जी अखई ।
नौतन पुरी भेजिए, जवाब आवत क्योंकर सही ॥५८

देखें बिहारीजी क्या लिखत, वह जवाब लो सिताब ।
ए पत्रिआ लिखके, दुरस्त कीजो अब किताब ॥५९

१—ह० मेट दई सब सक । २—ह० तैसे तहा धरो । ३—ह० तैसे ही तिन ऊपर, लिख भेजो तुम । जिनको जैसा घटता, ताको पाती लिखो सब कुम ।

अब तुम तो केसरी सिंघ हो, ऊपर पेहेनी पाखर ।
काहू मुलाहिजो जिन करो, कासद को भेजो आखर ॥६०

कासद तहां भेजिओ, ओ दिल की लेओ खबर ।
कोई तुमसे आप छिपावहीं, सो मालूम होवे सब[१] पर ॥६१

जो जैसा तैसी तिनों, लिखो तुम कलाम ।
ज्यों आगे अगिन के, मोम पिघलत उस ठाम[२] ॥६२

और दया राम के भाइयों ने, आगे आए दरबार ।
बातें इन भांत करी, ताए हम रुपैया देवे चार हजार ॥६३

जो इनको मार डारहीं, ऐसी बात सुनाई कान ।
हमारी सरम जाएगी, जो होएगा मुसलमान ॥६४

तिसवास्तें यहां इनसों, गोविंद भेड़े की यह निसबत ।
मार डारत भाई को, पैसा दे के इत ॥६५

वास्ते अपनी सरम की, सब में एही स्वारथ ।
गोविंद भेड़े इन भांत को, ए नजर में राखियो अरथ ॥६६

ए सोई एह स्वारथी[३], गोविंद भेडा चौदे तबक ।
एह वचन द्रिस्टांत वास्तें, लिखा बेसक ॥६७

तुम जांन सिरोमन हो, भूलोगे ना तुम ।
सब बात का बोजा, उठाय के लीजो कुंम ॥६८

१– ह० इन । २—ह० तमाम । ३—ह० ऐसो होए स्वारथी ।

तुम साथ मिनें सिरदार, छाती काढ़ के कहे सुकन ।
वेद बंध की मरजाद, ताको सिर भांना मोमिन ॥६९

लोक मरजादा तोड़ के, मोरचा ढाए[1] मिनें पैठे ।
तिन साथ मिनें से[2], रहियो एक जागा के ॥७०

तुम जुदे इनसे जिन पड़ो, ना तो चेहरा[3] होए तुमें ।
पीछे कहोगे के ना कह्या, तुम समझो इनसें ॥७१

भी जब लाग देखोंगा, तब मैं लेऊँ बुलाए ।
या बुलाओ मुझको, बैठो साथ मिलाए ॥७२

बिना मसल्हत, जिन करो कोई कांम ।
सब परियानी कीजियो, देख अपना धांम ॥७३

हम तुमारी पाती का, करेंगे विचार ।
जब तुम जवाब लिखोगे, तब हम चले बाहार ॥७४

हंस रम हरख करके[4], बांधोगे कंमर ।
तुम लीजो बोझ उठाए के, रहो दिल द्रढ़ कर ॥७५

जो कदी आकार से, मैं जुदा रहों दो दिन ।
अंतरगत द्रस्टांत, हुआ इलहाम रोसन ॥७६

तिस्वास्तें भीम भाई की, खबर पूछिओ उदेपुर ।
अजू भी ना समझ्या, तिनका कहा करों क्यों कर ॥७७

१—ह० ढाहाई । २—ह0 मे से । ३—ह० चेरा । ४—ह० हँस खेल हरख के ।

तिनसे क्या समझेंगे, नीद अंतर है जोर।
ए राज के हुकमे भई, ताए कोए न सके मरोर[1] ॥७८

तिस्वाते एह भोम, है हांसी का ठौर।
कोई न होवे जाग्रत, बिना हुकम कोई और ॥७९

अनेक भांत के मोहोजल, नए नए उठत तरंग।
इनमें जो सावचेत, कोई कहे धनी का अंग ॥८०

मेरे तांई तो इन समें, लिया है मोल तुम।
तिसवास्ते तुमारी आतम सें, मेरी होए न जुदी आतम ॥

एह नेचे सत सबे जांनियो[2], एह मुतफे कुंन अलेह।
आपोपा जरूर संभारना, बोझ आया सिर पर एह ॥

यहां की हकीकत, भाई सेख बदल कहेंगे।
ताको सही जांनियो, सुनियों कानों से ॥८३

सेख बदल आए पीछें, हमकों बड़ो जो भयो सुख।
हम तुमकों मिलेंगे, तब हंस के भांनो दुख ॥८४

हमको बड़ो हरष है, सब सुख में रहियो कुंम।
दिन जागनी के आए नजीक, स्याबास लालबाई तुम ॥८५

तुम किया सूर धीर-पना, आगे धरे कदंम।
अब सेखबदल आए सुखे, पावें तुमारी आतंम ॥८६

१—ह० ताए क्योऐ न सके मरोर। २—ह० ऐ नेस्चे सत जानियो। ३—ह० तुम सूरवीरपना किया।

सुख समाध आनंद की, रहो लिखते पाती ।
सब साथ को परनाम, लाल बाई को केहती ॥८७

मेहेमत कहे मोमिनो, ए पाती की हकीकत ।
अब मुकद्मा कहों, फरदा रोज कयामत ॥८८

॥ प्रकरण ॥४६॥ चौपाई ॥२४७२॥

॥अब डिल्ली छोड़ उदेपुर आए तहाँ की बीतक॥

कामां पहाड़ी सें होए के, आए बीच आबेर (आमेर) ।
दिन एक दोए रहि के, फेर आए सांगानेर[१] ॥१

थे मकुंददास उदेपुर, उहां से आए सांगानेर ।
तहाँ चरचा करने लगे, सुना सोर लड़ाई का फेर ॥२

तब उहां सें चले, आए पोहोंचे आबेर ।
उहां जी साहेब की खबर सुनी, फेर आए सांगानेर ॥३

तहाँ राह बीच में, सेख बदल मिले ।
तिन सों मिल के चले, आए पड़े मेवासों के[२] ॥४

तिनों ताकयों मांरने[३], थे पैसे बीच कंमर ।
डर लगा बोहोतक, भागे उत थें फेर कर ॥५

तहाँ सें आए पुर में, तहाँ एक दुकान पर ।
जी साहेब बैठे देखे, एक खाट ऊपर ॥६

१—ह० पीछे आए सागानेर । २—ह० तिन सो मिल चल के, आए पेड़े मवासियो के । ३—ह० तिनो ताके मारने ।

छबील दास आगे खड़ा, और मलूकचंद नाम ।
दोऊ दुखी पड़े उते, छुदा जोर थी उस ठांम[1] ॥७

घर में कछू ना पाइए, जो मंगावें बाजार सें ।
पेहेचाने सेख बदल ने, कदमों लागे इन समें ॥८

मकुंद दास आए मिल्या, थे वसनी रुपैए सौ चार ।
मोल मगाए बाजार सें, चल्या काहार वेहेवार ॥९

थे पैसे सेख की गिरो में, रुपैया सौ तीन ।
उन आए आगे रखे, लगे बातां करने आकींन ॥१०

किया परियान रात को, मकुंद दास मिल के ।
मकुंद दास के मन में, खेद हुआ दिल में ॥११

जी साहेब जी के दिल की, लगे बातां पूछनें ।
देखो कैसी हिम्मत करत है[2], हुआ कसाला ऊपर मोमिन ॥१२

तब जी साहेब कह्या, अब न छोड़ों इनें ।
और इलाज कर मार हों, जड़ उखेड़ों बुनियाद पनें[3] ॥१३

जोर देखी हिम्मत, जी साहेबजी के मन में ।
अब कहां कों जाएंगे, विचार कहो हम सें ॥१४

इत जरगा पंथ है[4], तहां आदमी मिले लाख ।
धनी बाबे का पंथ है, ए अपनी पूरें साख ॥१५

१—ह० छुद्या जोर थी इसठाम । २—ह० देखे कैसी मसलत करत है । ३—ह० जड उखांडो बुनियाद पने । ४—ह० इत जरगा पथी बोहोत हैं ।

ए बात सुन के, हुआ मकुंद दास पर हुकंम ।
तूं देख बातें करके, उत बुलाओ हम ॥१६

मकुंद दास मलूकचंद, चले उहां सें जब ।
भील दौड़े तिन पर, भाग के छूटे तब ॥१७

मकुंद दास विचार कर के, आए उदेपुर ।
गया लाधू मसानी के इहां, करी जी साहेब जी की फिकर ॥१८

उनसों जाए बातां करी, जी साहेब के मिलाप ।
कबूल करी उनने[1], बुलाए ल्याओ तुम आप ॥१६

इन समें वनवाली[2], आए खंभात सें ।
संग रामबाई गोदावरी, आई पोहोंची इन समें ॥२०

मुलाकात करी उनों ने, तन मन दिया धन ।
मेला मोमिनों का हो चल्या, खुसाल हुआ मन ॥२१

बाईजी और साथ, ए रहे आगरे में ।
मकुंद दास आए पोहोंचया, पाई खबर उन सें ॥२२

लाधू मसानी आइया, बीच दीन इसलाम ।
तिन ने बुलाए तुमे[3], दई जागा रेहेने की ठाम ॥२३

तब बाई जी को बुलाए, आप चले उदेपुर ।
साथ सब संग चले, पीछे दजाले किया सोर ॥२४

१—ह० उने । २—ह० बनवाली दास । ३—ह० तिनने बुलाए तब

लाधू धाए भाई के घरों, उतरे उनके घर में ।
आदर भाव उन किआ, हुई सेवा भली उनसें ॥२५

फेर लाधूमसानी के यहां, जाए मकुंददास दई खबर ।
उनसो मुलाकात भई, उत दिल पर भई असर ॥२६

तब उन हवेली दई, उतरे तिन ठौर ।
तहां चरचा होने लगी, रही बात न हक बिन और ॥२७

नया मंडान होए चल्या, साथ आवत बीच इसलांम ।
हुई वेद कतेब की चरचा, इत पाया बिसराम ॥२८

इत चरचा होने लगी, जहाँ तहाँ भई खबर ।
सब दीदार को आवत, चरचा सुनने पर ॥२९

अपने साथ के लोक जो, ताके चित भए सनमुख ।
दीदार जी साहेब जी के, बड़ा जो पायो सुख ॥३०

दोए रजपूत हवेली में, तिन उत बैठे सुनी बात ।
तिनों कों तारतंम की, कछुक भई पेहेचांन ॥३१

इन समें नूर महंमद सों, होय गई मुलाकात ।
गला चरचा सुन के, नीके सुनी बात ॥३२

इत एक सैयद बरात से, सुनी चरचा दीन इसलांम ।
ईमान ल्याया इन समें, देख मोमिनों कांम ॥३३

और भीखू सोनी आइया, और राधा रुकमिन।
और सुन्दर सोना, ए आई कदमों मोमिन ॥३४

एह मयाराम वासदेव, और सुखदेव देरासरी।
ए आए साथ में, राज की मेहेर उतरी ॥३५

इत जगीसा अमोला, और आया केतेक साथ।
चरचा उच्छव करत हैं, जाके धनीए पकड़े हाथ ॥३६

इहां मास चार भए, जो साथ लड़े संग सुलतान।
तिनों ने अरज करी, लिखी एह पेहेचान ॥३७

ए सरियत सों हम लड़े, देख आए नैनों निदान।
बिना सोटे इन पर, ए क्यों न ल्यावे ईमान ॥३८

ए नीके हम देखया, इनके नहीं अंकूर[1]।
तो पैगांम को फेरिया, सुनया न हक मजकूर[2] ॥३९

अब हम राह देखत हैं, जो हमको आवे हुकम।
तिन माफक हम करें, जैसा लिख भेजो तुम ॥४०

तब पाती लिखी योंकर, उठके आइयो तुम।
इन पर सोटा होएगा, कादर के हुकम ॥४१

पाती सेख बदल ल्याया, डिल्ली बीच मोमिन।
सुनत सुख पाइया, दिल हुआ रोसन ॥४२

१—ह० इनके नहीं ईमान। २—सुनया न हुकम सुभान।

[बारह जने सत्याग्रहियों का दिल्ली से आना]

जाए सेख इसलांम पें, हमको राजा देओ तुम ।
हम जावेंगे अपने ठौर, हमको करो हुकम ॥४३

तब काजी ने कह्या, मैं रजा कराऊं सुलतान ।
तुम परसो आइयो, आंम खास सुनाऊं कांन ॥४४

तब दिन एक बीच डार के, लेके चला हजूर ।
सुलतान सामे ठाड़े किए, आप हजूर किया मजकूर॥

ए बिदा होत हैं सबे, जात अपने मके को[1] ।
ए वही लोक हैं, जिन लड़ाई करी सरेमो ॥४६

तब काजी ने कह्या, एही हैं मोमिन उस दिन[2] ।
तुम सों जिन मजकूर किया, जो ल्याऐ ईमान मोमिन ॥४७

देख्या सामें सुलतान ने, तीन बेर फेर फेर ।
सिर नमाय देखया, दे खुदा इनों को खेर ॥४८

एक सो रुपैया खरच को, देने का किया हुकम ।
सिताबी ले दौड़या, लेओ मोमिनों तुम ॥४६

जब रजा दई सुलतांन ने, बोहोत राजी हुए मोमिन ।
बिदा होए के चले, रहे एक दूसरे दिन ॥५०

आए पोहोंचे उदयपुर, मुलाकात करी श्रीराज ।
सेख बदल सामल भए, भए इसलांम के काज ॥५१

१—ह० जात अपनें ठोर को । २—ह० एही है मोमिन उसी दिन ।

एक लखमन भीम भाई, उत्तम दास खिमाई[1] ।
सांमलदास गरीबदास, और संग लाल बाई ॥५२

सांम बाई राम राए, ए आए पोहोंचे कदंम ।
मिलते ही सुख पाइया, इनों सोंपी आतंम ॥५३

इन समें उदेपुर में, बड़ो भयो चरचा को पूर ।
दरसन राज का होवहीं, बड़ा रोसन हुआ जहूर ॥५४

साथ आएड़ में आइया[2], और मोटी बाई ।
मसकरी राज सों करें, खुस खबरी राज से पाई ॥५५

राने ने ए बात सुनी, अपनी मजलस में ।
नित लोक आए कहें, अस्तुत निंदा करें ॥५६

कोई कहें बड़े साध हैं, इनके अनंत लोचंन ।
कोई कहें ए ठग हैं, इनों भेष धरा मोमिन ॥५७

कोई कहें मुसलमान हैं, भेजे हैं सुलतान ।
तुमको मुसलमांन करनें, कहें वचन बिन पेहेचांन ॥५८

कोई कहें कुरान पढ़त हैं, कोई कहें वेद कतेब ।
इन भांत रांने आगें, बातां बतावे ऐव ॥५९

राणे पंडित भेज दिए, जाय के देखो तुम ।
उहां कैसी चरचा होत है, सुनाओ सारी हम ॥६०

१—इ० स्यामदास खिमाई । २—ह० साथ अहेड का आइया ।

वे तो आए पेटारथू, इनों नाहीं कांम आतंम।
देखी तो चरचा बड़ी, कहा जवाब देओगे तुम ॥६१

चालीस प्रस्न भागवत के, और पनरा सुनाए कांन[1]।
एह है वेदान्त के हमको[2], कर देओ पेहेचांन ॥६२

जवाब ना आवे उनको, दिया ना जाय उत्तर।
तब सब मिल विचार के, करने लगे फिकर ॥६३

ए तो बुरे बेरागी, हमारा भांनेंगे रुजगार।
इनकी निंदा कीजिए, तुम सब हो खबरदार[3] ॥६४

इनका बडका ब्रह्मा, जब गरभ अस्तुत करी।
फेर परिख्या आया देखनें, भूल बड़ी दिल धरी ॥६५

गरभ में पेहेचानया, भूल गया बाहेर।
सो भूल आज लों, सबमें भई जाहेर ॥६६

दूसरे रिखीस्वर, करते थे जगन।
अंन मांग्या तिन पें, रहे करमो में मगंन ॥६७

पेहेचान्या स्त्रीओ ने, भई सोभा तिन।
आज लों ब्रह्मांड में, होत चरचा आगे मोमिन ॥६८

भ्रगू बड़का इनका, लात मारी छाती भगवांन।
ए तिनकी नसल, होए असल मांफक पेहेचांन ॥६९

१—ह० पद्रा वेदान्त के सुनाए कान। २—ह० इन प्रस्नो की हमको। ३—ह० तुम सब मिल होओ खुवार।

इनों जाय राने आगें, लगे निंदा करने।
ए वेरागी किसी न काम के, कबूं न देखीए इनें ॥७०

और दूसरे अंकूर, तैसी आवत बुध।
तिस्वास्तें रांने को, कछू ना भई सुध ॥७१

यों करते राणां चल्या, गया तलाब पर[१]।
जी साहेब तहां चले, बाई जी रहे साथ खातर ॥७२

तहां जाए एक हवेली, जाए डेरा किया तित।
लोक आवें चरचा कों, हुआ आनंद बडा इत ॥७३

इन समे औगुन साथ के, ताको लेने लगे हिसाब।
सब साथ परखंडनी, जोर हुई इन के बाब ॥७४

सब कोई कागद लिखके, ले के अपने हाथ।
ऐसे काम बुरे भए, मैं किए आकार के साथ ॥७५

रोए धोए राजी होए, नांच कूद हुए खुसाल।
काढे अपने अवगुन, ले जब राईल संग हाल ॥७६

भेष बदलाए सब के, सबनी पेहेनाई कानन।
और साज सब फकीरी, सब हाथ दिए मोमिन ॥७७

इन समें दया राम, और रहे चंचल गंगा राम।
और वनारसी आइया, ए आए पोहोंचे कदमों इस ठांम ॥७८

१—ह० यो करते एक दिन, राणा चला ताल पर।

सूरत सें मोहन चतुरभुज, आए लगा कदंम ।
और साथी आए केंते, तिनों सोंपी आतंम ॥७९

इन समें पठांन सोदागार, ऐएनखांन नांम ।
दूसरा मुराद खांन, अबदुल्ला नवी उस ठांम ॥८०

और अलाद खांन, और यार खांन ।
इलयास खांन और अवाव कर, और मिहीन को भई पेहेचांन

उसमांन हसन खांन, और अहमद खांन ।
ए आए दीदार कों, अबल खांन को भई पेहेचांन ॥८२

दीदार पाया राह में, थे घोड़े पर असवार ।
आगे जलेव में चले, वेरागी थे खबरदार ॥८३

अव्वल खांन ने, पूँछया महंमद नूर ।
मो कों खबर तुम देवो, इन वेरागी का मजकूर ॥८४

जो छिपावेगा मुझसे, तो होंऊंगा दावन-गीर ।
ए कौन है कहां से आया, ए कैसा फकीर ॥८५

तब नूर महमदें कह्या, है सामिल दीन इसलाम ।
है कलमां कुरान इनपें, कंमर बांधी दीन के काम ॥८६

एतो हकुल आकीन था, सुनते ल्याया ईमांन ।
आया उत दीदार को, कर दई अपनी पेहेचांन ॥८७

चाबूक हाथ लेय के, मारत अपने अंग।
मनें किया राज ने, आए बैठो हमारे संग ॥८८

उहां पट का कांम चले, लिखावें बेठे राज।
मकुंद दास दरोगा रहें, बैठाया इन काज ॥८९

आए पठांन मिलके, करनें को दीदार।
होने लगी चरचा, स्वाल किया परवरदिगार ९०

हमारे तुम कहो, कलमां मंहमद का।
तो हम गुहा देवें तुमारे, एता चाईता था[1] ॥९१

आया जबराईल इन समे, जी साहेब को बड़ा जोस।
मेरे महमंद बीच में, कौन आवे बड़ा अपसोस ॥९२

अबल खांन की रुह पर, आए जब्राईलें किया जोर।
जोस देख काफर डरे, करने लगे सोर ॥९३

सब उठ खड़े रहे, बिदा मांगी सबन।
घरों जाए लड़ने लगे, लगे[2] निंदया करने मोमिन ।९४

एक दिन कीरतन में, रांणा आया करन दीदार।
मोहों छिपाए खड़ा रह्या, देखा रास लीला विहार ॥९५

इतना ही था अंकूर, तेता लिया फल।
आग्यां थी तोलों रह्या, भई तेती आतांम निरमल ॥९६

१—ह० तो हम होवे तुमारे, ऐता चाहता था। २—ह० घरो जाए सोर किया।

इनों के दिल में सक रहे, ल्याया ईमांन अबल खांन ।
तिन सो मसकरी करें, भई इनको पूरी पेहेचांन ॥९७

इन समें अमराजी, ओ पेहेल्ले ही ल्याया ईमांन ।
राम सिंघ गंगा के घर रहे, कछु तिन को भई पेहेचान ॥९८

और भोगी दास जो, एह आया करन दीदार ।
मीठी लगी चरचा, पेहेचांना परवरदिगार ॥९९

मेहेमत कहें ऐह मोमिनो, एह तलब करो याद ।
फेर कहों उदेपुर की, जो बीतक बुनियाद ॥१००

प्रकरण ॥४७॥ चौपाई ॥२५७१॥

[उन्नीसवां विश्राम सम्पूर्ण]

फेर उहां से आए उदेपुर, उतरे हवेलीय में ।
साथ सब आए मिले, सुख पाया मिलाप सें ॥१

इन समे गोवरधन, सूरत से आया ।
धोली बाई साथ थी, तिन को संग ल्याया ॥२

एह दोऊ आए कदमों लगे, साथ सों किया मिलाप ।
बातें सुनी इत उत की, लगे चरचा करने आप ॥३

इन समे पातसाह ने, करी मुहीम राणे पर ।
आए अजमेर से भेजया, मथुरीया इनों पर ॥४

आओ मेरे दीन में, तुम ल्याओ ईमान ।
पांच परगना देउं तुझे, जो होवे मुसलमान ॥५

गरीब दास पुरोहित को, अग्यां करी तिन ।
सो ले गया राज सिंघ के, कही कांनो लाग कांनन ॥६

सुनते ही रीस करी, तुझे न छोड़ता मैं ।
पर क्या करों पुरोहित भया, भाग जा इत सें ॥७

दे धके उन दूत को, जो ऐसी बात सुनावे कांन ।
दिलगीर हुआ दिल में, दिल में बड़ा गुमांन[१] ॥८

ओ तो दूत फिर गया, इत खड़ भड़ पड़ी जोर ।
इन समें दजाल ने, किया जो बड़ा सोर ॥९

तब जी साहेब केहेलाइया, हम रद-बदल करें इत ।
दोर नजीक पोहोंचया, बखत रोज क्यामत ॥१०

तुम कछू ना बोलियो, रद-बदल करें हम ।
इन को राह दीन की, एह आवे तले हुकम ॥११

एह बात रांणे सुनी, हम ऐसे नहीं पात्र ।
जो रद-बदल करें दीन की, ऐसे नाहीं हमारे गात्र ॥१२

हम सों बोझ पातसाहों का, क्यों कर उठाया जाए ।
हम बात सुनत डरत हैं, ए हम से न होए उपाए ॥१३

तब हजूर दजाल था, निंदया करने लगा जोर ।
हम आगे ही तुम सों कही, करनें लगें सोर ॥१४

६—ह० मन मे बडा गुमान ।

निकाल छोड़ो इन कों, कोऊ कहे लूट ल्यो तुम ।
राणा सब सुनत है, पर कछू ना किया हुकंम ॥१५

राणा भीम सेन पासे हता, इन सुनी बातें कांन ।
इसठाव जो वेरागी लूट लेवेंगे, तो हम होंगे बदनाम ॥१६

भेज दिया कोटवाल को, तुम बिदा होओ चार दिन ।
जब सुख समाधां होवहीं, तब आइयो मोमिन[1] ॥१७

लस्कर चारों तरफों, दजालें फैलाया जोर[2] ।
पावे न कोई निकसने, बड़ा जो किया सोर ॥१८

जी साहेब विचारिया, हुआ हमको हुकंम ।
ए अग्यां है राज की, यहाँ से उठो तुम ॥१९

एह सामासूत हम संग, निबहे नहीं लगार ।
इतहीं बांट दीजिए, ऐसा किया विचार ॥२०

फेर कोटवाल आइया, ल्याया हुकंम दूसरी बेर ।
राणे रजा दई तुम को, यों कर कह्या फेर ॥२१

अब इत रेहेने को, धरम ना रह्या लगार ।
हमारो जो अखत्यार, है हाथ परवरदिगार ॥२२

ओही हम को काढ़त है, छोड़ाए दीधा ए ठौर[3] ।
जहाँ खैंचे तहाँ जाएंगे, अब ढूंढें ठौर और ॥२३

१—ह० सब सुख सामाधान होवही, फेर आइयो साधूजन । २—ह० दजाले फेलाया चोफेर । ३—ह० ए हीं हमको काढत, छोडाए दियो ए ठौर ।

इन समे महासिंघ, करने आया दीदार।
पेहेनाया सिरोपाव तिनको, अब तुम हूजो खबरदार ॥२४

हम तो बिदा होत हैं, तुमारे मुलूक सें।
तुम बैठ ना सकोगे, वैरान होगे इन में ॥२५

यों जेते उमराव, और जेते पासवान।
और साथ अपना, जा को थी पेहेचान ॥२६

तिन सबों को सिरोपाव, दिए घरों पोहोंचाए।
निरगुण भेष पेहेरन का, मोमिनों को दिया बताए ॥२७

पेहेने चीरक वस्तर, सब सरगुन दिया डार।
हुए चलने को तैयार, छोड़या कार-बेहेवार ॥२८

वासन बस्तर सरगुन, बगस दिए सबन।
तूंबा कुबड़ी गोदड़ी, ए भेष पेहेना मोमिन ॥२९

अब कहों साथ उदेपुर का, जिन सौंपी आतंम।
आए दीन इस्लाम में, सिर चढ़ाया हुकंम ॥३०

एक तो लाधू मसाणी, और अमराजी नाम।
और आया देवजी, हर सुन्दर आया इस्लाम ॥३१

और भाई मंगल जी, और पीछे आया गिरधर।
गेहेला मना हिम्मत, ए आए मोहोबत पर ॥३२

आए केसोदास बेनीदास, और आए सेवा भीमा ।
और भोगी वीरजी आए, इनों भास्या सुख जमा ॥३३

और आए प्रेम जी जगन्नाथ, और आए व्यास[1] ।
और सोनी नारायण, इनें धाम धनी की आस ॥३४

और साथ समस्त में, एक भाई वासुदेव ।
और माता इन की, पलीवास में इने पाया भेव ॥३५

मोटी बाई पूजा बाई[2], कमला बाई नाम ।
और खुसाली कही, ए आए इसठांम ॥३६

और आई लाल बाई, और आई बाई नागर[3] ।
आए रज्भू और भत्तू[4], तजी माया राज खातर ॥३७

और केसर भाण बाई, और गंगा बाई गंगी ।
और आई लाडबाई, ल्याई दीन में अपनी संगी ॥३८

क्रस्नावती बाल बाई, और सोना फूला नाम ।
जीवी और उदेबाई, ए दाखिल इसलाम[5] ३९

साउ[6] और गंगा बाई, और जग्गू बाई तारु ।
बच्छू बाई फूल बाई, किया राज उपरारु ॥४०

भोगन और मथुरी, आई गोरी और मनु ।
पीठ दई दुनी कों, जानीं निके सुपनो ॥४१

१—और पिछे आया लखमीदास । २—ह० कुजा बाई । ३—ह० और आए नागर ।
४—ह० आए भुरो भतू । ५—ह० जीवी और देउबाई । ६—ह० सहू ।

अमेखी दानी और खेती, और मनी बेरामू नाम[1] ।
नानी बाई गोमा बाई, ए पीछे आई इसलाम ॥४२

गोमा और बीर बाई, और नाथी लख्खी ।
भाग बाई तारा बाई, खेली ब्रजरास में सखी ॥४३

अणादू और मनी बाई, पुर बाई और गंग ।
भाणा बाई अम्रत बाई, सुख पावे राज के संग ॥४४

अम्रतदे करमा बाई, और चीमा सोहदरी ।
और कान बाई बेनादे, मेहेर राज की उतरी ॥४५

चीमा बाई सजनी, और दीपा बाई नाम ।
और साथ समस्त, उदेपुर के ठांम ॥४६

यामे कोई आगे कोई पीछे, आए बीच इस्लाम ।
कोई तो समझन के पख, कोई दीदार के बिसराम ॥४७

जब सुलतान चढ्या, तब भागा सारा देस ।
तब वहाँ से निकलना पड़ा, जुदे पड़े दरवेस ॥४८

इहाँ सेंती चलके, आए रामपुर के गांम ।
वहाँ रहण को तैयार, गांम पूरनदास के ठांम ॥४९

मेहेमत कहें ए मोमिनो, ए उदेपुर की बीतक ।
अब कहों मंदसोर की, जो बीतक हुकंम हक ॥५०

॥ प्रकरण ॥४८॥ चौपाई २६२१ ॥

१—ह० बेरानी नाम ।

[महाप्रभु का निरगुण भेष और मंदसोर की बीतक]

अब कहों मंदसोर की, आए उदेपुर सें चल ।
जब नौरंगा चढ़या राणे पर, हुआ मुलक चल विचल ॥१

सम्बत सत्रै सै छत्रीसा, लगा सैंतीसा जब ।
मंदसोर के बीच में, आए पोहोंचे तब ॥१

इन समे फकीरी का, भेष धरया अनूप ।
सोभा छबि समए[1] की, वारों कोटक रूप ॥३

गोटा सोभे सिर पर, और सोभित कंनढपी[2] ।
दो पुडत लोई धागे भरी, ए पेहेनत है टोपी ॥४

अति सुन्दर तिलक बन्यो, दोए रेखा बीच विंद ।
गोपी चंदन सुपेत का, मुख सोभित मानो चंद ॥५

स्रवनी सोभे कानों मिनें, दोए बालें कंचन के ।
अत राजत छबि प्यार की, लगा प्यार फकीरी से ॥६

पेहेनी कंठी तुलसीअ की, और बड़ी माला चार ।
अति सोभित अंग पर मेखली, लोई धागे भरी समार ॥७

और गोदड़ी ओढ़न की, हाथों लई बनाए ।
सेली समरनी मुत्तका, अंग सोभित है ताए ॥८

१—ह० सरूप । २—ह० गोटा सोभे सिर पर, ऊपर कनढपी ।

उपरना धोती अंगोछा, पेहेरे और बांधे कंमर ।
एह छबि ब्रह्मांड में, सोभा सब ऊपर ॥९

एक पात्र तूम्बे का, और तूम्बा कंमर ।
साज सबे झोली मिनें, राखत कांध ऊपर ॥१०

पेहेनी पाऊ में पनही, चलत चटकती[1] चाल ।
संग केतिक मोमिन, चलत होत खुसाल ॥११

सबों ने भेष पेहेनया, देख अपने साहेब ।
चाह खेल देखन की, हुई बड़ी खुसाली तब ॥१२

बाईजी भेष बनाइआ, सोभित है निरगुन ।
साज फकीरी राखत, जंग दजाल सों करें मोमिन ॥१३

राह बीच रामगढ़, तहां चारण का गांम[2] ।
तहां उठाए हवेली, लगे इंटा पारने के कांम ॥१४

बनाए ठाढ़ी हवेली करी, सरूप रहे तिनमें ।
पूरनमल चारन, वह गांम था उनसें ॥१५

रही उनकी माता खिजमत में, करें उपली पेहेचांन ।
इनके सरूप देखके, उपला था ईमांन ॥१६

जब दजाल ने जोरा किया, दिल बैठा बेरी साल ।
वह भाई राजा का था, हुआ दजाल का हाल ॥१७

१—ह० छटकनी । २—ह० राह बीच रामपुर, वहा निकट चारन का गांम

बुरी नजर करी साथ पर, लूट लेऊं फकीरन ।
तब चारन के घरों जाए, फरियाद करी मोमिन ॥१८

तब चारन की मात्म ने, बांधी जोर कंमर ।
इन वैरागी सामी जो देखे[1], मारों तिने खर ॥१६

या तो मैं मरों तिनपर, देऊं हत्या उन ।
जो इस समे बुरा क्यों देखे, मेरे घर आए मोमिन ॥२०

तब स्याह मुंह ले पीछे फिरया, उत बेरी साल ।
चल्या न कछुए तिनका, बुरा हुआ उन हवाल ॥२१

वह हवेली छोड़के, आए मंदसोर ।
तहां आए बैठे, हरप्रसाद घरों खोर ॥२२

रूवरु[2] पात साही लस्कर, रहे मंदसोर के ग्रदवाए ।
गावत सनंधे तहां बैठे, कोई कोई सुनने को आए ॥२३

इत सुनने को आइया, पठान दौलत खांन ।
सुन सनंधे घायल भया, वह ल्याया ईमांन ॥२४

और सेरखांन कोआटी, सुनी सनंधें कान ।
संग केतेक पठान, तबहीं ल्याए ईमांन ॥२५

बिना एक मेहमद की, सनंध पढ़ी जब ।
दौलत खांन पठान कों, जोस आया तब ॥२६

१—ह० वेंरागियों । २—ह० तहा ।

बिना एक मेहेमद है, और न काढ़े बोल।
फेर फेर एही कहे, एही काढ़त मुख कोल ॥२७

कृपाराम इत आइआ, पा[illegible] ले पुकार।
उदेपुर का साथ पहाड़ों मिने, हुए बिलाप करनहार ॥

बिलाप इनका सुनके, दिल में हुआ दरद।
मोहों दरगाह बीच करके, पुकार करी मेहेमद ॥२९

पांच किरंतन करके, फरियाद लिखी कलांम।
तबही पोहोंची हककों, हुई मेहेर ऊपर इसलांम[१] ॥३०

इन समें इभराईम, आया करने को दीदार।
सोहोबत से राजी भया[२], फेर आया दूसरी बार ॥३१

तब लाल की सोहोबत, बातां उन ठांम।
एक किस्सा कुरान का, करो हमारा कांम ॥३२

तब उनने उतराइया, सूरत एक कुरान।
तिन की केतेक आयतें, जी साहेब सुनी कांन[३] ॥३३

सुनते ही सुख उपज्या, यामे बात हमारी सब।
जो उतरावें तुमको, तो बड़ा काम होवे अब ॥३४

तब उनसों बातें करी, कहे मैं उतराऊं कलाम।
कछुक लोभ देखाइया, राजी हुआ इन ठांम ॥३५

१—ह० फेर दाखिल किए कलाम। २—ह० सोहोवते राजी भया। ३—ह० तिनमे केतेक आईतें. श्री जी ऐ सुनी कान।

प्रात को आए खड़ा रह्या, सुरू हुआ सिपारा सोलमां ।
दो जूज उतराए दिया हाथ में, बड़ी राज को हुई तमां ।।३६

इत एक मजल भई, बड़ी खुसाली दिल ।
बीतक अपनी बांच के, होत दिल निरमल ।।३७

एक ठौर रात कों बंगले, उतारत है कुरान ।
लाल इभराईम बेठत, राज पासें पौढे सुनें कान ।।३८

उतरावते एक सुकन, पढ़या इभराईम ने ।
एह तो कोई राकसी[1], कलम मारी उनने ।।३६

तब जी साहेबें कह्या, फेर के पढ़ो सुकन ।
ए तुम कहे क्या, फेर हमें सुनाओ कांन ।।४०

तब कह्या इभराईम ने, जो सुने मुसलमान ।
मेहेमद की उमंत के, अजू न पोहोंचे कान ।।४१

कोई पोहोंच न सके, मरातबा मोमिन ।
तुम हरफ न फिराओ इनका, जैसा लिखा होए सुकन ।।४२

और ओई सुकन[2], समझत नाहीं तुम ।
क्या जाने उन क्या लिख्या, सो समझत नाहीं हम ।।४३

लगता एक चबूतरा, तहाँ पढ़ने बैठे श्री राज ।
बीतक देख राजी होवे, हुए पूरन मनोरथ काज ।।४४

१—ह० च० रावसी । २—ह० ओर वाही सुकंन को ।

अब अपनी बात का, सब सिध भए कारज ।
अब तुमें कछू करना ना पड़े, रही ना कोई गरज ॥४५

अब साथ सब कों, ए लिखे खुस-खबर ।
मेहेर भई हक की, सो लिखी तुम ऊपर ॥४६

लिखने बैठे संझा कों, सो जहां लों अरुन उदे ।
इभराईम जाए अपने घरों, लाल दातुन पानी करें ॥४७

यों करते उतारे, सिपारे जो चार ।
सोलमां सतरा अठारह उन्नीस[१], ताका करनें लगे विचार ॥४८

फेर सिपारा तीसमा, जाकी छतीस[२] सूरत ।
सो लिया उतार के, फेर लगे अलफ लाम मीम से इत ॥४९

फेर दूसरो तीसरो, लगे चौथो उतारन ।
पांचमा सुरू हुआ, उतारने लगे मोमिन[३] ॥५०

तब इभराईम के दिल में, आए बैठा दजाल ।
लेऊं तफसीर छीन के, तो मन कों करों खुसाल ॥५१

तब लगा खर-खसा करने, बीच बैठावें साहेद ।
मोमिन गरीब देख के, देवे डर सरीअत हद ॥५२

मांगने लगा तफसीर को, मैं ले जाऊं अपने घर ।
तब लाल पेहेचानया, दजाल की नजर ॥५३

१—ह० सोरह सत्रह अठारह उनईस । २—ह० छत्तीसमी । ३—ह० उतार चले मोमन ।

फितुआ उठावन कों, करता है ए कांम ।
मैं तफसीर इनको ना देऊं[1], ए फिरा दीन इसलांम ॥५४

तब जी साहेब ने जाण्या, उन के मन की बात ।
तब जवाब चोखा दिया, करी तोफान की विख्यात ॥५५

मोमिन डर[2] दलगीर भए, बात तोफान सुनी कांन ।
अब क्या करना इन सें, भई न इनें पेहेचांन ॥५६

ए बात सुनी पठान ने, दौड़ के आया कदंम ।
देखे जी साहेब कों दलगीर, उन सोंपी थी आतंम ॥५७

काहे को भए आप दलगीर, सो बात सुनाओ कांन ।
इभराईम उठाया फितना, जो गरीब लोग ईमान ॥५८

सुन सुकन मोहोबत खांन, बोहोत हुआ गुस्से ।
सिर भानों इभराईम का, मंदसोर के में ॥५९

इहां से उठ धाइया, गया इभराईम के घर ।
कुतका लिया कांध पर, जाए स्वाल किया जोरु पर ॥६०

कहां गया इभराईम, दई गाल जुबांन ।
तब वे मुनकर भए, गए निकाह सुनावने कांन ॥६१

एह चला गया तहांहीं, जाए किआ सोर ।
इभराईम निकल आइया, कहा मुझ पर एता जोर ॥६२

१—ह० मै तपसीर इने क्यो देऊ । २—ह० दिल ।

मैं तो तुमारा गुलांम, करों फुरमाया सोए ।
तें क्यों दुख दिया हादी को, ऐसा झूठ तुझसें होए[1] ॥६३

तें मेरे आगे क्या कह्या, मेरे ए मुरब्बी ।
मैं गुलांम इन का, अब तें क्यों फेरी अपनी सब्बी ॥६४

मार डारों मैं तुझ कों, दुआ रसूल की न छोड़ों क्योंए कर ।
तब लगा उनके कदमों, आो गीदड़ हुआ इन पर ॥६५

जाए कदमों लाग उनके, जाए राज़ी करो मोमिन ।
ना तो तोहे न छोड़हों[2], हुए दिलगीर दिल रोसन ॥६६

प्रात समे उठ के, इभराईम आया धाए ।
आए जी साहेब के कदमों पड़या, सिर ना उठायो जाए ॥६७

तब नूर माहामद बोलया, उठ खड़ा हो मुरदार ।
मारों कटारी पेट में, इतहीं हो जाए सुमार ॥६८

पर क्या करों डरता हों हादी सें, इनका हुकम नाहे ।
एती बेअदबी करके, फेर जीवता उठके जाए ॥६९

कह्या मैं तुमारा गुलांम, मुझसें भई भूल ।
अब तुम माफ करो, मैं तुमसों किया न सूल ॥७०

मैं ग्रहे तुमारे कदंम, सो मैं न छोड़ हों कब ।
सब मोमिनोंके कदमों लगा, वाको माफ किआ तब ॥७१

१—ह० ते क्यो दुख दिया हादीय को, ऐ झूठ तुम से होए । २—ह० नातो तुझे न छोडहो ।

तब उन के भाई ने, पांचमा सिपारा ।
वह लिखावने लगा, कर दिश्रा पूरा[1] ॥७२

इन समे दजाल ने, सोर किया जोर ।
रहे साथी सब जुदे जुदे, काहू चित्त न हुआ मरोर ॥७३

छिप रहे जुदे जुदे, आवें दीदार कों एक बेर ।
झोरी भर के ल्यावहीं, दाने मांगे फेर[2] ॥७४

राज आरोगे हेत सों, ए किनकी झोरी के ।
सब बतावत अपने, एह दाने ल्याया मैं ॥७५

राजी होवे तिन पर, बातां हंस-हंस करें बनाए ।
मैं अजमावत तुम कों, इन मजलों पोहोंचाए ॥७६

मोमिन राजी होए के, बातां करे खुस दिल ।
ए दिन हम न पावहीं, रहें एक दूजे हिलमिल ॥७७

सिर भांना दजाल का, कुटम्ब कबीले आस ।
रहे बोहोत बल सूरत मिनें, संग जोस जबराईल खास ॥७८

बाईजी इन समे, सेवा करी मोमिन ।
दाल बनाए आगे धरे, हमेसा दिल रोसन ॥७९

एक दूजे को सेवहीं, हर भांत कर चित ।
हेत करे मिनों मिने, काहू सक न पैठे इत[3] ॥८०

१—ह० हुआ जो पुरा । २—ह० टुकड़े मागे फेर । ३—ह० पैठत ।

न्हाना भाई चलया, मंदसोर के में।
ताले माफक ए रह्या, उतने हीं सुख सें ॥८१

मकुंद दास को इत से[1], भेज्या भावसिंघ पास।
तुम जाए उनकी खबर लेओ, है जीवता कछू आस ॥८२

जो हमकों उत बोलावहीं, तो हम आवें उत।
वहां जाए के लिखिओ, जैसा देखो तित ॥८३

मकुंद दास जाए पोहोंचया, भावसिंघ सों किआ मिलाप।
चरचा उनसों रस पड़ी, उन कबूल किआ आप ॥८४

तब वहाँ से कासद, भेज दिआ सिताब।
मंदसोर आए पोहोंचिया, पाती ले किताब ॥८५

उन में भली भांत के, लिखे थे सुकन।
पढ़ के आप राजी भए, सब साथ मोमिन ॥८६

अब मंदसोर थे[2], चलने का किआ उपाए।
साथ हुए सब तैयार, खबर सबों पोहोंचाए ॥८७

सब साथ भेले भए, हुए चलने को हुसियार।
आठ महीने वहाँ[3] रहे, हुआ हुकम परवरदिगार ॥८८

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए मंदसोर की बीतक।
अब इहां से आगे चले, सो कहों हुकम हक ॥८९

॥ प्रकरण ॥४९॥ चौपाई ॥२७१०

[बीसवाँ विश्राम सम्पूर्ण]

[औरंगाबाद में राजा भाव सिंह से मुलाकात]

राणा के मुलक सें, आए राम पुरे के ठोर।
तहां दुधलाई खड़गारी डेरां किए, किया दजाले सोर[१] ॥१
तब उहां सें मकुंद दास कों, और केसव दास।
खिमाई संग वल्लभ, भेजे भाव सिंघ पास ॥२
गया मकुंददास उत[२], केसव वल्लभ बैठे दुकान।
खिमाई संग रहे, मकुददास निरगुन जान ॥३
केतेक महीने फिरे, भेष राख्या निरगुन।
बेदांत को पख खोजया, रहे बीच निरगुन ॥४
जब लगे मूरकने, तब दिल में किया विचार।
मैं खाली फिर क्यों जाऊं[३], जनाऊं जित वेहेवार ॥५
भीख मांगे दोए रुपए, ताके लिए वस्तर।
थैला रेसमी बनाए के, प्रसाद थैली करी ततपर ॥६
प्रस्न भागवत वेदांत के, लिख डारे हैं थैली में[४]।
एक प्रसाद की थैली कर, किश्रा मिलाप तिनसें ॥७
महंत राम दास रहे, तिन देखा बीच बजार।
मारा मकुंद दास कों[५], पोहोंचाया नाले पार ॥८
जो औरंगाबाद रहेगा, तो हम मारेंगे फेर।
जो बदराह करे भाव सिंघ कों, तो मारें दूसरी वेर ॥९

१—ह० दुधलाई डेरा किया, तहा किया दजाले सोर। २—ह० गऐ भाव सिंघ के उत। ३—ह० मैं फिरा काहे को जाऊँ। ४—ह० ले डारे थैली मे। ५—ह० मिला

यों करके छोड़िया, तब मुकंद दास किए विचार।
दजाल मिलने ना देवे, मैं होऊ खबर-दार ॥१०

एक देहुरा देवी का, मैं बेठों छिपके[1]।
उत भाव सिंघ आवत, पाती देऊं तिन समे[2] ॥११

ऐसा विचार करके, जाए छिपके बैठे उत।
जब भाव सिंघ आइया, पाती प्रसाद दिया तित ॥१२

भाव सिंघ सिर चढाए के, लई थैली उस बखत।
भीतर जाए बोलाइआ, मकुंद दास को तित ॥१३

पूछी हकीकत राज की, कहां है स्वामी क्रस्नदास।
तुमकों क्यों कर भेजिया, कहो अपनी दिल आस ॥१४

खोल पाती पढ़ने लगे, मिने प्रस्न भागवत।
और लिखे वेदांत के, विचार होने लगे तित ॥१५

तहां दजाल बैठा हता, राम दास महंत।
तिन ईरषा के कहे सुकन, सरूप बे विराजत ॥१६

ए दो क्रस्न बतावत, जो काहू न सास्त्रों में।
इनका मोहों न देखिए, चरचा कैसी इन सें ॥१७

तब भाव सिंघ बोलिया, ऐसा काहे कहो तुम।
ए तो भला कहत है, निज सरूप बतावत हम ॥१८

१—ह० मे बैठो तिन मे। २—ह० पानी देऊ हाथ से।

भाव सिंघे जान्या, एह दजाल हराम-खोर ।
ए इनके दुसमन, तो करत एता सोर ॥१६

ठौर देखो मकुंद दास को, हमारी हवेली पास ।
तब राम दास बोलिया, इनकी सेवा की हमें आस ॥२०

उतारें हम अपने घरों, तब मकुंद दास कहे बचन ।
इन सेवा हमारी भली करी, पीठ देखाई उन ॥२१

देख पीठ भाव सिंघ को, बड़ा हुआ दुख ॥
धका दे उठाया दजाल को, बुरी गाली दई मुख ॥२२

जो मेरे यहां आवत, ताकी ऐसी सेवा करत ।
निकसो हमारे ठौर से, जाओ देस में तित ॥२३

मकुंद दास की निसां करी, प्रस्न पूछे पंडितन ।
करो इनका जवाब, दिल करो रोसन ॥३४

आया न जवाब उनो को, निंदया लगे करने ।
भाव सिंघे वरज्या, आवत न जवाब तुमें ॥२५

कह्या मकुंद दास ने, पंडित पूंछे प्रस्न ।
मैं ताको उत्तर देऊं, इनको मनाऊं मन ॥२६

मैं पूछों जो इनके, ताको दे उत्तर[1] ।
जो हारे दोऊ मिनें, पनई गले बांधे फिर[2] ॥२७

१—ह० ए ताको दे वताई । २—ह० मो पनही बाध के फिराई ।

प्रस्न असी पंड़ितो लिखे, त्रेबीस मकुंद दास।
पंदरह दिन मोहोलत दई, क्यों होए विस्वास ॥२८

पंडित रोज पावत, रुपैया दस बीस।
जब उतर देओगे, तब हुकंम देवे बगसीस[1] ॥२९

मकुंद दास उसी दिन, प्रस्न खोल किआ साफ।
देओ उत्तर हमारे प्रस्न का, करो भाव सिंघ इंसाफ ॥३०

उत्तर तो आवे नहीं, तब रात को किआ विचार।
चल आए मकुंद दास पै, कहे हम पर होत है मार ॥३१

जो स्वामी जी यों ही कह्या, के रोटी भांनो पंडितन।
तो हमारा क्या चारा, तो संतोष पकड़ें हम ॥३२

ना तो हमारा छुटकारा करो, हम हारे दस बेर।
तब मकुंद दास क्या करें[2], हम कहेंगे फेर ॥३३

तब कह्या भाव सिंघ कों, क्यों उत्तर देवे प्रस्न।
ए तो लीला अखंड की, इनका न पोहोंचे मन ॥३४

तब आधा रोज छेकया, आधे को हुआ हुकंम।
प्रात मिल कूए के कह्या, ए काम किया तुमारा हम ॥३५

दिन दूसरे तीसरे, नीकें दिए कांन।
तारतम नीकें सुनया, होए गई पेहेचान ॥३६

१—ह० तब हम करें बगसीस। २—तब मकुंददास ने कह्या।

बुलाओ जी साहेब जी को, असवारी लेओ तुम ।
लेओ हथनी बूंदी से, और घोड़ा देवे हैं हम ॥३७

एक हवेली बूंदी में, रहेने को लिख दई ।
तहां बाई जी को राखिओ, इन भांत सिखापन भई ॥३८

मकुंद दास विदा होए के, दै असवारी साथ ।
तहां से पोहोंचे मंदसोर, खरची दई थी हाथ ॥३९

आए मिले मंदसोर में, ले चले जी साहेब को ।
आए पोहोंचे औरंगाबाद, भई मुलाकात हवेली मो ॥४०

भाव सिंघ आए के, लग्या दोऊ कदंम ।
देख दीदार उन समे, क्रत क्रत जानी आतंम ॥४१

लगा सेवा करने, ओछव रसोई सब ।
दई जागा हवेली अपनी, भई सेवा इनकी तब ॥४२

सुने नरसी के कीरतन[1], तित हुआ मगन ।
आप लगा नाचनें, ज्यों करे मोमन ॥४३

भगत भाव जोर रहे, सेवे परमेस्वर ।
सक कछू न आवहीं, भगत भाव ऊपर ॥४४

नित अपने अंदर[2], पधरावत श्री राज ।
रास लीला के कीरंतन, राजी होवे इनके काज ॥४५

१—ह० सुन नरसैयाके शब्द कीरतन । २—ह० तिन अपने अदर ।

जब बात कही कुरान की, तब इन किआ विचार ।
ए साहदी क्यों पावहीं, इनका करो करार ॥४६

ए मुसलमान चार हैं, मेरे चाकर इत ।
तिन को तुम समझाओ, मुकदमा क्यामत ॥४७

तब मैं औरंगजेब सों[1], बांध कें कंमर ।
लड़ों वास्ते दीन के, सिर सौंप इन पर[2] ॥४८

तब जी साहेब कह्या, सौंप हमें मुसलमान ।
तिन कों हम समझाव हीं, वे ल्यावे ईमान ॥४९

वे तुस सों कहे, तेहेकीक तुमारा इसलाम[3] ।
कुरान तरफ तुमारे, तुम कमर बांधो दीन के काम ॥५०

ए बात मांनी भाव सिंघ, मेरे मन वरहक ।
तुम इन पर मेहेनत करो, ए बात बड़ी बुजरक ॥५१

ए तेहेकीक कर उठे, होने लगी चरचा तिनसें ।
नित आवे दोए बखत, रहे इन काम में ॥५२

इन समे भट भवानी, था उदेपुर का मिलाप ।
सो इत आए मिल्या, थी प्रस्न भवानी आप ॥५३

बुध गीता बुध स्तोत्र, ए ल्याया दछिन सें ।
इन समे मुजरा किया, सुख पाया इनमें ॥५४

१—ह० तब मै नौरगजेब से । २—ह० सिर सोप्या इन बात पर । ३—ह० वे कहे तुमको तेहेकीक, तुमारा इसलाम ।

नित भागवत वाचने[1], करने आवे दीदार ।
कछुक पेहेचांन तारतंम, दई परवरदिगार ॥५५

इन समें अब्बल खांन, सुन करने आया दीदार ।
था उदेपुर का मिलाप, इन पेहेचांनें परवरदिगार ॥५६

जहांन महंमद मिहीन खांन, ए तिनकों सुनाए कांन ।
तिनकों बुलाए ल्याइया, ओ करने लगे पेहेचांन ॥५७

मिही को ईमांन आइया, ए तावे हुआ तब ।
दजाल सों लड़ने लगा, चाहिए लेने सोभा जब ॥५८

कहारबानी में पठांन, चली चरचा तिनमें ।
सनंधा सुनी जहांन महंमदें, क्यों पेहेचान होए इनसें ॥५९

एक जहांन महंमद कों, असलू अंकूर ईमांन ।
था आप तमांम तपसीर, पढ़ोमें आरबी खांन ॥६०

देता तालीम सबन को, जेते रहे पठान ।
किन किन सुनी हकीकत, कहे बुरा भला अनुमान ॥६१

भवानी भट डेढ़ पहर लों, कथा कह होए फारक ।
तब श्री राज आरोग के, पोढ़े सेज बुजरक ॥६२

जब दिन पीछला, घड़ी रहत है सात ।
तब श्री राज उठत हैं, करे साथ सों बात ॥६३

१—ह० नित चरचा मे वाचन ।

चरचा होए अति बड़ी, हुआ सिनगार का बखत ।
संझा को आरती होए, सब साथ खडा देखत ॥६४

एक बाजू लाल दास, दूजी भवानी भट ।
चरचा कुरान भागवत की, होत है लट-पट ॥६५

राज करत हैं मायना, सुनने वाला साथ ।
कोई स्वाल करत हैं, कोई बानी लेवे हाथ ॥६६

अव्वल खांन ल्याया, जहान महंमद को ।
चरचा सुनी मास दोए लों, घायल भया तिनसों ॥६७

पर था अरधपका , सुनी लीला फिरी सूरत ।
लाल उतंम सुनाई, लड़ाई भई उन बखत ॥६८

जात रह्या घर को, कबहूं ना लेऊं जल ।
मैं दो मास मेहेनत करी, भई न रुह निरमल ॥६९

अरज उत्तम दास करी, बुलाए ल्याओ महंमद जहांन ।
वरजा जी साहेब ने, इने सुनी चरचा कांन ॥७०

सो दुचती होएगी, सह न सके घर में[1] ।
प्रात को उठ के दौडया, बात करनें लगे दिल में[2] ॥७१

दिन दूसरे आइया, जी साहेब के पास ।
मुझे क्यों ना समझावत, मोहे है कदमों की आस ॥७२

१—ह० सो दुचती हो गई, रेहे ना सके घर मे । २—ह० करने लगे दिल से ।

तब जी साहेब कह्या, एक आठेक दिन करो सोहोबत[1] ।
सो भी एक पहर, देख कैसा होवे इत ॥७३

आया चरचा सुनने, स्वाल किया एक इत ।
मुरदे क्यों कर उठेंगे, बखत रोज क्यामत ॥७४

दिया जवाब जी साहेब ने, काढ़ दिखाया बीच फिरकांन ।
दुनी करी किन वास्तें, सो कर दई पेहेचांन ॥७५

इसक रबद के वास्तें, उतर आए मोमिन ।
नूर जलाले मांगया, देखों इसक रूहन ॥७६

तिस्वास्तें देखाइया, दो तकरार दो बेर ।
प्रात कों ए तीसरा, रच्या इंड फेर ॥७७

रास लीला खेल के, आए बरारब स्यांम ।
सो कागद कलांम अल्लाह का, ल्याया माहामद अलेहसलांम

करी सरत दसमी एग्यारै, हम आवेंगे फेर ।
जो रूहें थी ब्रजरास में, सो आवे दूजी बेर ॥७९

तब काजी होए के, हिसाब लेवें हक ।
सिफाएत मोमिक की, करे माहामद बुजरक ॥८०

अकेले त्रैलोक मों, सब होवे एक दीन ।
चौदे तबकों मिनें, सब ल्यावें आकीन ॥८१

१—ह० एक आठ दिन देखो चित्त ।

अख्यर अख्यरातीत बिन, रहे ना कोई और।
नूर और नूर तजल्ला, सब जहूर[1] होवे ठौर, ॥८२

जब नींद उड़े नूर जल्लाल, उठ बैठे अख्यर।
तब धाम को याद करें, चित चुभे यों कर ॥८३

मोमिन मिलावें कों, जब करें याद।
तब आठों भिस्त की, उठ बैठे बुनियाद ॥८४

जो ईमान ल्याय के, सोवे बीच कबर।
सो चुभे नूर के चित में, भूले नहीं क्यों कर ॥८५

यों उठेंगे मुरदे, कबरों से क्यामत।
तिन समे की रामत, कही महंमद इत ॥८६

ए दरवाजा खुलते[2], जोस आया जोर।
तब दज्जाल कांपया, किआ बड़ा सोर[3] ॥८७

ल्याया दिन तीसरे, जहांन महंमद ईमांन।
हकीकत मारफत की, होए गई पेहेचांन ॥८८

जहांन महंमद, और अब्बल खांन।
और मिहीन आवहीं, बैठे चरचा में नित्यांन ॥८९

और मुसलमान आवहीं, सब चरचा सुनें।
तामें जहांन महंमद कों, जोस आवे इन समें ॥९०

१—ह० जाहेर होवे सब ठोर। २—ह० ए दरवाजा खोलते। ३—ह० करने लगा सोर।

श्री राज पकड़े इन कों, सिर पर धरें हाथ ।
दिलासा बड़ी करी, तूं है हमारा साथ ॥६१

फेर सावधान होवहीं, जब सुने नाम लाहूत ।
तब फेर गिरे जोस में, याद करे क्यामत ॥६२

यों चरचा रात कों होवै, जब रही पीछली घड़ी चार ।
तब साथ की बिदा होए, फेर करे विचार ॥६३

तब राज आरोग के, हिंडोले खाट पोढ़त ।
पीछे साथी इन समे, रास की रामतें गावत ॥६४

यों करते भोर होवहीं, लीला भई मास चार ।
नित्य ओछव किरंतन, हुआ साथ अंग करार ॥६५

पठान फते महंमदे, ए बात सुनी कांन ।
कह्या जहांन महंमद कों, करदे वेरागी की पेहेचांन ॥६६

चालीस हदीसें लिख दई, जो इनके करे मायने ।
तो तेहेकीक जा‍ि‍यो, एह होवे खावंद जमांने से ॥६७

ल्याया हदीसें जहांन महंमद, कही आगे जी साहेब ।
तुहीं कर इनका मायना, किल्ली रूह अल्ला की पावे जब ॥६८

जब इनने तलब करी, किल्ली अल्ला कलाम ।
तब जहांन महंमद कों, भई पेहेचान इसलाम ॥६९

तब सब खुल गई, हकीकत मारफत द्वार ।
नजर भई बका मिनें, किया दीदार परवरदिगार ॥१००

तब गया फते महंमद पे, एक पूछत तुमें स्वाल ।
जो इनका देवे जवाब, होवे तेरा मुझ पर माल ॥१०१

खुदाए की सूरत का, मुझे दे उत्तर ।
फुरमाया फुरमान हदीसों, कर मेरी जमां खातर ॥१०२

"रुए तरबी फी" लेल तुल मेराज, ए कलाम वरहक ।
के दिल तुमारे सक है, देखो जबाब माफक ॥१०३

तब फते महंमदें कह्या, इनमें ना कछू सक ।
जाहिर कर हम ना सकें, सरा जाहेर परस्त बुजरक ॥१०४

सो हम को मारत, तिस वास्ते कह्यो न जाए ।
हदीसों के भए मायने, अब तुमारा कहा बसाए ॥१०५

तब फते महंमदें कह्या, जो लों पातसाह न आवे बीच दीन ।
तो लों आगा हम क्यों करें, पेहेले क्योंकर ल्यावें आकीन ॥

तब जहांन महंमदें कह्या, तुमारा ईमांन ऊपर सुलतान ।
ऐसा तुम क्यों कहत हो, जब देखो हक पेहेचान ॥१०७

ए खट-पट भई आपुस में, तब इन छोड़े दिए पठांन ।
तुम मनें करो जहान महंमद, उत जावे नहीं निदांन ॥१०८

मिल पठानो मने किया, जहान महंमद को सबन ।
तू वेरागी के कदमों लगे, ते क्या जान्या मोमिन ॥१०६

लड़ाई होने लगी, सुनी जी साहेब बात ॥
तब बरजा जहांन महंमद कों, जिन तुम जिद करने जात ॥

ए तो अमल दजाल, सो तो जाहिलो का बाप ।
इन सो छलें छूटिए, तुम जिन जोरा करो आप ॥१११

तब जहांन महंमदें कह्या, मोहे दजाल लगा वरजन ।
मैं तिनका कह्या क्यों करों, ईमान खतरा होवे मोमन ॥

मैं तो साहेब देखया, जाहेर अपने नैन ।
तहां खतरा होत है, ए मुख थे कहो न बेंन ॥११३

पठानों परियाण किआ, जहांन महंमद डारें मार ।
एह हमारे दीन से, छोड़ दिआ वेहेवार ॥११४

पेहेलें तो वेरागी से, करने लगे लड़ाई जोर ।
आपस में सब मिल के, करने लगे सोर ॥११५

तब रात को मिल के, जने पनरे आए[१] ।
जी साहेब बैठे हते, आगे हुसेनी बचाए[२] ॥११६

इत बैठी मजलस, भर के बाजू दोए ।
मोमिनों आगे किताबें, रेहलों पर धरी सोए ॥११७

१—३—ह० आए जने दस बारह । २—ह० आगे हुसेनी बाचे उस्तवार ।

दोऊ बाजू दीवी पीतल की, है बड़ी जोत रोसन ।
चरचा आपुस में करें, जी साहेब संग मोमिन ॥११८

[इक्कीसवां विश्राम सम्पूर्ण]

देख दजाल मजलस, करने लगा सोर ।
ए भगत जी क्या है, हम करें लड़ाई जोर ॥११९

तुम टीका माला पेहेनत, क्यों पढ़त कुरांन ।
ए रवा है नहीं, जो तुम कहो सुनो फिरकांन ॥१२०

तब जी साहेब कह्या, हम बरजत हैं तुम ।
हम खुदाए रसूल की मोहोबत, बांटत आपुस में हंम[1] ॥१२१

तिनकों तुम ढांपत, ए तुमें किन फुरमाई ।
तब जहांन महंमद बोलिया, तुमें किने एह बताई ॥१२२

में तो तुमारा उस्ताद, तुम मोसों लेत तालीम ।
अब बातां करनें लगे, बड़े होत अजीम ॥१२३

यों करते जोस मिहीन को, जबराईल हुआ जोर ।
आया जोस गाजी खांन को, दजाल डरा देख सोर ॥१२४

आया जोस अब्बल खांन को, और जहान महंमद ।
यारो उठो जिमी फिरी, इत उड़ गई सब हद ॥१२५

१—ह० बाधत आपुस मे हम ।

ए भगत जी हम जात हैं, हमको करो मांफ ।
हम तो आए दीदार को[1], हमारे दिल हुए साफ ॥१२६

उठ भागे यों केहे के, जाए सिपाह में किया सोर ।
यारो बड़ा जादूगर, हमारो कछू ना चला जोर ॥१२७

इन समें भाव सिंघ का, बाका हुआ जब ।
तब जोर किया दजालने, सोर बड़ा हुआ तब ॥१२८

फते महंमद ने तिन समें, किया चाकरों को हुकम ।
ढूंढ काढ़ो वेरागी, दें कैद में हम ॥१२९

जी साहेब उनके पुरे, रहे जाए हवेली पास ।
उत मुल्लां के घर, करत तिनका विसवास[2] ॥१३०

लगे कुरांन उतारने, लोभ दिखाया तिन ।
ओ तो राजी भया, बैठे लाल दास चरन ॥१३१

तीन दिन तहां रहे, वे ढूंढे सहर में ठौर ।
भवानी भट मिल्या, किआ तिन पर जोर ॥१३२

वरियाए के भग के छूटा, ए जो भट भवानी ।
हमें देखायो वेरागी, हंम ढूंढ थके अपनी ॥१३३

तब भड़कल दरवाजे, लोकों दिया जवाब ।
वेरागी तो जात रहे, अब जिन भटको इन बाब ॥१३४

१—ह० हमतो अब जात हैं । २—ह० करते न काहू बिसवास ।

जहान महंमद आइया, फतू अल्ला के घर ।
तहां वेरागी देख के, पूछी जी साहेब की खबर ॥१३५

जी साहेब बैठे हैं, इसी हवेली में ।
ए तो ठौर दजाल की, तुम डरत नहीं इनसे ॥१३६

इनके आदमी तुम को, ढूंढत फिरे सब ठौर ।
ए मुहल्ला फतुलाका, ए लड़ेगा तुमसे जोर ॥१३७

सिताब निकलो यहां से, मोहे देखाओ जी साहेब ।
साथ ल्याए कदमों, हकीकत कही तब ॥१३८

जब लगा दिन डूबने, चले जी साहेब लालदास[१] ।
तपसीर लिखते मुलां के, छोडी तिन की आस ॥१३९

बुलाए ल्याए चरन दास को, ले तपसीर छोडी ठौर ।
सात कोस चले गए, भया भाव सिंघ लसकर भोर ॥१४०

तहां से राह चल के, मिल्या राह में भीम सेन ।
तिन कों ल्याए बूढान पुर, कही बीतक इन[२] ॥१४१

मैं आया तुमारे दीदार कों, कोईक दिन रहे कदम ।
तिनसेंस्वाललिखाए कुरांन के, लेजाओ मलूकचंद तुम॥१४२

भेजे ओरङ्गा वाद, फतूअल्ला ऊपर[३] ।
एक हिदातूल काजी पर, एक दीवान खातर ॥१४३

१—ह० श्री जी साहेब जी भेले लालदास । २—ह० कही बीतक सब ऐन ।
३—ह० फतू अल्ला पर ।

जिलदे तीनों पर, अरौ लिखी हकीकत।
रुका दलेल खांन पर, दई हकीकत क्यामत ॥१४४
वीर जी औरङ्गावाद, सेख बदल दलेल खांन[1]।
इनें आकोट से विदा कियो, क्यों होए पेहेचांन ॥१४५
मेहमत कहे ए मोमिनो औरङ्गाबाद की बीतक।
अब आकोट की कहों, जो बीतक बुजरक ॥१४६
प्रकरण ॥५१॥ चौपाई ॥२४७८॥

[छः दिन का उल्लेख]

अब तुम सुनो मोमिनो[2], सुकराना करो याद।
एक बात तुम ऊपर, देखाऊं तुमें बुनियाद ॥१

इन जिमी में आज लों, वेद कतेबों करी खोज।
पर अख्यर ठौर न पाइया, त्रगुन थके खोज ले बोझ ॥२

और जो कोई खोजत, ले तिनके सुकन।
जिनों नेत नेत पुकारिया, खबर नहीं इन[3] ॥३

तिन की खोज सें, मकसूद ना होवे किन[4]।
सो सारे जाहेर कर, ले बैठाए उत मोमिन ॥४

अख्यर अख्यरातीत की, काहू नहीं पेहेचान।
कर पकर बताया मोमिन, द्रढ दिया ईमान[5] ॥५

१--ह० सेख बदल लालखान। २—ह० अब तुम सुनियो साथ जी। ३—ह० खबर नही त्रगुन। ४--ह० मकसूद ना होवे किन। ५—ह० सो कर पकर बताइया, द्रढ कर दिया ईमांन।

दे गुन पख इंद्री साहिदी, और सास्त्रों के वचन ।
और भाषा सब साधों की, सब सिफत करें मोमिन ॥६

जो नहीं अख्यर को जाग्रत में, धाम अंदर की सुध ।
सो मोमिनों कों दई, हिरदें जाग्रत बुध ॥७

तिन बुध सङ्ग तारतम, सब हकीकत धाम[1] ।
सो वतन मोमिन का, जाहेर किया इस ठाम ॥८

धाम अंदर बीतक, सङ्ग मूल सरूप बिहार ।
जो बात मूल सरूप के चित में, ताको मोमिन खबरदार ॥६

जो अख्यर पावें नहीं, तो त्रगुन पास क्यों होए ।
सो सुपन के जीवों कों, सब ठौर बताया सोए ॥१०

ए मेहेर मोमिनों पर, सबो पाया इनों सोहोबत ।
एह समे हकें किया, फरदा रोज क्यामत ॥११

इन भांत मेहेर मोमिनों पर, कै अलेखे अपार ।
सो इन जुबां केती कहों, दिए बातून खोल के द्वार ॥१२

अग्यारे सौ साल का, लिख भेजा अल्ला कलाम ।
खोज करी सब स्रिस्ट ने, पाया ना काहू इसलाम ॥१३

सो अमर इसलाम की, सब हाथ दई मोमिन ।
खुलो हकीकत मारफत, सब तलें इनके इजन ॥१४

१—ह० सब कही हकीकत धाँम ।

जो आया इनके हुकंम तले, सो आए बीच इसलाम ।
सो बका हो चुका[1], जिन खुले रब्बानी कलाम ॥१५

एह तो बातून की, मेहेर है ऊपर रूहन ।
और ऊपर मेहेर वजूद के, सो जाहेर देखो मोमिन ॥१६

पेहेले मूल ब्रज मिनें, जेते पड़े विघन ।
सो सारे दफे हुए, हुए संसार धंन धंन ॥१७

आज लों ब्रह्मांड में, सब वंदे ब्रज रेन ।
पावत नहीं ब्रह्मादिक, तित थे मोमिन बीच चेहेन ॥१८

फेर आए बीच रास के, कह्या दूसरा दिन ।
ना सुनने त्रगुन कों, तहां खेले मोमिन ॥१९

सब कोई वांछे तिन कों, पावे नहीं खबर ।
अखंड की, पावे नहीं कोई फजर ॥२०

रास रात ढूंढन की, अटकल करें अनेक ।
हाथ कछू न आवहीं, बिन मोमिन न पावे एक ॥२१

रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम ।
सो वास्तें मोमिन के, पूरन हुए मनोरथ काम ॥२२

एह दिन तीसरो कह्या, माजजे देखाए अनेक ।
अग्यारे सै बरसमू कह्या[2], कोई अरथ न पावे हरफ एक ॥२३

१—ह० पो सब उसका हो चुका । २—ह० अग्यारे सै बरस आगे कह्या ।

दिन चौथे मिनें, धरा रसूल कदंम।
तिन पावने सुजना किया[1], जागे नहीं कोई आतंम ॥२४

हकीकत रूहअल्ला कही, सौ बरस रखी छिपाए।
धरे कदंम दूसरा, दई रूहों कों पोहोंचाए ॥२५

एह दिन पाँचमां, इमाम की इमामत।
सो दरबाजा जाहेर किया, फरदा रोज क्यामत ॥२६

ए तीनों सूरत रसूल का, ए वास्ते काम मोमिन।
कै लोकों देखाए माजजे, तोहे न पतीजे मन ॥२७

अब छठा दिन जुमें का, तहां मोमिन जमा भए।
ए सब होत तिन वास्ते, सुकन जबराईलें कहे ॥२८

एह माजजे मोमिन देखहीं, सब पांचो दिन के।
होए वारस बैठे बाप के*, सब मता आया इन पे ॥२९

सो जाहेर करत हैं, करने को पेहेचान।
पेहेले मोमिन ईमान ल्याए, पीछें सब खलक सुने कान ॥३०

मेहेमद के माजजे, सो जाने इसलाम।
बातून मोमिन जानहीं, और जाहेर तमाम[2] ॥३१

कै काफरों गुलाबा किया, मानें नहीं पैगाम।
तिन सबों के सिर भांन के, ल्याए जाहेर इसलाम ॥३२

१—ह० तित पाउ सुजना किया। *विशेष ग्रन्थ बीतको मे "होए वारस बेठे बाप के" ऐसा पाठ मिलता है। २—ह० श्राम।

जो मिल्या जिन भांत सों, तिन सों मिले तिन विध।
अंदर मेहेर जाहेर केहेर, ए भई महंमद की सिध ॥३३

नबी की नबूवत, बैठे जानी न किन।
तो ए लड़ने कों सामे खड़े, आकीन न आया जिन ॥३४

जइ वोए आई इसलाम की, वोही आए बीच दीन।
तिनकी नसल जो चली[1], ताए बढ़ता गया आकीन ॥३५

बढ़ते बढ़ते बढ़या, आम आए बीच दीन।
तेही महंमद के वास्ते, लड़ें काफरों से ले आकीन ॥३६

ए अग्यारे सौ साल लों, बढ़ा दीन इसलाम।
किया था बाएदा तिन सों, हक फेर आवेंगे इन कांम[2] ॥३७

मेरी तीन सूरत कों, पेहेचानियो तुम।
वसरी मलकी हकी, तुमें देखावें हम ॥३८

ए पोहोंची नजीक खुदाए के, तित[3] काहू की न गम।
ना फिरस्ते नजीकी ना मुरसल, ल्याइओ ईमान तुम ॥३९

गिरोह रब्बानी उतरे, हम आए तिन वास्ते।
तुम उमेदवार तिन के, तुम पेहेचानियो मुझे ॥४०

ए कलाम रबानी उतरे, सो वास्ते मोमिन।
इन खोल कोए न सके[4], बिन मेरे दिल रोसन ॥४१

१—ह० बढी। २—ह० तिन ठॉम। ३—ह० जिन। ४—ह० तिन तैं। कोई ना ले सके।

इन बात सें जानियो, एही मोमिन सकें पेहेचान।
जिनकी असल अरस में, हकें दिया ईमान ॥४२

और कोई ना समझें, पेहेले न आवे ईमान।
बिना अंकूर क्या करें, होवे नहीं पेहेचान ॥४३

हकीकत मारफत के, खोल दिए दरबार।
देखत अचरज होवही, पोहोंचे न परवरदिगार ॥४४

सातो निसान क्यामत के, लिखे बीच बातून।
मोमिन देखे जाहिर, हुए जिनके दिल रोसन ॥४५

हजरत ईसा आइया, ल्याया कुंजी गंज कलाम।
पेहेचान भई मोमिन कों, आए बीच इसलाम ॥४६

आया दसमी सदी मिनें, बातिन हुई जाहेर।
रहे बरस चौहत्तर, चीन्हें ना कोई बाहेर ॥४७

कै माजजे तिनके, हुए बीच जिमीन।
इलम लुदंनी ल्याइया, पड़ा ना काहूं चीन ॥४८

सोर किया दजाल ने, नजल के बखत।
एह मोकों मारेगा, बखत फरदा रोज क्यामत ॥४९

पेहेना जामा दूसरा, आए बैठे बीच ईमान।
तब दजालें जानिया, इनें मेरे मारने का काम ॥५०

तब इनके सामना, लड़ने हुआ तैयार।
मोमिन मुझसों छोड़ाएके, पोहोंचावें परवरदिगार ॥५१

मेरा जोर इन सें, चलत नहीं लगार।
तिसवास्ते क्यों छोड़हों[१], चार फौजें करों तैयार ॥५२

एक बेईमान औरत, और बाजे बजावनहार।
तीसरे पढ़ने वाले इलम के, चौथे जादूगर हुसियार ॥५३

जहाँ काहूँ पावे मोमिन, खेंचें अपनी तरफ।
जिन में ईमान असल का, सो सुनो ना एक हरफ ॥५४

लगा सूर फूंकने, असराफील करनाए।
सन एक हजार नब्बे सें, सुन मोमिन दौड़ के आए ॥५५

काफर कै दिल बैठ के, बड़ा जो किया सोर।
पर मोमिन उतरे अरससें, ताको चित ना हुआ मरोर[२] ॥५६

खेस कबीला कुटंम, सब दजाल का लस्कर।
तिन में सें छोड़ के[३], पोहोंचाए अपने घर ॥५७

निगेवांनी जबराईलें, करी ऊपर मोमिन[४]।
साफ रखें सबों अङ्गों, दिल रहे हमेसां रोसन ॥५८

जब अदा[५] करने फजर कों, लगा पोहोंचावने पैगाम।
तब दजालने चीन्हिया, ए मारे मुझे इमाम ॥५९

१—ह० तितवास्ते छोड़हो। २—ह० ताका हुआ ना चित मरोर। ३—ह० तिनमें से छोड़ाए के। ४—करी ऊपर रुहन। ५—ह० याद।

तिनसों लड़ने कों, बांधी कंमर जोर ।
जब पैगाम पोहोंचाया, तब किया बड़ा सोर ॥६०

छुड़ावनें ईमान कों, करने लगा जुलंम ।
पैठ अपने लस्कर में, सकसुभे उठावें कुंम ॥६१

परवरदिगारें देखया, लड़ाई के बखत ।
बुलाया बेतुल्लाह* कों, साहेदी बखत क्यामत ॥६२

सरिअत के सिरे सें, लिखे वसिअत-नामे चार* ।
तिन में खबर क्यामत की, पर काफर करें न विचार ॥६३

दजाल दिल सबन के, जोर बैठा दुसमन ।
जब पोहोंचा नामें बसिअत, धोए डारे सबन ॥६४

जब इमाम ने[1], पोहोंचाया पैगाम ।
तब दजाल कंमर बांध के, लड़ा सामे इसलाम ॥६५

एह सुरू मेरते सें[2], भेजे पैगंमर ।
राठोर जसवंत को[3], जाए देओ खबर ॥६६

जब पैगाम गया उन पें, सो सुन्या नहीं कांन ।
आजूज माजूज जो मारिया, बिना देखे ईमांन ॥६७

फेर आए डिल्ली सेहेर में, तब भई सामी सरिअत ।
ए आया हमें उठावनें, फरदा रोज क्यामत ॥६८

---

*मक्का । *विशेष 'बसियतन ना' बडा मसौदा मे है । १—ह० जब इमाम साहेब ने । २—ह० ऐसे समे मे मेरते से । ३—ह० राठोर जसवत सिंघ सो, जाए कहो खबर ।

बात न सुने इनकी, अपनी सोहोबत में।
घेर लिया सुलतान को, बात न करें इन से ॥६९

जो पैगाम पोहोंचावहीं, तिन कों डारे मार।
ताबे सब दजाल के, हुए न खबरदार ॥७०

जब सुलतांने सुनी, दौड़ा तरफ ईमान।
तब दजालें आड़े आए के, भांन दई पेहेचान ॥७१

बस-बसा करने लगा, ऊपर छाती के।
छूटत तुम सें साहेबी, क्यों मानत हो ए ॥७२

जो मेरे ताबे रहोगे, तो करो पातसाई तुंम।
जो ताबे होत इमाम के[1], तो तुम पर होत जुलम ॥७३

इत दजालें आए के, कह्या मोमिन सें।
मेरी पातसाही में, खड़-भड़ पाड़े तुमें[2] ॥७४

इहाँ सें जाओ भाग के, कैद में करों तुम[3]।
मोमिन डरे न तिन सें[4], ताबे हुए हक हुकम ॥७५

दजाल गुस्से होए के, पैगाम दिया भांन।
मोमिन कैद करके, फेरी द्रिस्ट सुलतान ॥७६

तब सुभान देखया, तखत सें दिया उठाए।
सहे कै कसाले मोमिनों, पनाहमें लिए बचाए ॥७७

१—ह० इत आए के दजाल ने। २—ह० क्यो खड-भड पाडी तुमे। ३—ह० न तो

उदेपुर आए पोहोंचे, दिया राणे को पैगाम ।
तित दजाल बैठा था, लड़ा साथ इमाम ॥७८

पीछें सुलतान आए के, मार उठाया तिन ।
राखे पनाहमें इनको, पोहोंचे मंदसोर मोमिन ॥७९

तब हक सुभान सों, इनों करी अरज ।
सोर दजाल का देख के, वास्ते उमंत के गरज ॥८०

अरज सुनी सुभान ने, जबराईल भेज दिया ।
दे दस सिपारे कुरान के, बोहोत खुसाल किया ॥८१

तहां सें उज्जेन में, रहे केतिक दिन ।
वास्ते दीन इसलाम के, थे कोई कोई मोमिन ॥८२

बुढ़ानपुर सें होए के, पोहोंचे औरङ्गाबाद[1] ।
बुलाए भावसिंघ ने, हुआ कछुक स्वाद[2] ॥८३

अपने अंकूर माफक, लाभ हुआ इनें ।
लगा माजजा मांगने, बाका हुआ तिन सें ॥८४

इत दजाल ने[3], करी बड़ी तलास ।
राखे मोमिनों कों पनाह मिनें, भांनी दजाल की आस ॥८५

भेजा संदेसा खुदाए ने, बनी असराईल करो याद ।
तुम पीछे लस्कर फेरून की, सो मैं खबर दई बुनियाद ॥८६

१—ह० पोहोचे नौरंगाबाद । २—ह० हुआ कछुक इने सबाद । ३– इन समे इत दजाल ने ।

दई तुम कों मैं कुलजम, इन कों किया गरक।
पढ़ो मेरे कलाम कों, भागे सारी सक ॥८७

मेहेमत कहें ए मोमिनो, सुकराना ल्याओ बजाए।
दजाल सों लड़ाए के, और क्यों कर लिए बचाए ॥८८

॥ प्रकरण ॥५२॥ चौपाई ॥२६६२॥

* लालदास लसकर [ग्वालियर] को गए *

वहां सें आए बुढ़ान पुर, फेर पोहोंचाया पैगाम।
भई लड़ाई सरीअत सों, बीच दीन इसलाम ॥१

लाल पैगाम लेअके, गया उत सरीअत।
किआ[1] काजी सों मुलाकात, लिख के भेजी तित ॥२

काजी अंदर बुलाए के, पूछने लगा कलाम।
कहां हते क्यों कर आए, जवाब दिया इनठाम ॥३

हम कों हादी भेजया, तुम पर सेख इसलाम।
हम कों जवाब दीजियो, जो भेजे तुम पर कलाम ॥४

पेहेलें तुम पर ल्याइया, मलूक चंद अजमेर।
स्वाल कलाम अलाह के, ताको जवाब करो इन बेर ॥५

तब सेख इसलामें कह्या, ए तुम खोलो कलाम[2]।
हम कहें तुम कों, जथारथ इस ठाम[3] ॥६

१—ह० करी। २—ह० ऐ तुमे खुले कलाम। ३—ह० ऐ यार था इस ठाम।

प्रात समे तुम आइयो, तुम कों कहें हम ।
अब तो हम जात हैं, प्रात को कहिओ तुम ॥७

दिन दूसरे प्रात कों, गए लाल नूर महंमद ।
जाए के मुलाकात करी, जो साहेब सरीअत हद ॥८

भई बातें सेख इसलाम सों, तहां बैठे थे जने चार[१] ।
मगाए किताब स्वाल की, करने बैठे बिचार ॥९

बोले लोग सरीअत के, ए तो लिखी गलत ।
तब लालें जवाब दिया, क्या कहें तुमसों इत[२] ॥१०

हदीसा कुरान को[३], तुम नाम धरत[४] ।
तो तुमसों हम क्या कहें, दावा रोज क्यामत ॥११

तब सेख इसलाम कह्या, हम ना कहेंगे गलत ।
ए लिखने में चूक है, हैं उमियों के दसकत ॥१२

तब लाल जवाब दिया, इनका बांक कछुए नाए ।
तुम माएना ल्यो अंदर का, तुमे तासों पेहेचान होए[५] ॥१३

लै किताब जो हाथ में, बैठा दिल पर दुसमन ।
तिन दिल फिराइया, तब[६] लड़े साथ मोमिन ॥१४

जवाब ना होवे स्वाल का, पोहोंचे न हकीकत ।
तब गुस्सा लेयकर दिल में[७], बात कही मोहे सखत ॥१५

१—हृ० तहा बैठे थे चार । २—हृ० कहा कहे तुमे इत । ३—हृ० की । ४—हृ० तुम नाम धरत इन । ५—हृ० होए पेहेचाँन तासो ताँहि । ६—हृ० तित । ७—हृ० तब गुस्सा लेअकें ।

फेर नवा किताब में, ता[1] बीच अल्ला कलाम।
तुम ए तो बात झूंठी लिखी, ल्याए कीना इसलाम ॥१६

काढ़ डारो किताब को[2], यों बोलन लगे सब।
लाल कों गुस्सा चढ़या, लई हाथ सें किताब तब ॥१७

फेर काजीने कह्या, ए किताब राखें हम।
लै लाल के हाथ सें, दई अपने खादम ॥१८

[बाईसवां विश्राम सम्पूर्ण]

तब काजी झुक के, करने लगा जवाब।
अब तुम कहा कहत हो, हमकों इनके बाब ॥१६

तब लालें देखया, फेरी द्रिस्ट जो इन।
इन मारने का मन में लिया, एह बात ना सुने कान ॥२०

तब झुक के काजी कह्या, मन में धर के रोस।
तुम हमसों कहा कहत हो, हुआ इन पर बड़ा अपसोस॥२१

तुम दावा करत हो, हमसों इमामत।
एही बात बेर बेर कहें, लालें जवाब दिया इत ॥२२

हम तुमसों कहा कहें, केहेवत हो हजरत तुम।
एही बात कहत हैं, इत क्या कहें हम[3] ॥२३

१—ह० तिन। २—ह० बडा डर किताब का। ३—ह० ऐता कहत है हम।

तब बोला सेख इसलाम, उन राह पाए नाए ।
तब लाल गुस्से भया, ना चाहीए काढ़ो जुबांए ॥२४

अब हम तुम कों, कबहूं न दे पैगाम ।
अब हम फेर जात हैं, ले अपने घरों इसलाम ॥२५

पीछें लगे बुलावने, सोहोवत के सब जन ।
निकली मोंह से मुनकरी, कबूं मोह न देखे तिन ॥२६

वहां सें चल के आए, घर मुफती अबदुल रेहेमान ।
तिनसों मिलाप करकें, कह्या पैगाम सुभान ॥२७

कही हकीकत सरीअत जो, जो भई सेख इसलाम ।
करी मुनकरी इन ने, हम पोहोंचाया पैगाम ॥२८

अब हम तुम कों कहत हैं, जो हमें कछू आवे दोस ।
तो हम ना कहे[1], पीछें बड़ा होसी अपसोस ॥२९

हम तुम एक वतन के, तिसवास्ते उमेठत हैं कान ।
हम देखा रसूल खुदाए का, तुम ल्याओ तिन पर ईमान॥३०

तब जवाब मुफतें दिया, रसूल आवे बखत क्यामत ।
सो तो अजूं दूर है, तुम आज ल्याए क्यों इत ॥३१

क्यों तुम जान्या दूर है, बीच किताब इकतलाफ ।
समझ हमें कछू ना पड़े, क्यों दिल होवे साफ ॥३२

१—ह० तुम कहोगे हम को ना कह्या ।

तब जवाब लालें दिया, ल्याओ किताब तुम ।
सब तारीखें समझाए कें, एह बतावें हम ॥३३

स्वाल देखाए कुरान के, ताकों दिओ जवाब ।
ए तो आगे हो गए, ताके किस्से लिखे किताब ॥३४

बड़ी भूल तुम बीच में, ले डारत किस्से कुरान ।
वे रद जमाने हो गए, तुम को एही पेहेचान ॥३५

ए सारे किस्से आज के, रसूल आए इत ।
सरत लिखी सो भई, फरदा रोज क्यामत ॥३६

आए असहाब रसूल के, जाहेर भए मोमिन ।
आज तुम सों में[1] कहत हों, हमें दोस देओ कोई जिन ॥३७

तीन दिन सोहोबत भई, आया हादी का हुकम ।
अब तुम जिन रहियो[2], ए पाती लिखी हम ॥३८

नारायन दास ले आइया, सुन हक हुकम ।
उते पानी ना पीजियो, सिताब बुलाए तुम ॥३९

ए तो लोग सरीअत के, जिन तुम पर डारे ले तोहमत ।
पोहोरा ए दजाल का, ए दुसमन क्यामत ॥४०

सुन पाती लाल चल्या, संग दास नारायन[3] ।
नूर महंमद आए मिल्या, सरीअत कबहूं न ल्यावें ईमान ॥४१

१—ह० हम । २—ह० अब तुम उत जिन रहियो । ३—ह० सुन पाती लाल दास, संग चला नारायन ।

चले पीछें दिन तीसरे, पोहोंचे हादी कदम ।
मिलाप कर बात कही, जो बीतक भई हम ॥४२

तब सुकराना राज का, बड़ाज देख्या इत ।
काल के मुख थें काढ़ के, राखे पनाहमें साबित ॥४३

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए बीतक बुढ़ानपुर ।
अब कहों आकोट की, राखे पनाहमें ज्यों कर ॥४४

॥ प्रकरण । ।५३ ॥ चौपाई ॥३००६॥

[आकोट की बीतक]

सिपारे दसमे मिनें, पाने सताईस मिनें बयान ।
किया मोमिनों सों मजकूर, ·सरे के सैतान ॥१

मेहेतर था कीनान का, काजी सरे का जेह ।
रसूल की दावत सें, मुनकर हुआ एह ॥२

जब मिल्या मिलावा मोमिनों, रुजू हुई सब जहान ।
दिन छठा जुमे का, हुई पेहेचान इमाम ॥३
बैठे बातां करने, जिन में जो बीतक ।
दै साहिदी मोमिनों, गुझ खिलवत जहूर हक ॥४

तब काजी हुआ मुनकर, मोसों नाहीं मजकूर ।
रुबरु हुए मोमिनों, सब बोलत झूठा जहूर ॥५

सब को दई लानत[१], सरे के सैतान ।
दुनिया में जाहेर भई, इन मारी राह सुभान ॥६

तो सरे के सैतान पर, सब की हुई लानत ।
हम को लेने ना दई, हकीकत जो मारफत ॥७

मेहेमत कहें ए मोमिनो, ए लिखा बीच फुरमान ।
मोहोर करी दिल आंख पर, और जुबान कान कुफरान ॥८

॥ प्रकरण ॥५४॥ चौपाई ३०१४ ॥

बुढ़ानपुर से आकोट, तहाँ रहे महीने चार ।
खबर लई सब साथ की, करने लगे विचार ॥१

एक लिखो फतूलापर[२], रहे बीच औरङ्गाबाद ।
तिन कों स्वाल कुरान के, लिख भेजे हैं आद ॥२

और हकीकत लिखी, तुम लड़ने बाँधी कंमर ।
होत दीन एक महंमदी, तुम आड़े भए तिन पर ॥३

आवते थे इसलाम में, क्यों[३] मारी सबन की राहे ।
बिन समझे बातां करी, दुसमन हुए खुदाए ॥४

अब स्वाल पठए तुम कों, तुम तिन का दीजो जवाब[४] ।
जो तुम पढ़े आरफ, तो कहो इन के बाब ॥५

१—ह० सबो ने दई लानत । २—ह० एक लिखो फलू अला पर । ३—ह० तिन ।
४—ह० अब स्वाल पढ़े ऐ है, तिनको दीजो जवाब ।

हम आवत है दीन में, हमको करो मुसलमान ।
दीन महंमद के दखिल करो, होए तुमारे गुलाम सुने कान॥

हम कों समझाओ तुम, रबानी कलाम ।
जो लिखा सो सब करें, करो दाखिल बीच इसलाम ॥७

तब तोड़ी तुम कों, खाना पीना हराम ।
जो लों हमारी निसां ना हुई, तो लों जिन करो कोई काम ॥

हम लाखों कबीले हिंदुअन के, होत दाखिल इसलाम।
एह काम छोड़ के, और कहा करो इस ठाम ॥६

जो सिफत कुरान में, लिखी नाजी फिरके की ।
जो तुम हो उन में, तो देव खबर वही उतरी[१] ॥१०

जो रूहें दरगाह में, कही गिनती बारे हजार[२] ।
जो तुम हो तिन में, तो करो हम कों खबरदार ॥११

जिन रूहों का मरातवा, लिखा अमेत-सालून ।
उन[३] मानंद कोई नहीं, तुम देखो जवाब हो कौन ॥१२

मोमिन नूर बिलंद सें, उतरे दुनियाँ में ।
जो तुम हो उन कोम में, तो करो जवाब हम सें ॥१३

बीच नसारों की गिरोह मिनें, लाहूत का निसान ।
जो तुम हो तिन में, तो कर देखो हमें पेहेचान ॥१४

१—ह० तो कहो खबर वही उनरी । २—ह० कही महमदे बारे हजार। ३—ह० तिन ।

जो लिखी सिफत जहूदन की, बीच अल्ला कलाम ।
जिन बीच महंमद, करें पातसाही तमाम ॥१५

जो तुम हो उन में[1], तो हम कों देओ खबर ।
गिरोह बनी असराईल की, जो है सब ऊपर ॥१६

जो तुम हो उन में, तो कर देओ हमें पेहेचान ।
बांध्या बनी असराईलें, क्यामत का निसान ॥१७

जो तुम हो तिन में, सो निसां करो तुम ।
जो जवाब न आवे तुमें[2], तो बताए देवें हम ॥१८

इन भांत के निसान, लिख भेजे उन पर ।
जवाब ना आवे तिनकों, हुआ सरमिन्दा यों कर[3] ॥१९

यों ही एक लिखा काजी पर, हिदातुल जाको नाम ।
एकलिखाअमानतखांदिवानपर,रुक्का बहादुरखानइनठाम

यों बैठ के आकोट में, पोहोंचाए पैगाम ।
पर दिल मुरदे ना पावहीं, पेहेचान दीन इसलाम ॥२१

इहां भाई से भाग के, आया अब्बल खांन ।
रही न सके माया मिनें, जाको हक पेहेचान ॥२२

बोहोत दिलासा करी, बीच तरबियत इसलाम ।
तुम कों दुनियां न लगे, हम जब बैठे एकै ठाम ॥२३

१—ह० जो तुम हो तिन मे । २—ह० तुम को । ३—ह० सरमदे हुऐ यों कर ।

तब तुमें बुलावेंगे, जिन तुम हो दलगीर ।
तुम हमारी आत्मा, सांचे तुम सूरधीर ॥२४

तुम चार दिन रहो भाइयों भेले, अब रोसन होत है काम ।
तुम बैठे अरस अजीम में, निज बतन जो धाम ॥२५

आकोट के चौधरी, ताकों भई पेहेचान ।
जो लौकिक गुरु मानियो, इतना था ईमान ॥२६

बार दो चार अपने घर, बुलाए करी मनुहार ।
अरोगाए भली भांत सों, कर आचार विचार ॥२७

साथ सब कों बुलाए, लेने परसाद कों ।
साथ राज के संग, बैठाए अपने कबीले मों ॥२८

चरचा कीरंतन सेवा को, लियो सुख माफक अंकूर ।
तहां रहे तिन माफक, हुआ उत तैसा मजकूर ॥२९

उत आया एक ब्राह्मन, सुनने कों चरचा ।
परगने बरार के, हाकिम का गुमांस्ता ॥३०

तिन सुनी चरचा कबीर की, लगे कलेजे घाओ ।
खुल्या द्वार हकीकत का, ऐसा लगा आए दाओ ॥३१

भूल गया सरीर को, नजर पोहोंची बका में ।
और सान कछू ना रही, हुआ सब तुम हीसें ॥३२

घरों जाए पीछें फिरे, ज्यों कोरी[1] के।
आए जाए फिर-फिर फिरे, नजर भई इनें ए ॥३३

जो बात पूछे उन कों[2], तो कहे तुमही हो तुम।
और न मोहों सें काढ़हीं, तुम पें आए हम ॥३४

जो चरचा कर समझाइए, तो बोल न निकसे और।
चित उन का लगा, मूल अख्यर के ठौर ॥३५

पीछें फिरताई रहे, समे प्रात के नदी पार।
(श्री) राज दातोंन करत हैं, पैठा नदी में होए हुसियार ॥३६

समेत पनही चला गया[3], गिर पड़या बीच में।
सुध ना सान सरीर की, गिरी पाग तरे उन सें[4] ॥३७

पैठे मोमिन दोड़ के, निकाला नदी सें।
कपड़े सुकाए पेहेनाए, कछू सुध ना रही उनें ॥३८

पूछा उनें रसोई की, कह्या चौका भए दिन तीन।
मैं जानत नहीं कछूए, ए लोकों कह्या आकीन ॥३९

एह भांत इन का फेर, पीछा हटाया चित।
फिरावे फिरे नहीं, उन के भाई बुलाए इत ॥४०

डोली में बैठाए के, पोहोंचाया अपने ठौर।
अंकूर माफक तिन लिया, पावे ना ज्यादा और ॥४१

१—ह० ज्यो तान। कोरी के। २—ह० जो बात कहो उनको। ३—ह० समेत कपड़े चला गया। ४—गिरी पाग उतर उनसे।

कापस्तानी रामटेक तथा रामनगर की बीतक

सुकदेव ब्राह्मण था, मूलक राने का[1]।
उन आतम सोंपी कदमों, अंकूर जेता तेता सुख लिया ॥४२

वहां से फेर चले, आए कापस्तानी।
तहां बैठ चरचा करी, गिरोह जान अपनी ॥४३

तहां ईमान ल्याइया, दगड़ा और दत्ता।
अमराजी आइया, सुन थोड़ी चरचा ॥४४

और कुटंम कबीला अपना, ल्याया बीच दीन।
तामें अमराजी रहे गया, जिनका बका आकीन ॥४५

तित[2] दिन दस पांच रहिके, फेर[3] एलचपुर पोहोंचे।
तहां एक परसाजी ने, खिजमत करी ए ॥४६

जो तुम इते रहो, तो मैं सेवों तुमें।
जुवारी मेरे बोहोत है, मैं सेवा करों तिन सें ॥४७

तिन चार दिन सेवा करी, उछव रसोई।
फेर तहां सें चले, केतिक मजलें राह में भई ॥४८

मिला फकीर एक सङ्ग का, तिन साखिआ दे करी सेव।
सुन चरचा गलित भया, पाया नहीं भेव ॥४९

तहां सें आए देवगढ़, तहां रहे दिन चार।
रामटेक का राजा था, तहां किया न किन विचार ॥५०

१—ह० मूलक उदेपुर का। २—ह० फेर। ३—ह० आए।

उहाँ से चल के, आए रामनगर ।
भई मजलें दरम्यान में, है सुख सब ऊपर ॥५१

एक समद घोड़ा, असवारी कों हाजर ।
राज तापर विराजत, सङ्ग मोमिनों का लसकर ॥५२

तहां मांगत टूक्का चलही[1], झोरी भर ल्यावे ।
श्री राज को अरोगाए के, साथ कों बांट देवे ॥५३

सब साज फकीरी का, सोभित सब सनंध ।
मोमिनों भेष पेहेनवा[2], क्यों पेहेचाने अंध ॥५४

एक लड़ाई दजाल ने, करी राह दरम्यान[3] ।
भई गोंड़ों के गांउ मिने, करी बिन पेहेचान ॥५५

रामनगर आए पोहोंचे, रहे केतकी पर ।
तहां अस्थल बनाए के, गनेस महंत के बराबर ॥५६

पेहेलें आए छते मिले, अपने कबीले समेत ।
और आया सुखाई, और चूडामन इत ॥५७

और कुंजा बीरजी, और राम रतन ।
और गंगा संता बेटी, कुसल्या जातमाल मोमिन ॥५८

और सूरत सिंघ आइया, अपने तन मन धन ।
और देवकी नंदन ईमान से, और सूरती देत स्रवन ॥५९

१—तहाँ मागत टुकड़ा चलही । २—ह० मोमिनो भेख पेहेचानया । ३—ह० ऐक लड़ाई राह मे, दजाले करी दरम्यान ।

और जगन्नाथ जातमाल, ए आए एचदे से।
मकरंद दास जातमाल, और कबीला दाखिल इन में ॥६०

गोकल दास जातमाल, ले कबीला समेत।
और सुन्दर दास आए, ईमान मुख कहत ॥६१

और जेनती आइया, मालजात कबीला[१]।
सो[२] पीछे से बुलाया, आप पेहेलें ईमान लाइया[३] ॥६२

और हीरामन बढ़ई[४], और लड़ेती आई।
चंदा ईमान ल्याई, कबीला पीछें लाई[५] ॥६३

और आया सुंदर, था नानक पंथ में।
और ननियां आई, लाली आस न इन से[६] ॥६४

और मूसे खांन पठान, आया बुढानपुर से।
ईमान ल्याए घरों गया, रह्या कबीले में ॥६५

और रंचो बडान[७], जेन्ती काकेकी उपली पेहेचान।
आवत हैं दीदार कों, दिल में ले ईमान ॥६६

मुरलीधर राह में, सुन के ल्याए ईमान।
उनकों असल अंकूर की, उतही हुई पेहेचान ॥६७

काहानजी आहेड़ का, सो गया एचदे से।
गोकल और मुकुंद[८], आए इसलाम में तारतम सुनके ॥६८

१—ह० जयन्ती दास जातम.ल, और कबीला लाया। २—ह० फेर। ३—ह० पेहेले आपको इमान आया। ४—ह० और हरीराम भाई। ५—ह० चदा ईमान ल्याय कें, कबीला पीछे ल्याया। ६—ह० बाई लाली आस इन से। ७—ह० और रची बड़ेहन। ८—ह० गोकल दास मकरद दास को।

कोसिल्या ने सुनी, और देमां मथुरी।
और श्री राम राजा राम, और भागो भाग भरी ॥६९

राजू और झगड़ा[1], और राई कुंअर।
इनों सुन्या तारतम, देखा पटंतर ॥७०

हिमोती और खेमा बाई, और आस बाई।
संभू और नीमा[2], और राम कुंअर आई ॥७१

जीवन दास और नवल दास, और आए कल्यान।
और महासिंघ चौधरी, और दोलत खां पठान ॥७२

और पुरना नाऊ, और आसा राम।
और एक आसा लल्लू, और परस-राम ॥७३

और आए सेख खिदर, और अबदुल रेहेमान।
और भिखारी दास, ए ल्याए कबीले समेत ईमान ॥७४

और आए भाई रघुनाथ, और कल्ली आया[3]।
ए रामनगर की मजल, ए तो हिस्से माफक सुख पाया ॥७५

और बुढ़ानपुर सें, आया ब्रंदावन।
और नारायन दास, और बरार का साथ मोमिन ॥७६

लछीदास खेम करन, और आया कंनड़ जे।
और हरकिसुन सुकदेव, और गिरधर वेकैद ए ॥७७

१—ह० राजू और भडारिन। २—ह० मन्ना। ३—ह० कबीला इनका आया।

और खड़गो माता उन की, और आए जगरूप।
चरचा सुनत श्री राज की, सुंदर रूप अनूप ॥७८

और आया रामनगर, ए जो गंगा राम।
और जो आया बदलें, उन पाया आराम ॥७९

पतीराम मोदी, और केसव दास।
और वल्लभ दास संग, और मनिया खास ॥८०

और गिरधर बसंत, और दयाल हसन।
और बिहारी फरास, और बिहारी रोसन ॥८१

और गिरधर दरजी, और सूरजमल।
और गोविंद राए, और मान लालमन निरमल ॥८२

और हिरदे राम, और पहाड़ी जाको नाम।
माता खेम करन की, आई जातमाल के काम ॥८३

और रेवा दास[1] आइया, और आए भगवान।
ए आए पाटण से[2], दमोदर परवान ॥८४

और तिवारी उदई, थी लौकिक पेहेचान।
श्री राज को घरों पधराए के, रसोई करी[3] परवान ॥८५

चांद खांन आइया, चरचा सुनने कों।
दौड़ता था ईमान कों, रहा रामनगर मों ॥८६

१—ह० और देवीदास। २—ह० सीतपुर पाटन से। ३—ह० कराई।

मेहेमत कहें ऐ मोमिनो, ए कही रामनगर की तुम ।
और अर्जू बोहोत है, कहों हक के हुक्म ॥८७

प्रकरण ॥५५॥ चौपाई ३१०१ ॥

एह बात हरी सिंघ सुनी, करने आया दीदार ।
सुजान साह की सोंहोवतें, किया सूरत सिंघ खबरदार ॥१

सुनी चरचा आए के, बोहोत हुआ खुसाल ।
घरों जाए नोंता किया[1], खबर पोहोंचाई हाल ॥२

तुम मेरे घर पधारो, मैं सेवा करों तुम ।
बात उनकी सुन के, भया उसे हुकंम ॥३

हम आवेंगे तुमारे, जाए रसोई करो तैयार ।
उन का भाव देख के, बातें करी मनुहार ॥४

रोज दूसरे उन ने, बुलाए अपने घर ।
बड़ी बैठक कर के, पधराए बिछोनों पर ॥५

सब साथ आए पोहोंचे, बैठाए चौकी पर ।
आप धोती पेहेन के, रह्या पिरसने पर ॥६

जुगतें बैठाए राज को, भली बैठक ऊपर ।
साथ बैठा दोए पंगतीए[2], करें सेवा दिल धर ॥७

१—ह० घरो जाए निहुता किया । २—ह० साथ बैठा दोए पगथीए ।

पातर लगे पीरसने, आप ऊपर ढोलेवाए।
जुगतें अंन पीरसहीं, सब सांमा पोहोंचाए ॥८

ऊपरा ऊपर पीरसहीं, मेवा मिठाई पकवान।
कै जुगतें अथानें, थी ऊपर की पेहेचान ॥९

राज आरोगे साथ सब, हुए हैं त्रपत।
ऊपर बीड़ी तम्बोल की, ले आगे धरी इत ॥१०

ले गए अटारी पर, राज कों एक ठौर।
तहां बैठ बातें करी[1], हाव भाव अत जोर ॥११

मैं तुमारा दास हों, मुझ पर करो मेहेर[2]।
मैं उदास हुआ इत से, ए होवे मेरे जेर[3] ॥१२

हुकम हुआ तिन कों, तेरा होए कारज सिध।
ए बात अंकूर की, आवे न जाग्रत बुध ॥१३

जेता था उनका हिस्सा, तेता लिया उन सुख।
बिदा होए चला दरबार कों, तब पड़ा कसाला दुख ॥१४

और किसोर कुअरने, ए बात सुनी कांन।
तब ऊपर की पेहेचान से, ले आया ईमांन ॥१५

अंदर उनके मोहोल में, केतेक ल्याए ईमांन।
परबंध दजाल के, सो कर ना सके पेहेचान ॥१६

१—ह० तहा बैठे विन्ती करी। २—ह० मेहेनत। ३—ह० ए होए मुझ से जेर इत।

किसोर सिंघ ने अपने, नेवता पठवाए दिया।
पधरावें हम राज कों, चित में चौकस किया ॥१७

उठ आया दीदार कों, चरचा सुनी कांन।
दिल में बोहोत राजी भया, ज्यादा हुआ ईमांन ॥१८

कोईक दिन पीछें, पधराए श्री राज।
साथी सब संग चले, कहे धंन धंन दिन है आज॥१९

रसोई बनाई जुगतें, बैठाए श्री राज।
साथी गिरद घेर के, बैठे इन के काज ॥२०

मेवा मिठाई पकवान, राज आगे थाल धरी।
साथ सबों कों पिरस के, सेवा भली करी ॥२१

भाव देखाया भली भांत सों, हुआ सेवा कों सनमुख।
अंकूर माफक अपने, इन भी लिया सुख ॥२२

एक दासी उनकी आवती, वह ल्याई ईमांन।
देख दीदार हक का, कछुक भई पेहेचान ॥२३

नित आवे दीदार कों, कछुक सांमा ल्याए।
मुजरा कर पीछें फिरे, ताको दे पोहोंचाए ॥२४

आसाराम आइया, था कबीर पंथ में।
चरचा कों आवे नित, सुनता ईमान सें ॥२५

एक ओछव इन किया, दिल में होए खुसाल ।
मैं रहूं कदमों, मुझे एही बगसो हाल[1] ॥२६

इन समे दजाल, जोरा लगा करने ।
आजूज माजूज उतरे, साथी लगे खैंचने ॥२७

रामनगर में हुआ, साथिओं का चलना ।
सुनियो नाम तिनके, जिन सोंप्या अपना ॥२८

ईस्वर दास उदेपुर का, ले चला कबीला संग ।
इनों सोंपी आतम अपनी, पोहोंचा अपने संग कर जंग ॥२९

तूंगा बेटा उनका, था लड़का छोटा ।
भोम लिया अपना, आए धनी की ओटा ॥३०

और धणियाणी रुकमा, रही कोईक दिन ।
पीछें अपने अंकूर पें, जाए मिली गोबरधन ॥३१

और कानजी रामजी, चला आया सूरत सें ।
उन सोंपी आतम अपनी, रह्या छबीला बेटा इनमें ॥३२

सामल दास चलया, जाको चिंतामन नाम ।
था ठठे के साथ में, पोहोंचा अपने धाम ॥३३

निरमल दास चलया, था महाजरो मिने ।
आया सूरत वतन से, सो पोहोंचा ठौर अपने ॥३४

१—ह० मै तुमारे कदमो रहो, मुझे वकसो ए हाल ।

दमोदर आए पाटन से, सोंपी अपनी आतंम ।
रह्या अंकूर माफक सोहोबत, या कों कछूना भई कम ॥३५

संग रह्या कोईक दिन, ए जो फकीर मासूम ।
सो चला इतहीं, ठौर पोहोंची इनकी दम ॥३६

मलूक चंद चलया, था रजपूत राठौर ।
इन लड़ाई करी दजाल सों, हक बिना न रखे और ॥३७

जोरू जो गुलजीय की, हमो उसका नाम ।
ओ भी चली उन समे, छोड़ कार बेहेबार का काम ॥३८

मथुरी बुढानपुर की, चली छोड़ कुटम्ब परवार ।
रही अंकूर माफक सोहोबत, पोहोंची परवरदिगार ॥३९

गरीब फकीर बुढ़ानपुर से, चला बेटा तिनका ।
तिन हिस्सा लिया अपना, जो सुख अंकूर में था ॥४०

लाड़ कुंअर दिलीय की, थी जोरू वणारसी ।
रही हुकंम माफक, जाए अपने सुख रची ॥४१

मानबाई माता नन्दराम की, थी राज की सेवा में ।
सुख लिया ताले माफक, थी नन्दराम सोहोबत सें ॥४२

स्यामबाई बेटी लालबाई की, गढेमें छोड्या आकार ।
सुख लिया अंकूर माफक, फेर चली इन करार ॥४३

गोमा मां खेम दास की, राह मिनें चली।
रही अंकूर माफक सोहबत, जाए अपने ठौर मिली।।४४

सदानन्द तिलोक दास, उदेपुर से आए।
रहे सोहोबत सेवा मिनें, ठौर अपने पोहोंचाए।।४५

इन भांत दजाल ने, साथी लिए छिनाए।
एक कों मजल पोहोंचावें, तोलों दूजी रेहेने ना पाए।।४६

कोईक दिन ऐसा रह्या, फेर दव्या हुकंम सें।
साथ सब दुदला भया, रहे विचार करने में।।४७

इन समें सुलतान का, हुआ हुकंम पुरदल खांन।
रहे रामनगर एक बैरागी, तिनकी तुम करियो पेहेचान।।४८

ए कौन है कहां से आए, है इनका मतलब कौन।
इन सुन हुकम खिदर कों, भेजा ऊपर मोमिन।।४९

आया एहदी होए के, करता बड़ा सोर।
गढे से पुकारिया, किया राजा ऊपर जोर।।५०

मैं आया फकीरों पर, पकड़ देओ मेरे हाथ।
ना तो मुहीम तुम पर, ए चले मेरे साथ।।५१

हुकम पातसाह के, हम आए तुम पर।
जो ढील करो इन बात की, तो होत गुनाह तुम पर।।५२

ए बात राजा सुनी, भेज दिया कोटवाल ।
तुम कहो जाए स्वामी कृस्नदास को, ऐसा हुआ हवाल ॥
चार दिन तुम इहाँ से, बैठो जाए ठौर और ।
फेर के तुम आइयो, बैठियो अपने ठौर ॥५४

पर पातसाही दब-दबा, सह सकें ना हम ।
एक लाठी आवे उनकी, सो फेर ना सके हुकम ॥५५

ताको जी साहेबजी ने, झुक के दिया जवाब ।
हम न डरें पातसाह से, आवे क्यों न सिताब ॥५६

हम तो राह देखत हैं, क्योंए कर बुलावें हम ।
तुम रहो घर अपनें[१], जिन उपराला करो तुम ॥५७

फेर कोटवाल उत जाए कही, राजा सों अरज[२] ।
वैरागी तो यों कहे, हम ना डरें इन गरज ॥५८

आवन दीजै उन को, हम समझेंगे उन सें ।
तुम हमारे उपराला, ना रहियो मदत में ॥५९

तब राजा ने फेर पठए[३], तुम जाए कहो यों फेर ।
हम तुम सों कहत हैं, अरज दूसरी बेर ॥६०

हम अपने धरम से, इसी वास्ते डरात ।
पकड़ ले जावे तुम को, तो सरम हमारी जात ॥६१

१—ह० बैठे रहो घर अपने । २—ह० तब कोतवाल जाय के, करी राजा सो अरज । ३—ह० पठवाया ।

तुम दस बीस कोस, छिपके बैठो जाए।
फेर के इतें आइयो, हम लेंगे बोलाए ॥६२

तब फेर कोटवाल ने, आए के करी अरज।
राजा यों कहत हैं, अपने स्वारथ गरज ॥६३

तब जवाब जी साहेब दिआ, तुम कछू ना करो फिकर।
हम समझेंगे इन सों, आवन देओ हमारी नजर ॥६४

कछू ना चले इन का, जोरा हम ऊपर।
देखतहीं गल जाएँगे, पाती सुन पटंतर[1] ॥६५

जिन तुम अपने दिल में, ल्याओ दग-दगा कोए।
ए आसान होएगा, अग्यां सें जेर होए ॥६६

फेर कोटवाल गया राजा पें, सब कही बात बीतक।
राजा सुन अचरज भया, इनें कछू ना आवे-सक ॥६७

जाए सुबंस राए तुम कहो, डरत नहीं क्यों तुम।
पातसाही लोकन सें, पाछे क्या करेंगे हम ॥६८

जब तुमको पकड़ के, ले जाए हजूर सुलतान।
तब हमारे दिल में, बड़ी होवे बदनामी सुने कान ॥६९

सुवंस राए साहनी आइया[2], कही जी साहेब सों बात।
राजा जो केहेलाए थी, ताकी करी विख्यात ॥७०

१—ह० बानी सुन पटतर। २—ह० सुबसराए सुन आईया।

तब जी साहेब ए कह्या, जिन डरो मन में ।
अपना बल देखाया, कर चरचा उन सें ॥७१

उन[1] जाए कही राजा सों, काहे कों कहो तुम ।
बिना मार अपनी, सब डर बताया हम ॥७२

जहां लग अपना केहेना, सो कहे चुके सब ।
अब उनके दिल में जो आवे, सो करेंगे तब ॥७३

यों करते दिन दूसरे, सेख खिदर पोहोंचे धाए ।
मुलाकात राजा सों करी, पेहेलें एही बताए ॥७४

हम आए तिन काम को, पकड़ देवो वैरागी तुम ।
हजूर में ले जाएंगे, हम को है हुकम ॥७५

जो तुम इनकी रिआयत करो[2], है मुहीम तुम ऊपर ।
के तो इने पकड़ द्यो, ना तो बांधो कंमर ॥७६

तब राजा बोलया, हम सों न कछू काम ।
तुम जाए पकड़ो उन को, ले जाओ अपने ठाम ॥७७

जो तुम आए हम पर, ले सुलतान हुकम ।
सो हम चढ़ाया सिर पर, ले जाओ वैरागी तुम ॥७८

वहां से फेर उठ के, आए उतरे हवेली में ।
भिखारी दास दीवान, बात करी उन सें ॥७९

१—ह० उत । २—ह० जो तुम इन की रछा करो ।

अब हमें क्या करना, क्योंकर पकड़ें हम।
तब भिखारी दास कह्या, पेहेले हमें पठाओ तुम ॥८०

खबर लें हम उनकी, क्या है उनकी बात।
वाकफ उनके होए के, पकड़ लेंगे जात ॥८१

भिखारी दास विदा होए के, आए हादी कदम।
कदमों लाग सेजदा किया, हम आए ऊपर तुम ॥८२

क्या तुमारी खबर है, आया पातसाही फुरमान।
हम आए तुमें पकड़ने, ले जाएं पास सुलतान ॥८३

तब हादी ने कह्या, हम को तो एही चाहे।
जो हम कों ए याद करे, कोई हमकों उतही पोहोंचाए॥८४

तुम ल्यो हमारी खबर, वाकफ होओ हकीकत।
सुनावें चरचा तुम को, सब समझो तुम इत ॥८५

कही हकीकत उन को, बात मूल की सब।
स्वाल भागवत कुरान के, देखाए दिए तब[1] ॥८६

जवाब करो तुम इन का, जो तुम समझो जाए।
ना तो सुनो हम पें, सब देवें बताए ॥८७

तब भिखारी दासें कह्या, हमें समझाओ तुम।
हम तो ल्याए ईमान, तुमारे कदम ना छोड़ें हम ॥८८

१—ह० मिलाए देखाए तब।

तीन रात और तीन दिन, कह्या तारतम समझाए ।
स्वाल कुरान भागवत के, सब ठौर दिए बताए ॥८९

विरोध सारा भांन के, बताया एक दीन ।
मारा सक सैतान को, तबहीं ल्याया आकीन ॥९०

गया सेख खिदर पें, कही हकीकत सब ।
मैं देख्या हादी जमाने का[1], सेख खिदरे पूछा तब ॥९१

ए कैसी बात तैं[2] कही, तुझे क्यों कर भई पेहेचान ।
सो मेरे आगे कहो, हादी आवने के निसान ॥९२

तब स्वाल कहे कुरान के, और भागवत के प्रस्न ।
इन को खोल के, कर दिया दिल रोसन ॥९३

या सातो निसान क्यामत के, करी तिनकी चरचा जोर ।
एक दाभतल अरज, और देखाया दजाल का सोर ॥९४

और आजूज माजूज, आए ईसा हजरत ।
असराफीलें सूर फूक्या, सो[3] बताए दिया इत ॥९५

सूरज ऊग्या मगरब, जाहेर हुए इमांम ।
ए मांयने खोल के, देखाए दिए तमाम[4] ॥९६

हुआ एक दीन सब में, भांनी सारी सक ।
राह सरातल मुस्तकीम, दिखाई मारफत हक ॥९७

१—ह० मै देख्या हादी आखर जमाने का । २—ह० तुम । ३—ह० सब । ४—ह० बताए दिऐ तमाम ।

हकीकत मारफत के खोल दिए सब द्वार।
तब सुध गई सेख की, करने लगा विचार ॥९८

सैयद अबदुल रेहेमान, और रघुनाथ था संग।
तिन साहेदी सब दई, भागा दजाल का जंग ॥९९

तुम चलो उतहीं, तुमें करावें दीदार।
जो देखो हकीकत उनकी, तो पाओ परवरदिगार ॥१००

सेख वैसे ही उठया, असवारी करी तैयार।
आगे से खबर करी, हम आवत करन दीदार ॥१०१

सेख आए के पोहोंचया, ले भीड़ अपनी।
देख दीदार कदमों लगा, पाए अपने वतनी ॥१०२

होने लगी चरचा, क्यामत का मजकूर।
सनंधें सुनी तिनने, सब देखा हक हजूर ॥१०३

इन समे दजाल ने, बड़ा जो किया सोर।
रेहेत मुसलमांन बेदड़े, तिनों किया इत जोर ॥१०४

उनों जांना सेख पुकारता, आया पकड़ने कों।
तो हम जावें मदत, होवे कांम दीन के मों ॥१०५

उहां कुरान तपसिरे धरी थी, करने लगा जिद।
ए हिंन्दुओं को रवा नहीं, तुम क्यों चरचा करो महंमद॥१०६

तब सेख को गुस्सा चढ़ा, इनें उठाए देओ मरदक[1] ।
देओ धके इन को, करने लगा हरकत हक ॥१०७

सबों ने दई लांनत, उठाया मजलस सें ।
स्याह मोहों ले उठया, बैठा दजाल इन में ॥१०८

सेख सब साथ सों, ले आया ईमांन ।
फेर आया डेरे कों, करके पूरी पेहेचांन ॥१०९

दिन दूसरे गया, राजा की सोहोबत ।
हैफत है राजा तुझ को, ऐसा पेहेलवान रहे इत ॥११०

तूं तिनके दीदार को, गया नहीं कब ।
तो तुम को मैं क्या कहों, तुझे पेहेचान ना भई लौं अब ॥१११

तब राजा बोलया, अबहीं तुम करते पुकार ।
भली भई तुमहीं फिरे, तुमहीं करने लगे करार ॥११२

तब सेख बोलिया, हमें न कछू खबर ।
हम भेजे आए उन के, इन काम ऊपर ॥११३

जब हम देख्या हादी को, ए तेहेकीक है बरहक ।
हमको भई पेहेचांन, हमारी भांनी सारी सक ॥११४

अब हम इनके गुलाम, जो हम को ए फुरमांए ।
सो सब हमें करना, दे पेगांम पोहोंचाए ॥११५

१—इ० इनें उठाए देओ मुड़दक ।

तब लोकों ने कह्या, राजा सों सुकन ।
है इनके पास भुरकी, सो हाथ रहे मोमिन ॥११६

जो कोई जात है, सिर पर डारत तिन के ।
सोई उनका होत है, तुम समझके जाओ सोहोबत में ॥११७

राजा कहे मैं जाऊंगा, बैठों ना सोहोबत ।
दूर से दीदार करोंगा, वास्ते सेख खिदर के इत ॥११८

दिन दूसरे राजा ने, नेवता किया सबन ।
बाग में आप आइया, दीदार किया मोमिन ॥११९

हादी के सनमुख, खड़ा रहा न बैठा ए ।
दिल में देहेसत इन कों, जिन अपने करै ए ॥१२०

ओ ऐसे ही पीछा फिरा, सुनी न चरचा कान ।
बिन अंकूरें क्या करे, कर ना सका पेहेचान ॥१२१

फेर सेख खिदरे मांगया, हम को करो हुंकम ।
तैसा हम हजूर को, लिखा करें बाब तुम ॥१२२

तब कह्या हादीअ ने, तुमको क्या कहें हम ।
जैसा तुमारी अकलें, देख्या होवै हमें तुम ॥१२३

तैसा तुम लिख्या करो, पोहोंचाओ पुरदिल खान ।
वह भेजे सुलतांन को, होवें अंकूरे पेहेचान ॥१२४

केतेक दिन सेख रह्या, लिख भेजी पेहेचान ।
केतेक लोग सेख के रेहे गए, जिनको जोर ईमान ॥१२५

भिखारी दास सेख पोहोंचाए के, फेर आए कदमों ।
कबीला अपना ल्याइया, सब सोंप्या हादी कों ॥१२६

फेर एहदी गुलांम महंमद, दोड़िया धामोंनी से ले ।
तिन ने सुनी बातें, वास्ते लोभ के ॥१२७

था सेख पुरदिल खान का, पुकार किया उत से ।
राजा सों जाए कहो, वेरागी पकड़ देवो हमें ॥१२८

तब राजा डरया, इन पर दबदबा पातसाही ।
इन को हम क्यों रखें[1], बदी बदकारो बताई ॥१२९

तब राजा ने भेज्या, गुमास्ते अपने ।
तुम जाओ हमारे मुल्क से, हम ना सहि सकें खर-खसे ॥१३०

देखी नजर राजा की, देहेसत भई केहेर ।
तब उहां से उठ चले, जिमी देखी जेहेर ॥१३१

संमत सत्रे सै ओगनचालीसे, माग अगहन सुद दसे ।
कूच कर राम नगर सें[2], फेर आए चौदस को गढ़े ॥१३२

जब उतरे जाए बाग में, एहदी पोहोंचा धाए ।
सो तो गया रामनगर, पांच स्वर अपने पोहोंचाए ॥१३३

१—ह० इने हम अपने गाव क्यो रखे । २—ह० चले रामनगर से ।

तिनने रोके बाग में, तब आए पोहोंचे देवकरन ।
तिन से बातें होने लगी, लड़े चार पोहोर मोमिन ॥१३४

सनंधें हादी ने कही, सुनते हुए जेर ।
दिन ऊगते पेहेले भगे, कहे बड़ी हुई हमें खेर ॥१३५

ए तो वली खुदाय का, हम से बेअदबी कछु होए ।
तो होत बुरा हमारा, हम ठोर ना पावें सोए ॥१३६

हादी उहां से कूच कर, गढ़े पोहोंचे आए ।
उहां भगवंतराए का, बेटा था हाकिम ताए ॥१३७

तिन ने नजर बुरी करी, लूट लेऊँ इन ।
मार डारों मोमिन कों, लोकों आगे कहे सुंकन ॥१३८

ए सुनी गंगाराम बाजपेई, उहां था आसना ।
आया था बार दोए दीदार कों, जांन सनमंध आपना ॥१३९

तिन जाए बरज्या उन कों, क्यों एह करने लगा काम ।
वेरागियों को लूटते, होएगा बदनाम ॥१४०

ए ऐसे नहीं जो कोई लूट ले, मरे मारेंगे तुम ।
काहे को भूल के सुंकन, मोंह से काढ सुनाओ हम ॥१४१

लागी लांनत गढ़े कों, उन दिन से हुआ खुवार ।
सो रोज़ क्यांमत लों, ठौर न आवे लगार ॥१४२

१—ह० उनने दिल मे यो लिया, लूट लेओ वैरागिन । २—ह० ऐही हराम खोरी के ।

मेहेमत कहें ऐ मोमनो, ए गढ़े की बीतक ।
कछुक पीछे रही है, सो कहों हुकम हक ॥१४३

॥ प्रकरण ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ ३२४४ ॥

गढ़े की बीतक

गढे की मजल में, आया याद रामनगर ।
तिनकी मजल कहत हों, सुनो मोमिनों खबर[1] ॥१
सूरत सिंघ ईमांन ल्याइया, देख के दीदार ।
सक मन में ना रही, देखा परवरदिगार ॥२
सुन्या तारतम इन ने, देखी हक सूरत ।
एह बात मैं कहा कहों[2], कौन ल्यावें परतीत इत ॥३
गया दिवान देवकरन पें, एक सुनी मैं बात ।
तुमारे आगे कहत हों, मैं देखी हक जात ॥४
चलो मेरे साथ तुम, मैं कराऊं दीदार ।
केतकी पर रहत हैं, देखो परवरदिगार ॥५
ल्याया दिवान देवकरन को, देख के लगे कदंम ।
सक कछू न ल्याइया, सिर पर चढ़ाया हुकम ॥६
थोड़ी चरचा सुन के, दिल की भागी सक ।
मैं महाराज सों कहों, ओ ईमांन ल्यावें बेसक ॥७

१—ह० सुनियो साथ खबर । २—ह० एह बात मैं किन से कहो ।

अब सेवा के साथी कहों, जो राम नगर में।
मोदी खानें की सेवा दई, सो हुई पती राम से ॥८
केसव दास और जेनती, हुए सामल पतीराम के।
और जेनती पानी पिलावत, साथ सेवा करी ए ॥९
हाट से सौदा ल्यावत, इन समें गोकुल दास।
कुल अखत्यार खान सामा को, था गरीबदास खास ॥१०
रसोई में खेम दास, और गङ्गा राम।
और संतदास गोबरधन, पीछे सूरजमलें किया काम ॥११
इन सबों पर दरोगा, रहता ब्रदांवन।
लकड़ी जङ्गल की टहल, रहे बराडी साथ सबन ॥१२
गावने में रहत है, ए जो निरमल दास।
तिन सेंती सांमल रहे, भाई मुकंद दास खास ॥१३
बाई जी गावने में, रहे सङ्ग. गोदावरी।
बूआ बाई और हमा, गावे संनधा उतरी[1] ॥१४
और चोकी दोए जनसो[2], ए गावें बारे अपने।
निरमल दास नित्या ने, रिझावें राज सब समे ॥१५
और आरती में रहत हैं, लाल मकुंद दास।
उत्तम दास पखावज में, सब सिरें निरमल दास ॥१६

१—ह० बूआ वाई हमो गावे. सनध जो उतरी। २—ह० और चोकी दो जिनस की।

और बनमाली दास सामिल, रहे आरती में तैयार ।
और सेवा अपनी मिनें, नए नए करें विचार ॥१७

खिमाई ताल बजावत, कंनई गावने में ।
कल्यान कला जमानत, ए सेवे आरती सें ॥१८

और सब साथ ठाड़ा रहें, छबीला बजावें सङ्ख ।
आरती संझा समे होत हैं, करें भगत होए निसङ्क ॥१९

अग्यारे ओछव कोसिल्या के, पधराये घरों राज ।
सेवा करी भली भांत सों, पूरे मनोरथ काज ॥२०

[चौवीसवां विश्राम सम्पूर्ण]

दोए ओछव उदई तिवाड़ी ने, घरों पधराए अपनें[1] ।
एक भतीजा घासी, जान गुरु वेरागी पनें ॥२१

भगवती राम जनी, तिन की महतारी नें ।
ओछव कर पधराए, जांन पने अपनें ॥२२

मकरंद ने ओछव किया, तन मन धन सोंपे ।
कदमों लाग ठाढ़े रहे, कछू रख्या न पीछे ॥२३

अमरा दत्ता दगड़ा, आए बरार सें ।
किया ओछव उमङ्ग से, सनमुख हुए साथ में ॥२४

१—ह० दोए उछव तिवारी उदई, घरो पधराऐ अपने ।

देवी काका जेयंती[1] का, उन किया ओछव।
राज पधराए उन घरों, साथ लिए सेव ॥२५

हीरा मन बढ़ई ने, करी ओछव रसोई।
राज साथ को बुलाए के, एह सेवा इन से भई ॥२६

सातमी मजल आए गढे, एक मास तेरह दिन।
हुकम हुआ राज का, जाओ सुलतांन पें मोमिन ॥२७
गढ्ढे में आए मिले, बाई धर मो ड़ोकरी[1]।
ईमान ल्याई सुनते, कछू सक ना इन करी ॥२८
अंनत राम आइया, और घन-स्याम।
हर बाई सङ्ग इन के, सदानन्द इन ठाम ॥२९
गंगा-राम उज्जेन का, और बासू केसर।
उदेती खिमोती दयाली, मोहन धन बाई इन पर ॥३०
फकीरा बेनी बेहेन थी, धरम दास नारायन[2]।
करमेती माणा गोर[3], और लखमो आई जान ॥३१
गोवरधन भट मकनिया, देवीदास हरखो।
बीरो जगड़ा बाग में, रुह दिया आए कदमों ॥३२
बिदा बिहारी संत दास, वैस दुरजन सिंघ जे।
खांडे राए रूप सिंघ, कीरत सिंघ कदमो पोहोंचे ॥३३

१—ह० बाई धरमा डोकरी। २—ह० करमेती परवान। ३—ह० मानक और पूर बहू।

दरसा धरमोला रतन, और कुल सिंघ मधुकर[1] ।
मया राम वैद उहां का, लाल साह भदोरिया यों कर ॥३४

इन समे लाल दास कों, हुआ हजूर का हुकंम ।
जाए कहो सुलतांन को, ल्याए फेर पेगाम ऊपर तुम ॥३५

पूस सुद पांचम को, वीर जू दई खबर ।
राम नगर राजा ने, अस्तल खोद्यो भलीतर ॥३६

सुन कान दुख पाइया, हुआ गढ़ा खराब ।
ज्यूं खोदया इअस्तल को, ताको रहे न पकड़ो ताप ॥३७

जब देव करन विदा भए, तब पूछी राज ने बात ।
तुम अपना ठौर छोड़ के, और मुलक क्यों जात ॥३८

तब दीवान ए कही, एक बात पर आए रिसाए ।
तब से इहां रहे गए, उहां इतनी बात पर आए[2] ॥३९

तब राज ने कह्या, तुम आए इन काज ।
ए वस्त लेय कें पोहोचावने महाराज ॥४०

हम सब राजा देखे, काहूँ ना देख्या अंकूर ।
संकुदल इने परखी, तो इन सों होसी मजकूर ॥४१

जब लाल को हुकम हुआ, तब जाए देख्या कुरांन ।
सोल में सिपारे मिनें, मूसे हाररून का वयांन ॥४२

१—ह० ओर गोवरधन, और भट्टमकुदजी । देवीदास हरखो गढ़ा मे, आई रूह कदमो दी । २—ह० वहाँ जाने न पाए ।

तहां लिखा मूसे ने, खुदाए से करी अरज ।
मैं क्यों कर लड़ों फेरून से, जो लों न मेरी करो गरज ॥४३

मैं फकीर श्रो पातसाह, मैं पोहोंच न सकूं तिन ।
जो मेरा भाई हारून दे[1], तो लड़ों ले साथ मोमिन ॥४४

तब खुदा ने दिया, मूसे कों भाई हारून ।
अब फेरून का ना चले, कर न सके खून ॥४५

एह आयत राज को, देखाई लाल दास ।
आपन को एक राजा मिले, सो चाहिए मोमिन खास ॥४६

ए विचार करते, लाल रह्या लसकर सें ।
चरन दास गरीब दास, पोहोंचे लस्कर में ॥४७
धरमा मिली लाल कों, राह बीच जाते ।
तुमारी बात देवजी ने, करी छत्रसाल आगे ॥४८
एह बात सुन लाल ने, आए आगे करी राज के ।
बात अपनी होने लगी, छत्रसाल आगे ॥४९

तब देवजी पास पठए, संत दास धरम दास ।
पाती लिख के पोहोंचाई, कहिओ संदेसा खास ॥५०

फेर अगरिए से भेजे, लाल उत्तम जीवन ।
और गोविंद दास को, भेजे ऊपर मोमिन ॥५१

१—ह० च० जो मेरा भाई देओ मुझ को ।

बुढ़री बूढ़ामो सें, आई कमलावती रतन।
राघव रेवा दास, ए चारो मिल मोमिन ॥५२

लखी राम परने, लिखाया नाम अपना।
मैं तुमारे साथ आऊं, जान्या जहान सुपना[1] ॥५३

राम दासे उछव दिआ, मिनें रेहेमतर।
तिने कह्या मैं तुमारा, जग सुपना तुम कर ॥५४

सतावरी दीपा मिली, गोकल दास की मां।
अग्यारे दिन बिलहरी रहे, सब चले होए जमां ॥५५

मेहेमत कहें ऐ मोमिनो, ए गढ़ा की बीतक।
आगे कहों परणा की, जो है हुक्म हक ॥५६

॥ प्रकरण ॥ ५७ ॥ चौपाई ॥३३०० ॥

[मऊ में श्रीजीकी व महाराजा की भेंट का प्रकरण]

पेहेलें सूरत सिंघ सुनी, बीच राम नगर।
देव जी को देखाइया, तो कह्या पैगमर ॥१

आए राज रामनगर, तहां विराजे बरस दोए।
मिले दीवान देवकरन, ईमांन ल्याए सोए ॥२

उमंग अंग में आइया, एह कहों जाए छत्रसाल।
एह हकीकत सुन के, होवेगा खुसाल ॥३

१—ह० च० मे जहान जाना सुपना।

इन वास्ते राम नगर से, चल के मऊ आए।
खबर करी महाराज को, दिया पेगांम पोहोंचाए ॥४
नौरंग अकस करत हैं[१], है लड़ाई इसलांम।
दावत सब ठोरों करी, बुलाओ अपने ठांम ॥५
अंकूर असल का, सुनत ही करे चेतन।
बलदिवान के आगे, बातें करी देवकरन ॥६
दिल में विचारते, लाल दास पोहोंचे।
आए उत्तमदास आनंद सों, बानी राज की गावते ॥७
सुने स्लोक महाराज ने, कहे भागवत के लाल दास।
तब जी साहेब के चरन की, दिल में लई आस ॥८
जी साहेब को बुलावने, जाओ देवजी तुम।
लाल उत्तम को ले चलो, सामे आवे बोलावन हम ॥९
मऊ से विदा होए चले[२], आए अगरीए पोहोंचें।
रिझाए मिलते राज को, सेवा करी समेत कबीले ॥१०
चले अगरीए से, मऊ पोहोंचे आए[३]।
डेरा किया अमराई में, ठोर झंडे की चित ल्याए* ॥११
भेजी खबर महाराज कों, आप पोहोंचे आए इत।
कह भेजी महाराज ने, मोहे बने न आवत तित* ॥१२

१—ह० नौरग अकस राखत है। २—ह० तहा से बिदा होए के। ३—ह० परने पोहोंचे आए।

साथ सरूप दे कों छोड़ के, आप छड़े पधारें इत।
तो कारज सब सिध होवहीं, हम पावें सुख नित* ॥१३

तब चले आप परने से, मऊ पहुंचे जाए।
श्री बाईजी साथ सारूप दे, छोड़ चले सब आंहि ॥*१४

मऊ में तिदुनी दरवाजे, डेरा किया वांहि।
राजा भेष बदल के, दरसन कियो तांहि ॥*१५

फेर दूजी बेर भेष बदल के, कर सिकार को साज।
साथ सबों के बीच में, बैठे थे श्री राज ॥*१६

[महाप्रभु श्रीप्राणनाथजी से छत्रसालजी का मिलाप]

तहां जाए ठाड़े भए, तरे मूड़की ल्याए।
कही बाबा जू राम राम, बाबा बैठो इत आए ॥*१७

जाए बेठे बिछोनों पर, बोहोत किनारे दूर।
कही बाबा और आगे आओ, बैठो इत हजूर ॥*१८

तहां से उठ आगे गए, तो भी बुलाए आगे।
कही अब तो परे तुम फंद में, अब कहां जाओ भागे ॥*१९

तब कही महाराज ने, नहीं ऐसो ब्रह्मांड में कोए।
जो हम पर फंदा डारहीं, ए काम बुधजी से होए॥*२०

उन के हम चाकर हैं, बारे बरस सें।
तिन की छाप के रुपैया, देखो तुम हम सें ॥*२१

ए हकीकत केहे के, उठे उत थें महाराज ।
गए अपने महल में, कही भई बीतक जो आज ॥*२२

अंदर जाय के ए कही, जिने करना होए दीदार ।
सो सब ही कीजियो, आया परवरदिगार ॥*२३

रानी देव कुंअर थी मऊ में, उन सुनी महाराज मुख ए ।
ब्रांह्मणियों में भेष बदल के, दरसन कियो इने तेह ॥*२४

फेर जाहेर होय के, आगे भीर चलाए ।
बल दीवान महाराज ने, भेट करी बनाए ॥२५

वह बखत महाराज को, थी मुहीम अफगन ।
भई असवारी तैयार, आए लगे चरन ॥२६

श्री राज रुमाल लेय के, सिर पर धरया महाराज ।
हाथ धरा सिर ऊपर, होए पूरन मनोरथ काज ॥२७

इन समे लोक लसकर के कहे, जो हम ए पावें फते ।
तो एही हमारा हक है, लोक मांगें ए माजजे ॥२८

जब उस से फते कर के, आए श्री महाराज ।
तब लोकों ने कह्या, बिन राज न होए ए काज ॥२९

फेर श्री महाराज देखया, पट जो तारतम ।
अब बेहेवार छूटत मुझ सें, जाग खड़ो आतम ॥३०

मऊ सेतीं परणा मिने, पोहोंचे जी साहेब ।
मझली ने पेहेचानया, सेवा करी तब ॥३१

श्रौर सब श्रन्दर के, रहे पीछे तिन ।
जब महाराज श्राए पोहोंचे, सबों बातां करी श्रागे इन ॥३२

श्राए महाराज उत से, रसोई के बखत ।
अस्नान कर ठाढ़े हते, जी साहेब तित ॥३३

कनांते ठाढ़ी करी, बैठे श्री महाराज ।
थाल बाई जी ल्याई, श्रागे धरी श्री राज ॥३४

चार जने महाराज संग, लिश्रो इत परसाद ।
ईमान ल्याए अरस पर, ए सेवा करी श्राद ॥३५

कलि दजाल कांपया, किया बड़ा सोर ।
ए नेहेचे मोकों मारेंगे, इन दो से चले ना मेरा जोर ॥३६

काहू काहू के दिल में, कलिजुग श्राए बेठा ।
बदफैली दिल में करी, जो था सेना में जेठा ॥३७

डिगावने महाराज को, बोहोत करी दजाल ।
न भए राज तरफ दिलगीरी, हमेसा रहे खुसाल ॥३८

हिंमंत परवत सिंघ, समरत राए साह[1] रूप ।
श्रौर नारायन दास, श्रौर सकत सिंह अनूप ॥३९

श्रौर ईमांन ल्याइया, ए जो दुरग भांन ।
जगत सिंघ सुन दौड़िया, ए ल्याया ईमांन ॥४०

१—ह० श्रौर साह रूप ।

संबत सत्रह सै चालीस में, श्री पधारे परना में।
सेवा श्री महाराजे करी, क्यों कहों इन जुबां से ॥४१

काहूं करी न करसी, जब का उपजा इंड।
सब की सेवा सास्त्रो मिने, लिखी है जो ब्रह्मांड ॥४२

जिनो जो पागले भरे[1], तैसा लिख्या तिन।
इत हिसाब कर देखियो, खास गिरो मोमिन ॥४३

चोपड़े की हवेली मिने, तहां पधराए राज।
[चले आप सुखपाल ले, कांध पें कुअंर महाराज* ॥४४
सुख पाल धरी जाए द्वार में, अति उछरंग होए।
चले आप भीतर कों, दिन मान्यो सुफल जो सोए* ॥४५
भीतर जाते द्वार से, रानी मझली ने आए।
किया पांउडो साड़ी को, अति प्रेम दिल में ल्याए ॥४६
तब महाराजे ए कही, तूं मेरे आगे क्यों होए।
यों कही उठाई साड़ी का, कियो पावड़ो पाग को सोए* ॥४७
पलंग बीच में जायगा, रही कछूक पास।
तहां बिछोई साड़ी को, बेठे सिंघासन खास* ॥४८
अपनो आपा सब दियो, और दियो सब साज*।
आरती निछावर करके, कही धनं धनं है आज ॥४९

---

[1]—ह० जैसे जिन पगले भरे।

एही टीका एही पावड़ो, एही निछावर आए ।
श्री प्रांननाथ के चरन पे, छत्ता बल बल जाए* ॥५०

श्री बाई जू को जोड़े राज के, बेठाए कर सनेह ।
केहेनी में न आवहीं, लगो जुगल सों नेह* ॥५१

साथ समस्त के बीच में, जुगल धनी बेठाए ।
कहीतुमसाख्यातअख्यरातीतहो, हम चीन्हे तुमें बनाए* ॥

श्री ठकुरानी जी साथ संग ले, पधारे मेरे घर ।
धनी बिना तुमें और देखे, सो नहीं मिसल मातब्बर* ॥५३

हम तो कछू न हमारो, दे चुके हम सीस ।
आपा रह्यो ना आप बस, करो जानो सो बकसीस* ॥५४

तब बोले श्री राज जो, देखे रांना पातसाह सब ।
पर जो कहू करनी अंकूर की, सो इत देखी हम सब* ॥५५

आगे साध सन्तों ने, कह्यो गुर सिख को धरम ।
सो तो अब इहां भयो, उडो सबों को भरम* ॥५६

पेहेलें दाता हम भए, गुर को दीनो सीस ।
पीछे दाता गुरू भए, सब कछू कियो बकसीस* ॥५७

बीतेगा उनतालीसा, दगेगा चालीसा ।
तब कोई होसी मरद मरद का चेला, नानक गुरू तेखावे सांई सच सच दी बेला* ॥५८

विजिया-भिनंद बुध जी, ब्रह्म सृष्ट सिरताज ।
हाथ हुकम छत्रसाल के, दियो सो अपनो राज* ॥५९

सकुंडल सोभा भई, प्रगट भई पेहेचान ।
छत्रसाल छत्ता हुआ, छिपे सबे सुलतान* ॥६०

छत्रसाल छत्ता हुआ, कहा सुन्दर बाई जोए ।
आप दिखावत आपनी, कही साकुंडल सोए* ॥६१

अरोगावने राजको, मेवा मिठाई कै पकवान ।
आनंद इन सुख को, कहो न जाए प्रमान ॥६२

फेर और बेर बुलाए, भीतर लई सुखपाल ।
एक तरफ आप उठाए, ठकुरानी उठाए होए खुसाल ॥६३

पधराए अपने घर, अति हेत कर प्यार ।
भूषन पेहेनाए भली भांत सों, किआ बड़ा मनुहार ॥६४

चीण पेहेनाए नवसरी, ले धरी आगे ।
हीरा मानक चुंनी, तले पोहोंची लटके ॥६५

और धुगधुगी सांकड़ी, तामे हीरा मानक ।
पोहोंची जड़ाव हीरे की, रीझ पेहेनाई हक ॥६६

और भूषण कै भांत के, लेके आगे धरे आए ।
और मझली ए अपने भूषण, श्री बाई जी को पेहेनाए* ॥६७

और साथ इतही, सेवा करी बनाए।
सो इन जुबां केती कहों, केहेनी में न आए* ॥६८

तन मन धन से सब ने, किआ सब निछावर।
हाथ जोड़ ठाढ़े रहे, सिफत भई सब ऊपर ॥६९

पेहेचान पूरी करी, सेवें धनी कर धांम।
साथ जो अन्दर रहे, तिन सेवा करी तमांम ॥७०

देखा देखी महाराज के, ल्याया जो ईमांन।
बसबसा छाती पर, करता था सैतान ॥७१

[बात छिपाई कुरांन की, आवते महाराज से आप।
सो पेहेचान के वास्ते, इनको प्रकट करने प्रताप* ॥७२

बैठे आप बगंले मिनें, बांचे लाल किताब।
आप करत हैं मायने, भाई दो चार बैठे हिसाब* ॥७३

बैठे सब एकांत में, ऐसे में आए महाराज।
दूर बैठ मन विचारया, यों क्यों बैठे है आज* ॥७४

बुलाए के लाल दास को, पूछी राजा ने एह।
तुम कहा गुपत वांचत हो, हमको कहिए तेह* ॥७५

तब कह्या उत लाल ने हमको हुकम नांहे।
पूछें जाए हजूर में, तब कहे तुमें आए* ॥७६

[पच्चीसवाँ विश्राम सम्पूर्ण]

जाए लालें पूछी हजूर में, तब बुलाए हजूर महाराज ।
कही ए बात जो कुरान की, तुम सों छिपाए लों आज* ॥७७

सो ए अब कहत हैं, इन में बात अपनी है सब ।
श्री महंमद साहेब कुरान ल्याए, सो सब अपनो सबब* ॥७८

यामे अपनी बीतक सब हैं, श्रीदेवचन्द जी को मेरो तेरो नाम
जा दिन जो बीती हम तीनों में, सो सब लिखी तमाम* ॥७९

ए बात सुनत महाराज को, जोस जे बाढ़ियो, जोर ।
ए वस्त प्रगट कर के, करों खेल में सोर* ॥८०

बात हमारे घर की, क्यों छिपावें हम ।
मुसलमान हमें कहा करें, ल्यावें तले तुमारे हुकंम* ॥८१

बांधी तरवार साह सों, सो तुमारे चाकर होए ।
हक हादी मोमिन बिना, और न देखें कोए* ॥८२

और बात हमारी ए सुनो, जो ए बात सुन ल्यावें ईमान ।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबांन* ॥८३

ए बात सुन राजा की, आप हुए खुसाल ।
जाहिर किया दीन को, बकसी किताब हाल* ॥८४

ए बात राजा के घर में, कोए कोए को न आई नजर ।
परचो लीजिए इनकी, ए हिन्दू वांचें क्यों कर* ॥८५

तब बुलाए बल दीवान ने, काजी मुल्ला पंडित ।
तिन सों तहकीक करने, चरचा कराई इत ॥८६

आया काजी महोबे का, नाम अबदुल रसूल ।
तिन सेंती चरचा भई, कुरान की मकबूल ॥८७

तिन सेंती पुछाइयां, कुरान का स्वाल एक ।
एकै जवाब दीजियो, जिन बोलो जुबां अनेक ॥८८

मेरे आगे कुरान की, कोई मार न सके दम ।
उभी होए पछत हो, कुरान की बातें तुम ॥८९

कुरान तमांम तपसीर, मुझ को रहे याद ।
मुझ सेंती कई खलक, पढ़के पोहोंचे मुराद ॥९०

तिस्वास्ते तुमसे डरैं, कोई ना ल्यावे ताब ।
हम स्वाल पूछत हैं, तिनको देओ जवाब ॥९१

क्यों दुनियां की पेदाईस, लिखी बीच कुरान ।
समझ जवाब दीजियो, है बात बड़ी फिरकान ॥९२

तब जवाब काजी दिया, हम क्यों कर कहें खिलाफ ।
बूढ़े भए पढ़ते, हमारे दिल है साफ ॥९३

जो कदी ए कुरान, और भांत बोलें ।
तो तुम आगे हारहीं, दम ना मार सकें ॥९४

पांच भांत की पेदाईस, लिखी अल्ला कलाम ।
खबर कोई ना पावहीं, पढ़ी खलक तमाम ॥९५

तब कुरान आगे धरया, खोल देखो किताब ।
तिलकल रसूलमें लिख्या, आया नहीं जवाब ॥६६

कुन सेंती पैदा हुई, ए जो आम ।
एक कहे एक हाथ से, दो हाथों कहे हक ॥६७

और एक जमात को, ल्याया उठाए इप्तदाए ।
और एक खिलकत ओरसे, ए पांचों की पैदाईस ॥६८

तब पूछा अबदूल रसूल को, तुम हो किन में ।
अब सांच बोलिओ, तुम पेदा जिन सें ॥६९

तब काजी के दिल में, भै जो दुदली ।
जब जवाब आया नहीं, तब बात कही बिचली ॥१००

तब बल दीवान ने, कही ए मियां तुम ।
भूल के बात कहत हो, छूटा वह हुकम ॥१०१

तब काजी कदमों लगा, किया सेजदा हक ।
हम तेहेकीक पेहेचांनया, ए बात बड़ी बुजरक ॥१०२

तब बल दीवान ने, काजी सो पूछी ए ।
मुसाफ सिर पर धर कहो, सांच बताओ जे ॥१०३

तब जवाब काजी दिया, मुसाफ सिर हमारे ।
जो हम झूंठ बोलही, तो ए ही हमको मारे ॥१०४

ए तेहेकीक जमाने का खावंद, जो करी थी सरत ।
सो सरत आए पोहोंची, रोज फरदा क्यामत बखत ॥१०५

तब बल दिवान के, कछू सांच आई दिल में ।
पंडितों सों पूछ देखूँ, कोई चरचा करे इनसे ॥१०६

तब सुन्दर बल्लभ बदरी, और बुलाए पंडित ।
तिन को लगा पूछने, ए बात कैसी इत ॥१०७

तब रात पोहोर एक गए, बोलाया बदरी ।
प्रस्न पूछे भागवत के, चित दे चरचा करी[1] ॥१०८

तब बदरी दास ने, प्रस्न सुने दिल दे कान ।
ए बात श्री क्रस्न की, होए ना बिन भगवान ॥१०९

तब श्री महाराज ने, पाया बदरी पर सुख ।
रस रह्या चरचा मिने, कह्या न जाय इन मुख ॥११०

आधी रात उपरांत, घरों गया बदरी जब ।
सब पंडितों मिल के, बात पूछी तब ॥१११

कैसी तुम चरचा करी, कैसा दिया जवाब ।
मैं जथारथ बोलया, उड़ाए दिया ए ख्वाब ॥११२

इन ख्वाब में आज लग, है तुमारे घर ।
फिटकार दै सबों ने, क्यों ना गए तुम मर ॥११३

१—ह० बदरी को बुलाए के, महाराजे पूछी बात खरी ।
एजो स्वाल भागवत के, चित्त दे चरचा करी ।

फेर बलदीवान आगे, चरचा भई जोर।
सब पंडितों मिल के, मेरा चित दिया मरोर ॥१२३

जेर भए सब पंडित, फते भई इसलांम।
काफर मोंह स्याह होए के, गए अपने ठांम ॥१२४

एक बात इत और भई, सब कुंअर ठाकुरों में।
खरच राज की बकसीस देख के, धोखा भया मन सें* ॥१२५

खरच इत से पोहोंचे नहीं, ए उठत है कहां से।
है इन पास रसाइन, ए सबों जानी मन में* ॥१२६

सिवाय एक महाराज के, सब के मन में बसगई।
बरसें तीन बीत गए, तब लग खरच की खबर ना भई* ॥१२७

तब एक दिन महाराज ने, पूछी श्रीराज से एह।
सब के मन में धोखो है, ए खरच होत है जेह* ॥१२८

तब फुरमाई श्री राज ने, आवत खरच साथ में से।
मेड़ता को साथ है, सो भेजत है हमें* ॥१२६

तब महाराज मन में, बोहोत दलगीर भए।
हम ब्रंह्म स्रिस्ट के साथ में, अजूं भए न सही ए ॥१३०

बोहोत दलगीरी आई दिल में, माने न आप को साथ।
अजहूं काम दीन का, आया ना मेरे हाथ ॥१३१

विचार किया मन में, ए बात कहों जाए कित ।
दलगीर होए के प्रात सें, पोढ़े घरों जाए तित ॥१३२

जब होए गए दोपोहर, घर में रसोई भै तैयार ।
रानी तो उठाए ना सके, केहे भेजी बलदीवान से बाहेर* ॥१३३

आए बल दीवान चल के, जगाए श्री महाराज ।
तुम काहे होत दलगीर, सो कहो हमें आज* ॥१३४

तब कही महाराज ने, नही केहेवे की बात ।
तब कही बल दिवान ने, ए कही चाहिए साख्यात* ॥१३५

तब महाराजें ए कही, हमारे मन में रहे एह ।
है इनके पास रसाईन, आज तेहेकीक करी हम तेह* ॥१३६

ए आवत खरच साथ में से, ए सुन भयो दरद ।
हम कैसे सेवक इनके, हम पर गजब की रही न हद* ॥१३७

तब बोले बलदीवान, ए बात है सेहेल ।
एक जागा मारीए, ताकी चौथ दीजे सब मिल* ॥१३८

ए बात पक्की करके, लिखाए लै महाराज ।
तब सब के साथ में आए के, अरज करी आंगे राज* ॥१३९

आवे साथ परदेस को, और रहे जो इत ।
तिन सब की सेवा की, मोहे है गरज करों नित* ॥१४०

और करी अरज हजूर में, करी इलाज बाहेर निकलने ।
सब ठाकुरों मिल विचार कियो, एक जागा मारने को* ॥१४१

हम को बड़ी उमेद है, आप होओ असवार ।
चले आगे असवारी में, हम जलेबमें खबरदार* ॥१४२

संमत सत्रेसै तैंतालिसें, असवारी करी जब ।
हस्ती पर चढ़ाए के, आगे सेना चलाया तब ॥१४३

राठ खड़ोत जलालपुर, नजीक कालपी पोहोंचे ।
इत मुल्ला काजी सैयद, इत सब जमा कीए ॥१४४

तिन सों कुरान हदीसों की, चरचा करी जब ।
जेर हुए इसलाम में, सबों मेहेजर लिख दिया तब॥१४५

हम ए तेहेकीक हक किया, खाबंद जमाने का ।
हम अपनी आखों देखया, जो कुरान हदीसों लिखा ॥१४६

सो पोहोंचाया सरे तोरे को, कांनों सुन्या सुलतांन ।
सुन के सिर नीचा किया, छूटा नहीं गुमांन ॥१४७

मुनकरी रसूल सों, लिखी बीच कुरान ।
सो क्यों ईमान ल्यावहीं, जो मोहोर लिखी दोउ कान ॥१४८

सातों निसान* क्यामत के, जाहेर किए जब[1] ।
सुन के सिर नीचा किया, मुनकर हुआ तब ॥१४९

१—ह० जाहेर किया जब ।

दाभा हुई जाहेर, ऊगो सूर मगरब।
लड़ा दजाल अहंमद सों, बिन बातिन न देखा तब ॥१५०

हुए आजूज माजूज जाहेर, बेटे याफिस के।
खाने लगे सबको, मरगी पोहोंची ए ॥१५१

जब इमाम जाहेर भए, हजरत ईसा साथ।
मोमिन बंद छोड़ाए के, पकड़े नीके हाथ ॥१५२

असराफील इत आए के, गाए इत कुरान।
नीके मोमिन सुनत हैं, इनों भई पेहेचान ॥१५३

हकीकत मारफत के, खोल दिए दरबार।
एह मेहेर मोमिन पर, सो आवे नहीं सुमार ॥१५४

यहां से असवारी कर, सिहुड़े आए जब[१]।
बसंत राए सुरखी तब आए मिल्या, कदम पकड़े तब[२] ॥१५५

चित्र कोट को ले चल्या, पर जुदा राख्या आप।
तो संसार की लेहेर का, कबूल हुआ ताप ॥१५६

राज चले चित्र कोट को, लिया महाराजें दिल में।
सेवा में भंग होत है, कोई इलाज करों इन सें ॥१५७

तब सेवा के वास्तें, पोहोंचाया सब साथ।
कुंअर ठकुराइनें सबे, सो सोंपे राज के हाथ ॥१५८

१—ह० सिउडे पोहोंचे जब। २—ह० कदमो लगा तब।

एक बरस तहां रहे, इत खोले अल्ला कलाम ।
राज रोसनी जाहेर करी, खुल गए सब नाम ॥१५९

तब राजे लिया दिल में, ए खबर करों महाराज ।
चाहिए इन मेहेर मों, खुसाल होवे आज ॥१६०

तब ओड़छे के राजा ने, लिआ खटोला ए ।
लगी फिटकार तिन को, मोंत हुआ तिन के ॥१६१

फेर मिठू पीरजादे ने, करी बुरी नजर ।
पांच हजार असवार ले दौड़या, राह में भई फजर ॥१६२

तिन को मारा चमार ने, फिरा मोहों स्याह ले ।
हुई लानत संसार में, काफर होंने के ॥१६३

और पुन जिन जिन करी, तिनों तित ही पाई सजा ।
ए काफर लिखे कुरांन में, ए ही लिखी ताले कजा ॥१६४

मेहेमत कहे ए मोमिनो, सुनो ए किस्मत की बात ।
जब आए तुम परणा मिनें, तब की ए विख्यात ॥१६५

॥ प्रकरण ५८ ॥ चौपाई ३४६५ ॥

[श्री पद्मावती पुरी की बीतक]

अब कहों बीतक परणा की, जब बैठे इत आए ।
दजाल लगा पुकारने, सो तुमें कहों बनाए ॥१

जब आए रामनगर से, तब पुरदल खांन ।
कुफर दिल में लेय के, जाए कहों राजा के कांन ॥२

लिख भेजी पाती को, तुम क्यों कहत क्यामत ।
उनकी मुद्दत्त दूर है, आज क्यों बताओ इत ॥३

ताकी पाती की जवाब, लिख्या जी साहेब[1] ।
तुम दूर कौन किताब सें, तेहेकीक किया अब ॥४

सोए बताओ हम को, जो लिखी बीच फिरकान ।
ओ तो हुए जाहेर, सात क्यामत के निसान ॥५

सूरज ऊग्या मगरब, बिन रोसनी का अंधेर ।
तुम आंखों ना देखी, अब मजर करो फेर ॥६

दाभा हुई जाहिर, किया दजालें जोर ।
ईमान लिया छीन के, पड़ा दीन में सोर ॥७

तुम राह देखते रहो, आजूज माजूज भए जाहेर ।
देखा लोक इसलांम के, खाई खलक बाहेर ॥८

असराफीलें गाइया, कुरान के सुकन ।
सो नीकें सुनत हैं, खास गिरो मोमिन ॥९

हजरत ईसा उतरे, आए दावत करी इमाम ।
सो कागद चारों खूंटों, सब को पोहोंचाए तमाम ॥१०

आज तुम सूते नींद में, तो ऐसा लिख्या सुकन ।
बिन नसीब तुम क्या करो, ए काम ईमाम मोमिन ॥११

१—हृ० लिखो श्रीजी साहेब ।

अब तुमें जाहेर होएगी, हकीकत क्यामत ।
आई नजीक तुम पर, जो कही कुराने साएत ॥१२

तुमारे एहदी आए थे, बीच राम-नगर ।
सो तेहेकीक कर गए हैं, तुमें तहां भी ना पड़ी खबर ॥१३

अब तुम हलके बोहोत हो, बिन वाउ उड़े ज्यों तूल ।
सो हाल तुमारा होत है, कछू ना रहेगा मूल ॥१४

ए लिख भेजी पाती को, सुनावने जवाब ।
फेर के उत्तर ना दिया, बिन अंकूर न पावें सवाब ॥१५

जब मारी लड़त पुर, तब हुआ असवार ।
आवत भेंटा राह में, तब भागा हुआ खुआर ॥१६

बाईस असवार मारी, फोज तीन हजार ।
भागा जाए भेड़ ज्यों, बिना तेज देखा खुआर ॥१७

फोज ले के आइयां, गोर सों करी मुलाकात ।
लड़ाई सफजङ्ग की, नाम नेस ना रही कछू बात ॥१८

ज्यों फेरून द्वा मूसे की, रोंद नील में हुआ गरक ।
त्यों औरंगजेब पर, फेरा फुरमान हक ॥१९

त्यों ही मिट्ठू दौड़या, मारा उनें चमार ।
खुआर हुआ दुनियां मिनें, छूट गया अखतियार ॥२०

लई मुहीम खटोले की, राजा ओड़छे के।
उत हीं पटक्या हुकमें, जड़ समेत उखाड़े ।।२१

फेर जेतपुर के, राजा ने मुहीम करी।
ताको ख्वार ऐसा किया, पूरी लानत उतरी ।।२२

फेर ओड़छे के राज, आया दौआ खटोले पर।
खुआर हुआ भली भांत सों, फिरा स्याह मोहों कर ।।२३

फेर रणमस्तखां ने, हजूर के हुकम[1]।
सात मजल आइया, लिखा के फेर आओ तुम ।।२४

फेर पंडित ओड़छे के, चढ़ आया लड़ने।
तब मारा मुलक ओड़छे का, भया रखना मुसकिल अपने[2]।।

दौए और पंडित पर, भया कसाला जोर।
विघन पड़े उतहीं, किया दजालें सोर ।।२६

फेर रांणा प्रताप सिंघ ने, बुरी करी नजर।
तो खुवारी आपुस में भई, है क्यामत की फजर ।।२७

जिनों जिनों जैसी करी, तिन सजा पाई तित।
जैसी जेसी जिनो करी, ताए मारा उस बखत ।।२८

मरने के बखत में, दज्जाल पटकत हाथ।
खुवार किया संसार को, ज्यादा जो उनके साथ ।।२९

१—ह० पातसाह के हुकम। २—ह० मुसकल हुआ रखना अपने।

दजाल की छाती कही, दूध पीवे उनसे।
सो खुवारी उनसे, रहे परेसानी में ॥३०

उजाड़ करें सब सेहेर कौ, काहू ना होए आराम।
सब परेसान होयेंगे, अपने अपने काम ॥३१

बलाए जो उतरे, सो मोमिन की बरकत।
सो दफे होए जात हैं, पड़े कौम दजाल का जित[1] ॥३२

पनाह बीच मोमिन रहें, हक सुभान नजर।
इनों को लैलत कदर की, होए गई फजर ॥३३

ए बैठे अपने ठौर में, करते हैं जिकर।
फिरस्ते चौकी देत हैं, बलाए उड़ावें कर फिकर ॥३४

हकें दई मोमिनों को, अपनी जो पेहेचांन।
नबूवत रसालत इनकों, पूरा पाया ईमान ॥३५

एही सुनत जमात है, गिरोह रवानी जे।
इन को दाना हकें किया, अपना इलम दे ॥३६

साहेदी खुदाए की, एही गिरोह देवन-हार[2]।
एही अरस अजीम से, है सब खबरदार ॥३७

जबराईल वकीली, करत इन ऊपर॥
साफ दिल रखें इनको, सब पावत ए पटंतर ॥३८

१—ह० बलाऐ जो उतरी, सो दफे होए मोमिनो की बरकत, सो ठढी हो जात है, पढ़े उमत दजाल तित। २—ह० कह्ी गिरोह देवनहार।

सातों निसान बड़े कहे, जिन से होए क्यामत।
सो इत सें पावें खलक, जो इत कादर बकसत ॥३६

बोध सारे विस्व का, भांन किया एक दीन।
सब की सबों समझाय के, सो एही देवें आकीन ॥४०

रूहें फिरस्ते उतरे, सो एही अरस वारस।
बानी अख्यरातीत की, इनों से सुनें सरस ॥४१

आठों भिस्त अख्यर की, पाई इनों की बरकत।
अख्यर याद करेगा[1], इन खातर उठे क्यामत ॥४२

इनों की सिफत सबद में, आवत नहीं जुबांन।
त्रिगुन रोए पीछे फिरे, इनकी खूबी सुन कान ॥४३

मेहेमत कहें ऐ मोमिनो, याद करो सुकरान।
मेहेर करी तुम ऊपर, तुमारी सिफत करें सुभान ॥४४

॥ प्रकरण ॥५६॥ चौपाई ॥३५०६॥

[नौतपुरी से लेके पद्मावती पुरी तक की बीतक]

[छबीसवां विश्राम सम्पूर्ण]

१—ह० आखर खाबद करेगा।

[अथ मंगला चरण]

अवल हक के दिल में, खेल देखाऊं रूहन ।
इसक रबद खिलवत की, बातां करें मोमिन ॥१

चाह करें खेल देखने, मैं बरजे तीन बेर ।
त्यों त्यों मांगें फेर फेर, रबद चढ़ी सिर मेर ॥२

देखाई ब्रज रास को, तीसरे जो हिसाब ।
आए आगे मेरे बातां करें, लेकर बड़ा सवाब ॥३

तब लिया हकें दिल में, ए जो चौदे तबक ।
तिन में जंबू दीप में, भरत खंड बुजरक ॥४

तिनमें लिया हकें दिल में, ए जो खंड बुंदेल ।
कायम सिफत तिनकी, जो तीसरा तकरार लैल ॥५

तामें सिरे सिरदार की, ए जो परणा ठौर ।
तिनमें सिफत छत्रसाल की, नहीं पटंतर और ॥६

मिलावा मोमिन का, तामे रसूल सिरदार[1] ।
हकी सूरत हक की, करे रूहों सों प्यार[2] ॥७

इन रसूल की इन जुबां[3], कही न जाए सिफत ।
सबदातीत के पार की, सो केहेनी जुबां हद इत ॥८

सागर सुख अनगिनती, पल पल लेत मोमिन ।
जो सेवा में सामल, करते जो इन तन ॥९

१—ह० तामे हुकम सिरदार । २—ह० करे ब्रम्ह सृष्ट सो प्यार । ३—ह० इन सरूप की इन जुबा ।

एक पल सेवन की, सुख न आवें इन जुबांन ।
लिख्यो अग्यारे सै बरस का, ए लिया जिन ईमान ॥१०

तिन मोमिनों की सिफत, क्यों सके कोई कर ।
पर हुकम केहेवे हक का, ए सिफत सबों ऊपर ॥११

तामे सेवा कर जो संग चले, ताकी सुमार न आवे सिफत ।
ए तो भई बका मिनें, केहेनी जुबां हद इत ॥१२

पर आग्यां कहावत है, इत मैं तें कछुए नांहि ।
मोमिन मिलावें मिनें, याद लावैं दिल मांहि ॥१३

जो याद करें आकीन सों, बैठे बीच धाम ।
दीन दुनी में सिफत[1], होवे पूरन मनोरथ काम ॥१४

साका विजिया-भिनंद का, सने एक हजार नब्बे[2] ।
संवत सत्रह सै पेंतीस में, पोहोंची सरत जो ए ॥१५

साके पाँच परणा मिनें, मेहेदी मुहंमद ईसा सामिल[3] ।
दावत करी जाहेर, भई सामिल सकुंदल ॥१६

बेवरा तीन सूरत का, जुदे हवाले जुदे काम ।
एक हुकम जोस एक रूह[4], पोहोंचे एकै बखत मुकाम ॥१७

धनी हजूर पोहोंची तीनों, भई मजकूर तीनों से ।
सुन हरफ नबे हजार के, सब रोसनी इन में ॥१८

१—ह० सो दोऊ लोक मे सिफन । २—ह० बरस एक हजार नबे । ३—ह० हुकंम स्यामाजी श्री देवचंदजी सामिल । ४—ह० एक आतम ।

बसरी मलकी और हक्की, ए महंमद तीन सूरत[1] ।
तिन दई हैयाती दुनी को, करी वास्ते मोमिन सरत ॥१९

आई एक एक हजार पर[2], सूरत जो बसरी ।
दूसरी दसमी सदी मिनें, अरस से उतरी[3] ॥२०

और तीसरी जो हक्की कही, तिन आई वारसी दोए ।
मता तीन सूरत का, किया हुकमे जाहेर सोए ॥२१

महंमद ईसा इमाम[4], तीनों के फैल हाल ।
सारा मुद्दा इनों पर, ना कोई इन मिसाल ॥२२

रोसनी तीनों सूरत की, तीनों के जूदे जहूर ।
बैठक बका बारीकियाँ, किआ जाहेर तीनों नूर ॥२३

हुकम जोस बसरी पर, उतरे अरस से दोए[5] ।
जिन देख्या सो जाहेर किया, इन बिना न समझे कोए ॥२४

रूह फूकी मलकी मिनें, रूह अल्ला दिया खिताब[6] ।
सों कुंजी कलाम अलाकी[7], सबों देखाया हैयाती आब ॥२५

हक हिकमत हकी मिनें, जित आई अकल नूर ।
तिन मता लिया सबन का, जाहेर किया बका जहूर ॥२६

दुनी पैदा जुलमत सें, हिरस हवा सैतान ।
सो पोहोंचे अपने पेड़े लों, उड़ चढ़ै न बका[8] आसमान ॥२७

१—ह० ए हुकम तीन सुरत । २—ह० आई ऐक हजारे । ३—ह० निज धाम से उतरी । ४—ह० हुकम देवचद जी स्यामाजी । ५—ह० आए निजधाँम से दोए । ६—ह० रुह अपना दिया खिताब । ७—ह० सो कुन्जी फुरमान की । ८—ह० चौथे ।

तीन बजे की पैदाईस, लिखी अल्ला कलाम[1] ।
और लिखी सास्त्रों मिनें, पावे न खलक आम ॥२८

कहों तीनों का बेवरा, लाहूत जबरूत मलकूत ।
फैल तीनों करत हैं, बीच जिमी नासूत ॥२९

मोमिन वाहेदत में असल, तिनके फैल तिन माफक ।
सो समझें अपनी जात को, अरस दिल जिन का हक[2] ॥३०

और गिरोह जबरूत की, आए लगी इन सोहोबत ।
सो आए नूर अकल बीच, जो नूर[3] की निसबत ॥३१

और आम खलक जो तीसरी, मलकूती अकल ।
ए आगे ना चल सके, नकल की नकल ॥३२

महंमद[4] के अमल में, ना कोए उतरया मोमिन ।
हकीकत मारफत की, किन आगे करें रोसन ॥३३

तब हरफ सरियत के, कहे तीस हजार ।
होसी हकीकत मारफत जाहेर, बीच रूहें बारे हजार ॥३४

चढ़े नासूत छोड़ मलकूत, छोड़ा सुंन ला मकांन ।
और देखा नूर मकांन, छोड़ी रोसनी इन आसमान ॥३५

इन थें आया इसक, बैठे तिन तखत ।
पोहोंचे अरस अजीम में, तहां देखी हक सूरत ॥३६

देखा मिलावा हक का, रूहें बारे हजार ।
और देखा अरस अजीम को, जो था नूर के पार ॥३७

१—ह० लिखी अपने कलाम । २—ह० निजधाम जिनका हक । ३—ह० अछर ।
४—ह० हुकम ।

होज जोए बाग जानवर, देखी हक मोहोलात ।
पाईए माफक साहेदी, जो जाहेर करी बात ॥३८

कहे दो तकरार लैलके, उतरे रूहें फिरस्ते जित ।
सो फेर आवेंगे आखत, करी बातें साबित ॥३६

इन आवन को आगमन, सो बातां करी बनाए ।
खेल देख मोमिन पीछे फिरे, रही तामे सक न कांए ॥४०

सेवा सिफत मोमिन की, पोहोंचत है सब हक ।
इन समान बंदगी, नहीं कोई बुजरक ॥४१

सुंनत और जमात की, जो बातें हक मोहोबत[1] ।
तिनका दीदार जो करै, ताकी ना आवे जुबां सिफत ॥४२

तो इन जमात को क्या कहों, सो भासत इन मुख ।
ए लीला सबदातीत की[2], कह्यो न जाए सुख ॥४३

इनकी सिफत सुख जी कहे, और सास्त्रों में वेद व्यास ।
त्रेगुन अपने चित में, रजकी रखै आस ॥४४

और नाम केते लेऊं, ब्रह्मांड के धनीओ पर ।
सब कोई सेवे सनेह सों, अपना इस्ट चित धर ॥४५

अब तो इत केहेवे कों, रख्यो न कोई ठोर ।
रही बात बका की, सो सिफत है जोर ॥४६

अख्यर ठोर अखंड जो, जाके पलथें कै पैदा इंड ।
उपज फना हो जात है, त्रगुन समेत ब्रह्मांड ॥४७

१—ह० जो बाते हक सोहोवत । २—ह० ऐ सोभा सबदातीत की ।

ईस्वर महाविस्नु प्रकृत, पल फेरते होए नास।
सो तो अख्यर इन सहियअन, करे दीदार की आस ॥४८

एह तो कही वेद की, और लिखी सिफत कुरान।
सो सब मोमिन पावहीं, कर देवें पेहेचान ॥४९

बीच किताबों में कही, मोमिन की सिफत।
सब में रोसन होएगी, फरदा रोज क्यामत ॥५०

महंमद नूर खुदाए का, जो है नूर जलाल।
दाएम आवै दीदार कों, फिरे मुजरा कर नूर जलाल ॥५१

तहां पैदा फना होत है, ए जो चौदे तबक।
तहां जबराईल रहत है, पोहोंच न सक्या हक ॥५२

तिन हक का मेहेबूब, महंमद अलेहसलाम।
सो आया गिरोह वास्ते, धर रसूल अपना नाम ॥५३

रबानी गिरोह रबसे, किए दाना आप।
सिफत सुभान इनकी करे, रहे हजूर हमेसा मिलाप ॥५४

ए हैं औलिया लिल्ला, कहे खुदा के दोस्त ए।
रहे हमेसा हजूर, वास्ते बदगी के ॥५५

इनमें जो बीतक भई, ताकी नेक कहों जहूर।
ए सागर सुख अनगिनती, सो कह्यो न जावे नूर ॥५६

ए कहावे हक का हुकम, करे वास्ते याद मोमिन।
जिनकी पोहोंची बंदगी, सोंप चले अपना तन मन ॥५७

विकार सारे विस्व का, मिटसी इन खुसबोए।
सुनत सबद संसार में, बिन मेहेनत एक दीन होए ॥५८

ए जो मासूक जबरूत का, कहियत है लाहूत।
सो इत हुआ जाहेर, ऊपर मसनंद मलकूत ॥५९

हुई जाहेर सब में, कांप्या कलि दजाल[1]।
सरतें सब आई मिली, मोमिन हुए खुसाल ॥६०

तब सोर पड़ा संसार में[2], दौड़ी सब खलक।
खुले[3] द्वार मारफत के, सबों पाया हक ॥६१

एक पेहेले आए पोहोंचे, तिनों पाया रसूल दीदार[4]।
तिन को द्वार जो भिस्त का, खोल्या परवरदिगार ॥६२

ता पीछे सफ दूसरी, आए मिले असहाब।
ताको दिया हक सुभान ने, हैयाती का जो आब ॥६३

तीसरी सफ जो आई, तिन पूछा असहाब देखनहार।
तिन को खोला खालक ने, भिस्त का दरबार ॥६४

सोर पड़या संसार में, तब भागा एह ख्याल।
फिरस्ते सब पीछे फिरे, नीद उड़ी नूर जलाल ॥६५

तब याद किया सुपन को, उठी आठों भिस्त।
नूर की नजरों चढ़े, करके याद किस्त ॥६६

१—ह० काढा कुलि दजाल। २—ह० आतम मे। ३—ह० खोले। ४—ह० किया रसूल दीदार।

मोमिन अपने महल में, पोहोंचे नूर जमाल।
खेल देख पीछे फिरे, होए इत खुसाल ॥६७

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, सुनियो मंगला चरन।
अपनी बीतक देखियो, सुनियो दोए स्रवन ॥६८

॥ प्रकरण ॥१॥ चौपाई ॥६८॥

अथ पोहोर पेहेलो सुरू॥

सुन्दर सेज सरूप की, अति प्यारी भरी नूर।
तिन की सिफत इन जुबां, क्यों कर कहों हजूर ॥१

अति प्यारा लाल पलंग, पचरंगी पाटी मिही भरी।
प्रेम प्रतसों सेवहीं, सिरदार साथ सुंदर ॥२

सेज तलाई कोमल, मिही चादर धरी नरम।
सिराने गाल मसूरिए, ए जाने मोमिन दिल मरम ॥३

चारों पाइए सेज बंध, बांधे सनंध अत।
लटके फूंमक रेसमी, पांचों रंग-तरंग झलकत ॥४

चादर रजाई ओढ़ने, रूत समे सेवा होए।
लाल डांडे चार नूर के, क्यों कहों छत्रिआं सोए ॥५

परदे झालर झलकत, लवाजमे नाहीं सुमार।
सेवे प्रेम दास केसव दास[1], द्धारका दास खबरदार ॥६

१—ह० सेवे प्रेम दास जोस मे।

पलंग उठाए बिछावत, नारायन हर-नन्दन ।
कोई दिन नाथे करी, करत थे रात दिन ॥७

फेर के चित दे करी, मथुरा गंगा दास ।
परमानन्द भी संग रहे, सेवें धामधनी लिए आस ॥८

स्याम जी सामिल रहे, सेज सेवा के संग ।
ए चारों चित सों करे, जान धाम धनी अरधंग ॥९

मानक सेवे सनेह सों, सब सेवा में खबरदार ।
हजूर हाजर रात दिन, सब सेवा में सिरदार ॥१०

छबीला जो सेवा करे, जो पेहेलें करी जमुना ।
ए वारसी इन को दै, जान बेटा अपना ॥११

जल अरोगावे छबील, पीछली रात घड़ी दोए ।
उठे पीउ पलंग से, आरोगत हैं सोए ॥१२

पूर बाई को राज ने, रीझ के सेवा दै एह ।
पिछली रात अरोगावने, ल्यावे लोटा भर के[1] ॥१३

पाउं दावन प्रात को, आवें अगरदास गुलजी ।
कबहूं कबहूं माहावजी, दाबने की सेवा करी ॥१४

और सेवा में आवत, राम बाई दावत ।
कोईक दिन खेम दास, पीछे रात जादी आवत ॥१५

१—ह० ल्यावे लोटा जल के ।

उठत पीउ पलंग से, बखत अरुन उदे।
सब हजूरी हाजर रहे, सो मुजरा करें ए[1] ॥१६

अंगेठी इन समें, ल्याया बिहारी दास।
तापत राज तिन समे[2], ए सेवा है खास ॥१७

रुमाल रतन बाई का, भिगाए ताते जल।
राज नेत्र पोंछत, ए सेवत दिल निरमल ॥१८

धनजी और तारा बाई, कंनड़ गावें गंगा राम।
धाम धनी तीजी भोम में, प्रात उठे इन ठाम ॥१६

एह नित्य गावत, और साथ गवावै कोए कोए[3]।
रिझावत हैं राज को, बानी गाय के सोए[4] ॥२०

पेहेलें प्रेम दास करी, भी रामचंद नंदराम।
आखर को बल्लभ करी, बस्तर पेहेनाए के काम ॥२१

बिहारीदास सेवा करै, ले आवें अंगिठी भर।
रात प्रात तपावत, बस्तर ताजे अंग पर ॥२२

पेहेलें चरना पेहेर के, फेर गोटा कंनढपी।
चितदे चोंपसों सेवहीं, पेहेनत साहेब जी ॥२३

पेहेलें मोजे पेहेनावत, प्रेम दास चित ल्याए।
पीछे बल्लभ दास ने, सेवा करी बनाए ॥२४

१—ह० सो सेवा करे ऐ। २—ह० तपावे श्री राज को इन समे। ३—ह० और साथी गावे कोई कोई। ४—बानी गावत सोई।

कबूं पहिनत कुड़ती, जरी बूटे के संग।
पटका जरी जड़ाव ज्यूं, दो थोरमें सुपेत रंग[1] ॥२५

प्रेमदास बस्तर में, पेहेनावत सिनगार।
नंदराम सामिल रहे, संग लाल कस बांधनहार ॥२६

लालबाई कस बांधत, मकरंद रहे भेले।
लालदास के बदले, सेवा में रहे ए ॥२७

जब महाराजा पोहोंचे इत, तब पेहेनावत सिनगार।
सेवा करे स्नेह सों, जान के परवरदिगार ॥२८

वल्लभ जीवी प्रेम बाई, बांधे चदवा आगे सेहत खान[2]।
ए सेवा नित करे, ए लई इनों मान ॥२९

प्रात समे पधारत, हरबंस के घर।
पांउडा बिछावत प्रेम सों, लाल बाई सेवा पर ॥३०

सेहत खाना घन स्याम के[3], था हरबंस के पास।
फेर अपने ढिग किया, ए सेवा करी इत खास[4] ॥३१

चरन दासी पनही[5], पेहेले राखी नारायन।
कोई दिन मोहन रखी, लई खिमाई जान ॥३२

फेर राजे रिझ के, दई वल्लभ दास।
कोई दिन खिमाई सामिल, पीछे आई वल्लभ पास ॥३३

१—दो थुरमे सुपेत रग। २—ह० बाधे चदवा सेत खान। ३—ह० सेत खानो घन स्याम को। ४—ह० ऐ सेवा इनो खास। ५—ह० चरन दास पनही।

पांउडा बिछावै बकाई[1], और सेवा करे किसुनी ।
चलते सहिआ बिछावहीं, ए सेवा की निसानी ॥३४

इत लोटा भर ल्यावत, ए जो भाई सिवराम ।
दोनों बखत राखत, ए सेवा का काम ॥३५

सेवा डब्बा रूमाल की, लाल बाई धरे ।
बदले लाल बाई के, दयाली जो करे ॥३६

इत ढाक के रूख तले[2], हरबंस देव की रहत ।
साथी जे सङ्ग आवत, ताको सेवा करे जुगत ॥३७

करत ताते जल को, बड़े माट भर घड़े ।
जल बांधना दातन[3], साथ आगे धरे ॥३८

कोई दिन सेवा करी, गुल महंमद दौलत ।
नित्य राज पधारत, साथ सेवा करे इत ॥३९

सूरज मुखी लिए खड़ा, हाथ पकड़ें बदले ।
सूरज सामी करत हैं, बदले यों सेवे ॥४०

अमोला परभावती, प्रात लिए मोरछल ए ।
करत ऊपर राज के ए, जोलों केसव न पोहोंचे ॥४१

दोनों बाजू मोरछल, केसव सङ्कर लिए हाथ ।
नन्दराम सामल रहे, चलत राज के साथ ॥४२

१—ह० पाउड़े बिछावत बकाई । २—ह० इत पलास के ब्रछ तलें । ३—ह० जल भारी दातोन ।

छत्र सिर पर फेरत, बल्लभ चले पीछे ।
ए सेवत सनेह सों, खड़ा रहे पकड़े ॥४३

हरबंस के घर से फिरै, चलत पांवड़े पर ।
हंसे हंसावे साथ को, पोहोंचावे मानक गादी पर ॥४४

[सत्ताईसवाँ विश्राम सम्पूर्ण]

धनबाई एक बिछावत, दूजा बिछावे घन स्यांम ।
हरबंस के घर से फिरें, तब इन सेवा का ए काम ॥४५

हिम्मत जब आइया, बिछावत पांवड़े ।
मांग लिया लाल बाई से, ए सेवा नित्य करै ए ॥४६

हाथ पकड़ बैठावत, धन बाई राम कुंअर ।
जब चरन पखालत, बैठे कुरसी या पलंग पर ॥४७

तहां से आए तखत पर, धरे दोए कदम ।
साथ खड़ा सेवन को, जान अपनी आतम ॥४८

कबूं बैठे पलंग पर, लवाजमें दन्त धावन ।
ले रूमाल ठाड़े दोऊ बाजू, नारायन केसव सैयन ॥४९

छबीला अति छब सों, ल्याया कंचन मढ़यो दातन ।
जल ताता सीरा समे, करे सेवा देकर मन ॥५०

चिलमची हाथ में लेके, नन्दराम पकड़ बैठत ।
राज हाथ पखालत, संकर बांटत चरनामृत ॥५१

फुलमा बनावत, भर ल्यावत डब्बी ।
नूर महंमद सेवत है, फेर गुलजी को दी[1] ॥५२

रूपा बाई को रीझ के, सेवा दई राज ।
नित हरड़े अरोगावहीं, रहे इन सेवा के काज ॥५३

पांखड़ी छबीला सामिल, सेवत है दिन रात ।
अमल ल्याई अरोगावने, मीठी बातां करे बिख्यात ॥५४

आए मकुंद दास हाजर, चीरा बंधावें चोंपदे चित ।
कंनढपी तिन ऊपर, गोदावरी बांधत ॥५५

तुर्रा कलंगी परण की, राखत मुकंद दास ।
चीरा बधावने बखत हजार करे, लटकत तुर्रा खास ॥५६

सिर पाग बांधी चतुराई सों[2], हक पेंच हाथ में ले ।
भाव दिल में लेय के, सुख क्यों कहों इन के[3] ॥५७

मकुंद दास के सामल, आए सांवल दास पोहोंचे[4] ।
छेड़ा पकड़ ठाड़ा रहे, आए सेवा करे ए ॥५८

अगर दास ठाड़ा रहे, ले हाथ दरपन ।
सेवा करें संवार की, ए सेवें चित दे मन ॥५९

तामे सांमिल सीताराम, और गुल महंमद ।
बंसी भी सेवा मिनें, मन में धरे आनन्द ॥६०

१—ह० गुल महमद को दी । २—ह० सिर पेच बाधे चतुराई सो । ३—ह० सुख क्यो कहो विध ऐ । ४—आऐ मकुद दास पोहोचे ।

नित ल्यावे दरपन को, ए जो अगर दास।
सिर पेंच बखत हाजर करें, ए सेवें दिल खास ॥६१

केते दिन सेवा करी, उधो दास तिलक।
पीछे ले छबीले[1], करें प्रेम सों हक ॥६२

चंद्रिका लटके सिर पर, हीरा जोत अपार।
चौ तरफों किरणा उठे[2], तले मोती लटकनहार ॥६३

बैठत चीरा बांध के, ऊका ल्याया कलंगी।
हेते हाथों बनावहीं, ए सेवा इन की ॥६४

फूलहार बनावत, राम दास धरमा।
ढोला पोहोंचावत हैं, बोले ललता राज खमा ॥६५

झोली मया-राम राखत[3], सब फ़कीरी साज।
गोदड़ी पैवंद की, ओढ़ावत हैं राज ॥६६

सुमरनी कपूर की, ल्याय के देवें हाथ।
चिपी सेली मुक्ता माला, ल्यावें गोदड़ी साथ[4] ॥६७

सुई तागा को कड़ी, और केतेक सूए बड़े।
अजमा सोंठ पीपर, मसाला गंधीआने केते ॥६८

काम पड़े मगावत, बुलाओ मया-राम।
झोली में से काढ़ के, आए हाजर करें तमाम ॥६९

१—ह० पीछे ले छबील दास ने। २—ह० चारो तरफो किरना उठें। ३। ह० झोली मयाराम की। ४—ह० चिपी सेली मुतका, माला ल्यावे गोदड़ी साथ।

इत महाराजा आवत, पेहेनावने सिनगार ।
पेहेनावत बीटी बदले, देई अपने हाथ की उतार ॥७०

भूषन बाईजी ल्यावत, बनावत चोपदे चित[१] ।
गोदावरी रुकमनी, आवत हैं संग इत[२] ॥७१

रकेबी रूपे की, भर ल्यावत भूषन ।
रुमाल ऊपर ढांक के[३], महाराजा पेहेनावें मोमिन ॥७२

माला दोए मोतियन की, जड़ाव मुदरियां कंचन ।
सोने की दोए सांकली, दुगदुगी मानक रोसन ॥७३

और सांकली दोहोरी, चंपकली कंचन नवसर ।
तापर कंठी बिराजत, तीन सर ऊपर[४] ॥७४

और कंठी मोतिन की, तले मानक मोती लटकत ।
नूर किया चारों तरफ[५], रोसन ज्यों झलकत ॥७५

पेहेनाई भूषन पीछे फिरी, बाई जी अपने मंदर ।
राज भोग अरोगावने, सेवा रसोई ऊपर ॥७६

आई जी अरोगावने, ल्याई बाल भोग ।
रतन बाई मूंग ले, आए पोहोंची संजोग ॥७७

ले ले दौड़े और साथ[६], सो केती कहों बात ।
आरोगत अति हेत सों, कोई प्रेमें बरजे कर विख्यात[७] ॥७८

१—ह० उमग मे दे चित्त । २—ह० सब आवत इत । ३—ह० रुमाल ढाँप के ल्यावत । ४—तीन सरी ऊपर । ५—ह० श्री राज कठ बिराजत । ६—ह० ले ले दौड़े और कोई । ७—ह० कोई प्रेमे बरते कर विख्यात ।

इन समे छबील दास, जल दे कटोरा भर।
बात पूछे कोई बीच में, ताको दे उतर ॥७६
आस बाई अरज करें, पधारो घर मानक।
राज रीझ के केहेत हें[1], आई आस बाई बुजरक ॥८०
पनही जोड़े जड़ाव की, ल्याया बल्लभ दास।
छत्र सिर पर फेरत, ए मोमिन है खास ॥८१
पांउ तले पांवड़ा, लाल बाई बिछावत।
और बिछावें किसुनी, लेकर दिल मों हेत ॥८२
उठत पलग पर से, धनबाई लेवें हाथ।
दूजी तरफ लाल दास, सेवा हाथ पकड़ने साथ ॥८३
हाथ आसा गगा दास के, दूजी तरफ दास लाल।
मकरंद रहे सामिल, हाथ पकड़ने की चाल ॥८४
जब महाराजा पोहोंचहीं, उठावें पकड़ हाथ।
लाल दास बदले लाल बाई, कोई समे पकड़ चले साथ ॥८५
हंसावत है राज को, झगड़ा सेवा में[2]।
आड़ी आए ठाड़ी रहे, राज रीझे इन सें[3] ॥८६
लटके मटके चलत, संग बानी गावन-हार।
संग संकर दास के, और साथ सिरदार ॥८७

१—ह० श्री राज रीझ के बोलत। २—ह० जरा सेवा मे। ३—ह० राज रीझे तिन सें।

मानक मंदर अपने, करें बिछोनें जे ।
चारों तरफों चंदवा, और रखे गादी तकिए ॥८८

सुआ को सेवा दई, अंदर उतारन ।
नित्याने हजूर रहें, करत अपने तन ॥८९

जोड़े मंदर गंगादास का, तहां बिछोने सब साज ।
तहां राज बिराजत, सब पूरे मनोरथ काज ॥९०

मोदी बड़ा बूल चन्द, चले राज संग ए ।
ठौरे पोहोंचे बोलहीं, धाम धनी की जै ॥९१
गोर बाई रहत है, हाथ उठावने सेवा में ।
हाथ पकड़ बैठावत, करे सेवा सुरती सें ॥९२
पेहेलें मोरछल में, रेहेता था नंद-राम ।
दूजी तरफ केसव दास, दोऊ करत ए काम ॥९३
यों करते मानक के, घर से फिरे जब ।
मोरछल हाथ में लेय के, केसव करे तब[1] ॥९४

और दूजा मोरछल, संकर लिए हाथ ।
और चमरी जड़ाव की, लिए बल्लभदास के साथ ॥९५

सांमल बल्लभदास के, खुसाल उदैसिंघर ।
हजूर हमेसां रहे, सेवा करें चितधर ॥९६

१—ह० सेवा करे तब ।

बल्लभ दास के सांमल, रहे महंमद खांन ।
मेहेनत सेवा में करें, दिल में लिए ईमांन ॥९७

लटके मटके चलत, फेर बैठे पलंग आए ।
सांमे मुरलीधर आसन किया, स्वना देत बनाए ॥९८

ऊपर पोहोर दिन के, आए मानक के घर से ॥
पधारत पलंग पर, हुआ चरचा समे ॥९९

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, ए पोहोर एक की बिरत ।
ता उपरांत होत है[1], सोए बताऊं जुगत ॥१००

॥ प्रकरण ॥२॥ चौपाई ॥ १६८ ॥

अथ दूसरे पोहोर की बीतक

अब कहों दूसरे पोहोर की, सेवा मोमिनों की जे[2] ।
जिन भांत जो होत है, हक मेहेर उतरी ए ॥१

दोऊ बाजू पलंग के, बैठे लाल केसव दास ।
कुरान[3] हदीसा पढ़न की, राज रिझावन आस ॥२

धनी धाम के देत हैं, निज धाम के निसांन ।
लेवे मोमिन मिल के, अरस सुख सुभांन ॥३

राज हेत कर कहत हैं, काका बुलाओ सिताब ।
दोउ बाजू रेहेलां रखे, तापर धरैं किताब ॥४

१—ह० जो होत है तापर । २—ह० सेवा साथ की जे । ३—ह० फुरमान ।

किताब खाना रखत है, संदूका सब साज।
सेवा करे सनेह सों, राज रिझावन काज ॥५

हजूर हमेसां रहत हैं, थेली लिए पैसे[१]।
हुकम होए ताए देत हैं, काका सेवा करें ए ॥६

बाघजी ले आवत, आगे धरे जंगोटा।
राज रीझ के लेवत, वास्ते बैठक ओटा ॥७

पंजा वनमाली दास का, देवें श्री राज के हाथ।
सुंदर सुभग सोभित, खंजोले सुख पावत* ॥८

दुंदराए तपसीर पर[२], सुनावत अल्ला कलाम।
हजूर हमेसा बैठत, इनका एही काम ॥९

खुसखत किताब लिख के, पोहोंचावत पैगाम।
वास्ते फरज उतारने, पोहोंचाया खलक तमाम ॥१०

कोई दिन गोबिंद राए[३], और रहत टेक चन्द।
गाजी बनी असराईल की, बीतक बांचे श्रीदेवचंद ॥११

और बदरी दास बैठत, वाका लिखा बरस एक।
हजूर हमेसा रेहेत हैं,[४] और भी काम किए अनेक ॥१२

पोहोकर बदरी सांमल, सेवा करता जे।
देवी दास बानी ले[५], पढ़ राज रिझावें ए ॥१३

१—ह० थेली ऐ पैसे। २—ह० दु दराए तपसीर ले। ३—कोई दिन गोविंद गरई।
४—ह० ऐ सेवा है इनकी। ५—ह० देवी दास बानी लिखे।

और बानी साथी ले खड़े, ए जो लिखन-हार ।
तथा मथुरा और तिमरलिंग[1], फरसराम खबरदार ॥१४

पदमियां और बीरियां, और सूरत-सिंघ ।
मकनिया लिख देत है, जुगते कलाम सनंध ॥१५

हीरा-मन हेत सों, लिखत बानी सार ।
और आप अपनी सब को लिखे[2], ए हजूर बेठन हार ॥१६

मोहोना अति मोह सों, लिखे पढ़े भली भांत ।
भुवन अड़ग बैठत, गिरधर सुने एही न्यांत ॥१७

हरी दास बैठत, बानी लिखने काज ।
पुस्तक लिख घर में धरें, कोऊ ताले वाले के काज ॥१८

भागवत गीता के रहस, काढ़ सुनावें राज[3] ।
हजूर हमेसा रहत हैं, मिसर गोबिन्द दास इन काज ॥१९

श्री महाराजा आवत, बैठत चरचा में ।
स्रवना देत सनेह सों, नफा पावें खलक इनसे ॥२०

श्री मुख से चरचा करें, अति मीठे रसायन बेंन ।
दे साख वेद कतेब की, अति देत सुख चेन ॥२१

सनमुख स्रवना देत है, [illegible] बनाए ।
ना आसन नेत्र डगाइया, रहे द्रस्टि द्रस्ट जुड़ाए ॥२२

१—ह० तथा मथुरा और तिमर । २—ह० और अपनी अपनी ले खडे । ३—ह० रेहेस काढ देखावे राज ।

दिल दरिया खुलत है, कै लेहेरां उठत तरंग।
स्रवना देत जो मोमिन, कै उपजत अंग उमंग ॥२३

कै लेहेरां सुखधाम के, वर्णवन होत रसाल।
श्री महाराजा रीझत, होत दिल खुसाल ॥२४

कै साखे सास्त्रन की, और भागवत वचन।
प्रस्न चालीसों खोलते, मोमिन होत मगन ॥२५

और साखे कबीर की[1], खोज के किरंतन।
ब्रह्मांड छोड़ सुन पार के, पोहोंचा अख्यर वतन ॥२६

ए साहेदियां देत हैं, कै पुरावत साख।
और बानी साधुन की, भाख-भाख कै लाख ॥२७

वेद और कतेब को, दोऊ को करै एक।
आज लों कबहूं ना हुई, कै उपज खपे ब्रह्मांड अनेक ॥२८

चरचा चित दे होत है, स्रवना देत सब साथ।
हेत कर के कहत है, पकड़ मोमिन के हाथ ॥२९

ब्रजरेन और चंचल, रेहेत चरचा में।
मूंगे होए के सुनत हैं, और ना होए इन सें ॥३०

मीठी रसना रस भरी, अति सुन्दर है बोल।
चेहेन होत है चित को, कोई नाहीं इनके तोल ॥३१

१—ह० और साखे कै बारीकी।

कहा कहों इन जुबांन की, जो हेत कर फुरमाए ।
अहिनिस जुगल सरूप को, वरनन कर देखाए ॥३२

धाम धनी धाम को, और समर्थ क्यों होए[1] ।
ए लेने वाले मोमिन, और न समझे कोए ॥३३

सुख देखावत धाम का, दुख बतावत खेल ।
जगावत हैं जुगत से, तीसरे तकरार लैल ॥३४

तुम नाहीं इन खेल के, याद करो दिल धाम[2] ।
दो बेर दो तकरार में, पूरे हुए न मनोरथ काम ॥३५

तिस्वास्ते खेल तीसरा, देखाया तुम को ए ।
मेरी तीनों सूरत, खेल में आई जे ॥३६

पेहेलें ल्याया कलाम को, इसारतें रमूजें हक ।
रूह अल्ला किल्ली ल्याइया, इमाम खोल देखाई बुजरक ॥३७

पांचों रोज रब के, देखावत कर प्यार ।
अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो हुसियार ॥३८

दिन क्यांमत के कहे थे, सो आई सरत सुभांन ।
ए बातिन मोमिन जानहीं, जाए देवे हक ईमांन ॥३९

सात निसान बड़े कहे, होसी रोसन बखत क्यामत ।
कह्या आगे अग्यारे सौ के[3], सो आए पोहोंची सरत ॥४०

१—ह० और ना दाता कोए । २—ह० याद करो निज धाम । ३—ह० कह्या अग्यारे से सन के ।

चारों वसियत नामे की, सोर पड़या संसार ।
आप दावत लिख जाहेर करी, हूजो खलक खबरदार ॥४१

आजूज माजूज भए जाहेर, उग्या सूर मगरब ।
दाभा हुई जाहेर, देखेंगी दुनियां सब[१] ॥४२

भई लड़ाई दजाल सों, करी मोमिनों और इमाम ।
सो अब होसी जाहेर, देखसी खलक तमाम ॥४३

ईसा और इमाम, लड़े दजाल सों जोर ।
मरते दजाल पुकारया, पड़ा खलक में सोर ॥४४

असराफील आय के, गावें अल्ला कलाम ।
सूर फूंक्या संसार में, होए चालीस बरसों तमाम ॥४५

ए नसीयत गिरोह पर, होत है रात दिन ।
ए विचार समझहीं, खास मेला मोमिन[२] ॥४६

अरस इलाही खजाना, करते थे तसरफ[३] ।
जिन तालें लिखा सो लेवहीं[४], और न पावै हरफ[५] ॥४७

इन चरचा में बोलन की, काहू न रहे मजाल ।
भानन को ठाढ़ा रहे, सोर करत दजाल ॥४८

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, सुनियो चित दे तुम ।
अब आरोगन के बखत का, हुआ है हुकम ॥४९

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २१७ ॥

अट्ठाईसवां विश्राम सम्पूर्ण

१—ह० देखेगी दुनिया अब । २—ह० खास गिरोह सैयन । ३—ह० करते हैं सरफ । ४—ह० पावही । ५—ह० और लेवे ना एक हक ।

अब कहों आरोगन की, उठत समे भीलन ।
ता पीछे आरोगन की, कहों सेवा मोमिन ॥१

दोए घड़ी दोए पोहोर में, बाकी रही जब ।
आए हनुमंत अरज करे[1], थाल ल्यावन की तब ॥२

हुकम दिया हक ने, जाय के ल्याओ थाल ।
आए बाई जी सों कह्या, होय के दिल खुसाल ॥३

अरज की सेवा मिनें, पेहेलें कमलावती ।
तिस पीछे लाड़ बाई, पीछे हनुमती करतो ॥४

हुकम हुआ राज का, ल्याओ धोती पोती तेल ।
सेवा के सामिल मिलो, तब आऊं तुमारी गेल ॥५

तब लों मोकों चरचा से, काहे करत हो भंग ।
तब साथी सेवा के कहे, बाई जी अरज करे अरधांग ॥६

जयंती इत आय के, बात करे बीच कांन ।
अरज खास गिरोह की, देत कर पेहेचांन ॥७

उठत राज भीलन को, बेठत चौकी पर ।
सहिआ तेल लगावत, चारों तरफों घेर[2] ॥८

तेल की सेवा मिनें, गोदावरी गंगा राम ।
कटोरी भर के ल्यावहीं, इनको इन सेवा में बिसराम ॥९

१—ह० बाई हनुमत अरज करें। २—ह० फिरत ।

अस्नान के समे, होत तेल मरदन।
अगर दास गुल जी, करे साथी सब सेवन ॥१०

इन सेवा में सामिल, बंसी सीताराम।
और सेवा करे सब साथकी, सब को देवे आराम ॥११

तेल प्रसादी बांटने, करे सेवा गंगा राम।
साथ की सेवा मिने, करत मनुहार तमाम ॥१२
धोती पोती पीताम्बर, लाल दास इत ले आए।
मानक ताते जल को, ल्याए कर बनाए ॥१३
जल समोने ल्याइया, गंगा राम भगवान।
झीलन की सेवा मिने, दिल में नहीं गुमान ॥१४
झीलन रंग सोहामनो, गावे कनड गंगाराम।
तारा सामे झीलत[1], गावे केतेक साथ तमाम ॥१५
चौकी ल्याई अस्नान को, ए जो बाई मांन।
तिन आगे पटली धरी, रतन बाई परवांन ॥१६

पाउडियां चंदन की, ल्याई बाई राम।
तले पांउडा चादर पटले पर[2], ए रतन बाई का काम ॥१७
ऊपर चंदवा तांनत, ए जो बाई रतन।
चौकी ऊपर चादर, ल्याई मानिक बाई बिछावन ॥१८

१—ह० बाई तारा सामी झीलत। २—ह० तले पावड़ा चादर पटली पर।

मानक नहावैं नेह सों, जल के लोटे भर।
लालदास सामिल रहे, जल डारे उमंग कर ॥१६

लछीदास ब्रिंदावन[1], अंग पोछत समें झीलन।
रूमाल लाल बाई देत हैं, करे सेवा होए मगन ॥२०

इन समें आए पोहोंचत, श्री महाराजा जब।
अंग पोछब हाथ पकड़न के, सेवा करत है तब ॥२१

रूमाल ल्याई लाल बाई, बाईजी पोंछत अंग।
प्रेमदास सामिल रहे, कई सखियां सेवे संग ॥२२

घेर के ठाड़ी रहे, फिरत हैं गिरदवाए।
जल लोटा ललीता पर, सब कपड़े दिए भिगाए ॥२३

हांसी होत इन समे, सब सैयां करे कलोल।
श्रीराज रसना सों, मीठे कहत हैं बोल ॥२४

सोभादास झीलन में, लोट पोट होवें जल।
निरगुन भेष रहत हैं, साफ दिल निरमल ॥२५

ओलिया लिल्ला जो कहे, नफस के दुसमन।
सो सिफत है इनमें, जो कही सिफत मोमिन ॥२६

केसो दास बानी ले, बांचत समें इन।
लालदास कुरान की, आयत करें रोसन ॥२७

१—ह० छबीलदास वृन्दावन।

पीताम्बर पेहेनावत, लाल प्रेम दास ।
महाराजा दो थुरमे, ओड़ावत हैं खास* ॥२८

पीउ पांवड़े चलत, रतन बाई के।
पनही जोड़ी जड़ाव की, धरी बल्लभदास आगे* ॥२६

एक पाउड़ा रेसमी, दिया बिछावत ।
राज चलत ता ऊपर, रसोई के बखत* ॥३०

पावड़े बकाई के, चलत लटकनी चाल।
संग सैयां घेर के, बानी गावें रसाल* ॥३१

दोना पातर बनावत, ए जो खेमदास ।
सीता-राम के संग रहे, सेवें कर विसवास* ॥३२

थाल ऊपर चन्दवा, चार जने पकड़े ।
ए सेवा धन बाई की, आवें रसोई के समे* ॥३३

थाल बड़ी रूपे की, आस बाई बनाई कर हेत।
धोए रुमाल सों पूंछ के, बाईजी अपने हाथों लेत* ॥३४

कटोरी कंचन चांदीअ की, दस धरे फिरते।
धोए पोंछ रुमाल सों, वास्ते तिरकारी के* ॥३५

और राज भोग थाल में, धरत हेत कर प्यार ।
और कटोरी सैयन कों, कहे हूजो खबरदार* ॥३६

श्रीबाई जी आवत अरोगावने, मध्यान को ले थाल।
तुलसी राधा रुकमनी, सैयां घेर चले खुसाल* ॥३७

श्रीबाईजी के आगे पाउंडा, बिछावत करना।
गादो बिहारी दास धरें, करें सेवा जान अपना* ॥३८

बिहारीदास बिछाइया, आगे तखत के।
गादी चाकले रेसमी, और दो बाजू तकिए ॥३९

आए बिराजत तिन पर, दोऊ बाजू बेठावन हार।
एक बाजू लाल बाई, दूजी धनबाई खबरदार ॥४०

इत खमा ललता बोलत, इनकी सेवा ए।
और सनमुख गावन कों, मुकुंद दास ले बैठे ॥४१

कंनड इनके साथ है, परमानंद प्रवीन।
विंदा भी सांमिल रहे, गावे गंगा राम आकीन ॥४२

मानबाई अत मान सों, चौकी आगे धरत।
धरया झालर लग्या रुमाल, ऊपर बिछावत ॥४३

थाल धरी ता ऊपर, बाई जी बैठत पास।
आई जी सनमुख बैठत, थाल ल्यावें कर विस्वास ॥४४

मानक लाई चिलमची, बाई जी हाथ पखालत।
रुमाल सों लेय के, लालबाई के लोवत[१] ॥४५

१—हु० लाल बाई लोहोबत।

मोमिन मिलावे गिरोह से, आवत आरोगने थाल।
संकर सेवा में हाजर, राज आरोगत दिल खुसाल ॥४६

मिलावा मोमिन के, जेनती रहे सिरदार।
सेवा करे सब साथ की, उपली टहल को खबरदार ॥४७

सूरज मन रसोई में, रेहेता था दिन रात।
साथ की सेवा करे, फेर मिल्या अपनी जात ॥४८

रूमाल कसीदे का सिर पर[1], मानक बांधे कर हेत।
राज बातें करे रमूज सो[2], मीठी रसना कर देत ॥४६

रूमाल कसीदे का, आरोगते उठावे।
लाल बाई सेवा करें, दौडत इन समे[3] ॥५०

मथुरी अति मोह सों, रुमाल देवें भिगोए गुलाब।
बिंदी करे तिलक बीच, राज देत हयाती आब ॥५१

मथुरी हिमोती ल्यावत, थाल बारी अपने[4]।
सेवा मे दोउ सामिल, कछू चूक ना जांन-पने ॥५२

हमेसा ढिग बैठत, बाई जी सेवा में।
रुच के राज मांगते, केहेवत बाईजी इनसे ॥५३

हाथ कर कर हेत सों, बाईजी परसनहार।
साक तरकारी अथाने, आरोगत बातां करै विहार ॥५४

१—ह० रूमाल कसीदल सिर पर। २—ह० श्री राज बाता करे गुझसो। ३—ह० ओवृत इन समे। ४—ह० बारे अपने अपने।

लाल केसव बैठत, दोनों बाजू के।
चौपाई करावें चित सों[1], आरोगते फुरमावें ए ॥५५

गोकल हाजर इन समे, बातां करे बनाए।
इलम हदीसा साहेदी, कहत हैं चित ल्याए ॥५६

आरोगते प्रथम देत हैं, बांटन को परसाद[2]।
राजा राम हेत सों, पावें बांटन को सवाद ॥५७

रतन बाई मूंग ल्यावत, ल्याई पूरबाई प्रवीन।
और साथ सब ल्यावत, सब सेवा में आधीन ॥५८

सूजा और सीता बाई, और प्रेम बाई।
रूमाल हाथ हलावत, आरोगने बखत आई ॥५९

छत्र लिए ठाड़ा रहे, ए बल्लभदास करी।
रूमाल ठाड़ा ढुलावत, ए सेवा करी बिहारी ॥६०

धरम पाले बाई धरमां, रोटी आरोगन को ल्यावत।
रसोई में राज आरोगहीं, ए ल्यावत कोमल चित ॥६१

दांए बांए ढिग बैठत, खडगो हिम्मत भंडारन[4]।
बाई जी वस्ते मगावत[5], दौड़ लावे दिल देमन ॥६२

सखियां गिरद घेर के, केतेक रहे खड़े।
केतेक सनमुख बैठत, इत ठोर न कछू रहे ॥६३

१—ह० चौपाई लिखें चित्त सो। २—ह० बाइयो को परसाद। ३—ह० पावै इनको सवाद। ४—ह० खडगो अनुमत भडारन। ५—ह० श्री बाई जी वस्ता मगावत।

जल आरोगे अध बीच, देवे छबील दास ।
पीक दान तले धरै, बल्लभ मोमिन खास ॥६४

हमेसा हजूर में, दो बाजू रहे पीक दान ।
ठाड़े रहे हजूर में, संत सङ्कर बड़ा ईमान ॥६५

और सङ्कर के सामिल, राघव जी रहत ।
तंबोल प्रसादी लेय के, साथ को पोहोंचावत ॥६६

सामिल रहे सङ्कर के, सेवत मुरली धर ।
पीकदान और मोरछल, करत राज ऊपर ॥६७

केसव लाल दास, दोऊ बाजू बैठत ।
चौपाई करावै चित सों, राज को रिझावत ॥६८

और साथ केते कहों, दांए बांए बैठन हार ।
लछी दास ठाडा रहे[1], सेवा में खबरदार ॥६९

मयाराम आरोगावही[2], चिप्पी में चने ।
समारत स्नेह सों, राज आरोगे चिपटी से[2] ॥७०

दूध दही सिखरन, बाई जी आरोगावत कर हेत ।
आरोग रहे पीछे, बांटने को कवल देत ॥७१

ए सेवा लाल बाई की, देत प्रसाद श्री राज ।
बांटत है दुलहीन को[4], और आवे सब काज ॥७२

१—ह० सखीदास ठाडा रहे । २—ह० मया राम आवत है । ३—ह० राज आरोगे घुटकी से । ४—ह० वास्ते सब दुलहिन के ।

आरोग रहे पीछे, धरे रूमाल आगे ए।
राम बाई सेवा करे, आरोगे पीछे जे ॥७३

हर बाई ठाड़ी रहे, ले के हाथ रूमाल।
आरोगे पीछे देत, होत मन खुसाल ॥७४

सुपारी गिरधर ल्याईया[1], और देत मानक।
और छबील छब सों, सब पेहेले दे हक ॥७५

और तंबोल को, ले आया प्रहलाद।
कल्यान सेवा करत है, प्रहलाद के आद ॥७६

प्रहलाद के सामिल, रेहेत है संपत।
तंबोल सेवा मिने, ए करत है नित ॥७७

पान पोछन को काढ़त, लगाए काथा चूना जुगत।
लवङ्ग जावंत्री जाएफल, बाई जी बनावत ॥७८

कपूर दानी राखत है, ए जो मकुंद दास।
अरोगावे बीड़ी मिने, ए मोमिन है खास ॥७९

बीड़ी ली बाई जी[2], देत राज के हाथ।
लोंग एलायची देत हैं, इन बीड़ी के साथ ॥८०

महाराजा अरोगावही, अपने हाथ तंबोल।
राज रीझ कहत हैं, कोई इत सेवा नहीं इन तोल ॥८१

१—ह० सुपारी गीगा ल्याइया। २—ह० बीड़ी बाले श्रीबाई जी।

पेहेले गिरधर मोनी, सेवा करी तंबोलकी ।
पीछे छोड़ी इनने, साथ जब खेंच करी ॥८२

कस्तूरी को राखत, बेनी दास कोई दिन ।
राज आरोगत पान में, सेवत है दे मन ॥८३

आरोगते आनन्द सों, बातां करत बनाए ।
सेज समारी पौढ़न की, सखियां सेवन को इत आए ॥८४

इत पांवडे बिछावत, पधारत घर मानक ।
हाथ पकड़ उठावही, लछी दास बुजरक ॥८५

आसा ले हाजर किया, गंगा दास इत ल्याए ।
लटके मटके चलत, मीठी बातां करे बनाए ॥८६

जब महाराजा पोहोंचत, तब हाथ पकड़े ए ।
दूजी तरफ लाल दास को, राज जी हाथ देते ॥८७

फिरते बखत हाथ पकड़े, लेत प्रेम दास लाल ।
मकरंद इनके सामल, सेवत दिल खुसाल ॥८८

सेज बिछाए सनेह सों, ए जो द्वारका दास ।
प्रेम दास दूजी तरफ, और सेवे साथ जो खास ॥८९

चारों तरफ बिछाए पांवड़े, परदखना के गिरद ।
लटके मटके चलत, ए मोमिन सेवे कर मरद ॥९०

सङ्ग जूथ सैयन के, घेर के चलें साथ।
गावें बानी धाम की, जाके राजे पकड़े हाथ ॥६१

सहिश्रां राज रिझावत, बचन मीठे बोल।
राज रिझावे सहिश्रन को, कोई नहीं इन सुख तोल ॥६२

कबहूं बानी रास की, गावत हैं कर प्रेम।
कबहूं ब्रज लीला मिनें, कछू न रेहेवे नेम[1] ॥६३

कबहूं अरस अजीम को, गावत दे कर चित।
राज रीझ के तिन पर, बोहोत करत है हित ॥६४

बड़ी जीजी गादी तकिए[2], सेवा करती ए।
राज आरोग पलङ्ग बैठत, आगे आवे धरने के ॥६५

सुख देत सनेह सों, कै भांतों कर हेत।
अति मिठी रसना बोलत, धाम धनी सुख देत ॥६६

इन समे सनेह की, कहां लों कहों ए सुख।
ए तो मोमिन जानहीं, कह्यो न जाए मुख ॥६७

सेज सूरंगी पिउ की, अति प्यारी भरी नूर।
इन सेज के लवाजमे[3], क्यों कर कहूं हजूर ॥६८

सेवत अति सनेह सों, साथ गिरदवाए घेर।
सखियां सामे घेरके, चरनों लागे बेर-बेर ॥६९

१—ह० कबू न लेवे नेम। २—ह० बाईजी गादी तकिए। ३—ह० सेज सुरंगी नूर की।

लटके मटके चलत, आए बिराजत पलंग।
चरनों लाग पीछी फिरे, जी साहेब की अरधांग ॥१००

इत दो पोहोर पूरे भए, हुआ तीसरे का अमल जब।
ताको बीतक कहत हों[१], सुनियो सेवा की विध तब॥१०१

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए बात बड़ी बुजरक।
एक जरा मैं ना केहे सकों, लाल कह्या गजे माफक ॥१०२

॥ प्रकरण ॥४॥ चौपाई ॥३१६॥

[उन्तीसवां विश्राम सम्पूर्ण]

तीसरे पोहोर की बीतक

अब कहों तीसरे पोहोर की, बीतक जो मोमिन।
सो तुम सुनियो निके कर, दे दिल के कानन ॥१

चरना ले कर आइया, प्रेमदास पेहेनावत।
नंद-राम पीछे खड़े, ले गोटा कनढपी खली-तन ॥२

पीउ पौढे पलंग पर, सहिआं सेवन को सनमुख।
मीठी बाता रसना सों करे, देत अरस के सुख ॥३

सेवा अंग परस की, बीरो आन करत।
सहिआं चरनों लाग के, मंदर अपने फिरत ॥४

जीजी सिर आगे धरे, राज मारो टपले।
पौढ़न बखत पलंग पर, इन समे आन पोहोंचे ॥५

१—ह० तिन की बीतक कहत हो।

इन समे राधा बाई, राजके पकड़े हाथ ।
सिर खुजवालने, बैठे सेज सेवा के साथ ॥६

गुलजी और अगरदास, आवत पांऊ दाबन ।
इन सेवा मिनें ए, रेहेते थे मगन ॥७

मया - राम इत आए के, बानी सुनावत धाम ।
राज राजी होत हैं, सब पूरे मनोरथ काम ॥८

तम्बूरें में तांन सों, गावे जगन्नाथ जुगत ।
धाम बरनन सुनत है, पोढ़ने के बखत ॥९

गजपति गेहेरापन सों, गरजत है मुखबान ।
साखी केहेवे साथ को, ले दरद खड़ा ईमान ॥१०

समे सब पोढ़न के, रिझावत है राज ।
काएम बानी धाम की, जाए गांए होए सब काज ॥११

गजपत चरने राज के, तन मन सोंप्या तित ।
हुआ कुरबान हक पर, पीछा कछू ना राख्या चित ॥१२

चंद्रावली रिझावत, गाए पंजाब के वचन ।
दरद उपजावे दिल कों, स्यावास कहिए इन तन ॥१३

नंदू नित दोए बखत, आगे पलंग के गावत ।
तबलों तंबूरा बजावत, जोलों वारी वाले न पोहोंचत ॥१४

बदलें आया गावने, अपने साथ संगी ले ।
संभू सूर पूरन है, और संतदास सेवें ॥१५

बखतावर अंम्रत कुंडली, संपत सेवे सनेह ।
गावत है अति हेत सों, राज रिझावने एह ॥१६

बानी मेरे पीउ की, गावत अति रसाल ।
सुनते सुख उपजत है, होवत दिल खुसाल ॥१७

साथ फिरे सब अपनी, इत बानी सुनन का दाह ।
राज सुने सनेह सों, दिल में बड़ी चाह ॥१८

और भी साथ सुनत है, जान धाम धनी सों नेह ।
प्यार करें पीउ तिनसों, राखत बड़ा सनेह ॥१९

अब कहों गावन की, जो बारी में गावे ।
फिरती फिरती आवत, गाए रिझावत ए ॥२०

बारी में गावत है, चौदे आवत फिरती ।
कलाम वहदानीयत के, वही जो उतरी ॥२१

ए है कलांम रब्बानी, जो सूने रसूल अलैहसलांम ।
तीस हजार जाहेर किए, तीस इसारतें जो लिखे कलांम[1] ॥२२

और जो तीस हजार कानों सुने, पर लिखे नहीं कुरान[2] ।
सो हरफ सिफायत के, जो महंमद सुने कान ॥२३

१—ह० तीस हजार जो लिखे कलाम । २—ह० पर चढे नही फुरमान ।

सो कलाम इत आए के, कहे वास्ते पेहेचान ।
एह दावत क्यामत की, ल्यावे खलक ईमान ॥२४

जिन बानी गाए से, होत दीदार हक ।
सिफायत महंमद की, होत इन सें बुजरक ॥२५

ए आठों पोहोर में, गावत समे समे ।
एक प्रात मध्यांन को, गावत है चित सें ॥२६

और समे चितवनी के, जब दीन रहे घड़ी चार ।
और संझा समे, मोमिन करें विचार ॥२७

और समे पोढन के, जब रात जाए पोहोर दोए ।
तब गावन बैठत हैं, ताके नाम कहत हों सोए ॥२८

एक बारी बदले की, तहां सम्भू गावन हार ।
कबूं हक थानूं बैठत, करें संत दास मनुहार ॥२९

और सामिल गावहीं, ए जो बखतावर ।
कुंडली गावहीं, ए बारी सब ऊपर ॥३०

और दूसरी बारी मिनें, हैं मन्ना और रतनी ।
असाई भागो धन बाई, सब बारी रिझावें अपनी ॥३१

और तीसरी बारी मिनें, दयाली गावें ।
और खिमोती दमोती, जसीया भी आवें ॥३२

चौथी में लछो आवत, सङ्ग असाई मना।
और सब हाजर रहें, ज्ञान राज अपना ॥३३

जहूरा गोरी बारी मिनें, गावत बाई प्रेम।
खेम बाई सामिल रहे, गुलो गावे लिए नेंम ॥३४

सब की बारी मिनें, चंद्रावली देत मदत।
श्री राज रीझत तिन पर, गावने के बखत ॥३५

जीजी की बारी मिनें, गावत है अगरी।
बड़ी जीजी सामिल रहें, और गावत है मथुरी ॥३६

करमेती के सामिल, गावें हरखो बाई गोर।
लालो रतो लड़ेती, ए गावत है जोर ॥३७

और लछो ललता, और सूआ संता द्रोपदी।
केसर लखमी आवत, राज बड़ी रीझ करी ॥३८

आठमी बारी मिनें, हर कुंअर सिरदार।
पांखडी सूजा कासी, गावत खबरदार ॥३९

नवमी जसा की बारी मिनें, गावें भागो चंगाई[1]।
बीरो क्रिस्नी सामिल, ए गावन कों आई ॥४०

भागीरथी के भाग में, गावत है मोहन दे।
लड़ेती लछो सूआ रहे, पटेलन जेनती के ॥४१

१—ह० गावे भीगू चगाई।

और संता गावे सनेह सों, लाली लालो इनमें ।
अपनी बारी गावहीं, रहे खुसाली से ॥४२

अग्यारमी भानी की[1], गावें हिमोती गोमां ।
राम बाई साथ गावहीं[2], हक आवत करें उपमा ॥४३

खरगो खिमोती रहे, ए गावत अल्ला कलाम ।
राज रीझ के कहत हैं, इनें देओ बैठने का ठाम ॥४४

खेम बाई की बारी मिनें, गावें साहो हंसो जादी ।
करमा बाई आवत, रीझ राजे बारी दी ॥४५

गुलो की बारी मिनें, गावें जांन मानमती ।
दीपा जयंती मनियां[3], गावत सुख देती ॥४६

दो पोहोर की बारी मिनें, गावत है सिवराम ।
संझा में भी सामिल, ए पावत बिसराम ॥४७

सदा-नंद गवावहीं[4], भाई जो सिवराम ।
और अम्रत कुडली, और बखतावर को नाम ॥४८

बनमाली की बारी मिनें, गावें दो पोहोर संझा समे ।
संग संता प्रेम जीजली, रामबाई सूरत से ॥४९

ए बारी वाले गावहीं, आठ पोहोर रात दिन ।
एह नित सुनत हैं, खास गिरोह मोमिन ॥५०

१—ह० अग्यारमी भानी की बारी मिने । २—ह० राम बाई तहा गावत । ३—ह० देम्रती मनिया गोर बाई । ४—ह० सदा नद गावही ।

और आवत जात बोहोत, पर मढ़े फिरत दोऊ कान ।
बिन अंकूरे क्या करें, पावें ना सुख सुभान ॥५१

ना तो बुरा ना चाहे कोई आप कों, पर ना सुनने ताकत ।
लज्जत उनको ना आवहीं, तो क्यों कर बैठे तित ॥५२

तावे रहे सैतान के, सो खैंचे अपने तरफ ।
देखावें दुनीआ कों, तो पावें नहीं हरफ[1] ॥५३

जो कदी कानों सुने, काहू की सोहोवत ।
पर दिल की आंखें फूटियां, तापे न पावें लज्जत ॥५४

एह जिन के ताले लिखे, सो गावें सुने सुकन ।
जोस फिरे जबरूत लों, नजर लाहूत में मोमिन ॥५५

तिन के वास्ते खेल को, बनाया खालक ।
रसूल को उन ऊपर, भेज दिया है हक ॥५६

सुनना कुरान का, इनों के कहे कान ।
कलाम रब्बानी उतरे, वास्ते मोमिनों पेहेचान ॥५७

सो बानी सिफायत की, इन[2] वास्ते उतरी ।
हक मेहेर करत हैं, सो मोमिनो दिल धरी ॥५८

पांचों चीज बकासें, उतरी वास्ते मोमिन ।
जबराईल जोस धनीआ का, करत सदा रोसन ॥५९

१—ह० तो पावे ना ऐक हरफ । २—ह० किन ।

असराफील आइया, नूर मकान सें ।
गावत हैं कुरान को, बैठ बीच मोमिनों में ॥६०

करनाई फूंकन को, देखत राह हुकंम ।
पीठ कुबड़ी कर के, बीच सांस न लेवें दंम ॥६१

और हुकंम आया हक का, ऊपर करने काम ।
मोमिनों को खेल देखाए के, पोहोंचावें वतन निजधाम ॥६२

उतरी रूहें अरस अजीम से, ए सामिल हैं पांच ।
सब कारज होवें इन से, एक ठौर होय के ए ॥६३

ए सब वास्ते मोमिनों के, करत हैं सुभान ।
सब सिफत लिखी इनकी, इनको दिया ईमान ॥६४

भागवत गीता मिनें, और वेद वेदांत ।
सब इन के वास्ते हुआ[1], हकें करी सब कर खांत ॥६५

उपनिषद इन वास्ते, बोलत हैं अद्वैत ।
सुनते चरचा इनकी, उड़जात सब द्वैत ॥६६

वाहेदत कुरान केहेवही[2], सो कह्या वास्ते मोमिन ।
हकीकत मारफत के, द्वार खोल दिए सब इन ॥६७

ए पैगाम जो उतरे, सो वास्ते मोमिनों के ।
सब गवाही देवें इनकी, और न सिफत कहें ए ॥६८

१—ह० सास्त्र इन वास्ते हुआ । २—ह० वेद कुरान केहेवही ।

मुकदमां क्यामत का, सो इनों वास्ते होए ।
मुरदे किए जीवते, इनों वास्ते किया सोए ॥६९

राह जो इसलाम की, पावें सब खलक ।
मेहेर बड़ी जो उतरे, सो भेजी इन वास्ते हक ॥७०

और बात केती कहों, सब हुआ इन वास्ते ।
सो तुम जाहेर देखोगे, दिल अपनी नजर से ए ॥७१

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, ए सुनो जिकर सुभान ।
ए सिफत सुभान की[१], लाल जिन को भई पेहेचान ॥७२

॥ प्रकरण ॥५॥ चौपाई ॥ ३९१ ॥

[चौथे पहर की बीतक]

अब कहों पोहोर चौथे की, बीतक जो मोमिन ।
सो दिल के कानों सुनियो, करत हों रोसन ॥१

इत एक पोहोर लों पौढ़त[२], आए सेवन को सब साथ ।
जल लोटा भर ल्याइया, दे छबील अपने हाथ ॥२

राज कोगला करत है, डारत हैं पीक दान ।
संकर आगे धरत है, संग संत दास प्रवान ॥३

मानक दौड़े इन समे, हजूर पोहोंचा आए ।
ए सब सेवा में सामिल, कछू अरज पोहोंचाए ॥४

१—ह० ए सिफत ईमान की । २—ह० इत ऐक पोहोर पीउ पौढत ।

राज रजा देत हैं, आए हजूरी सब।
संकर सेवें सनेह सों, मोरछल लिए तब ।।५

हजूर हमेसा रहें, ए जो केसव दास।
कंचन मूठे मोरछल, सनेह सों सेवा खास ।।६

बल्लभ गंगा-दास जो, रहत हजूर हमेस।
निरगुन होय के रेहेवहीं, माया नहीं लवलेस ।।७

बिहारीदास हमेसा, रहे हजूर हक।
सब कामों में दौड़त, बड़ी सेवा बुजरक ।।८

लाल दास हजूर में, मकंरद इन साथ।
नीमा पेहेनावें प्रेम दास, कस बांधे दोउ हाथ ।।६

धरत हैं सिर पर, गोटा पेहेनावत नंद राम।
गोस पेंच सिर पर, आए मुकंद दास इन ठाम ।।१०

दुता सुपेत कंचन का, पेहेनावत ऊपर।
राम चंद हैं सामिल, सेवे नंद राम यों कर ।।११

पटका कंमर सों बांधत, जरी किनार झलकत।
थुरमा ओढ़े कुड़ती पर, सोभे सुनेरी बूटे इत ।।१२

तकिए मखमली ल्याइया, ए जो बिहारी दास।
कोई दिन सेवा करी, मिल बंदे फरास ।।१३

मेघा इन के संग रहे, और सुकाली सेवें।
गोबिंद दास बदले, और बिसंभर सेवा करें ॥१४

भाई बनमाली दास ने, ए जो बनाया तखत।
हवाले रहे बिहारीदास के, गादी तकिए धरे इत ॥१५

धन जी गावने में रहे, बन माली दास के सग।
तखत कुरसी सेज सेवा, करे सामल होए उछरंग ॥१६

सेज पर से उठ के, कोई दिन घर जात घनस्याम।
तहां पांवड़े आगे बिछावत, ए लाल बाई का काम ॥१७

और बिछावत किसुनी, एक पांवडे जित।
फुमक चद्रवा बांधत, मानक बाई तित ॥१८

तिन सेवा के सामिल, गंगा दास सोभा दास।
इन सेवा बराबर, कोई न पोहोंचे खास ॥१६

इत हाथ पकड़ के, लछी दास ल्यावें।
पीछे फिरते हाथ दे, लालदास पोहोंचावें ॥२०

प्रेस दास चिंता गले लिए, सेवन को सब साज।
बातां करें बनाए, सबे राज के काज ॥२१

लटके मटके चलते, आए बैठे कुरसीए[१]।
ए सेवा बिहारीदास की, गादी बिछाई भर के ॥२२

१—इ० आए बैठे गादिए।

धरे दोऊ बाजू दोए तकिए, ऊपर पांवड़े चलात
पगथीए चरन धर के, आए कुरसीए बिराजत ॥२३

चरन पखालने को, छबील ल्यावत जल[1] ।
मकुंद दास पखालत, सेवत दिल निरमल ॥२४

दूजा पखाले प्रेमदास, पोंछे केसव रूमाल ले ।
नारायनदास ता ऊपर, रूमाल से पोंछें ॥२५

दोए बाजू पिंडुरी पकड़त, इत बनमाली दास ।
लाल दास सामल रहे, लिए सेवन की आस ॥२६

इत चिलमचो धर के, बैठत हैं नंद राम ।
जल प्रसादो बांटत, सकर को ए काम ॥२७

हाथ पखालत हेत सों, छबील दास डारे[2] जल ।
हाथ पोछावें रुमाल सों, प्रेमदास निरमल ॥२८

अमल आरोगे इन समे, इत छबील दास देवे ।
फोफल आरोगन को, मानक ले पोहोंचे ॥२९

कुरसी गिरद घेर के, अंभो और गोरी ।
और मानवती मानसों, और गोदावरी ॥३०

दुरगी ललिता आवत, सुआ खिमाई साम ।
लछो मन गमता, मातेन जहूरा इस ठाम ॥३१

१–ह० चरुन पखालने को छबील दास, ल्यावत सुन्दर जल । २—ह० रेड़े ।

और दो बाजू सहिओं खड़ी, कुरसी को घेर के ।
संकर मथुरा गावत, बिहारी गंगा दास मिले ॥३२

कासी हाथ पकड़त, बैठत कुरसी बखत ।
ओझा कलंगी हाजर करे, जब बैठे राज तखत ॥३३

इत बिहार कै भांत के, सो आवे नहीं जुबांन ।
सहिओं को सुख देत हैं, कराए अपनी पेहेचान ॥३४

बल्लभ छत्र पकड़ के, फेरत सिर ऊपर ।
हाथ पकड़ उठावत, लालदास यों कर ॥३५

इन तखत के गोफने, बांधत मानक इन ठांम ।
दो लाल बाई बांधत, एक बांधत घनस्यांम ॥३६

मानक सामल रहत हैं, आई सुदामापुर से[1] ।
फूल बाई रहत हैं, सरीख सेवा में ॥३७

तखत साज सोने रूपे की, राखत हैं बुध सेंन ।
सब सेवा में ठाड़ा रहे, आवे जाए लेन देंन ॥३८

सेवा लिखनहार की, स्याही देत बनाए ।
कुंजा भर के पुकारहीं, कोई लेवे जो दिल चाहे ॥३९

लटके मटके राज चल के, आए बैठे तखत ।
केसव संकर ले खड़े, मोरछल इन बखत ॥४०

१—फूल बाई सुदामापुर से ।

पीछला बाकी दिन, दिन रह्या घड़ी चार ।
धाम चलने दिल में[1], मोमिन करें विचार ॥४१

दोऊ बाजू भर के, आए के बैठा साथ ।
अरस अजीम पोहोंचावने, हकें पकड़े हाथ ॥४२

श्री महाराजा सेवहीं[2], सब सेवा में सामल ।
अति सनेह सों सेवा करें, पाक दिल निरमल ॥४३

जो सेवा संकुदल करी, अपने तन मन धन ।
अपना आपा सोंपया, तो कह्या अमीरल मोमिन ॥४४

अरस की निमाज का, आए पोहोंचा बखत ।
गोकल अरज करत हैं, सामे होए तखत ॥४५

हम को इन खेलसे, सिताब काढ़ो राज ।
भए मनोरथ पूरन, रह्या न कोई काज ॥४६

धामधनी सुनत हैं, बानी जो मकबूल ।
दुआ जो मोमिन की, होत है कबूल ॥४७

खासी ढाल तरवार जो, दई पेहेले मुरलीधर ।
कोईक दिन भिखारीदास, कोई दिन गिरधर रहे पकर ॥४८

फेर दई लालदास को, संतदास खड़ा रहे ले ।
कबहूं दूजा भिखारी दास, पीछे बुध सेंन करे ॥४९

१—ह० धाम वतन चलन की । २—ह० श्री महाराजा आवत ।

सूरत सिंघ राखत हैं, तरकस तीर कमान ॥
बरछी घनस्याम रखत हैं, ए[1] खिजमत रेहेमान ॥५०

बाई जी पठयदेत हैं, हाथ मकरंद के ।
श्रीराज के वास्ते, ले आवत है नित ए ॥५१

रकेबी भर रूपे की, भर ल्यावत भूषन ।
महाराजा पेहेनावत लिए, पकड़ें हाथ मोमिन ॥५२

माला दोए मोतिन की, और उतरी कंचन ।
दोए साकलीआं सोने की, झलकत हीरा रोसन ॥५३

दुगदुगी दोए जड़ाव की, करें मानक जोत अपार ।
महाराजा पेहेनावत, ताको क्यों कर कहों सुमार ॥५४

चंद्रहार अति झलकत, चंपकली सिर नूर ।
कंठी पर कंठी सोहे, सो क्यों कर कहों जहूर ॥५५

मोतिन की कंठो बनी, तले मोती ऊपर मानक ।
चौखोना सोने मढ़या, सोभित है कंठ हक ॥५६

गिरद चंद्रिका कमल ज्यों, लटकत पाग ऊपर ।
सिरे मोती लटकत, धरे हीरा जोत सब पर ॥५७

महाराजा पेहेनावत, पोहोची बांधी इन ठाम ।
हीरा मानक झलकत, एह महाराजा का काम ॥५८

१—ह० करे खिजमत रेहेमान ।

और अँगुलिओं मुंदरी, आगे सब धरी।
माफक बैठत अंगुरी, सो अंगीकार करी ॥५६

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, ए चौथे पोहोर की वृत।
अब कहों पोहोर पांचमा, सुनियो तन मन इत ॥६०

[तीसवाँ विश्राम सम्पूर्ण]

प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४५१ ॥

पांचमें पोहोर की बीतक

अब कहों पांचमें पोहोर का, आया जब बखत।
हुआ बखत बैठन का, ऊपर इन तखत ॥१

लछो अरज करत हैं, राज पधारो कौन घाट।
राज उत्तर देत हैं, आज पधारें पाट ॥२

तखत बिछौने होत हैं, बिछावत बिहारी दास।
तलाई उछाड़ सूजनी, तकिए धरे मखमली खास ॥३

इत जोड़े तखत के, गादी बिछोने होए।
चारों तरफो तिन के[1], बिहारी दास धरें सोए ॥४

दीपक सेवा में खड़ी, मानक करमेती।
राज को रिझावत, सब विध सुख देती ॥५

सुख पालमें बैठ के, बाई जी आवत।
अरज आरोगन की, मीठी बातें बातां करत[2] ॥६

१—ह० चारे गमा ते तान के। २—ह० ल्याई मथुरी और हिम्मत।

इत थाल आरोगन की, ल्याई मथुरी और हिमत ।
साक तरकारी कटोरी, लेके आगे धरत ॥७

श्री महाराज बाई जी, बैठत आरोगावने थाल ।
हाथ पखालत प्रेम सो, मानक सेवा करें खुसाल ॥८

हाथ पोंछन को दिया, रूमाल श्री महाराज ।
एक मुंह आड़े अपने बांध के, अरोगावत श्रीराज ॥९

आरोगत अति हेत सों, सो कहां लो कहों ए ।
राज भोग सामग्री लवाजमे, सब साक तरकारी के ॥१०

इत रूमाल आड़े डार के, सेवत बिहारी दास ।
सखियां सब ठाड़ी रहे, सेवन की लिए आस[1] ॥११

थाल ले आगे धरे, बैठे पकड़ महाराज ।
मीठी रसना सो बातें करें, रीझ-रीझ के राज ॥१२

आरोगत अति हेत सों, बातां करें बनाए ।
धाम धनी गाए रिझावहीं, कवल देत हैं ताए ॥१३

बाई जी बातां करत हैं, आरोगने बखत ।
राज रीझ के कहत हैं, ऊपर बैठ इन तखत ॥१४

जल छबीला ल्याइया, आरोगन को हक ।
कंचन कटोरे लाए के, देत है माफक[2] ॥१५

१—ह० मनमे सेवन की आस । २—ह० कचन कटोरे सु दर, जल बाए देन माफक ।

कोई वस्त आरोगावने, मसाला ल्यावे घर से।
मेवा मिठाई पकवाने, राज हेत आरोगै ए ॥१६

राज रहें आरोग के, सहिम्रां उठाए थाल।
चुलू करावें चोपसों, साकुंदल दिल खुसाल[1] ॥१७

काबा आरोगन को, ले आई मानक।
भर के देवे हाथ में, दे गंगादास बुजरक[2] ॥१८

फूल सुपारी बीड़ी मिनें, आरोगावे करण[3] ।
ए सेवा बाई जी की, दै सेवक अपना जान ॥१६

बोड़ी बालत बाई जी, महाराजा अपनी।
दे सुपारी मानक छबीला, और सेवत महारानी ॥२०

हार कलंगी आवत, उपरा ऊपर इत के।
ले ले नाम मुजरा होत है, होए जुबां एक एक के ॥२१

संभू ऊका जसिया, ल्यावत है कलंगी।
राज हाथों ले धरत हैं, सेवा अंगीकार करी ॥२२

श्री महाराजा कलंगी बनावत, अपने हाथों कर।
विध रंग लटकनी छबि छाजत[4], हाथों हाथ धरे सिरपर॥२३

मकुंद दास ले आवत, तुर्रा कलंगी परन।
राज सिर पर धरत हैं, झलकत है किरन ॥२४

१—ह० सनकूल दिल खुसाल। २—ह० ऐ जो गगदास बुजरक। ३—ह० अरोगावे कल्याँन। ४—ह० बाधत लटकनी छब सो।

महाराज के रावर सें, आवत कलंगी हार।
चित माफक अपने सोभित, दे महाराजा अपने लार॥२५

कहा कहों इन समें की, जहां राज विराजत तखत।
आई जी मोरछल करत हैं, सो कही न जाए बखत॥२६

महाराजा मोरछल लिए, दोऊ बाजू चमर ढ़ोराए।
सेख बदल लाल खांन, हाथ फेरत चमर बनाए॥२७

कबहूं पीठ करकें, लाल केसव करे अरज।
वास्ते कुरान हदीसां की, रहे पढ़ने की गरज॥२८

मन्ना अरज करत हैं, वस्तर सुनने की।
राज मोसो कहो, मैं हाजर न थी॥२९

साड़ी रग सेंदुरिए, स्यांम जड़ाव कंचुकी।
नीली लाय को चरनिया[१], ए बस्तर ठकुरानीजी॥३०

चीरा रंग सिंदुरिए, जांमा सुपेन जवेर तार।
पिछोड़ी रंग आसमांनी, देख परवरदिगार॥३१

नीले न पीले रंग की, पटका बांधा कमर।
केसरिए रंग इजार हैं, ल्यो मूल बागा दिल पर[२]॥३२

आज निरत नवरंग की[३], साड़ी जड़ाव स्यांम।
आवां रस की कंचुकी, पांच पटे चरनियां इस ठांम॥३३

१—ह० नीली लाहि को चरनिया। २—ह० लेवो मूल वागो दिल धर। ३—ह० आज निरत नवरग बाई को।

पेहेनी इजार नीली, ए वस्तर बाई निरत।
और सिनगार सब साथ को, स्यामा जी के मानिंद तित ॥३४

ए वस्तर सब साथ को, कहेते वखत दोए।
एक प्रात और संझा को, साथ सुनत हैं सोए ॥३५

स्वरूप दाता ब्रह्मांड में, हुए हैं दोए तीन[२]।
सो लिखे सास्त्रों मिने, जो ल्याए आकीन ॥३६

सो स्वरूप बैकुंठ का, जाए कह्या मलकूत।
केहेने वाले फिरस्ते, जिन का ठोर जबरूत ॥३७

ए सूरत अरस अजीम की, जाए कहिए अख्यरातीत[३]।
केहेने वाले धाम धनी, सुने मोमिन कर प्रीत[४] ॥३८

नेस्टा बंध सुनत हैं, जाए हक होवे कांन[५]।
पांव हाथ अंग इंद्रियां, होए हक ताए पेहेचान ॥३९

दूसरा कोई इत आए के, कबूं न सके बैठ।
काहूखुसामद गरज आवही, तोक्योंहि न सके पैठ[६] ॥४०

ए तो बात अंकूर की, होए ना बिना संनमंध।
जो दुनिया को देखहीं, ताए कहिए बड़ा अंध ॥४१

जब कलाम रब्बानी खुले, तब हुआ बखत क्यामत।
तब लगा रोजगार को, है बड़ा कम हिंमत ॥४२

१—ह० स्यामा जी माफक देंखत। २—ह० सरूपदाता ब्रह्माण्ड मे, भए हे दो तीन। ३—ह० जाय कह्या अछरातीत। ४—ह० सुने मोमिन कर परतीत। ५—ह० जाए साँचे होवे कान। ६—ह० पर मिने ना पैठ सकत।

आया समे आरतीय का, साथ आवत चारो तरफ।
इन समे सोभा की, कह्यो न जाए एक हरफ ॥४३

बाई जी आवत इन समें, होत बिछोने जोड़े तखत।
गादी तकिए बिहारी दास, बिछावत है इत ॥४४

आरती होत आनंद सों, करत अति घने प्यार।
सोभा होत संसार में, करत सबे मनुहार ॥४५

झांझ ताल थेली मिनें, ए दगड़ा राखै।
आरती समे ल्यावत, भाखरिया नाचै ॥४६

दोए बाजू चमर ढोरत, लाल बाई पेहेले।
गोबिद दास करता, कोई दिन सिवराम के ॥४७

हर नंदन कोइक दिन, सेख बदल लाल खान।
आखर आई इनते, जिन को था ईमान ॥४८

गावें गवावें साथ को, ए सेवे मुकंद दास।
आरती में आए खड़े, होत तित विलास ॥४९॥

विंदा कनड़ गावही, और गंगा राम।
अगर दास आनंद सो, वदरी दास इन कांम ॥५०

कबूं उतम दास आवहीं, बजावत है मिरदंग।
झांझ ताल बजावत, केतेक सैयां इन संग ॥५१

गावन को आगे खड़ा, परमां-नंद प्रवीन ।
भाव दिखावत भेद सों, याको चेत माफक आकीन[1] ॥५२

साथ सब खड़े रहे, भर बाजू दोए ।
झांझ मिरदंग बजावत, आनंद बंगले होए ॥५३

सुन धुन इन समें, कांपत कलि दजाल ।
नेहेचे मोको मारेंगे, एही मेरा है काल ॥५४

मेघा गादी बिछावत, बाईजी कदंम तले ।
जब आरती होत है, बाईजी खड़ी ऊपर इनके ॥५५

आरती के बखत में, चादर बिछावै हीरा मन ।
चावल बधावत बाई जी, सब आरती वाले मोमिन ॥५६

बाईजी करें तिलक, चौडत है चावल ।
राघव रूमाल धरत है[2] करें सेवा अपने बल ॥५७

आरती करे आनंद सो, बाईजी इत आई ।
ए सेवा की जोगवाई, साज रुकमनी ल्याई ॥५८

रूपे पचंखनी आरती, गिरद दीपक जोत बत्तीस ।
करें फिरते प्रकास चहुं दिस, सेवत कर जगदीस[3] ॥५९

और आवत करने आरती, लछो इन समें ।
दीपक जोत प्रकास के, कोई दिन सेवा हुई इनसें ॥६०

१—ह० च० आया कूबत माफक आकीन । २—ह० रूधव रूमाल धरत हे ।
३—ह० च० सेवत मन परतीत ।

और आमो करें आरती, सांमल दूजी तरफ।
एक बाजू मातेन खड़ी, और भानी एक तरफ ॥६१

और कै कुमारिका, लिए दीपक थाली हाथ।
झलकत जोत चहुं दिस, करें बाईजी के साथ[1] ॥६२

कंचन थाल चहुं दिस दीवड़ा, दीपक जोत प्रकासी।
करे आरती जियावर रानी, आनंद अंग उलासी ॥६३

जुगल सरूप सुन्दर सुखदायक, स्यांम धाम धनी सोहें।
मंगल रसिक बदन की सोभा, निरखता मन मोहें ॥६४

सखियां निरत करें और गावें, उमंग अंग अपार[2]।
ताल म्रदंग झांझ डफ बाजे[3], सखियां बोलै जेजे कार ॥६५

बधावें मुकता फल सखियां, जीयावर स्यांम सुहाग[4]।
तन मन जीव निछावर कीनों, महामत चरने लाग[5] ॥६६

रुकमनी थाल धरत, राज के आगे।
कर पसार 'वीरा धरें, करें मेहेर धाम धनी ए ॥६७

और सब की थाल में, डारत बीड़ी ए।
सेवा कल्यान पेहेलाद की, नित आवे करने के ॥६८

इन भांत नित्य आनंद, होत बंगले में।
कै खलक आवें दीदार को, सो नफा कायमी पावें इनसें[6] ॥६९

१—ह० करे बाई जी ऊपर साथ। २—ह० आनद अखड अपार। ३—ह० ताल म्रदंग झांझ जंत्र बाजे। ४—ह० सुहागी। ५—ह० श्री इद्रावती चरनो लागी। ६—ह० सुन कायमी पाबे इन से।

इत धुन सूरज मन करै, करें आरती के बाद[1] ।
धाम धनी जियावर, कै नाम लेत आवै स्वाद[2] ॥७०

एही अख्यरातीत हैं, एही हैं धनी धाम ।
एही महंमद मेहेदी ईसा, एही पूरे मनोरथ काम ॥७१

इन भांत कै नाम लै, गावत होए मगन[3] ।
कै साथी संग गावत, सिरे सूरज मन[4] ॥७२

इन भांत आरती समे, इन विध करत कलोल[5] ।
हए गए बंगले न सूझत[6], कोई सुख नाहीं इनके तोल ॥७३

एक पहर रात लों, होत है ए मनुहार ।
कोई आवत कोई जात हैं, कहां लों कहों प्रकार ॥७४

मेहेमत कहे ए मोमनो, भया चरचा का बखत ।
अब तुम सुनियो चितदे, आगल इन तखत[7] ॥७५

॥ प्रकरण ॥७॥ चौपाई ॥५२६॥

[पोहोर छठा सुरू]

अब कहों पोहोर छठा, जित चरचा होत हक ।
बैठे सुनत जमात, जो खास गिरोह बुजरक ॥१

साथ सबे बंगले में, बैठे होए सनमुख ।
केसव दास बानी पढ़ै, कह्या न जाए ए सुख ॥२

१—ह० करे आरती बोध । २—ह० नाम लेत भागे क्रोध । ३—ह० इन भात कै गावत, होए के मन मगन । ४—ह० साथे सूरज मन । ५—ह० कै विध होत कलोल । ६—ह० हुए गऐ बगले ना सुनात । ७—ह० लाल आगें आए बैठे इन तखत ।

कुरान हदीसा बांचने, बैठत है दास लाल ।
गोकुल हदीसा पढ़त हैं, करने राज खुसाल ॥३

इत चरचा होत चोंपसों, बरसा होत अद्वैत ।
रसना मीठी सों कहें, उड़ जात सब द्वैत ॥४

मुरलीधर सनमुख बैठत, पलक न मारत नैन ।
मुखसों मुख सनमुखं, स्रवनों सुने मुख बैन ॥५

एक बाजू श्री महाराजा, और देवकरन जी साथ ।
और दुरग भांन पीछल, जाके धनी ए ग्रहे[1] हाथ ॥६

और चंद्रहंस आवत, और साह-रुप ।
देत स्रवना केहेते, सरूप सुन्दर अनूप ॥७

और किसोरी आवत, बैठत चरचा में ।
झारु देत बंगले मिनें, सोहोबत देव करन सें ॥८

अमान-राए परवत-सिंह, और नारायन दास ।
और सकत सिंह आवत, और जगत सिंह खास ॥९

हमेसां दुरगभांन के, लवंग आवै दोए ।
रुपैया उद्धव रसोई को[2], पोहोंचावत है सोए ॥१०

तुला राम सेवा में, आवै दरसन को जब ।
परनाम करके बैठत, चरचा सुनत है तब ॥११

१—ह० पकड़े । २—ह० ऐक रुपैया रसोई को ।

प्रेम जी पीतांमर, और मकुंद दास ।
गोकुल केसव बैठत, और जेनती खास ॥१२

और सूरत सिंघ मकरंद, और मोनी गिरधर ।
भवान सिवराम सदानंद, और बैठे गिर्द घेर योंकर[1] ॥१३

और सेख बदल बैठत, और लाल खांन ।
मीही पठान बैठत, और अबल खां सुनें कांन ॥१४

और नूर महंमद, चंचल और दया राम ।
गुल जी नांथा ठाड़ा रहे, पावें लोग चरचा में आराम ॥१५

टेक चन्द भली भांत सों, और दुन्द-राए ।
पोहोकर दास भी आवत, गोविंद-राए बैठत आए ॥१६

केसवदास मोदी बैठत, बैठे दूजा मुरलीधर ।
महावजी नित्य आवत, मोहनदास बैठे इन पर ॥१७

मूल जी मामा आवत[2], और काका बैठनहार ।
संतदास सेवा मिनें, गंगाराम बैठे खबरदार[3] ॥१८

और घन-स्याम बैठत, कबूं नाना भी आवत ।
छतई भी सुनत हैं, और सुख देव बैठत ॥१९

निरंजन नरसिंघदास, और बैठे मके साहिमन ।
हंसे घासी वृज-भूषन, और धना मोमिन[4] ॥२०

१—ह० भगवान सिवराम सदानद, और बैठे गिरधर यों कर। २—ह० मूला जी मामा बैठत। ३—ह० गगादास बैठे खबरदार। ४—ह० सिंघ घासी वृज भूषन, और धन सोहोवत इन।

बीरजी मोदी आवत, और लछी सुकल।
मेडई नित्य सुने[1], बिन सुने न पड़े कल ॥२१

बिहारी फरास आवत, और बिहारी झल्ला।
दूर खड़ा सुनत है, भगवान कलाम अल्ला ॥२२

मामा बनमाली आवत, और बैठत धन जी इत।
लाल मन और संकर, और नारायन बैठत ॥२३

मथुरा कासी आवत, खड़ा रहे बल्लभ दास।
संत दास हजूर में, परसादी मोमिन खास ॥२४

और असऊ बैठत, अगर दास आवत।
सुने दूर बैठा ब्रिंदावन[2], छबील दास विंदा बैठत ॥२५

भिखारी दास बैठत, और मया-राम।
बेनीदास आवत, सोभा दास विसराम ॥२६

गजपत गरीब दास जो, और देवी दास।
थानू बदले सुनत, और संकर रसोइया खास ॥२७

साम-जी सुनत है, और बैठे चंपत।
सुक चेंन खरग देउ, और मुरली आवे इत ॥२८

[एकतीसवां विश्राम सम्पूर्ण]

और साथ केतेक, आवे नेस्टा-बंध।
कोई आवे मरजाद में, कोई परवाह की सनंध ॥२९

१—ह० मिड़ई तित चरचा सुने। २—ह० सुने दूर बैठा गोबरधन।

और आठों सागर, और पहाड़ पुखराज।
जमुनाजी यहां प्रगटी, ए बेवरा करत हैं राज ॥३९

जहां पटी महल खुली चली, मरोड़ खाया और।
इन दरम्यान कै भांत हैं, सब कहे हैं ठौर ॥४०

ए चरचा नित्य होत हैं, भोम कही अद्वैत।
पचीस पख में सब है, उड़े सुनत द्वैत ॥४१

हक सुभान और हादी[1], ए दोनों जुगल किसोर।
रूहें रहें दरगाह में, ए तीनों एक सरूप न और ॥४२

लखमी जी और भगवान जी, ए दोनों एकै अंग।
ए हैं अंग राज के, ए पांचों अद्वैत एक संग ॥४३

और भगवान की द्रिस्ट से, कै कोट उपजे इंड।
पल फिरे जात हैं[2], त्रिगुन समेत ब्रह्मांड ॥४४

अंग अख्यर आवें मुजरे को[3], श्री धाम धनी के दीदार।
मुजरा कर पीछा फिरे, रिझावें परवरदिगार ॥४५

मूल सरूप नित्याने, सहियों सों करत विहार।
तहां रहस लीला बिना, और न कार-बेवहार ॥४६

तहां राज के दिल में, इसक रबद कारन।
खेल देखाए बेवरा करों, देखो इत मोमिन[4] ॥४७

१—ह० श्री राज और स्यांमाजी। २—ह० पल फिरे उडत है। ३—ह० अंग आवे मुजरे को। ४—ह० देखो मिल मोमिन।

चाह करें खेल देखने, मैं बरजों बेर तीन।
तुम भूलोगे तेहेकीक, रहे ना काहू आकीन ॥४८

तब रबद करें मुझ सों, कह्यो ना मानें कोए।
तब सुपने देखाऊंगा, इनों मांग्या सोए[1] ॥४९

अरवयर को इछा भई, रूहों कैसा इसक।
प्रेम परवरदिगार सों, क्यों रहे साथ हक ॥५०

रूहों के दिल उपज्या, हम खेल देखें भगवान।
मांगें आज राज पें, हमको होए पेहेचांन[2] ॥५१

यों रबद करके[3], आइयां पास हक।
हम को खेल देखन की, रहे बड़ी चाह बुजरक ॥५२

बोहोत बरज्या इन को, फेर फेर तीन बेर।
बोहोत चाह जब देखिया, उतारी बीच अंधेर ॥५३

पेहेलें हुकम भगवान पें, हुआ है सुपन[4]।
उतारी रूहें तिन में, एक ठौर मोमिन[5] ॥५४

पेहेलें आए ब्रज में, रहे अग्यार बरस बावन दिन।
ता पीछे ब्रिंदावन, एक रात रोसन ॥५५

तित तुम को इछा रही, तब आए तीसरी बेर।
इंना इंजुलना सूरत, तुम वास्ते उतरी खैर ॥५६

१—ह० इनो पे मगाए के सोए। २—ह० हमे कब होए पेहेचान। ३—ह० हम आपुस मे रबद करकें। ४—ह० हुआ ऐह सुपन। ५—ह० आइया खेल देखंन।

रसूल आया तुम वास्तें, धरी तीन सूरत ।
ए खेल तुम खातर किया, फरदा रोज क्यामत ।।५७

पांच चीज बकासे उतरी, सो तुमारी खातर ।
हुकम आया तुम पर, ले फिरस्तों का लस्कर ।।५८

जबराईल जोस धनी का, करें तुमारी वकालत ।
तुम कों साफ राखहीं, कबूं पैठ न सके इल्लत ।।५६

असराफील जो आइया, अपनी फोज बनाए ।
सूर फूंक्या संसार में, कलाम रब्बानी गाए ।।६०

रूह अल्ला आए तुम पर, तिन पेहेने जामे दोए ।
तुम को खेल में से, ढूंढ़ज काढ़े सोए ।।६१

अरस अजीम के सुकन, जिनसों होए सिफायत ।
दीदार होए खुदाए का[1], सो तुम वास्ते ल्याए इत ।।६२

सातो सागर सुख के, वरनन करत बेसक[2] ।
जिनकी स्रवना देते, अद्वैत पावे एक[3] ।।६३

सातो सरूप स्याम के, बरनन करते श्री राज ।
साथ को सुख उपजावहीं, पूरें मनोरथ काज ।।६४

वरनन करते धाम का, परदछना पुखराज ।
अहे-निस केल करत हैं, संग सहियां श्री राज ।।६५

१—ह० दीदार होए हक का । २—ह० बरनन करत हैं जेह । ३—ह० विचार जिन कों ववेक, दिल श्रबना देन हैं तेह ।

सातो घाट पधारत, श्री ठकुरानी-जी संग ।
खेल सब सहियान सों, श्री धाम धनी की अरधांग ॥६६

दोनों पुलों पधारत, कुंज बन मंदर ।
जमुनाजी मरोड़ खाए के, आए ताल में मिली यों कर ॥६७

होज देखावत हेत सों, और देखावैं सातो घाट[1] ।
टापू बरनन करत हैं, एक हीरे को ठाट ॥६८

गिरद ताल के बन भला, आगे पहाड़ मानक ।
बीच महल बैठन का[2], जहां खेलत हैं हक ॥६९

चौबीस फुहारे बीच में, पडै चौबीस गुरजें ।
तासों गिरैं चौबीस चादरे, तले पड़ै कुंड में[3] ॥७०

मानक पहाड को, कर देत बरनन ॥
जहां हिंडोले दोए पहाड बीच, सुन सुख पावत मोमिन ॥७१

जित फिरत हवेलियां, चोखूंनी गिरदवाए ।
बार हजार मंदर हर एक में, बड़े फिरत दरवाजे आए॥७२

मानक पहाड से उतरत[4], नदी निरमल नीर ।
ताकी सिफत कहे देखावहीं, जल उजल खुसबोए खीर ॥

दो बाजू देहुरे बने, बड़ी हीरे की पड़साल ।
सुन सैयां कामिल, होत अति खुसाल ॥७४

१—ह० और चारो घाट । २—ह० बीच मोहोल खेलन का । ३—ह० गिरद परें कुडे । ४—ह० मानक पहाड़ से दखिन ।

जहां राज रमत हैं, बनकी जो मोहोलात ।
अति सुन्दर,सोभा देत हैं, सो क्यों कर कहों विख्यात ॥७५

अति ऊँची है अलंग, गिरदवाए फिरती ।
चार हार मोहोल बने, याकी सोभा कहों केती ॥७६

आठों सागर कहे, जहां रमन की ठोर ।
टापू बेट विराजत, कह्यो न जाए मरोर ॥७७

और बानी कै भांत की, कहे समझावै सब साथ ।
साथ सब को धाम में, पकड़ बैठाए हाथ ॥७८

ए लीला केती कहों, रात होत पोहोर दोए ।
कोई समें तीन जात हैं, चरचा कही समझावें सोए ॥७९

राज पौढ़त पलंग पर, गादी तकिया उठावें ।
बिहारीदास संग मेघा रहे, और रहे जो सामिल सेवा के[1] ॥८०

मेहेमत कहे सुनो मोमनो, ए छठे पोहोर की बीतक ।
अब कहों पोहोर सातमां, जैसी सोहोबत हक ॥८१

॥ प्रकरण ॥८॥ चौपाई ॥६०६

[अथ सातमाँ पहर की बीतक]

रात पोहोर दो गई, भए चार दिन दोए रात[2] ।
उपरांत पोहोर सातमां, कहों ताकी विख्यात ॥१

१—ह० विहारी दास सग नाथा रहे, और साथी सामिल सेवा के । २—ह० अब रात पोहोर दो गई, पोहोर चार दिन दो रात ।

इन समे सेज समारत, नारायन द्वारका दास।
गंगा-दास परमानंद, और सेज समारत खास ॥२

साज सामा रहत है, दोए पलंग के[1]।
एक पर बैठे एक कोतल, सोभा कही न जाए ते ॥३

चारों पाइए अति सुन्दर, नूर भरे अति प्यार।
इस उपले नूर के, ताको क्यों कर कहों बिहार ॥४

पचरंगी पाटी भरी, अति नरम सुखदाए।
तापर तलाई सोभित, ता ऊपर चादर बिछाए ॥५

अति सुन्दर सेज बंध, जुगते बांधे चारो पाए।
पांचो रंग रेसमी झलकत, सुन्दरता सुखदाए ॥६

सिराने गाल मसूरीए, कहां लों कहों बनाए।
चारो डांडे नूर के, छत्रिआं गिरदवाए[2] ॥७

झालर झलके नूर की, ऊपर छत्री घेर।
ए सोभा सेज की, क्यों कर कहों इन बेर ॥८

सेज बिछाई सनेह सों, फेरत ऊपर हाथ।
जिन तिनका कोई रहे, बल्लभ सेवे इन साथ[3] ॥९

आए अरज आगे करी, सेवत बल्लभ दास।
घड़ी घड़ी पोहोर-पोहोर, सुनावें धाम लीला खास ॥१०

१—ह० इत साज समारत, ऐ जो दोए पलग के। २—ह० ऊपर छत्री सोभाए।
३—ह० विसभर सेवे इन साथ।

आन के अरज करै, घड़ी पोहोंची आए।
धाम धनी याद कीजिए, समै पोहोंचा आए ॥११

अरज करें सेज की, गंगा-दास इन ठाम।
समे भया पौढ़न का, राज पधारो इन काम ॥१२

चरचा में चित रहे, स्वाद धाम बरनन।
सब स्रवना देत सनेह सों, खास गिरोह मोमिन ॥१३

स्वाल करे कोई बीच में, ताको दे उत्तर।
चरचा तिन पर होत है, रस छूटे न क्योंए कर ॥१४

इन समें कोई आयत, लाल दास ल्यावत।
फेर सुने चित देय के, पौढने की अरज करत ॥१५

जयती इत आय के, बीच में करें अरज।
बातां गिरोह की सुनी होए, ताका उतारे फरज ॥१६

गोकुल दास इत आए के, ल्यावत हदीसें।
केसव-दास पढ़त है, हदीसा इन समें ॥१७

साथी जो सेवन के, रहे गिरदवाए घेर।
फेर फेर अरज करत हैं[1], अब बोहोत हुई है बेर ॥१८

साथ सवे इंतजार, जी साहेब करे भेर[2]।
चरचा के सुख वास्ते, सब मांगे रहे फेर ॥१९

१—ह० फेर फेर अरज होत है। २—ह० श्री जी आप करे भेर।

यों करते आधी पर, घड़ी दोए चार बितीत।
फेर के अरज होत है, अब उठते हैं ल्याओ परतीत[1] ॥२०

जब महाराजा होवहीं, तब चरचा देत स्रवन[2]।
कोई न बोले इन समें, मोमिन चरचा के आधीन ॥२१

बाई जी इत बैठत, करत इसारत साथ।
बेर भई अबेर, क्यों न छोड़ो किताब हाथ ॥२२

राजें देख्या साथ सामने, हुए उठने को तैयार।
तब वर्णन धाम को[3], देखाया परवरदिगार ॥२३

तुम नजर राखो धाम में[4], श्री राज पौढ़ने की ठौर।
इन समे अपने सरूप को, याद ल्याओ ना और ॥२४

सरूप बरनन नेह सों, करत साथ पर प्यार।
इन समे सुख क्या कहों, जो करते थे मनुहार ॥२५

इत बल्लभ अरज करत हैं, धामधनी की विरत।
संझा से ले आधी लग, केहेता कोमल चित ॥२६

राज उठते इन समें, पधारत घर मानक।
हाथ पकड़ उठावत, गंगा-दास बुजरक ॥२७

एक तरफ लाल दास, या तो लछी दास।
या हाजर होवे मकरंद, पकड़ते हाथ खास[5] ॥२८

१—ह० कहे उठत हे ल्याओ परतीत। २—ह० देवें चरचा मे श्रवन। ३—ह० तब सरूप बरनन धाम को। ४—ह० तुम सुरत राखो धाम मे। ५—पकड़ ग्रहत दिल उलास।

पांवड़े बिछौना होत हैं, रहें हाजर हिंमत।
लटके मटके चलत, मीठी बातां बीच करत ॥२९

पोहोंचे मानक मकरंद[१], बैठावत बाई गोर।
मानक बातां करत हैं, लिए हुज्जत चित मरोर ॥३०

हॅसके उत्तर देत हैं, कै न्याव चुकावें इत।
फेर उठ यहां से चले, आए सेज्या पौढ़ने के बखत ॥३१

आए बिराजे सेज पर, साथ सब किया प्रनाम।
आप अपने आसन गए, पेहेलें उठी सब आम ॥३२

इत गोदावरी आवत, ले आए कटोरी में तेल।
चोटी छोरैं बातां करैं, राज भला देखाया हमें खेल ॥३३

बातां बाई जी की, ताकी करैं अरज[२]।
राज स्रवना देत हैं, ए बातां करे गरज[३] ॥३४

अंगारे अंगीठी भर के, ल्यावत बिहारीदास।
थाली में अंगारे धर के, फेरत मानक खास ॥३५

सेज तपावें भली भांत से, रजाइआं और चादर।
कंनढपी गोटा हाजर करैं, पेहेनावत ऊपर ॥३६

मुरलीधर बिदा भए, उठे गिरोह के लोक।
चरचा आहार अघाए के, भाग गया सब सोक ॥३७

१—ह० पोहोचावे मानक के मकरद। २—ह० घर की जो बीतक। ३—ह० ऐ बातें बुजरक।

राज पौढ़े पलंग पर, सब को कही परनाम ।
आए गावन वाले[1], अढ़ाई पोहोर गई जांम ॥३८

बदले राग अलापया, साखी लगा केहेने ।
सब संगी सुर पूरत, लागत मीठी स्त्रवने ॥३९

राज चित दे सुनत हैं, बड़ी खुसाली कर ।
इन समे साथी सेवन के[2], आए अपनी खिजमत पर ॥४०
चौकी पलंग की बैठत, एक हंसे और साहिमन ।
केसवदास दौलत, और हजूरी मोमिन ॥४१
और बानी सुनने को, कोई कोई साथी बैठत ।
मानक लगते सेज के, तवेली पकड़ बेठे उन बखत[3] ॥४२
लग बाई जीयके बिछोने, होत सिराने तरफ ।
और घेरबिछोने सहियान के, और कोई दमन मारे हरफ ॥४३
और मोमिन भर बंगले, कोई बैठे कोई सोवत ।
मुरलीधर और जैनती, बैठे चरचा को इत ॥४४
कोठडी काके की, आगे मिलावा होत मोमिन ।
तहां कुरान हदीसा बांचत, लाल केसव मोमिन ॥४५
गोकल दास बैठत, और मोदी मूल-चंद ।
और केतनेक बाइयां बैठत, और सदा बैठे सदानंद ॥४६

१—ह० गावन वाली आइया । २—ह० इन समे साथ खिजमत के । ३—ह० मानक लगन से जगे, तलाई पठाई उन बखत ।

इत बड़ा मेला होत है, कबूं वाणी कबूं चरचा ए।
कबूं किताबें के तरह, यों आहार रूह खिलाए ॥४७

राज खबर लेत हैं, बैठे कौन इन बखत।
संकर बुधसेंन बल्लभ, नाम साथ के बतावत ॥४८

कबूं दस कबूं बीस, तीस चालीस पचास।
कबूं साठ सत्तर अस्सी, ए धाम धनी की आस ॥४९

आखर कों सौ बैठत, कबूं ऊपर भी होए।
भर एक अलंग बंगले, बैठत हैं सब कोए ॥५०

कोई कोई नेस्टा बंध, चूकत नाहीं कब।
कोई कबूं आवे कबूं नहीं, ए चरचा होत है सब[1] ॥५१

ए चरचा सो करे, जो सुनी होए श्रीराज।
तिन चरचा को अरचत, श्रीराज रिझावन काज ॥५२

मिलावा बैठत मोमिन, रीझ राज भेजत हार।
कबूं कलंगी बकसत, ऐसी करें मनुहार ॥५३

उठ मुरली धर लेत हैं, राज की बगसीस।
बांट देत सब साथ को, फेर फेर नवावे सीस ॥५४

गोकल केसव दौड़त, कबहूं को लालदास।
जो चरचा इत होत है, सो सुनावन की आस ॥५५

१—ह० ए चरचा सब मिल होए।

राज सों बातां करन कों, हरख रहै मन में।
राज राजी होत हैं, सुन विवेक इनों से ॥५६

इन भांत कै विध की[1], बातां होत विवेक।
सो इन जुबां केती कहों, मेरी रसना आवे न एक[2] ॥५७

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, ए सातमें पोहोर की बात[3]।
अब कहों पोहोर आठमां, ताका सुनो बिख्यात[4] ॥५८

॥ प्रकरण ॥६॥ चौपाई ॥६६४॥

[बत्तीसवां विश्राम सम्पूर्ण]

[आठमां पोहोर की बीतक]

अब कहों पोहोर आठमां, श्रीराज पौढे पलंग पर।
बानी धाम धनीय की, गरजत सब ऊपर ॥१

बारी वाले गावत हैं, फिरती चौकी पर।
जिनकी आवे सो गावहीं, रसना मीठी कर ॥२

बानी धाम धनीय की, किए चौदे तबक हैयात[5]।
पेहेचांन भई न काहू को, रूह पिए हैयाती हो जात ॥ ३

आज लों इन इंड में, कबूं काहूं सुनी ना कांन।
कै हुए इंड कै होवहीं, काहूं ना बोए पेहेचान ॥४

१—ह० इन कै भात बिहार की। २—ह० सो मेरी इन जुबा केती कहे, ना आवे रसना एक। ३—ह० ऐ सातमा पहर की बीतक। ४—ह० ताकी सुनो सिफत। ५—ह० ऐ चौदे तबक हैयात।

एह सुनने की ताकत, त्रिगुन को ना होए ।
और नाम किनके लेउं, इन उपरांत सोए ॥५

सो रस सागर रेलत, कोई न धरत कान ।
एक मोमिन रूहें पीवत, और काहूं ना हुई पेहेचान ॥६

कैसी जिकर होत है, किन ठौर पोहोंचत ।
क्या नफा होत है, एह पोहोंचावे कित ॥७

एह मेहेर किन करी, ए हुई किन ऊपर ।
किन बरकत आई इत, कोई पावे ना पटंतर ॥८

जो पावे पटंतर, ताकी पल ना जाया जाए[1] ।
सो इसहीं रस में भीलत, ताए और ना कछू सोहाए ॥९

ते बैठत ढिग आए के, धरे सुनने को कान ।
होत पेहेचांन रूह की, बढ़ता जाए ईमान ॥१०

ए बानी इन भांत की, ले बैठावत निजधाम ।
स्रवना को सुख उपजे, होए मनोरथ पूरन काम ॥११

इन बानी से ऐसा होत हैं, नजर पड़े बीच बका ।
ए रसना हादीअ की[2], पिलावत रस रब्बका ॥१२

जो धाम अंदर की, बिहार की मजकूर ।
सो अख्यर को सुध नहीं, जो अन्दर का जहूर ॥१३

१—ह० ताकी पलन। बिरथाँ जावें । २—ह० ए रसना स्यामाजीय की ।

जो अख्यर को सुध नहीं, सो त्रगुन पास क्यों होए।
सो सब इन बानीओं से, सुपने नजर पोहोंची सोए ॥१४

नजर नाबूद जीव की, सो सपने में रल जाए।
नीद उड़े उठत हैं, कछू ना रेहेवे ताए ॥१५

तिन नाबूंद की नजर, बीच बक्का पोहोंचे[1]।
अख्यर ठौर सरूप की, इन बानी सों देखे ॥१६

जहां जबराईल रह्या, चल ना सके आगे।
इन बानी की बरकतें, जमुना सातों घाट पोहोंचे ॥१७

आगे रसूल तखत पर, रफ रफ के बैठे।
जोए उलंघ आगे चले, देखा धाम ठौर जेठे ॥१८

इन वानी के सुनन थे[2], सब ठौर आवे नजर।
रूह आतम पोहोंचत, ताए हो जात फजर ॥१९

इन बानी के सुनन थे, आप होत हैयात।
देखे बैठे माया मिनें, ठौर बका हक जात ॥२०

इन बानी के सुनन थे, खुलत भिस्त के द्वार[3]।
आप देखे औरों देखावही, पोहोंचे नूर के पार[4] ॥२१

इन बानी की बरकतें, कछू ना रहेवे सक।
रूह राजी रहे हमेसा, जाए बैठत कदमों हक ॥२२

१—ह० बीच अखड पोहोचे। २—ह० च० इन जुबा के सुर सुनते। ३—ह० खुलत वाही भिस्त के द्वार। ४—ह० पोहोचे नूर द्वार पार।

इन बानी की बरकतें, भया जाग्रत सुपन ।
सो पेहेचान काहू ना हुई, पेहेले पास आई सैयन ॥२३

तहां सेंती संसार में, पसरी चौदे तबक ।
बढ़ते बढ़ते बढ़ चली, जाए त्रगुन पोहोंचाए हक ॥२४

इन बानी की बरकतें, नीद उड़सी नूर जलाल[१] ।
ए याद करें सुपन को, होए के दिल खुसाल ॥२५

याद करें बानीअ को, तब उड़े आठो भिस्त ।
इन बानी की बरकतें, धाम अंदर पाई किस्त ॥२६

इन बानी की रोसनी, मावे ना जिमी आसमान ।
सुंन छोड़ बका पोहोंचे, सो मोमिन सुने कान ॥२७

श्रीधाम नव भोम हैं, इन बानी में[२] ।
सामें ठौर है अख्यर, सो पाइए इन बानी सें[३] ॥२८

हौज जोए बाग जानवर, सो इन बानी बीच है सब ।
सातो घाट जो जोएके[४], सो मोमिन देखे अब ॥२९

मानक मोहोल पुखराज, और अलंग ग्रिदवाए ।
सो सब बानी बीच में, मोमिन कों पोहोंचाए ॥३०

आठों सागर सुख के, बीच टापू मोहोल मोहोलात ।
सो सब है बानी बीच में, पोहोंचावत हैयात ॥३१

१—ह० नीद उड़ी नूर जलाल । २—ह० इन बानी की मे । ३—ह० सो ठोर है अखड, वानी ऐसी कहेसे । ४—ह० सातो घाट जो पुल है ।

हक हादी रूहें रहत हैं, सोइन बानी में ।
नित्य बिहार करत हैं, सो पाइए बानी सें ॥३२

औलिया लिल्ला कामिल, दोस्त कहे खुदाए ।
सो इन बानी बीच में, रूह मोमिन देखे ताए[१] ॥३३

और सिफत कहां लों कहों, पातसाही परवरदिगार ।
सो इन बानी बीच में, सब मोमिन जाननहार ॥३४

इन बानी की बरकतें, सब दफे होत बलाए ।
सदा सैतान कांपत, मिनें पैठ न सके ताए ॥३५

यह जिकर जुबान से, करत हैं मोमिन ।
राज पौढ़े सुनत हैं, नीद ना आवे नैनन ॥३६

कछू आंख मिली के न मिली, फेर सुनत हैं कान ।
कोई आगे पीछे हरफ कहे, कहे मोमिनों को पेहेचान[२] ॥३७

ए आगे पीछे क्यों कह्या, ए क्यों गए हरफ भूल ।
चुप रहे अरज करें, कहें हमें ना आया मूल ॥३८

यों करते इन भांत से, बाकी रात रही घड़ी चार ।
आया समे ब्रत का, गिरोह उठन का करे विचार ॥३९

सरूप मुरलीधर केहेके, करें साथ को परनाम ।
सब कोई उठे अपनी, देह-क्रिया के काम ॥४०

१—ह० हमेसा इप्तदाए । २—ह० कहे मोमिनो को सुभान ।

कोई नींद करत है, कोई सुनने चाहे विरत ।
उठे लालदास केहेने को, होए बैठे जाग्रत ॥४१

इत पेहेले हंसे के घर में, विरत का उठा अंकूर ।
जेनती गिरोह को मिलाय के, करते थे मजकूर ॥४२

तहां सेंती लई लालने, ए मेहेर हक सुभान ।
फेर एक दिन सबों कही, जिनको जेती पेहेचान ॥४३

ब्रन्दावन के घर में, कोई दिन कही विरत ।
साथ सब उत बैठ कें, कस्त जो करते इत ॥४४

अग्यां जोलों रही[1], दिल बड़ो चाह धरे ।
फेर ठंढ़े पड़ते गए, कहे लाल अंग ठरे ॥४५

लालें दई मकरंद को, फेर लई लाल खांन ।
ए तीनों फिरते कहत हैं, राज सुनत हैं कान[2] ॥४६

बोहोत खुसाल ओ होत हैं, सुन धाम विरत प्रात ।
उठ बैठे सेज्या पर, कानों सुने विख्यात ॥४७

पीवत कावा मांग के, विरत सुनते कान ।
देख मेहेर हक सुभान की, सरावते थे पेहेचान[3] ॥४८

आवे महावजी इन समें, नेस्टा लेकर दिल ।
ब्रित केहेनें वाले ढिग बैठत, अंग दाबे हिल मिल ॥४९

१—ह० अग्यारही जोनो रही । २—ह० ब्रित सुनत जात हे कान । ३—ह० करत हे पेहेचान ।

जो कोई ब्रित कहे, करे सेवा ताए ।
आवत पीछली रात को, एही हेत दिल ल्याए ॥५०

और मोहनदास आवत[1], और मोदी मूलचंद ।
नेस्टा एह ना छोड़हीं, ले दिल में आनंद ॥५१

और गोपीदास आवत, और इन पीछे सब कोई ।
आवत सुनने सरूप को, आनंद अंग में होई ॥५२

धाम की गिरद लै के[2], फेर अंदर पैठे ।
चारो चौक उलंघ के[3], पोहोंचे पांचमें चोके ॥५३

कहे चौसठ थंभ को[4], चंद्वा दुलीचे ।
दो सिंघासन ऊपर, जुगल किसोर बैठे[5] ॥५४

साथ गिरदवाए घेर के, बैठे चबूतरे भर ।
भूषन वस्तर नख सिख लों, बरनन होत चित धर ॥५५

फिर चारो चौक गिरद के, गिरद छज्जे बन मोहोलात ।
फेर लेत दूसरी भोम को, फेर तीसरी चढ़ जात ॥५६

चौथी निरत की वरनन होत है, पैठे पौढ़न पांचमी में ।
फेर छठी सुख पालकी, हिंडोलें झूले सातमी से ॥५७

खट छपर खाट आठमी, नौमी सिंघासन ।
तहां बैठे गिरद देखहीं, बोहोत झलकत नूर रोसन ॥५८

१—ह० और गोवरधन आवत । २—ह० धाम की गिरद कहि के । ३—ह० चारो चोक उलघ के । ४—ह० कहे चोसठ थभ फिरते । ५—ह० जुगल सरूप बेठे ।

जब पूरब तरफ बैठही, तब देखत सातो घाट ।
और ठौर अख्यर की, वार ना पार इन ठाट ॥५९

वट-पीपल चौकी बैठहीं, मानक और पुखराज ।
या बीच धाम तलाव, यहां खेले सहिया संग-राज ॥६०

तलाव मानक बीच में, चौबीस फुहारे उछलत ।
चौबीस गुरज चादरें, कुंड नेहेरा तलाव इत ॥६१

फेर मानक बरतवन[1] होत है, गिरद फिरत हवेली ए ।
दोए बीच में दरवाजे, एक गिरद चौखूंनी के ॥६२

फेर गिरद के हिंडोले, जहां बैठे बारे हजार ।
नेहरां दोऊ बाजू देहुरे, सहियां रमते करें करार ॥६३

नेहरां चार आठ कहूं बार, फेर आवे बन मोहोलात ।
आगे मैदान देख के, खेले चौगान में इत ॥६४

फेर अलंग बरतवन करे, चारहार सोले दरबार ।
आठों सागर टापू बीच में, खेलत परवरदिगार ॥६५

फेर नौमी भोम से, जाए पोहोंचे दसमी आकास ।
तहां से तले चौक पांचमां, रुहें हककहादी बैठे खास[2] ॥६६

चारो चौक उलंघ के, आए पोहोंचे बीच द्वार ।
फेर आगे आए चांदनी के, दो चबूतरों खेलनहार ॥६७

१—ह० बरनन । २—ह० रुहें स्यामा स्यामाजी खास ।

सातों घाट फेर के, दो पुल जमुना ऊपर ।
चल आगे पीछें मुरड़ी, आए पोहोंची तलाव में लहर ॥६८

गिरद पाल टापू बरनन, बन चारों तरफ गिरद ।
अंन-बन लगता आगे, दूब सबज जरद ॥६९

इन आगे मेदान, फेर फूल बाग करे नजर ।
सौ बाग तले सौ ऊपर, सोभा सुनते होए फजर ॥७०

फेर लाल चबूतरे आए के, आए चारो बन पुखराज ।
हजार गुरज गिरदवाए, चारो दरवाजे खेले राज ॥७१

आठ पेड़ पुखराज के, तले बंगला जमुना मूल ।
आगे पटी जमुना खुली, मरोड़ खाए मिली पुल सूल ॥७२

दोनों पुलों बीच में, सात घाट कहे ।
छूटके देहुरी तिन में, आगे चली तलावें ए ॥७३

कुंज बन इन बीच में, ए विरत्त होत बरनन ।
दिन रह्या पोहोर पीछला, राज स्यामा उठ पूछे रूहन ॥७४

कौन घाट आज जाएंगे, पूछ के पोहोंचे तित ।
एक पोहोर विलास किया, दोए पोहोर विहरत ॥७५

फेर पौढे भोम पांचमी, प्रात उठे इन ठोर ।
तीसरी भोम पधारत, ए सोभा है जोर ॥७६

आरोग चढ़े भोम तीसरी, खेलत चौक में साथ।
राजें चितवन दिल धरी, खेल देखाउं पकड़ हाथ ॥७७

खेल देखावन की, जो खबद इसक ।
भूत भविष्य और ब्रतमान, सब इत देख्या हक ॥७८

फेर इसक खबद खिलवत की, मजकूर करी मोमिन ।
आए तले भोम विराज के, होए आप में चेतन ॥७९

इछा भई भगवान पर, आए बीच सुपन ।
फेर रूहों पर हुकम हुआ, ब्रज में भए एक ठोर मोमिन ॥८०

अग्यार बरस बावन दिन, पीछे पोहोंचे ब्रन्दावन ।
एक रात तहां रहे, फेर तीसरा उतपन ॥८१

तहां रासलीला करके, आए बरारब स्याम ।
त्रेसठ बरस तहां रहे, वायदा किया इस ठाम ॥८२

रूह अल्ला आए दसमी मिनें, रहे बरस चोमोत्तर[1] ।
मोमिन अरस अजीम से, इत आए उतर[2] ॥८३

ए संछिप विरत का, एक एक कह्या सुकन ।
विस्तार इत बोहोत है, सब ठौर परे मोमिन ॥८४

ए विरत राज सुनत हैं, तब होत अरुन उदे ।
सब सेवा में सनमुख, हुआ प्रातके समे ॥८५

१—ह० चौहत्तर २—ह० ताए तीन सौ तेरे मिली, पाई कुरान मे पटतर ।

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, ए आठमें पोहोर की बीतक[1] ।
अब सरूप साथ को देत हैं, सो कहों सोभा हक ॥८६

॥ प्रकरण ॥१०॥ चौपाई ॥७५१॥

तैंतीसवा विश्राम सम्पूर्ण ।

दिन आठों पोहोर की, कही बीतक जो ए[2] ।
नित्य कार खांने सेवही, कहों साथी सब सेवन के॥१

मूल कुल दिवान गीरी, थी सेवा गरीबदास ।
सो नित्य अरज करे, अब चले ना सेवा मों पास ॥२
एह तुम देखो और को, मजल राम-नगर ।
कहा बोहोत आतुर होए के, तब हुकम हुआ लाल पर ॥३
गढ़े से हुकम हुआ, पात साह के हजूर ।
तब ब्रन्दावन को दई, जांन के काम जरुर ॥४

लाल का रेहेना हुआ, हुकम न हुआ तेह ।
सुनी ए संकुंदले[3], परणे जाए कहो एह ॥५

तब लाल दास को पठाए, ले परणा को पैगाम ।
महाराजा सों मिलके, किया बुलावने को काम ॥६

आए पोहोंचे जब परणा में, लाल चले ना तब ।
तब छोड़ी सेवा ब्रन्दावन ने, फेर दई लालदास को सब[4] ॥७

१—ह० ऐ आठो पोहोर की बीतक । २—ह० कही ब्रत जो र । ३—ह० सुनी ऐ सफंडल ने । ४—ह० सोंपी लाल को सब ।

दे पठाई कुंजीअ को, लाल को हुआ हुकम ।
एह आई आग्यां सें, सेवा करो अब तुम ॥८

मूल छत्तीस कारखाने का, सब हाथ दिया लाल के।
जिनको जो कछु चाहिए, सो सबों पोहोंचावें ए ॥९

एक मूल श्रीबाई जी के, सब पोहोंचावें साज ।
वस्तर जो पेहेनन के, तुमें क्या चाहियत है आज॥१०

दोनों सरूप और साथके, सब वस्तर भूषन ।
पोहोंचावे सनेह सों, नित्य नित्य रंग नौतन ॥११

और अनाज सब जातके, साक तरकारी सब ।
मेवा मिठाई हरड़े, जो जिन समे चाहिए जब ॥१२

रुई सूत और वस्तर[1], निरगुन और सरगुन ।
सब पोहोंचावे समे समे, आंन देवे सहिअन[2] ॥१३

हाजर रहे हजूर में, बैठे श्रीराज के पास ।
आगे पीछें ना होवहीं, ए सेवा करे खास ॥१४

इनके पास रहत हैं, इन कारखाने में ।
घनस्याम लेखा लिखे, धरमदास खजाने ॥१५

संतदास सामिल रहे, और चतुर रहे इत ।
और मानक रहत है, कल्यान भी आवत ॥१६

१—ह० रूई सूत ओर बासन। २—ह० आन आनद देवे सैयन ।

भिखारी दास भी रहे, खजाना मकरंद रखे ।
इन पीछें गीरो को दई, सेवा करें सब की ए ॥१७

कपडा मकरंद देवहीं, सब साथ और श्रीराज ।
नित्य सेवे सनेह सों, फेर खेम करन रख्या इन काज ॥१८

पेहेलें नारायन दास देवें कपड़ा, रहे सेवा में हुकम ।
देवे सब सनेह सों, फेर करी खेम करन आतम ॥१९

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए साथी सेवा के ।
कहों केता अजूं बोहोत हैं, जिने प्यारे चरन धनीके ॥२०

॥ प्रकरण ॥११॥ चौपाई ॥७७१॥

गरमी के दिनों में, सब सेवा खुस बोए ।
अत्तर खरीदें सब जातके, आवे तुंग भरे गुलाब केसोए ॥१

अगर चोवा खसखांनां, करें सेवा गंगा राम ।
खसबोए खांना रखत है, एही खरीद करे इसठाम ॥२

खसखांना बनावत, टटियां अपने हाथ ।
छपर छाए भली भांत सों, छिडकत पानी साथ ॥३

टटियां बांधने कों, एक उका गंगा-राम ।
हर कस्न दास दयाल, रहे महंमदखां इन काम ॥४

फते महंमद आवत, खड़ा करन खसखांन।
बंगले के बीच में, सब सेवा करे समांन ॥५

काम बडई का पड़े, रहे मोहन हीरा मन।
सुतरी डोरी ल्यावन को, बूल-चंद मोहन ॥६

बाँस कमची ए ल्यावत, पुरबिए गाड़ी पर[१]।
समारने बासन को, जगू बीरजी बुलावने पर ॥७

लाल खारूआ चाहिए[२], ल्यावत है नारायन।
बनाए के ठाढ़ी करे, पोढ़त इत सुभान ॥८

जल छिरकत सब बंगले, उठाए सब बिछौनें।
इनाइत खां भगवान, गंगा-राम सेवे इन में ॥९

ए बिहारी दास फरास[३], सब साथ दौड़े इन काम।
बीरजी मोदी जल छिटकत, कर राज की पेहेचान ॥१०

नंद-राम पखाले मगावत, आखर बल्लभ इत छिटकत।
सीतल करे जिमी को, गरमी ना फरकत ॥११

वाओ ढोले इत हजूरी, खड़े रहे एक पाए।
बिहारी वाओ ढोलत, कबूं गंगा-दास इत आए ॥१२

संकर हाथ में रहत है, हमेसां विजणों में।
जब महाराजा आवत, वाओ ढोले इन समे ॥१३

१—ह० पुरबिऐ खोज पर। २—ह० लाल खरूआ चाहिए। ३—ह० बिछौने वाले बिहारी दास।

और साथी सब ढोलत, जहां लग पौढत श्रीराज ।
चार जने इत खड़े रहें, बल्लभ संकर इन काज ॥१४

गंगा-दास गंगा-राम, और बिहारी दास ।
संत दास सेवन में, खड़े रहे ए खास ॥१५

और साथी भी सेवन को, खड़े रहे सदा सनमुख ।
इनों सुख लिया इन समें, कह्यो न जाए इन मुख ॥१६

इन सेवा मिने पेहेलें, रेहेते निरमल दास ।
ता पीछे प्रेमदास ने, सेवा करी जो खास ॥१७

लाल मकुंद दास रहत है, निरमल दास के संग ।
गोबिन्द दास सूरती, मगन सेवत सरवा अंग ॥१८

जमुना मानक इन समे, रहे हजूर सेवा में ।
राम बाई आखर में, ए सब हुई बल्लभ सें ॥१६

हकीकत खां 'भेजता, गुलाब के सीसे ।
छिटकत हैं सब सेज पर, गंगा-राम इन समे ॥२०

मीही बस्तर पेहेनन के, प्रेम दास ल्यावे ।
आखर को इन थे, नंद-राम पासे जावे ॥२१

आई फेर बल्लभ पास, यापें सब सेवा को बोझ ।
बोहोत मेहेनत इन करी, सब सेवा की खोज ॥२२

माहावजी भाई इन समे, आए पोरबंदर सें।
सेवा अनार राखवे की, और पत्री लिखने की सेवा में ॥२३

आस बाई सेवा समे, लागत है चरन।
श्री राज हेत कर बुलावत, प्रसंन होए के मन ॥२४

मेहेमत कहे सहिअन को, ए सेवा के कहे साथ।
इहां ते ही खड़े रहे, जाके धनीए पकड़े हाथ ॥२५

[चौतीसवां विश्राम सम्पूर्ण]

प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ७६६ ॥

सद्गुरु श्री देवचन्द्र जी तथा महाप्रभु श्री प्रणनाथ जी
की विविध-लीला से भूषित जीवन चरित,
श्री स्वामी लालदास जी कृत "बीतक" श्रावण वदि
चौथ शुक्रवार दि० ५-७-६६ को सम्पूर्ण हुई ।

सम्पूर्ण प्रकरण ७१ चौ० ४३०४

भूमिका

सब ढूंढे सब मेहेराज को, सब मेहेराज में सब ।
सो सब मेहेराज जाहेर करी, सो सब मेहेराज देखसी अब ।१

एह बानी बीतक राज की, जो रूहों खिलवत श्री धाम ।
ताको माया देखाय के, सब पूरे मनोरथ काम ।।२

सो बीतक जाहेर करी, हक के हुकम ।
बदले जिकर करने, सब जगावन आतम ।।३

पेहेले उतरे धाम से, भया एक दिन ब्रज में ।
दुसरा दिन भया रास का, तीसरे बीतक मेहेमद से ।।४

चौथे दिन देवचंद जी, किल्ली लाए अरस से ।
पांचमा दिन इमाम का, लड़े दजाल सों माया में ।।५

छठा दिन जुमे का, जाहां जमे मोमिन होए ।
सात में पोहोंचे धाम को, हज तमाम हुई तिन से सोए ।।६

सो बीतक इन किताब में, लिखे बचन बिसाल ।
पेहेले मोमिन सुन के, होए इत खुसाल ।।७

पीछे सब संसार में, जाहेर होवे जोर ।
ए लीला एह चरचा, जस गाए ठोर ठोर ।।८

होए एही सोर सुपंन में, पोहोंचे मलकूत जब ।
तब बिस्नु रोए पीछे फिरे, मूल अख्यर जागे तब ।।९

जब याद करे सुपन को, तब उठे आठो मिस्त ।
नूर की नजरों चढ़े, सबों अपनी पाई कस्त ॥१०

इहां बेर एक जरा नहीं, जाको निरमान त्रसरेन ।
यामे सारी बीतक, ए जो बानी कही सब बेन ॥११

मेहेमत कहे ए मोमिनो, कालूबला सोर बीच कान ।
गरमी धून त्रसरेन में, हके कर दै सब पेहेचान ॥१२

प्र० ॥१॥ चौ० ॥१२॥

[अथ मंगला चरण]

जी साहेब के कदम, सिर पर धरे जब ।
धाम बतन जान्या अपना, सक सब मिटी तब ॥१

कछू न उपजे दिल में, इन लीला की सक ।
ए मेहेर मूल अंकूर की, करी सुभान हक ॥२

निसबत अपनी करके, सब दै है पेहेचान ।
तब छीपी कछू ना रही, एह द्रढ किया ईमान ॥३

कहा तुम आए अरस से, खेल देखन के काज ।
तुम रबद किया इसक का, मिल ठकुरानी जी राज ॥४

तिसवास्ते तुम को, उतारे मिने खेल ।
फेर तुम को याद दिया, तीसरा तकरार लेल ॥५

मैं कह्या अलस्त रब कुम, तब बले कह्या तुम ।
तुम भुलोगे खेल मिने, तुमे तीन बेर बरजे हम ॥६

फेर तुमको खेल में, देखाए दो तकरार ।
तुमारे संग मैं रह्या, तुम जाने परवरदिगार ॥७

तोहू मनोरथ मन के, हुए नहीं पूरन ।
तिसवास्ते इंड तीसरा, रचा तुम कारन ॥८

मैं मेहेमद को भेजया, सो वास्ते तुम कलाम ।
जबराईल ले आइआ, मैं लिख भेजा इस ठाम ॥९

हुकम जोस मैं दिआ, तुमारी खातर ।
तुमको चेतन कर के, पोहोंचावें अपने घर ॥१०

सरत करी मेहेमद ने, मेरी होवे तीन सूरत ।
दसमी अग्यारमी जाहेर, करों बखत क्यामत ॥११

सातो निसान तुम वास्ते, लिखे हरफ बातन ।
हकीकत मारफत के, खोले द्वार मोमिन ॥१२

आमर जो इस्लाम की, सो दै तुमारे हाथ ।
पांचों न्यामत बका की, सो रहे तुमारे साथ ॥१३

एक जोस जबराईल, और अरस की आमर ।
और कुँजी तारतंम, असराफील करे फजर ॥१४

रूहें अरस अजीम की, इसलाम तिनके साथ ।
मैं भेजे पेगंमबर पेदरपे, याके हके पकडे हाथ ॥१५

अग्यरे सो साल के, लिख भेजे रब कलाम ।
सो खोलने को बहुतों किआ, बीच दीन इसलाम ॥१६

मुकता हरफ तुम वास्ते, लिखी इसारते इत ।
सो मोमिन बिना ना खुले, कह्या फरदा रोज क्यामत ॥१७

रूह अल्ला किल्ली ल्याइआ, दै हाथ ईमाम ।
सिफायत करी मेहेमद ने, मोमिन की इस ठाम ॥१८

मोमिन के वास्ते, मेहेमद अले हसलाम ।
लडाई करी दजाल से, बीच दीन इसलाम ॥१६

लिखाए वसीअत नामे को, बेत-अला करी पुकार ।
सो भी मोमिन वास्ते, दुनी करी खबरदार ॥२०

मसरक मगरब में, पोहोंचाए दिआ पेगाम ।
पांचो सरूप जाहेर हुए, देत हैं मोमिन ताम ॥२१

बिछौना कर सिफायत का, बोलावत मोमिन ।
उम्मत करके कहे, तुम आओ बीच रोसन ॥२२

मैं तुमारे वास्ते, निकल न सक्या इंड ।
तुमको अरस पोंहोंचाए के, कायम करों ब्रह्मांड ॥२३

तुम को अजू खबर नाही, मैं पुकारत चोथी बेर ।
लिखे वसीअत नामे मके से, फुरमाया फेर फेर ॥२४

अब तुम को, हुकम भेजे ।
हक सुभान अरस में, जगावने भेजे हुकम ॥२५

याद करो तुम आप को, अपना मूल अंकूर ।
तिन सामना देख के, तैसा करो जहूर ॥२६

अब तुमे सिखापन, देने रही ना लगार ।
एह तुम केहेलावत, इसक रबद करन हार ॥२७

तुम जानो हम दूर हैं, बैठे तले कदम ।
खेल तो कछू है नही, है नजीक तुमारे आतम ॥२८

अरस की भोम का, कहू न छेह आवत ।
खेल तीनों कालों है नहीं, तुम कहाँ हो कित ॥२६

केती बेर तुम को भई, देखो अरस साइत ।
छ दिन लिखे कुरान में, उत बेर पल ना बारत ॥३०

एक दिन ब्रज में खेले, दूसरे दिन ब्रंदाबन ।
तीसरे दिन मेहेमदे, सरत करी मोमिन ॥३१

चौथे दिन रूह अल्लाह, पांच में दिन इमाम ।
छठा दिन जुमे का, मोमिन मिले तमाम ॥३२

खेल देख पीछे फिरे, दिन सातमें अपने ठोर ।
हजूर हक सुभान के, जाए बातां करिआ जोर ॥३३

एह तो अव्वल से लेअ के, आखर लों करी मजकूर।
अब इन के दरम्यान की, कहों ताको अंकूर ॥३४

मेहेमत कहे ए मोमिनो, एह है मंगला चरन ।
याद करो बीतक को, सब मिल के मोमिन ॥३५

प्रकरण ॥२॥ चौपाई ॥४७॥

[श्री अखंड धाम वर्णन]

अब कहों मैं धाम की, जो है घर मोमिन ।
इत रमत राज सों, हमेसा वतन रूहन* ॥१

जाकी एक फनक पर, अग्र भाग धरा इंड ।
ताको गिरधारी कहे, कहा बडाई ब्रह्मांड* ॥२

जाको जोगी एक बाउरो, विस्वनाथ कहया नाम ।
ब्रज नाथ ताको कहे, काहा बड़ाई इस काम* ॥३

भरतार जो इन ओंकार का, ताको नंदका कहे नन्दन ।
काहा ठकुराई इन में, दे इस मानंद इन* ॥४

ऐसे अंधे अग्यान लोक, अस्तुत में निंदा आई।
ऐसे आराधे ते, है मुनि सुख दाई* ॥५
केहेना अरस अजीम का, जित सबदन पोहोंचे सुकन।
ताथे केहेना सुपन आकार से, रूह आतम मता चेतन ॥६
मन चेतवन बुध पार की, क्यों पोहोंचे जाग्रत सार।
पर केहेनी ऐसी होत है, लीए सनमंध आकार ॥७
दिल जुबां और स्त्रवन, दे हक तरफ नजर।
केहेनी ए इन भांत की, हक मारफत नूर फजर ॥८
तिस वास्ते रूह को, एही है आराम।
आहार पीवना ले बास, चलन बेठन एही ठाम ॥६
हंसना रोवना बेहेवार, बिरह इसक इन मांहे।
मोमिन की एह नेह है, और न कह्यो जाए ॥१०
हुकम हक सुभान का, मोमिन दिल बसत।
ए निस्बत अर्स अजीम की, बखत वाहेदत साबत ॥११
हक हादी रूहें एक तन, सत चित आनंद रूप।
एह लीला नूर जमाल की, अत सुंदर रूप अनूप ॥१२
भोम जिमी आसमान जल, सब नूर बाय सुखदाए।
ए इसक रूहमय चेतन, कायम जात सदाए ॥१३
पार न जिमी वाहेदत का, दसो दिस नाही छेह।
अपार आठो सागर, गिरद दिवाल नूर की जेह ॥१४
फिरती बीस हवेलियां, बड़े सोले दरबार।
चढत मोहोल मुनारो पर, नूर रोसन काहू न सुमार ॥१५

सागर बीच टापू बनो, मोंहोल जवेर नूर ।
हक हादी रूहें खेलत, सो क्योंकर कहों जहूर ॥१

जिमी एक रस बराबर, नूर ऊंचा नीचा नाहे ।
नूर दरखत नूर दोरी बंध, सो क्योंकर आवे जुबांए॥१७

भोम हीरे की एक रस, दो सै एक हाँस धाम ।
नव भोम दसमी आकासी, क्यों सिफत कहों इन ठाम॥१८

एक हाँस तीस मंदर, गिरद फिरते छ हजार ।
छ हजार हार साम सामनी, सिफत नाही सुमार ॥१९

साम सामने मंदर झलकत, द्वार दीवालों थंभ नूर।
उपर तले सब झलकत, सो क्योंकर कहों जहूर ॥२०

मांह नकस कटाव चीत्रामन, थंभ दिवाले पुतली नूर।
साम सामे परछंदे बोलत, याको कह्यो न जाए जहूर॥२१

भोम हीरे की उज्वल, चढ़ती दसमी लग आकास।
सब भासत तले उपर लों, सो क्योंकर कहों प्रकास ॥२२

चौक हवेली अन्दर, चारो तरफो देखत ।
अंदर भासे लवाजमे, सो क्यों कर कहों विवेक ॥२३

एक छज्जे दोए पोरीआ, फिरती गिरद दोए तरफ चार।
रङ्ग नूर जुदे जुदे झलकत, एह मोमिन खबरदार॥२४

जोग बाई सब रूहमय, कमाड़ दर्पन रङ्ग ।
जिनके बिंब बन भासा, कै नूर लेहरा उठे तरङ्ग ॥२५

चोकठ नूर जवेर की, फिरते मनी झलकत ।
नूर लेहरे किरणा सामनी, सो क्योंकर कहों इत ॥२६

दोए बाजू दोए चबूतरे, आगूं इन दरबार।
तीनो तरफों कठेड़ा, नूर मोमिन खबरदार ॥२७

नकस कटाव चीत्रामन, भमरी फेरत जवेर।
कै रङ्गो किरने उठे, सुन मोमिन होवे जेर ॥२८

बीस थंभ नूर के, तरफ ऊपर चबूतर।
रङ्ग जुदे नूर झलकत, लरे किरन सब ऊपर ॥२६

चार हीरे चार मानक, और चार पुखराज।
दोए पाच दोए नीलवी, कही जाए न जागा हक ॥३०

किरन लरत रङ्गन की, दस मेहराब द्वार।
रङ्ग हीरे दोए चबूतरे, याकी कहा कहों सिफत सुमार॥३१

ऊपर छात भोम दूसरी, छज्जा मन्दर दस।
चढ़त चढ़त भोम दस लों, ए सोभा अति सरस ॥३२

दो कोने दो चहबच्चे, सोले हाँस जो तिन।
जल खुसबोए बेहेकत, झलकत नूर रोसन ॥३३

नूर झलकत हीरे पगथी, और चढ़ता चढ़े आसमान।
दांए बांए दोए चबूतरे, नूर सिफत न आवे जुबान॥३४

झलकत हीरे देहुरी, किरन उठत आसमान।
पेठत अन्दर अरस के, सुख ना इनके समान ॥३५

फिरत हार दोए मन्दरो, तिन बीच गलीआ तीन।
लरत किरन थंभन की, देखे मोमिन दिल आकीन॥३६

हार दोनो तरफ की, मन्दरो बीच दिवाल।
लरत किरन थंभन की, देख मोमिन होए खुसाल॥३७

चोकठ दरवाज़े नूर के, नूर सामी नूर लरत।
कमाड दर्पन रङ्ग नूर के, सामने नूर भासत ॥३८

मसाल मन्दर अन्दर, हक दिल माफक लवाजमे।
नरम बिछौने दुलीचे, क्यों कहों इन अकलसे ॥३६

उपर सेज सुरङ्गी नूर की, नूर चोकी नकस कटाव।
नूर हार जवेर झलकत, देखे मोमिन जो ए भाव ॥४०

सब साज संदूका नूर की, है दिल माफक हक।
हार काढ़ पेहेनावे आपमें, दोऊ लीए नूर इसक ॥४१

नकस कटाव दिवाल में, जानवर पुतली अनेक।
पडछंदे नूर सोहामनो, नूर झलकत नेक से नेक ॥४२

चौकीओं मन्दर नूर की, झलकत नूर सिंहासन।
हिंडोले कड़े कंचन, झलकत नूर रोसन ॥४३

डब्बे तबके सीसे सीकीआ, नूर भरे सब साज।
अतोल अमोल अनगीनती, इत रूहें रमे संग राज ॥४४

सब साज हर मन्दरो, होत दिल चाहा सब।
जब दिल में रूह लेवही, रुजू पेहेले होवे तब ॥४५

[चौक पहिला चौरस हवेली का]

छोड़ हार दो मन्दर, साम सामी गलीआ तीन।
आगे दरवाजा चोक का, देखे मोमिन दिल आकीन ॥४६

दांए बांए दो नूर के, दरवाजे दोए मेहेराब।
पांच पांच मंदर दो तरफो, झलकत नूर अती आब ॥४७

पेठत दाहिने हाथ पर, नूर मंदर स्याम सेत ।
दस दस मंदर लगते, देखे मोमिन दिल सावचेत ॥४८

ए मंदरो बीच सीढ़ीश्रा, भोम दूसरी लग चढ़त ।
दोए बाजू दोए चबूतरे, देखत नूर बढ़त ॥४९

बोस मंदर सनमुख तिनके, बीच त्रीपोलीए सनमुख ।
आरोगे चोक पेहेले मिने, कहो न जाए ए सुख ॥५०

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, आगे कहों दूसरा चोक ।
जाके सुने थे संसार का, ताप मेट होए असोक ॥५१

॥ प्रकरण ३ चौपाई ॥ ९८ ॥

[चौक दूसरा चौरस हवेलियों का]

आगे चोक दूसरा, बीस बीस मंदर चारो तरफ ।
चोक नूर किरन लरे, कह्यो न जाए ए हरफ ॥१

चोक अस्सी मंदर का, चारो तरफों चार द्वार ।
गली बारे चारो तरफो, नूर पोली चौबीस हर द्वार ॥२

फिरते मंदर चोक में, हर आगूं थंभ दोए ।
लरे नूर किरन उपर तले, सामी थंभ देवे सोए ॥३

मंदर अंदर पेठीए, दुलीचे चीत्रामन ।
नरमी इन पसम की, हक हादी रूहें आराम ॥४

सुंदर सेज नूर की, तिन आगू चोकी जवेर ।
नकस कटाव चीत्रामन, जोत चीर चले ज्यों सेंर ॥५

आधी पावड़ी चीत्रामन, ताको कीजे बरनन ।
तो जोत देखावे अधिक, फेर सिफत करे मोमिन ॥६

फेर अधिक भासें तिनसों, यों करते जाए उमर ।
ख्वाब द्रस्ट मन बुध सों, क्यों कहों नूर काएम घर ॥७

एक आधी पाव घड़ी को, जो सिफत ना होए ।
तो सारी चौकीआ की, क्यों सिफत कहें सोए ॥८

चोकी बरनन न होवही, तो क्यों कहों सोभा सेज ।
हक हादी इत पौढ़त, तो क्यों कर कहों एह तेज ॥९

पर केहेने संनमंध आकार के, हक तरफ बांए एह नजर ।
ले बुध चित मन सरवन, आराम इत ही फजर ॥१०

सुंदर सेज नूर की, नूर पाइए है चार ।
नकस कटाव चीत्रामन, सिफत न काहू सुमार ॥११

पचरंगी पाटी नूर की, नरम तलाई देत सुख ।
ऊपर चादर नूर की, क्यों कहों सिफत इन मुख ॥१२

सेज बंध सेराने नूर के, उपर गालमसूरे नरम ।
हक अंग को सुख होत है, क्या कहें ख्वाब जुबां चरम ॥१३

चार डांडे नूर के, रंग जवेर मानक ।
तिन ऊपर छत्री झलकत, सुख उपजे अंग हक ॥१४

झलके रंग जवेरो झालर, चारो तरफो नूर ।
छ कलस छ नूर जवेर के, कह्यो न जाए जहूर ॥१५

और लवाजमे सेज के, सो आवे नहीं जुबांन ।
हक दिल के माफक, लेहरा उठे आसमान ॥१६

नूर संदूक मंदर, साज सबे है सुख ।
पेहेनावा हक अंग का, क्यों कहों सोभा इन मख ॥१७

नूर दिवालो मंदरों, नकस कटाव चीत्रामन ।
बोले पडछंदे पुतली, होवे रूहों दिल आराम ॥१८

झलकत माची नूर की, चौकीआ सिंहासन ।
जुदे रंगों जवेर झलकत, हक बैठे इन सिंहासन ॥१६

हलत हिंडोले नूर के, लरै जवेर जडित कंचन ।
उठत किरन मंदर में, सुख पावे रूह मोमिन ॥२०

नरम तलाई पसमी, सुजनी अती सोभाए ।
तकीए नूर तिनके ऊपर, ए रूहों के सुख दाए ॥२१

डब्बे तबके सीसी सीकीआं, मिने वस्ता धरे अनेक ।
हक दिल माफक जानीए, अद्वैत नूर मोमिन एक ॥२२

अमोल अतोल अगनीत, गीनती कही न जाए ।
पर कछुक कहे बिना, मोमिन के दिल क्यों आए ॥२३

मेहेमत कहे ए मोमिनो, तीसरा चौक सुनो कान ।
एह मेहेर महबूब की, देखो अपनी पेहेचान ॥२४

प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई १२२ ॥

[चौक तीसरा चौरस हवेली का]

चौक तीसरा देखीए, चारो तरफो चार द्वार ।
अस्सी मंदर तिनके, सिफत न आवे सुमार ॥१

तरफ चारो तीन-तीन गलीआ, पोली चौबीस नूर ।
कमाड दरपन रंग के, कहो न जाए जहूर ॥२

चोखठ लाल मानक, झलकत नूर दिवाल ।
नूंबीस बीस मंदर चारो तरफो, र झलकत नूर गुलाल ॥३

नकस कटाव चीत्रामन, जवेरन में कै रंग।
जानवरो जाते जुदी जुदी, देखे मोमिन अङ्ग-उमंग ॥४

पेठत बीच चोक के, नूर भोम हीरे उज्वल।
गिरद ऊपर छात नूर की, ए जाने मोमिन दिल ॥५

बीच चोक के आए के, देखीए चारो तरफ।
साज सबे रूह देखत, सो कही जो एक ही तरफ ॥६

दोए थंभ हार मंदरो, आगे सोभा एह।
साम सामी किरन चोक में, क्यों कहों लड़ाई तेह ॥७

मंदर अंदर पेठत, चोकठ झलकत नूर।
केमाड दरपन रंग के, कहो न जाए जहूर ॥८

बीछौना दुलीचे नूर के, साज सबे सुखदाए।
हक दिल माफक देखीए, सब लवाजमे ताए ॥९

रमते रूहां देखीए, पेठत मदर संग।
... ... ॥१०

कहूं सेज ऊपर सोभीत, कहूं सिंहासन।
कई चोकी कई हिंडोले, झलकत नूर रोसन ॥११

[चौक चौथा चौरस हवेली का]

पेठत चौथे चोक में, साम सामने दरबार।
गिरद फिरते असी मंदर, ए मोमिन खबरदार ॥१२

चार चार दरवाजे तीन तीन गलीआ, साम सामने नूर मंदर
दरवाजे चौबीस पोरीआ, सुख पावत पेठत अदर ॥१३

हर मन्दर आगे, थंभ दो दो जुदे रङ्ग ।
भोम हीरे की उज्वल, छाग किरने लरे तरङ्ग ॥१४

लवाजमे 'मन्दरन में, सो हक के दिल माफक ;
सब नूर जब झलकत, पेठत मन्दर हक ॥१५

स्वरूप सूछम अङ्ग उनमद, पांउ बाजत भूषन ।
संग हक हादी रूहें, पेठत मन्दर रोसन ॥१६

कहू बैठे जोडे सेज पर, कहू जोडे सिंहासन ।
काहू माचीं हिंडोले झलकत, देख पावे सुख मोमिन ॥१७

मन्दरो अन्दर चोक के, रहा नूर भराए ।
चारो तरफो किरन लरे, मोमिन के सुख दाए ॥१८

मुख मीठी बानी बोलत, नख सिख लों अंग इसक ।
चाल चातुरी इसक की, रमे रूहों हादी हक ॥१९

[चौक पांचमा गोल हवेलियों का]

भोम पांचमा देखीए, रमते आइए इत ।
साठ मंदर चारो तरफो, नूर चोसठ थंभो झलकत ॥२०

दरवाजे चारो तरफो, गलीआ दोए तीन ।
बीच गोल चबूतरा, झलकत नूर रोसन ॥२१

दोए पगथी नूर की, चढ़ीए उपर तीसरे ।
फिरते थंभ जो चोसठ, नूर झलकत रोसन ॥२२

चार पेहेलू आठ उपर, सोलें उपर तीन ।
आठ चार तीन के ऊपर, ए देखे रूह मोमिन ॥२३

थंभ चौसठ देखीए, तामे सोले रङ्ग ।
बारे रङ्ग जवेर के, चार धात इन संग ।।२४

कहों रङ्गों का बेवरा, मोमिन के सुख काज ।
दोए पांच सामे नीलवी, दोए मानक सामे पुखराज ।।२५

दोए पाच जोड़वे नीलवी, दोए नीलवी पाच सनमुख ।
दोए मानक सामे पुखराज, कह्यो न जाए ए सुख ।।२६

दोए पुखराज जोड़े मानक, ए सोले थंभ तरफ चार ।
बारे बारे बीच में, सो मोमिन करे बिचार ।।२७

हीरा लसनीआ गोमादिक, मोती पाने पुखराज ।
हेम चांदी नूर कंचन, पीरोजा कपूरीआ रहे बिराज।।२८

और चार थंभ देखीए, मानू नूर दिवाल ।
साम सामी किरन लरें, देख मोमिन होए खुसाल ।।२९

लरत खंभ दोए बीच में, तीसरा थंभ सरभर नूर ।
मोमिन देख विचारसी, तो कह्या न जाए जहूर ।।३०

फेरत कठेडा नूर का, चबूतरे गिरदवाए ।
भमरीआ कुरसी नूर की, सो क्यों कर कहों जुबांए।।३१

उपर इन चबूतरे, रह्या दुलीचा भराए ।
पसम हाथ भर उठती, क्यों कहों नरमी ताए ।।३२

चौक गिलम बिछाई नूर की, सोभित सिंहासन ।
नूर चारो तरफो झलकत, नूर लहरे उठे किरन ।।३३

फिरती बेल इन उपर, कै चीत्रामन कटाव ।
लहरे किरने उठे नई नई, कह्यो न जाए एह भाव।।३४

चारो तरफो चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच।
जोत करै सब जवेरो, जेता तले दुलीच ॥३५

फेरत चंद्रवा चबूतरे, रह्या नूर ही नूर भराए।
झलकत झालर मोतीनके, सो क्यों कर कहों जुबांए ॥३६

नकस कटाव चीत्रामन, मिने जवेर जुदे रङ्ग।
उतरे किरन ऊपर से, सामी लरे दुलीचे संग ॥३७

लरत कठेडा तकीए, मखमली अत नरम।
भर भर थंभ थंभ के लग, ए कह्यो न जाए मरम ॥३८

जेता एक कठेडा, सब में सुन्दर तकीए।
तिन तकीए रूहें भराए के, बैठे एक दिली ले ॥३९

जिनबिध बैठी बीच में, वाही बिध गिरदवाए।
तरफ चारो लग कठेड़ा, बीच बैठी रूहें भराए ॥४०

किरने उठत नई नई, सिंहासन की जोत।
कै तरङ्ग इन जोत में, नूर नंगो से होत ॥४१

पाइए इन तखत के, उत्तम रङ्ग कंचन।
छ डाड़े पाईयो पर, नूर सुन्दर सिंहासन ॥४२

गिरद फिरता किनारे कठेड़ा, थंभ किरन झलकत नूर।
सामे सिंहासन किरन लरे, सो क्योंकर कहो जाए जहूर ॥४३

झलकत सुन्दर दुलीचा, ता ऊपर सिंहासन।
जोत जवेर झलकत है, बैठे हक हादी रूह रोसन ॥४४

जोड़े दोउ सिंहासन, जुदे जवेर छ पाईए नंग।
दो हीरा दो मानक, दो पाने उठे तरङ्ग ॥४५

दोए बाजू दोए तकीए, जवेरं सबज रंग के।
किरन उठे नूर की, सो क्यों कर कहों तरंग ॥४६

लाल रंग दोए तकीए, धरे बराबर दोर।
नरमो में अति नरम है, भरी पसमी अति जोर ॥४७

दस रंग डांड़े मिने, जुदे जुदे सोभीत जे।
हर तरफों किरना लरे, चारो तरफो देखत ए ॥४८

एक तरफ देखत एक रंग, तरेह दूजी दूजा रंग।
यों दसों दिस रंग देखत, तिन रंगों कै तरंग ॥४६

डांड़े तीन जो पीछले, दोए तकीए बीच तिन।
कै रंग ब्रख बेली बूटीआ, ए कैसे होए बरनन ॥५०

चारो किरने चढती, दोरी चढत है किनार।
चारो तरफो फूल चढ़ते, अति घने करे झलकार॥५१

तिन डांड़ों पर छत्रीआँ, अति सोभीत है दोए।
कै दोरी बेली कांगरी, क्यों कहों सोभा सोए ॥५२

दोए कलस दोए छत्रीआं, छ कलस ऊपर डांड़न।
आठो कलस अवकास में, करत जंग रोसन ॥५३

नकस फूल कटाव कै, कै तेज जोत जुगत।
देख देख के देखीए, नैना क्योंए न होए त्रपत ॥५४

चारों तरफो झलकत, फिरती छत्री इन।
नूर जवेरों झलकत, क्यों कर कहों रोसन ॥५५

दो सिंहासन बीच में, झलकत लाल मानक।
और न आवे नजरों, तो कह्यो न जाए माफक ॥५६

दोए कलस दोए छत्रीआ, हक हादीपर लटकत ।
जुदे जुदे रंगों जवेर, पांखडियां झलकत ॥५७

दोए सिंहासन एक चाकला, जोत नरम अपार ।
हक हादी बैठे तखत, देख देख जाइए बलीहार ॥५८

जिमी जरे की रोसनी, भराए रही आसमान ।
क्यों कहों जोत तखत की, जहां बैठे बका सुभान ॥५९

सिफत कहानी इन जुबां, रंग नंग इत कै नांम ।
सबद तित पोहोंचे नहीं, बिन कहे न भाजै हांम ॥६०

ए जवेर कै भांत के, जिमी इन बाहेदत ।
पल-पल रूप प्रकास ही, मोमिन जाने मारफत ॥६१

फूल बेल जोत गिलम, जोत ऊपर की आवे उतर ।
जोत-जोत सब मिल रही, रंग जुदे कहों क्यों कर ॥६२

मूल मिलावा अपना, नजर मोमिन करो तित ।
पलक न पीछे फेरीए, ज्यों इसक अंग उपजत ॥६३

मूल स्वरूप है अपना, रूहें बैठी भराए ।
ए नजरे जोड़े तिनसों, करो मिलाप खुदाए ॥६४

मेहेमत कहे ए मोमिनो, करों मूल स्वरूप बरनन ।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अंतस्कर ॥६५

प्रकरण ५ ॥ चौपाई ॥ १८७ ॥

[श्री श्यामाजी का वर्णन]

अब कहों हक हादीय की, ऊपर सिंहासन ।
नख सिख लों करों बरनन, नूर बका रोसन ॥१

कहेना झूंठी जिमी में, हक जात निस्बत बका ।
आवे नहीं जुबान में, क्यों कर कहों इत का ।।२

कहे बिना आवे नहीं, मोमिन के दिल मांहे ।
हक हादी रूहें वाहेदत, सो क्योंकर आवे जुबांए* ।।३

पर केहेनी है इन भांत की, लीए सनमध आकार ।
देते कांन जुबां दिल, होत मोमिन अङ्ग करार ।।१०

ए विरत बांध कहत हों, लीए सनमंध आकार ।
ए हक हुकम कहावत, रूहों एही आराम करार ।।११

स्वरूप स्यामजीय का, लेवे दिल मोमिन ।
नख से ले सिख लों, करत हों बरनन ।।१२

वय-किसोर अती सुंदर, मुख अती गौर ।
मिने गेहेरी अत लालक, क्यों ए आवे नहीं सहूर ।।१३

चरन कमल अत कोमल, सुंदर छब नाजुक ।
क्यों कहों सोभा फनन की, सब स्वरूपमय इसक ।।१४

सुंदर अंगूठे चरन के, सोभित अंगुरी जोड़ ।
और तिन उतरती, सो कह्यो न जाए मरोड़ ।।१५

रूहें निरखे ए नैन सों, दोनों ए कदम ।
उज्वल नरम नाजुक, मोमिन छोड़े ना एक दम ।।१६

नख मनी जोत निरखीए, आवत नाहीं जुबांए ।
कै कोटि ससी सूर कहों, तो केहेनी तले कुमेलाए ।।१७

चरन तली अत कोमल, रंग उज्वल बीच लाल ।
नरम रेखा पतली, रूह नीरखत होए खुसाल ।।१८

---

* यहाँ चार से लेकर नौ तक की चौपाई की सख्या है चौपाई नही मिलती । आगे भी यही समझें ।

लांक सोभीत लेहेकत, पाना लाल जड़ाव रंग ।
टांकन घूंटी कांड़े कोमल, पीड़ी अत नूर तरंग ॥१६

अब कहों भूषन चरन के, एकै का है नूर ।
जवेर रसायन जिमी के, बिना कहे ना आवे जहूर ॥२०

अनवट सोभे अंगूठे, पाच नंग जवेरों जोत ।
हीरा मानक पाच पोखरे, मिने नीलवो अति उद्योत ॥२१

छ बीटी अंगूठीओ, सब सोभीत हैं साज ।
जड़ाव ज्यों झलकत, पाने हीरे मानक पुखराज ॥२२

अनवट सोभीत अंगूठे, मिने होरे मानक पुखराज ।
पाना नीलवी सोभीत, लरे किरन सब साज ॥२३

जाने जड़े कुंदन में, ए जड़े घड़े ना किन ।
ए अङ्ग का अङ्ग भूषन, ए जानत भाव मोमिन ॥२४

सुदर कांबी झलकत, दो हार नूर हीरन ।
मानक पाने पुखराज, नीलवी लसनीआ रोसन ॥२५

फिरते मोती सोभीत, पड़ं पुतली नीर नूर सुदर ।
सोभीत इन कांबी मिने, नूर झलकत सब ऊपर ॥२६

ता ऊपर कडली नूर की, रंग जवेर सात नंग ।
झलकत नूर आसमान, कै लेहेरां उठे तरग ॥२७

सुदर सोभीत घूंघरी, अति मीठे स्वर बाजत ।
अत छब इन भूषन की, देखे उमंग अंग उपजत ॥२८

दो नोकों बीच पीपर, कह्यो न जाए ए सुख ।
तिन ऊपर सोहे झांझरी, क्यों कहों सोभा इन मुख ॥२६

करकरी नूर जवेर की, मिने नाजुक छब नरम ।
अत मीठे स्वर बोलते, ए कह्यो न जाए मरम ॥३०

रंग नंग जवेर जो देखीए, मावत नहीं आसमान ।
एक रंग जो देखीए, जाने नाही इन समान ॥३१

आलस न उपजावे अंगको, नरमी इन भूषन ।
साज सुर सोहावना, रूह हक बका अरस तन ॥३२

बस्तर इन तन के, सो जुदे होए क्योंकर ।
पेहेनावा अरस बका, देखो रूह की नजर ॥३३

तार जोत नूर जवेर की, चरनीआ नीलीलाए ।
नकस कटाव चीत्रामन, सो आवत नाहीं जुबांए ॥३४

फिरती कांगरी कटाव, जुदे जुदे जवेरों रंग ।
नीरखत न आवे नजरो, कै लेहेरां उठे तरंग ॥३५

मध्य फूल बेल कटाव कै, बेली नकस अनेक ।
जोत जवेरों झलकत, वाहेदत नूर रंग एक ॥३६

झलकत हीरे चीन में, मोती बेल फिरत ।
नवरंग नाड़ी मिने, क्यों कहों सोभा इत ॥३७

स्वेत स्याम लसनीए सिंदूरीए, रंग कखूबर केसर ।
लाखी लीबोई नारंगी, सोभे जाली नाड़े पर ॥३८

पेट पांसली देखीए, तो तेज के अंबार ।
तेजनाम इन भोम का, वह बका रूहमय जोत अपार ॥३९

साड़ी रंग सिंदूरिए, मिने छटक छापे कुदन ।
कई रगो जवेर झलकत, क्योंकर कहों रोसन ॥४०

तीन हारे किनार में, सोभित ऊपर मुख।
छेड़े बूटी जबेर झलकत, देख रूह पाओत सुख ॥४१

मीही साड़ी अति सोभित, मिने भासत गौर अंग ॥४२

कस कसती चोली अंग पर, सोभित कठिन पयोधर।
स्याम जड़ाव चोली सोभित, पाच रंग पानी ऊपर ॥४३

सबज जवेर अति झलकत, झलकत इन कांठले।
मोलिए हार हीरन का, क्यों कहों सोभा ए ॥४४

उर ऊपर हार लटकत, जुदे जुदे जवेरो रंग।
सोभीत है उर ऊपर, कोई लेहेरें उठे तरंग ॥४५

हीरे लसनिये हार देखिए, जोत चीर चली आसमान।
साम सामी किरन लरे, सके न कोई मान ॥४६

एक हार जो नीलवी, नूर आसमानी रंग।
लटकत बीच दुग दुगी, पाच जवेर कई संग ॥४७

पान घाट अति झलकत, मध्य हीरा पाने पुखराज।
झलकत मानक नीलवी, ए बका भोम नूर साज ॥४८

तले मोती झलकत, दाना सरीं सरस।
देख सुन्दरता इनकी, कह्यो न जाए एह जस ॥४९

हार मानक देखिए, लालक भासै सब ठौर।
और न आवे नजरों, नूर लेहेरां उठत जोर ॥५०

हार मोतीन का देखीए, दोनों सिरे सोभित।
सिरे साफ अत सुंदर, सिफत न जुबां समात ॥५१

हार चंपकली का, अत सुंदर है छब ।
सोभीत है उर ऊपर, कह्यो न जाए सबब ॥५२
सात लरी चीन सोभीत, हर लगे दस रंग ।
जवेर जुदे जुदे झलकत, कै लेहेरां उठै तरंग ॥५३
पटली दोऊ चीन की, जोत चीर चली आसमान ।
लेहेरें किरन उठै नई नई, कोई नाहीं इन समान ॥५४
कंठ सरी कंठन में, सोभीत है अत जोर ।
जानू कठ में मिल रही, जुदे देखावे और ॥५५
बाहू तले लटकत, सोभित बाजू बन्ध ।
किरन लरें आस्मान में,' कही जाए न संनध ॥५६
सोभीत है अत सुंदर, झावे जूगत जड़ाव ।
कइ नूर लेहेरां किरन उठे, कह्यो न जाए एह भाव ॥५७
झलकत झावों बीच में, स्याम कसबी रंग ।
किरन नूर दरियाव ज्यों, कै लेहेरां उठै तरग ॥५८
कोनी आगल कंकणी, मिने जड़ाव जांबू रंग ।
नूर जवेरों झलकत, सोभीत कुंदन संग ॥५९
सोभीत झावे चूड़ के, कोनी ऊपर इन ।
नवरंग जवेर चूड़ में, झलकत नूर रोसन ॥६०
हीरे मानक पाने पोखरे, और पाच नीलवी जोर ।
ए किरन जंग करत है, जग जवेर नूर ठोर ॥६१
तले पाच मोती लटकत, दो मोती ऊपर ।
सुंदर मानक बीच में, कह्यो न जाए पटंतर ॥६२

लालक सामी देखीए, जो जोत भरी आकास ।
औरों न आवै नजरों, कह्यो न जाए प्रकास ॥६३

लेहेरां नावै ऊपर एक दूसरी, कई लेहेरें उठे तरंग* ॥६४

पाच नंग पोहोंची मिने, ज्यों जड़ाव कुंदन ।
हीरा मानक पांने नीलवी, पाच रंग रोसन ॥६५

सातो पटली जड़ाव ज्यों, कै नंग झलकै मिने नूर ।
किरन लरें आसमान में, सो कह्यो न जाए जहूर ॥६६

हस्त कमल अत कोमल, हथेली अत नाजुक ।
मीही रेखा ताबीच में, मोमिन जाने बेसक ॥६७

नरम अंगुरीआं पतली, नख हीरा जोत प्रकास ।
लेहेरां झलकत जोत की, मावत नही आकास ॥६८

दसो अंगुरीआं झलकत जोत की, मावत नही आकास ।
दो अंगूठो अंगूठी, उठै दरपन नूर प्रकास ॥६९

एक बीटी मानक की, रंग लाल अतजोर ।
जो नजर भर के देखीए, तो द्रस्ट ना रंग और ॥७०

बीटी हीरे सोभीत, जोत चीर चली आसमान ।
बीटी पांने देखीए, तो और नाही इन के समान ॥७१

बीटी जो पुखराज की, और नीलवी नूर ।
पाचो लसनीआ सोभीत, कैर मोती नूर जहूर ॥७२

मुख चौक अत सुन्दर, अत सोभीत जहूर ।
गेहेरी सोभीत लालक, आवे न मांहे सहूर ॥७३

कांनो झावे झलकत, जूदे रंग नंग उड़ाव ।
मानक हीरे पाने पोखरे, कह्यो न जाए एह भाव ॥७४

फिरते जवेर झलकत, बीच में झलके फूल ।
किरन लरें आसमान में, क्यों कर कहों एह सूल ॥७५

सोभित है कानो मिने, जड़ाव जुगत पान ।
भर कानो मोती लटकत, जोत न मावे आसमान ॥७६

भरे गौर गलस्थल, हंसत हरवटी मुख ।
अधुर लाल छब देखत, कह्यो न जाए जुबां ए सुख ॥७७

दांत कली दाड़म छब, ऐनक ज्यों भासत अंग ।
मुरली सोभे नासिका, कै लेहेरां उठे तरंग ॥७८

तले पाच मोती लटकत, दो मोती ऊपर ।
सुन्दर मानक बीच में, कह्यो न जाए पटंतर ॥७९

लालक साभी देखीए, जो जोत भरी आकास ।
और न आवे नजरों, कह्यो न जाए प्रकास ॥८०

टीलड़ी सोभीत नासिका, लाल रंग झलकत ।
नैन चपल अत सोभीत, सिफत कही न जाए इत ॥८१

काजल रेखा सोभीत, अत नैना नूर खेल ।
चपल चतुर चंचल, सुन्दर भावें बेल ॥८२

स्याम भ्रू गौर सोभीत, गौर सोभावै स्याम ।
हंसत नूर मुख उपर, बस्त बका भोम आराम ॥८३

बेना चोक निलाट पर, पांचों मोती लटकत ।
चीर चली जोत हीरे की, मानक सों एह लरत ॥८४

जोत पाने की क्यों कहों, झलकत जोत पुखराज ॥८५

नीलवी अत सोभीत, नंग पांचों रहे विराज ।
दोनों सरे मोतोन की, मांग ऊपर सोभीत ॥८६

दो तरफो मोती चढ़ते, नूर भरा आसमान ।
करने लवने सोभा धरे, सो आवे नही जुबांन ॥८७

कोर साड़ी की झलकत, करने लवने ऊपर ।
तिन किनार जवेर की, जूदे रंग क्यों कहों पटंतर ॥८८

सिर ऊपर सोहे राखड़ी, मध्य मानक जोत अपार ।
और रंग ना आवे नजरों, तो क्यों कर कहों सुमार ॥८६

तिन जोड़े जोत जवेर की, सो तो तिनके माफक ।
क्यों कहों ख्वाब जुबांन सों, ठोर देखे ना सोभा हक ॥६०

बेन जुगत जड़ाव की, सोभीत है अत जोर ।
बेन ब्याल ज्यों लेहेकत, कह्यो न जाए मरोर ॥६१

जुगत जड़ाव जवेर, गोफने तीनों सोभीत ।
फिरती फिरती घूंघरी, स्वर मीठे अत बोलत ॥६२

तले फुमक लटकत, स्याम कसबी रंग ।
सुन्दर किरन सोभीत, कै लेहेरां उठे तरंग ॥६३

चार बंध चोलीय के, सोभीत बेन तले प्रकास ।
सात हार के सात फुमक, सो जोत न मावे आकास ॥६४

रंग जुदे जुदे सोभीत, नाकें रसान समान ।
नख सिख लों सरूप देखीए, आवे नही जुबांन ॥६५

एक एक छिन में, रूप धरे कै करोर।
दिल चाह्या होत है, क्यों कहों आकारे और ॥६६

पर केहेनी है इन भांत की, लिए सनमंध आकार तमाम।
रूहों के चितवन का, एही ठोर है आराम* ॥६७

प्रकरण ॥६॥ चौपाई ॥२८३॥

---

*पाठक महानुभावो से :—जगह-जगह सख्याओ तथा चौपाइयो की कमी, मूल प्रति मे अप्राप्य होने से ही नही दी गई है। कही-कहीं पर केवल सख्या मात्र दी गई है और कही आधी चौपाई मात्र है।

अथ ब्रज लीला

हुकम हक सुभान का, सो बसत दिल मोमन ।
और जोस जबराईल है, सो लुंदनी करत रोसन* ॥१

बुध जाग्रत दई हक ने, रूह अल्ला मोमिनों साथ ।
एह मेहेर सब रूहन पर, जाके हके बनाए अपने हाथ* ॥२

ताकी बीतक कहावत, हक सुभान का हुकम ।
प्रेम पख जाहेर किया, आए देखो मोमिन तुम* ॥३

पेहेले तुम कहाँ हुते, फेर आए किस ठौर ।
दरस करो तुम तिन का, तुम बिना न समझै और* ॥४

और तो कोई है नहीं, तुम बिन खेल सब ख्वाब ।
तुमे खेल देखाए के, देवे धाम उठना सवाब* ॥५

तुम तो बैठे उतहीं, एक बेर न लागी लगार ।
सहज घड़ी धाम की, माहिर करी पखरदिगार* ॥६

अब कहूं दरमियान की, जो तुमारी बीतक ।
ताको तुम देख कें, मोहों फेरो तरफ हक* ॥७

[श्री कृष्ण जन्म]

मे चौक धाम के, भोम तले की बैठक ।
न रंग सिंघासन, जुगल सरूप बैठे इसक ॥८

भराए बैठी चबूतरे, श्री राज के सनमुख।
इसक रब्बद खिलवत की, मांग्या है खेल दुख ॥६

एक दूसरी को कहे, होइयो तुम सावचेत।
मैं भूलों तो तूं मुज को, बताओ मूल खिलवत ॥१०

तूं भूले मैं तुज को, सिताब देऊं जगाए।
एक दूसरी को केहेने लगी, एही दिल में ल्याए ॥११

रबद किया आपन राज सों, तिस वास्ते होओ खबरदार।
लगी अंग सों अंग लगाए, जिन भूलो परवरदिगार ॥१२

राजें इछा डारी भगवान पें, ज्यों जाग्रत देखत इंड।
त्यों ही देखे सुपन में, होवे खेल ब्रह्मांड ॥१३

खेल ब्रह्मांड ऐसा होवे, मैं सखियान कों भेजों तिनमों।
खेल देखै जाए इन में, करैं ए फेर बातां मुझ सों* ॥१४

कुंन फेय कुन केहेते, हुआ खेल उतपन्न।
जानें आद अनाद का, ऐसा भया सुपन्न ॥१५

साथ ऊपर इछा भई, प्रगटी सब एक ठोर।
ब्रज में आए देह धरी, इसक भरी सब जोर ॥१६

श्री ठकुरानीजी की रूंह, सो प्रगटी घर ब्रष भान।
एतो सरूप इसक का, नजर तरफ हक सुभान ॥१७

पेहेलें नूर के दिल में, मैं देखों इसक रूहन।
हक सों प्यार है इनको, है कैसा प्रेम मोमिन ॥१८

तिन समे कंस काफर के, नूह था बीच हवसे के।
वसुदेव देवकी कहे, भागवत बचनों में ॥१६

गरभ सातमाँ देवकी का, था मास सातमे में ।
खैंच धरा रोहिनी के, हुआ खासी इन सें ॥२०

भई खबर कंस को, देवकी गलितांग भई गल ।
भला भया मारना मिटा, दिल भया निरमल ॥२१

हूद नन्द रहे ब्रज में, था वसुदेव सों इखलास ।
छे बेटे मारे कंस ने, आठमे में बड़ी आस ॥२२

हवसे के काला ग्रह में, आए चत्र भुज दिआ दीदार ।
वचन केहेके पीछे फिरा, देखा दो भूजा परवरदिगार ॥२३

ए नूर के मनोरथ की, रूह उतरी निज नूर ।
तापर जोस हक का, देख्या वसुदेव जहूर ॥२४

तब कह्या वसुदेवने, करो रछा अपनी तुम ।
हम डरत हैं कंस से, क्यों तुमे बचावें हम ॥२५

एह माया का बल, दोउ प्रगट करी सिफत ।
वही सायत भूल गए, एह हमारा बालक इत ॥२६

तब राज ने कह्या, मोहे ब्रज में पोहोंचाओ तुम ।
लड़की भई नन्द घर, ताए ल्याइयो न खाओ गम ॥२७

फिर वासुदेव ने कह्या, छोड दे सारा डर ।
मेरा हाल एह है, उठाऊं मैं क्यों कर ॥२८

एही बेर मुजे उठाओ, तो एलो मैं उठाए तुम ।
गिरी हाथ की सांकलें, अब पांउ के क्यों गिरे हम ॥२९

जब पांउ उठाइया, टूटे पांव के भी तब ।
गिरा तोंक गले का, बंधन छूटे सब ॥३०

एह तो काम होए चल्या, पर क्यों कर खुले द्वार।
इहां वासुदेव आप ही, थे समरथ परवरदिगार ॥३१

जिन एता काम किया, ताए द्वार खोलते केती बेर।
आए दरवाजे आगे खड़ा, देखने लगा फेर ॥३२

तब ही द्वार खुल गए, जिन जागे चोकीदार।
ए ऐसे पड़े नीद में, होए सके न खबरदार ॥३३

भादों वद अस्टमी, समे था मध रात।
नछत्र रोहिनी मिने, एह वसुदेव की बिख्यात ॥३४

ऊपर बरसा होत थी, ऊपर फन धरी सेष नाग।
बिजली मसाल ज्यों, यों देत चली मारग ॥३५

दो हाथों बीच राज थे, चल्या लगाए छाती से।
जमुना तट आए मिला, अब क्योंए उतरेंगे ॥३६

होए गई दोए तरफों, मारग होए गया।
वसुदेव पैठा बीच में, जल कंमर लग भया ॥३७

जमुना चरन कमल कों, किया चाहे परस।
वसुदेव ने ऊंचा लिया, राज कों जल भया सरस ॥३८

तब राज ने अंगूठा, जल को दिया लगाए।
तब ही जल उतर गया, वसुदेव पार गया लिवाए॥३९

मेहेमत कहे ए मोमिन, ए गोकुल मथुरा दरम्यान।
ताकी और बीतक कहों, जामे तुमारी पेहेचान ॥४०

प्रकरण ॥१॥ चौपाई ॥४०॥

[नन्द घर बधाई]

अब कहौं ब्रज बीतक, जित सखियां पेहेले तकरार ।
काल माया को ब्रह्मांड, देखाया परवरदिगार* ॥१

नंद के घरों तिन समे, साठ बरसों भया आनंद ।
समे था परसूत का, थे गोप समे उनमद ॥२

वास्ते उछब करने के, घर माट भरे गुलाल ।
सुन बधाई बेटे की, रहे मगन खुसाल ॥३

आंगने नेबू छांह थी, ता बीच दीप भूलत ।
कपासिया तेल मिलाए के, बड़ी जोत रोसन हुई इत ॥४

एके आवे एके जात हैं, काहू न किसी की गम ।
वसुदेव आया तिन समे, काहू ना चीनी आतम ॥५

तहां जनम समे, हुआ जसोदा के ।
पुत्री पधारी भोम में, उठाई वसुदेव तित से ॥६

ले धरा बालक बदले, आप चला पीछे पाए ।
उन दाईने पुत्री कही, फेर पुत्र जुबां चलाए ॥७

क्यों पेहेले पुत्री कही, अब क्यों कह्या बालक ।
एह तो हमारा कसब, यों ही कहें हम हक ॥८

भई बधाई नंद के, सुनते एह सुकन ।
दौड़े गोप ग्वाले सबे, होए खुसाल मगन ॥९

एक दूसरे को छांटत, गुलाल* मूठी भर ।
कोई भरे माट दही के, छांटन लागे यों कर ॥१०

इन कुलाहल समे, कोई काहू ना गिने लगार ।
भेंरे भांझें ताल, लगा सबद होने बेसुमार ॥११
कोई ढोल बजावत, कोई सारंगी जंत्र तान ।
रबाब ढाढ़ी गावत, पावत मंगन मान ॥१२
इन समे कोतूहल को, कही ना जाए सिफत ।
यों करते प्रात भया, ठाढ़े नंद इन बखत ॥१३
देत असीस इन समे, नंद को सब जन ।
विप्र बेद पढ़त हैं, खुस बोहोत सखिअन ॥१४
सेहेज आनन्द आप में, सबो गया भराए ।
सुख इन समे को, कह्यो न जाए इन जुबांए ॥१५
नन्द दान देवे को, भया चित्त उदार ।
जिन जो मांग्या सो दिया, होए के खबरदार ॥१६
लखमी ने तिन समें, पोहोंचों में सिताब इत ।
घर-घर दास होए के, पाऊं सेवा इन बखत ॥१७
सखिआं सिनगार साज के, चल आवत मंदर से ।
नन्द दवार ठाडी रहें, कोई पैठे कोई निकसे मंदर में ॥१८
जाए देखे दरसन राज का, सखियां खैंचे तरफ प्रेम ।
देख वे गलित भई, छूट गया सब नेम ॥१९
एक दूसरी सों बातां करें, ठाडी आंगन दवार ।
तुम सूरत देखी राज की, देखे आतम होत करार ॥२०
सखि जब मैं देखती, जानों नजर ना फेरौं कित ।
नैना क्योंए न अघावहीं, देखे बड़े दारिद इत ॥२१

मिनो मिने बातां करें, फेर पैठ निकसै मंदर ।
देख-देख राज को हंसहीं, रूह सुख पावत अंदर ॥२२

रात दिन यों करते, व्यतीत भए छे मास ।
प्रेम सरूप नेह लगा, क्योंए न छूटे आम ॥२३

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, यह तुमारी बीतक ।
ए पेहेला तकरार की, आगे बताऊं हुकम हक ॥२४

प्रकरण ॥२॥ चौपाई ६४

[ब्रज विहार]

अब लीला ब्रज की कहों, जो रूहों सों मजकूर ।
एह बीतक स्याम सरूप की, करों रोसन नूर जहूर ॥१

नन्द जसोदा के द्वार ने, रहे ठाडी सब कोए ।
एक जाए एक आवत हैं, नित्य सनेह बढ़ता जाए ॥२

कृस्न को एक हाथों लिए, दूसरी ले उनके हाथ ।
तीसरी खेलावत है, चौथी ले उनके साथ ॥३

यों करत एक दूसरी पे, ले ले देत सबन ।
तब जसोदा जी कहे, छन छोड़ों खेलाऊं मैं मन ॥४

तुम सारा दिन, लिए खड़ी नन्दलाल ।
मुझे भी ओसरी देओ, मैं देख होऊं खुसाल ॥५

मने पर कर ना सके, सकुच करे मांगते मन ।
ए हेत करके खेलावत, मैं क्यों बरजूं सबन ॥६

इन भांत नित्य नन्द के, कोतूंहल होवे द्वार ।
सखियां हंस-हंस आप में, देखें भूषन कंठ के हार ॥७

कोउ सुन्दरता बस्तर की, कोउ अति छबि लाल मुख ।
एक दूसरी का रूप देख के, बड़ोज पावत सुख ॥८

एक सखी ले राज को, पधराए अपने घर ।
सेज पर राज पौढाए के, मिसरी घी चटावै मिलाए कर ॥९

कृस्न को हर ल्यावत, घर में रहे न कोए ।
राज आप रहे गए, द्वार मूंदो इन सोए ॥१०

नौजोवन किसोरमय, बैठे देखे सेज ऊपर ।
बदल्या स्वरूप अपना, काम आतुर भई यों कर ॥११

तब रमी संग राज के, पाया काम-केल कै सुख ।
फेर बालक हो गए, अति प्रफुल्लित भया मुख ॥१२

अब राज को लेय के, गई नन्द के द्वार ।
तिहां रूहां खड़ी हुती, लिया दूसरी परवरदिगार ॥१३

कहां ले गई तू राज को, लगी पूछने सब ।
ए उत्तर दे ना सकै, मुख कहे ना सके सुख तब ॥१४

मन में अति आतुरता, ए बात ना छीपे क्यों कर ।
किन आगे कासे कहों, ए ढूढे सखी वहां पर ॥१५

गई चल तिन के घर, ए मेरी सही सुन कान ।
एक बात तोसों कहों, तोहे देऊं पेहेचान ॥१६

कहो सखी कौन बात, क्यों आतुर ऐसी भई ।
मैं रेहे ना सकत, देखे कृस्न जोवन सई ॥१७

तब सखी उत्तार दिआ, गेहेली होएगी बात इन ।
वह तो सरूप सोहाणा, होत प्रेम सेहेज उतपन ॥१८

सो जहाँ प्रेम बसत, तित उठत कै तरंग ।
तिन तरंगों में भाव कै, तिन से जोवन देखा अंग ॥१९

तब उनों ने कहा, तुम बुलाए ल्याओ घर राज ।
जैसे मैं कहा तैसे तू कर, सिद्द होए तेरा काज ॥२०

भले सकारे मिलाऊंगी, तू जा घर अपने ।
मैं भी जाऊं घरों काम को, भोर मिने नन्द द्वार में ॥२१

दूसरे दिन वह सखी, राज पधराए अपने घर ।
लगी यों ही मिसरी चटावने, देखा जोवन सेज ऊपर ॥२२

रूप अपना बदल्या, भइ काम आतुर से मिली राज ।
सो हम पाया अति सुख, बोहोत बिहार का साज ॥२३

फेर बालक वय होए के, पौढ़े सेज के ऊपर ।
तहां से सखी ले चली, पोहोंचाए जसोदा नंद घर ॥२४

फेर मिली उन सही सों, क्यों बात छिपाई और ।
सखी एती मैं तुझको कही, कहां लो कहों तिन ठौर ॥२५

जो अधिक कहो तो तू मुझे, तो बोहोत कही तिन में ।
.... ॥२६

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए ब्रज के सुख मजकूर ।
अजू एह बोहोत है, सो जाहेर करों जहूर ॥२७

प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ ६१ ॥

[कंस को आकाश वाणी]

ए केहेनी सिंहावलोकनी, फेर पीछली देऊँ खबर ।
जो मथुरा में बीतक, सो सुनियो कहों यों कर* ॥१

वसुदेव ले गया, वह लड़की अपने ठौर।
दरवाजे ज्यों के त्यों हो भए, रुदन किआ लड़की ने जोर ॥२

जागे इत चौकीदार, करी कंसके द्वार पुकार।
भया आठमां बालक, आया वैरी उस्तवार ॥३

उठा कंस उन समे, खुले बंध खड़ा द्वार।
खोलो कुलफ इन के, ल्याओ बालक मारनहार ॥४

जब बालक पेहेला भया, देवकी से जाचा वसुदेव।
देवकी ने ना करी, कह्या तूं ना जानत भेव ॥५

मैं वचन हारा कंस के, सो ना छोड़ों धरम।
कहे देवकी ए मारेगा, मैं जानत दुस्ट मरम ॥६

कहे वसुदेव ए केतीक, पर धरम न छोड़ें हम।
तोकों ऐसा ना चाहिए, जो फेरे मेरा हुकम ॥७

कहे देवकी ए मैं ना सहों, जो ऐसा बड़ा दुख।
बालक मारे मेरे आगे, क्यों रहे सकों सनमुख ॥८

तब वसुदेव ने कह्या, इन अधरम आगे कछू ना दुख।
सत बादी आगे भए, तिन के कस्ट सुन मेरे मुख ॥९

राजा हरी-चंदने, वास्ते धरम के।
अपना आपा बेच्या, तारा लोचनी बेटा जे ॥१०

तिनकी कथा कहे दई, और राजा रुकमांगद।
संगाल सेठ चेलीओ, इनों धरम का था मद ॥११

ए सतबादी हो गए, जिनों सोंपी आतम।
ए ऐसे बलि भए, तब असत उडया अधरम ॥१२

जब स्त्री और पुरुष, ए बराबर दोए ।
धरम चलत है तिन का, पार पोहोंचत सोए ॥१३

एक खेंचे संसार को, एक खेंचे तरफ धरम ।
ताको क्यों कर चले, वह समझे नहीं मरम ॥१४

तिस वास्ते ए बालक, मैं ले जाऊं कंस पास ।
जो तूं इनको ना दे, तो मेरी छोड़ दे आस ॥१५

तब देवकी ने दिआ, लड़का वसुदेव हाथ ।
ले गया कंस सभा मिने, मेरा कोल था तेरे साथ ॥१६

सो मैं अपना पन पाला, जानो सो करो तुम ।
देख कंस वसुदेव को, यों कर किया हुकम ॥१७

दिल में सुख पाया, वसुदेव के ऊपर ।
इन अपना धरम न छोडया, कछू सक ना करी इन पर ॥१८

क्या मारों मैं इनको, वह लड़का मारों मैं ।
ताहि सों मेरा बैर, क्यों मारों और कें ॥१९

बालक पीछे फेर दिया, पहोंचाओ अपने ठौर ।
मैं मारोंगा तिनको, जो आवे बालक और ॥२०

वसुदेव ले बालक को, डाल्या देवकी की गोद ।
देवकी ने देखा बालक को, अतंत पाया मोद ॥२१

एह तो कारज कारन, करना बड़ा कारज ।
उति उग्र अधरम ना करै, तो तामे होए गरज ॥२२

आया नारद इन समे, कंस की सभा में ।
आदर बड़ा कंसे किआ, तुम आए कहां सें ॥२३

तब नारदे कह्या, हम आंए सभा इन्द्रासन ।
तहां तुमारी बातें सुनी, सब मुख तें कहें वचन ॥२४
अब राज गया कंस का, बुध गई है फिर इन ।
बालक जो वसुदेव का, फेर के दिया तिन ॥२५
सच्चा बालक तूं फेरया, ए किन की मसलत से ।
तब कंसे कहया, सत्रु मेरा होए आठ में ॥२६
तब नारदे कह्या, कछू समझत बानी देव ।
क्या जानें कौन आठमां, ए क्यों कर पावे भेव ॥२७
आठ निम्बू गिरद, माड देखाया आगे ।
कहो कैसा कौन आठमां, बताए देओ मुझे ए ॥२८
यों नारद समुझावते, भई कंस को सक ।
मगाओ बालक वसुदेव पे, मारने की है झक ॥२९
गया इत वसदेव पे, ले चलो बालक तुम ।
एह हमको भेजया, कंसे किया हुकम ॥३०
वसुदेव बालक ले चल्या, आए धरया कंस के आगे ।
तब ही वध उनका किया, ऐसी दुस्टाई दिल ले ॥३१
ए धोल भगवान आवने के, होत कसाला जोर ।
जहां वस्त तहां कसोटी, करत कालिंगा सोर ॥३२
यों छ बेटे मारे, सातमे पोहोचा ब्रज में ।
बलभद्र जनमा रोहणी, भया एह हाल पुत्र से ॥३३
देवकी उन पुत्री कों, देव ना क्योंए कर ।
कंस द्वार पुकारही, ए तुमे मारे किन पर ॥३४

बोले बचन दुस्ट मंत्री, जिन का भया होए जनम ।
ते बालक सब मारिए, एह काम करो तुम ॥४६
एह तो जागा अपनी, तहां तुमारा है हुकम ।
हम समेत कबीले जाएंगे, करें कारज तुमारा हम ॥४७
ले के बीड़ा सब, बाट लै तरफ चार ।
मारों बालक जनमे, एही कर उठे विचार ॥४८
ए दैत रूप बहु धरे, जैसा चाहे मन ।
भेष बनाए पूतना, वह जुवानी पकड़ा तन ॥४६
बहुत भूषन पेहेर के, वस्तर मीही नरम ।
स्तन विष भर के चली, इनको कोऊ न जाने मरम ॥५०
मारत बालक ठौर ठौर के, जाय दिखावे स्तन ।
बोय आवत प्राण छूटही, आवे ना दया दुस्ट मन ॥५१
यों करते आई ब्रज में, मारते बालक पड़ा सोर ।
कोई वरज कहे ना सकै, एता करते जोर ॥५२
जब नंद के द्वार ठाढ़ी रही, देखत रूप इन हाल ।
कहां कृष्ण मैं देखूं तिने, कहे वचन होय खुसाल ॥५३
मोह भया सबन कों, कोई मार ना सके दम ।
ए कौन कांहां से आई, कोई चीन्हे ना दुस्ट आतम ॥५४
ले जसोदा के हाथ से, बालक लिया गोद ।
स्तन पान लगी करावने, मन धरके अति मोद ॥५५
एही बैरी कंस की, मोकों भई पेहेचान ।
अब हाथ आया मेरे, अब मेरे हाथ न छूटे जान ॥५६

लगी बोलावने बालक, देत है गल चुम्बन ।
ऊपर हेत करत है, अंदर दुस्टाई मन ॥५७

जब स्तन लगाया बालक, करने लगा पय पान ।
लगा प्राण खेंचन, दिल में बड़ा गुमान ॥५८

मेरे स्तन की बोय सें, तब ही निकसत प्राण ।
ए तो अब लों लग रहा, याकी कछू ना होत पेहेचान ॥५९

छोड़ छोड़ मुखसे कहे, दोऊ हाथों किया जोर ।
छुटकाया छूटे नहीं, तब करने लगी सोर ॥६०

जसोदा गोपी देखके, दिल मूढ़ भया इन पर ।
इन रूप पसारा अपना, था असल ज्यों कर ॥६१

जब लगे प्राण कढ़ने, तब पांऊ लगी घसने ।
हुआ अति बड़ा सरूप तिनका, समे प्राण निकसने ॥६२

बालक स्तन न छोड़ही, लटक रहा ज्यों शिखर पर ।
दौड़े गोप चारो तरफों, चढ़ गये तिन ऊपर ॥६३

जाय गोद लिया बालक, सिताब आए उतर ।
दिया गोद जसोमती, करत निछावर तिन पर ॥६४

अरी एह काहा भयो, हुआ कैसा विघन ।
हम तो कछू न जानत, कछू ना काहू के मन ॥६५

हम बैठे अपने घरों, थीं सही हम चार ।
एक रूप सुन्दर धर के, हमे कछू ना भया विचार ॥६६

आय लिया बालक गोद से, कराने लगी स्तन पान ।
तिनमे से ऐसा भया, हम क्यों कर करें पेहेचान ॥६७

हम मोहों सामने देख रहे, जाने उतरी अपसरा इंद्रलोक।
मोहि लिये मन सबन के, था सबके मनमे जौक ॥६८

सइया टोले टोले से, सब कोई आवत धाए।
एही बात फेर फेर पूछें, जसोमती पै केहेलाए ॥६९

महामत कहे ऐ मोमिनो, ए कह्यो पूतना चरित्र।
ऐसे ब्रजमे कइ करे, भई लीला जो विचित्र ॥७०

॥ प्रकरण ॥४॥ चौपाई ॥१६४॥

[नन्दजी का मथुरा से आगमन]

तिन समे नंद मथुरा मिने, वसुदेव सों था मिलाप।
बात पूछे बालक की, तुम जाओ ब्रज में आप ॥१

मैं उतपात देखत हों, ब्रज पर बड़ो विघन।
जाय रछा करोबालककी, देखियो दिल दे मन ॥२

गरगा चारज की बात, नन्दें दई बताए।
जब जनमपत्री लिखी ए, एही सुकन दिए बताए ॥३

जो हम तुमसों कहें, एही सुकन जनम पत्र।
तुम भी हमकों कहत हो, हेत जान अपना मन्त्र ॥३

अब हम जात हैं ब्रज में, किया वसुदेव कों परनाम।
चलते सिखापन दई, रहियो सावचेत अपने काम ॥५

जब नंद आया मारग में, सामे गोप मिले धाए।
वलभा देने लगे, रहे उत क्यों बिलमाए ॥६

कही खबर पूतना की, ऐसा किया सोर।
यों कर बालक बचया, एता भया हम पर जोर॥७

नंद आए पोहोंचिया, सुनी बात जसोदा मुख।
सिर धुन बातां सुनी, बड़ा था हम पर दुख ॥८

अब गत करो पूतना की, काट डारो कुहाडा से।
ले जाओ जंगल में, जलाय देओ इने ॥९

इन भांत इनकी गत, भई मुकत अपने ठौर।
कहों कबीला इनका, ज्यों मारे जाएंगे और ॥१०

महामत कहे ए मोमिनो, एह तुमारी बीतक।
तुम थे इन लीला मिने, एह पेहेला ठौर बुजरक ॥११

॥ प्रकरण ॥५॥ चौपाई ॥१७५॥

[कृष्ण चर्चा]

[इत ब्रज बीतक बोहोत है, संछेपे कहे सुकन।
एलीलातुमारीनजरआगेभई, यादआवेदिलमोमिन ॥१

सुनसखीराजकी बातकहोंसानकी, मानदिलआनतूंदेखताइँ
आज मोहीराजमिलेमारगमें, अंगउमंग करलईसाइँ ॥२

मानगुमानदिलसनसुखसंग में, देखेअलेखेमुखकहतनआवै
रसभरीरहतमुखभाखी मैंसामसों, दीनवचनकहेसनमुखआवै

कहे सखी कौन कारज मोहेसोंपत, पूरों मनोरथउपजेअंग।
मैं अधीन बस रहुं रे तुमारे, करूंअहेनिसतुमारडे संग ॥४

जांहांकहैतांहांआऊं तुम कारन, ध्यान धरूंउरआनसिंगार।
मानरेमानिनीचित्तचौंकसकर, मोहींऔरनकामतुमारावहार

हंसीबातकहीसामकेसनमुख, जानआधारसबअपनाअंग।
मैंलेचलीराजकोंमंदिरअपने, रमीमिलसामसोंकामकेसंग ॥

प्रफुल्लितबदनभयेंदोऊनके, अबहीपधारेमेरेद्वारआंगन।
केती कहों इन सुखकी बीतक, जानत सब आतम का मन ॥
सुख पायो उन सइयोंनेसुनके, धन रे नार अवतार तेरो ।
जे ध्यानन आवे त्रिगुनकेसुपने, धनकुलकामनीसुनसुकनमेरो
महामतकहेदोउकानमुखजोडके,सनबीतकसुखपायोअपार।
यों बातें आपसमें करी, चल्यो जात योंकारबेहेवार] ॥६

॥ प्रकरण ॥६॥ चौपाई ॥१८४॥

[ब्रज बस्ती]

अब कहों ब्रज बसती की, पुरे बेआलीस वास ।
त्रालीसमा अंतेजका, सब ठौरों राज करैं विलास ॥१
बास वस्ती बसै घाटी, तीन खूनो गाम ।
निकट जमुना घाट मध्ये, साम सइयां मिलै इस ठाम॥
तरफ दूसरी पुरे सारे, बीच वाट धेनका सेर ।
इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर ॥३
पुरा पटेल सादूल का, बसत तरफ दूजी ए ।
तरफ तीसरी वृषभानजी, वसैं नाकों तीनों ले ॥४
नंदजी के पुरे सामा, दिस पुरे जमुना तट ।
छूटक छाहा वनसपती, वृक्ष आडी डाल-वट ॥५
सकल बन छाहा भली, सोभित जमुना किनार ।
अनेक रंगों बेलियां, फूल सुगंध सीतल सार ॥६
तीन पुरे तीन मामा के, बैठी ठाठ वस्ती मिल ।
आपे सूरे तीनों ही, रहै पुरे नंद के पाखल ॥७

गांगा चांपा और जेता, मामा तीनों के नाम ।
दछण दिस और पछिम दिस, वसैं फिरते गाम ॥८
नंदजी के आठ मंदिर, माडवे एक मंडान ।
पिछवाड़े वाड़े गऊ के, तामे आथ सबे जान ॥९
रेत झलके आंगने, दूध चरी चूला आगल ।
आईजी इन ठौर बैठें, बेठें सखियां मिल ॥१०
मंदिर मोदी तेजपाल का, इत चरी चूले पास ।
कोइक दिन आए रहे, याको मथुरा में बास ॥११
गहेरी बास बसती, तीन खुने गाम ।
काठे पुरा टींबा पर, उप-नंद का ए ठाम ॥१२
कहों कबीला नंदका, घर रानी जसोमती ।
मत जैसो होय इनके, सब सीस पर धरती ॥१३
जब राज पधारे इन घर, तब रजा लखमी मांगी ।
मैं आगूं जाय ब्रज में, करूं सेवा सबों अंगी ॥१४
था सरदार ब्रजका, पटेल जो लखमन ।
जब तिनने सफर किया, था बेटा कल्यान बालपन ॥१५
मां जब तिनकी चली, अंत समे न निकसै प्रान ।
मैं सोंपों बेटा किनकों, कोल कियो ऐसे मान ॥१६
कोऊ कोऊ बतावै काहू कों, काहू काहू का लेवै नाम ।
इनके मन जसोदा चढी, रखै लड़का इनको काम ॥१७
बोलाए नंद जसोमती, जेठे गोप बोलाए सब ।
तब उनने बातां कही, सबों सुनी एह तब ॥१८

मेरा बेटा कलाण जी, गोद डारत जसोमती के।
जेठाई सब ब्रजकी, इने सबे मिल दीजे ॥१६
मेरे घरकी मता, और सबे चौपाए।
सो नंदकों मैं सब दिया, दै कल्यान जो को पोहोंचाए ॥२०
इतना वचन कहते ही, हुए मुगत प्रान।
वारसी सब ब्रज की, हुई नंदको प्रमान ॥२१
यों बेटा कल्यानजी, पालक कह्यो ताए।
भागवती बाई इस्त्री, घर बसत नंदके सदाए ॥२२
वसुदेवे पोहोंचाई थी, जब कंसे किया जोर।
तब भगाई रोहिणी, कछू न राख्या सोर ॥२३
केतेक वरष वितीत भए, गरभ सात महीना भया उतपन।
कछू ना मनमें ना चित्तमें, एह कैसा उतपात मेरे तन* ॥२४
रोहिणी डर खाय आई, जसोमती के पास।
बात कहे सरम आवत, तुमे क्यूं आवै विसवास* ॥२५
कहो बात जसोदा कहै, क्यों एता करत है डर।
बात मेरे आगे करते, कछू संकोच ना करतूं ता पर* ॥२६
तब रोहिणी ने कहा, मेरे उदर बालक भया सत।
कछू तूं जानत है, कहे वचन जसोदा इत* ॥२७
तब रोहिणी ने कहा, मुझे कछू ना खबर।
बालक सात मासका, आया आजइ उदर ऊपर* ॥२८
तब जसोदा अचरज पाय के, ब्रज से बुलाय दाई।
उन आगे कही सब हकीकत, तब उन एह राह बताई* ॥२९

के तेरे गरभ कबूं सूका था, तब रोहिणी दिया जवाब ।
मेरे पहेला गरभ सूका था, मास तीन का उदर आय ॥३०

तब उन दाई ने कहा, के बोहोतन कों फेर फलत ।
यों ही तुमकों भयो, कछू दोस न लगो इत ॥३१

इन भांत सक भान के, जब भया मजकूर ।
रोहिणी के गरभ फेर पला, हुआ पूरन दस मास जहूर* ॥३२

ताको बालक उतपन, बलभद्र है नाम ।
ब्रज में ही बड़ा भया, रहे नंद के ठांम ॥३३

जब कृष्णजी प्रगटे इत, रहे रमे ब्रज में नित ।
जो सेवा ताके होवही, पूरे मनोरथ तित ॥३४

मोदी तेजपाल रहे, बलोट पूरे ब्रज में ।
जो चाहिये सो ल्यावही, घी लेवे मोल सब सें ॥३५

पूड़िया इनकी पड़ी रहे, नित्त भरे इन ठौर ।
पोठी भर ले जावही, जाय बेंचन घर और ॥३६

सामा तांहां से भर ल्यावही, उतारे नंद के द्वार ।
एक घर रहने उनको दिया, रहे सेवा में खबरदार ॥३७
मैं कृस्नजी के वास्ते, एह ल्याया वस्तर ।
बोलाओ दरजी एह सीव दे, जामा इजार इन पर ॥३८
मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, एह ब्रजकी बीतक ।
तुमकों कहों नंद का, कबीला जो बुजरक ॥३९

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ २२३ ॥

अब कहों नंद घर का, जो रहे कुटुंम परिवार।
एक ठौर रसोई रहे, रहे लौकिक बेहवार ॥१

कबीला वृषभान का, प्रभावती बाई नार।
पुत्री श्री ठकुरानी जी, श्रीकृष्णजी भरतार ॥२

और पुत्र वृषभान का, कृष्णजी ताको नाम।
बड़ा भाई सुदामा, ताको बेटा कल्यान स्याम ॥३

ताकी नार किल्यान बाई, ताको पुत्र किल्यान।
एह बृषभान का कबीला, कर दई ताकी पेहेचान ॥४

इत सात जने की, रसोई होवै एक ठौर।
नित लीला होवै ब्रज में, कहों नंदके घरकी और ॥५

नन्द घर दस जने की, नित रसोई होवे भोर।
दस जने एक रसोई में, कहों नाम ताके ठौर ॥६

गांगा चांपा और जेता, ए मामा कृष्णजी के नाम।
जीवा रूपा बेनी दोए, रहैं घरे नंदके इस ठाम ॥७

इत लीला नित्य होत है, सादूल पटेल के घर।
तीत रूहें उतरी, राज पधारे तिन खातर ॥८

रमे राज सबन सों, नित्याने सब ठौर।
आवें दीदार कों सब कोई, होन न पावै भोर ॥९

पानी पंथ मारग में, सखी सइयन मिलाप होए।
ए बातां करैं श्रीराजकी, आपस में सब कोए ॥१०

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए नंद घर कबीला जान ।
आगे सइयां की बीतक, सुनो नेक कहों पेहेचान ॥११

प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ २३५ ॥

[कर्तव्य और प्रेम]

कहों सइयां सेवैं राज को, ब्रज में रहे सबन ।
सरवस सौंप्या अपना, दे धन तन और मन ॥१
इन ब्रज सुन्दरी ने, पानी ओराती को चढ़ो बरेड़े ।
ताकी विध कहत हों, सुनो बीतक मोमिन ए ॥२
नित सइयों के दिल में, वसैं राजके चरन ।
कबूं सरूप न उतरे दिल सें, रहे आठों जाम मगन ॥३
चितवनी लई दिल में, मैं मिलने जाऊं राज ।
जिन कोई मोहे बरजही, एह कर जाऊं काज ॥४
सो मैं काज पहेले करों, जो मेरे घर में होए ।
जिन सासू मोहे बरजही, काम आडे देवै सोए ॥५
रात पीछली घड़ी छ को, उठै सेजसे आप ।
एह आटे मोंहे पीसना, वास्ते राजसे करने मिलाप ॥६
करने लागी दधि मथन कों, और रसोई को साज ।
और टेहेल सब घरकी, अब कछू ना रह्या बाकी काज ॥
तब जाए उठाई सासकों, दातोंन पानी लाई आगे ।
पूछन लागी सास कों, मैं करूं टेहेल बताओ ए ॥८
तब कहा उन सखीने, सब घर का काम हुआ तैयार ।
पीसना रसोई बिलोना, गाय दोहन मैं किया बेबाक ॥६

दूधअवटानेचूलेधरो, चूलेपर औरछानाथापनेकाकियाकाम
वासीदा घरका कर चुकी, खाना छीकेधरेबनाकेठाम ॥१०

सुन सास वचन बहू के, सब रात एही किया काम ।
बडा अचरज होतहैमुजको, कछूरात,सोवतना ए ठाम ॥११

तब कहे मैं अब ही उठी, सब लिया मैं काम संवार ।
सास जाने मैंक्या करों, पावे अन्तर बडा करार ॥१२

दिल सास अति सुख पावही, मैं वार डारूं इन पर ।
इन मेरा अंतर ठारया, आए धन भाग इन घर ॥१३

प्राण निछावर करूं मैं, धन मात पिता तें नार ।
धन भाग बड़े हमारे, ऐसो घरको उठायो भार ॥१४

सास जानै कौन वात में, याको राजी होवै मन ।
सो इनसों मैं कहों, मों पर सिफत करै रोसन ॥१५

अपने भरतार के आगे, अस्तुत कहे सुनावे कान ।
काहा कहों इन बहू की, हमकों कछू ना पेहेचान ॥१६

राजी होत ए नंदके द्वारने, जाय मिलो तुम सइयोंसंग ।
दई असीस सब मुखतें, ना ठरे हमारे अंग ॥ १७

वृद्ध गए बैठे चौरे, यों अस्तुत करे सब ।
आप अपने घर बहू की, सब सुन सुख पावें तब ॥१८

सब जाने ए हम सेवें, पर इनका चित्त एक ठौर ।
ए नंद नंदन सेवही, ना पहोंचे सेवा कहों और ॥१६

किस वास्ते एह सेवत, मेरे जाना करने दीदार ।
तित जिन कोई काम आड़े पड़े, मैं सेवों अपनो भरतार ॥२०

तिस वास्ते सब कामका, सेवा पोहोंचत श्रीराज ।
करें टहेल माया की, सो सेवा होत सब काज ॥२१

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए बीतक पेहेला तकरार ।
अब ज्यों रमी राजसों, याद करो परवरदिगार ॥२२

॥ प्रकरण ॥६॥ चौपाई ॥२५७॥

[सखियों का सिंगार]

[सानोंसिंनगारोंमैंराजके कारने, कामफारगभई मायाकेजाल
जाऊंमैं दीदार केकारने, अंग उलसै मन खुसाल ॥१

कांकसी सिर पर सेंथे सजे, मांगसिंदूरे समारत नैन ।
लेदरपनमुखदेखतअपना, मांगे मुखऔरभूषनकहेबैन ॥

हारसिंगारभूषनसजेसुंदरी, करनेझाल झलकै अंग नूर ।
स्यामचोलीकसकसतीअंगपर, हार ऊपर मणि जहूर ॥

साड़ी रंग सेंदूरियेसोभतीपेहेरत, सबजचरनियांअतल॰ ।
सतलडीचीणदोऊकंठमें, मालामुगता फलसोहेसरस ॥

चंपकली उर ऊपर सोभत, बाजूबंध लटके फुमक ।
कोनीआगेकंकरनीझलकत, राजसिंनगारकाबड़ारसिक॥

चूड़जड़ावचढ़तनंग रोसन,पोहोंचीजड़ावनारहोहाथकेमाग
अंगुरीदसबींटीजड़ावकी, रमैराजकेसंगएहीबड़ाभाग ॥

चरनभूषनचारोंबाजता, बीछूड़ा अनवट करै ठमकार ।
वेणाचोकसोभितभालपर, चित्त च्नितवनकरैमानविहार ॥

साजसिंनगारघूंघटखैंचके, क्योंराजबिनाकोईदेखेऔर ।
सिफतकुलबधूकरेंसबदेखके, एपोहोंचेसेवासबराजकेठौर।

कहे मेहेमत चलीनंदकेद्वारने, जहांटोलेमिलेसैयांसबसाथ।
राजेंआतीदेखीकामनी, दौड़मिलेउर अंग धरेहाथसेहाथ] ॥

॥ प्रकरण ॥१०॥ चौपाई ॥२६६॥

[श्री कृष्ण की बाल लीला]

जसोदा के द्वारने, प्रात आवे सब साथ।
राह में एक दूजी मिले, मुख देख चले गहि हाथ ॥१

राह में बातां करे, कल मैं सुने बोले राज।
मैं दलगीर होए पीछी फिरी, मुजसे होए ना अह काज ॥

मैं संझाको मारग में खड़ी, मोहे दूर से देखी दलगीर।
तब मेरे द्वार आगे खड़े, देख नैनों ढरे नीर ॥३

मोसों बोलाए बातां करी, क्यों सोच करत मन दुख।
कछू भूल ना भई मुझसें, हंम बात कर पायासुख ॥

मेहेमत कहे आपस में, कर बातां पोहोंची द्वार।
तहां सइयां सब ठाढ़ी रहे, मिल बातां करें बिहार ॥५

॥ प्रकरण ॥११॥ चौपाई ॥२७१॥

घर घर ब्रज के मंदिरों, राजकों फिरने का काम।
कोउ मिस काहू घरों, गया चाहिए उस ठाम ॥१

कोउ नंदके द्वारने, आए ना सके जब।
जरूर ताके द्वारने, राजको जाना तब ॥२

एह तो चलन मूल धामको, इनोंका है अंकूर।
ए दोऊ रहे ना सकें, बिना किए मजकूर ॥३

ले लड़के खेलनकों, जाए द्वार खड़े तिनके।
अरी मोहे तृषा लगी, सखी लोटा जल भर ल्यावे ए ॥
जल पान के वास्ते, तासू नैनों नैन मिलाए।
जांहां लग जल पीवत, पलक ना मारी जाए ॥५
एह सुन्दरता, प्रेमकी अंदर रूह भई एक।
सो जुदागी ना सहे, जो पड़े विघन अनेक ॥६
मेहेमत कहे ए मोमिनो, हंस चले नंदलाल।
सहीको सुख उपजायकें, रहे आठों पोहोर इन हाल ॥७

॥ प्रकरण ॥१२॥ चौपाई ॥२७८॥

खेलत गोवालों संग, पुरे पुरे ब्रज में।
रहे अपने वयके बालक, हंसे खेले उनसें ॥१
तिनके बोलावन कों, जाए निकसे उन घर।
कहां .बेटा तेरा रहे, आज न आया क्यों कर ॥२
निकसी गोआलन घरसें आई खड़ी भई आंगन।
सैया आय अपने, दिला होय खुसाल मगन ॥३
लगिआं बांतां करने, क्यों राज पधारे इत।
मैं तो आया बोलावने, सखा कों इन बखत ॥४
चले आए बोलावने, सइयों के सुख काज।
हंस हंस बातां करे, एक दूजी मिलके राज ॥५
मेहेमत कहे ए मोमिनो, कर वायदा चले सैयन।
काल मंदर तेरे आऊंगा, रहियो तुम मगन ॥६

॥ प्रकरण ॥१३॥ चौपाई ॥२८४॥

फेर राज तितथे चले, याद किया घर और ।
अरी यार फलाना काहाँ है, चले जइए इनके ठौर ॥१
घेर गौवालों संग चले, हाथ में छड़ी लाल ।
हांस विनोद रमते फिरे, सब मगन हाल खुसाल ॥२
राहा बीच सखी मिली, तासों नैनों नैन मिलाए ।
नैनों बात करत हैं, आतम चित में ल्याए मिलाए ॥
इसारत सों दोऊ मिले, आतम होय गई एक ।
इन समे की चितवन, वारों कोट-छबि अनेक ॥४
यों सुख सैयां राजसूं, पल पल लेत हैं नित ।
ताहां सेंती आगे चले, आगे मिली सैयां इत ॥५
मेहेमत कहे सखी देखके, गए और के मंदर ।
पूछा अंदर जाएके, सखी नाम ले कर ॥६
॥ प्रकरण ॥१४॥ चौपाई ॥२६०॥

[वसंत पंचमी]

राग धमाल

[मास माहा सुदि पंचमी, पूजही पंचमी पूजही ।
घरघरआनंदओघ,न और सूझ ही ना औरसूझही* ॥१
कामकी केल करै, संग कान के कामनी ।
अंग उमंग न मावत, जात भामनी* ॥२
भोर भयो भई भामनी, साम सोहाग की ।
बातां लागी करने, सइयो सौभाग की ॥३
चलो जइए नंद के द्वारने, मिलके माननी ।
लाल गुलाल सों छांटें, सबे मिल भामनी ॥४

चूत्रा चंदन अबीर, मगाओ मोल के ।
देंगे सबे मिल द्रव, हमारो कोल के ॥५

तहां लगे सैयर साथ मिलाओ एकठे ।
हममे कौन है आगे होए चले जेठ के ॥६

स्यामाजी जाय बोलाये, पुरे वृषभान के ।
लावै बोलायके बातां करै, सब सान के ॥७

और बोलाय पुकारो, पुरे सबों ठौर के ।
वेगे पोहोंचे हम जात हैं बड़ी भोर के ॥८

कोउ मृदंग झांझ डफ बाजे ल्यावहीं ।
धुन मृदंग अनंग, बधाई भावहीं ॥६

साज सिंनगार संवार चलीं ब्रज नागरी ।
जोबन रूप अनूप है, गुनकी आगरी ॥१०

चित्त चितवन खेलको भावले भोर को ।
जाय रमे राजसों नंद के पौर को ॥११

पांउ में भूषन झांझरी, अणवट घूघरी ।
बाजत धुन सुहामनी, राजत आगरी* ॥१२

चाल चलैं गज गामनी, भामनी भावती ।
सुंदर छब छबीले के, उर में राजती* ॥१३

देखत नंद के द्वार, सुनी धुन साम से ।
सब दौड़े बाल गोपाल, पूरन काम से* ॥१४

देखी सखी ब्रज बाल, खुसाली खेल से ।
लगी नैनों से नैन मिलाए, गुलाल की रेल से* ॥१५

चुआ चंदन अबीर, उड़ावैं गुलाल ही।
घेर धसीं अंग लगावत, नन्द के लाल ही* ॥१६

ले स्यामाकों स्याम के, सीस धरावत हाथ ही।
चलीं घेर सबै ब्रज नार, स्याम के साथ ही* ॥१७

हो हो होरी सबद, बोलैं बोल सोहामना।
कोऊ जुगल सरूप, के ले मुख भामना* ॥१८

देखत ही सुख केल, कह्यो ना जावही।
कोऊ हांसी के बोल, सोहामने ल्यावही* ॥१६

कोऊ झोली भर गुलाल, दोऊ कों देवही।
जुगल सरूप सोहामने, हाथ सों लेवही* ॥२०

छिड़कत स्यामाजी स्याम सों, सनमुख मांग ही।
मानूं चलावत जोर के, जुद्ध में सांग ही* ॥२१

चारों तरफों घेर, लिये घनस्याम कों।
फगुवा मांगत माननी, लै लै नाम कों* ॥२२

मेहेमत हंसे ब्रजराज, कहे के बोल ही।
हाथ छुटकाय चले, दे अपना कौल ही*] ॥२३

प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ३१४ ॥

[अध्यायों का संक्षिप्त विवरण]

यों ब्रजलीला अनेक है, मैं संछेप कहे सुकन।
उनतीस अध्याय लीला भई, मुखता के कहूं वचन* ॥१

प्रथम जो अध्याय मिने, कंसे सुनी आकास बान।
मैरा म्रतु है इनसे, छ बालक मारे की पेहेचान ॥२

दूसरे अध्याय मिने कही, देवकी से विष्णु की उतपन ।
ब्रह्मा गरभ की अस्तुत करी, प्रबोध देवकी को मन ॥३
तीसरे अध्याय मिने, और होय निज सरूप अवतार ।
देवकी वसुदेव अस्तुत करैं, पोहोंचाया साम नंद के द्वार ॥४
चौथेमों कंस कों, चंडिका कहे वचन ।
कंसें दुष्ट मत्री बोलायके, बालक वध करो तिन ॥५
करी क्रिया पांचमे जातकर्मकी, नद मथुरा जाए ।
बसुदेव सों मिलाप कर, सिखापन सुनी बनाए ॥६
छठे अध्याय मिने, वसुदेव कहा आगम ।
नद जाओ गोकुल, बध पूतना देखी आतम ॥७
सातमे अध्या मिने, सकटा सुर त्रनाव्रत ।
मुखमें बिश्व देखाइया, माटी खाते माता को जित ॥८
आठमे अध्यो मिने, गरगाचारज कहे नाम ।
क्रस्नजीए बालकी करी, म्रतकी खाई इन ठाम ॥९
नौमे अध्या मिने कही, दूध गया उभराय ।
जसोदा को रीस भई, साम बांधने का करै उपाय ॥१०
दसमे में दोय वृछ, उखडे जमला अरजन ।
तिनोने अस्तुत करी, सो देखी सबों रोसन ॥११
अग्यारेमे अध्या मिने, बालक खेलन गये वृंदावन ।
वछासुर बकासुर, किया वधज तिन ॥१२
बारमे अध्या मिने, अघासुर को वध जान ।
ब्रह्मा परीछा लेने को, कही ए मोकों पेहेंचान ॥१३

तेरमे अध्या . मिने कही, कियो ब्रह्मा वछाहरन ।
ततछन नए बनायके, ले गये ब्रज वतन ॥१४

और बालक वच्छ, आप भये सबन ।
एक बरसलों यों रहे, पहेचान न हुई किन ॥१५

चौदमे अध्याय में, होय मोहित ग्रहे क़दम ।
बड़ी अस्तुत करके, सौंप चला आतम ॥१६

पनरमे अध्या मिने, धेन पालन को काम ।
धेनुक दैत्य को मारना, ताल बन के ठाम ॥१७

और कालीको दमन, निरत करी उपर फ़नन ।
गोपन की रछा करी, बचाये विष जल तिन ॥१८

सोले काली नाथ्यो जल में, करी अस्तुत नाग पतनी।
साम ने अनुग्रह कियो, सेवक जान अपनी ॥१६

सत्र में अध्या मिने, काली पठाया दीप रमनक ।
गोपन को बोध कियो, देखाय साहेबी बुजरक ॥२०

अठार में अध्या मिने, तब रुत थी ग्रीषम ।
तामे देखाई बसन्त, सुख पायो सब आतम ॥२१

उनईसमे अध्याय मिने, बलभद्र से मरवायो ।
प्रलंब दैत्य को वध, एह कारज करवायो ॥२२

जब लगी दावानल बनमें, रछा करी गोप गायन ।
दावानल को पान कर, रछा करी सबन ॥२३

बीसमे अध्याय मिने, वरषा अंतकाल शरद ।
ताको वरनन कियो, सिफत करी जोलों हद ॥२४

वरषाकाल में क्रीड़ा कर, बलभद्र क्रस्न गोप सुख ।
आनन्द पायो तिन समे, छूट गए सब दुख ॥२५

एक बीसमें अध्याय मिने, वेणु गीत वरनंन ।
क्रस्नजी गये वृन्दावन, सखी कहे विरह वचन ॥२६

बाईसमें अध्याय मिने, गोपियन के हरे वस्तर ।
वरदान तिनकों दियो, जज्ञसाला गये ततपर ॥२७

तहां जाए अंन्न जाचया, ए कहे अध्याय तेईसमे ।
फेर जाचे रिष पतनीअपे, होय इनों पर अनुग्रह इनसे ॥२८

तिनके गुरवन कों, पछताप करायो ।
उन अपनी इस्त्रिओं कों, घरों आए सरायो ॥२९

पूरे मनोरथ तिनके, जिन राखौ पत सें डर ।
रिषी तुमारे चरन वंदै, करै छाहा तुम उपर ॥३०

चौबीस मे अध्याय मिने, ले सास्त्र मीमांसा मत ।
इंद्र जज्ञ दूर करके, गोवर्धन जज्ञ कराया इत ॥३१

पचीसमें अध्याय मिने, इंद्र कियो अति कोप ।
ब्रजको नास करने, मिटाय देऊं सब गोप ॥३२

तब गोबरधन उठाय के, राख लियो गोकल ।
इंद्र को मान घटाय के, भई रच्छाबालगोपालसकल ॥

कछू न चला इंद्रका, आया डरके सरन ।
आगे काम धेनु करके, ग्रहे सामके चरन ॥३४

छबीसमे अध्याय मिने, अदभुत देखे करम ।
विस्मय गोप सबे भये, कछू न पाया मरम ॥३५

तब नंदने गोपकों, कहे गरग वचन ।
नारायण तुल होयगा, ए सबमें किये रोसन ॥३६

सत्ताईसमे अध्याय मिने, कस्न प्रतग्या जान ।
अभिषेक को ओछव करो, इंद्रकामधेनकियोसनमान ॥

अठाईसमे अध्याय मिने, नन्द गया करने अस्नान ।
तांहां से वरुनके दूत ले गए, ताय हुती ना पेहेचान ॥

तांहां 'सेती छोडाय के, जब ल्याए बाहेर ।
तब नंद जो देखया, सब किया गोप आगूं जाहिर ॥

तब गोप ने मागिया, देखों अपनों ठौर ।
जांहां बैकुंठ में रहत हो, ताकी तलब कर जोर ॥४०

तब बैकुंठ देखाया, गोपन कों तमाम ।
देख गोप पीछे हटे, हम जाएं अपने ठाम ॥४१

इहां तो तुमसे बोलने, रहे ना हमारी मरजाद ।
जहां तुमसूं बात करें, सोई देखाओ हमारी बुनियाद ॥

उनतीसमे अध्याय मिने, होय सरद रुत पूनम दिन ।
उदय भयो ससांक, कलंक रहित रोसन ॥४३

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए कही ब्रज बीतक ।
अब कहो वृन्दावन की, जो पंचअध्यायीबुजरक ॥४४

॥ प्रकरण ॥१६॥ चौपाई ॥३५८॥

अथ रास लीला पंचाध्यायी

[श्री कृष्ण का वृन्दावन प्रवेश तथा सिंगार]

पहेले कही दिन हक ठौर की, जो खिलवत का मजकूर ।
रूहां रबद कर उतरीं, ताको कह्यो जहूर ॥१

कहे छे दिन वाके भये, बीच अल्ला कलाम ।
तामे एक दिन कह्यो ब्रज कों, दूजो दिन रास कह्यो इस ठाम ।२

तीसरे दिन महंमद, चौथे दिन ईसा इस ठाम ।
पांचमा दिन इमाम का, छठे दिन जुमा तमाम ॥३

अब कहों लीला रास की, जो कह्या दूसरा दिन ।
ताके पांच अध्याय कहे, सुक सुकनो किए रोसन ॥४

ब्रज में अग्यारे बरस, ऊपर भये बावन दिन ।
ता पीछे गऊ चारने, पोहोंचे ब्रंदावन ॥५

विचित्र वेष बनाय के, बनी वनमाला उर ऊपर ।
त्रिचित्र धात चित अंग पर, वेष रूप अनूप नटवर ॥६

सिर पर मुकुट सोहामनो, बनायो अपने हाथ ।
गुवालों को हुमक किया, जो थे अपने साथ ॥७

संझा समे जब भयो, गऊ पीछे फेरी सब ।
कह्या आगे के गुआल कों, मैं पीछे रहों बताया तब ॥८

जो पीछे रहे तिनसों, यों कर कहा सुकन ।
मैं तो आगे जात हों, मोहे ढूंढियो न कोई जन ॥९

एक तरफ रहे गए, चले जात ताय के दोए।
खबर न पड़ी काहू कों, इत गोप न जाने कोए ॥१०

पूरनमा को पूरन, प्राची दिसथें होए।
उगा षोडस कलाले, कलंक न इनको कोए ॥११

मूल सरूपे देखया, संग सइयों के मन।
इनको कछू खबर नहीं, कछुक करों चेतन ॥१२

यों करते आग्यां भई, अख्यर के ऊपर।
आधी नींद होवही, जोगमाया इन पर ॥१३

पेहेले भई सरूप पर, कराए जोगमाया सिनगार।
बस्तर भूषन इनोंपे, सब चेतन भये प्रकार ॥१४

मुगट मोर पीछका, ताकी किरना लगीं आसमान।
जोत न काहू मावही, करन फूल झलकत कान ॥१५

जब मुखारविंद फेरत, जोत मुकुटे फिरे ब्रह्मांड।
लरैं किरना साम-सामी, एह नया जोग माया का इंड ॥१६

वय किसोर अति सुंदर, हरवटी हंसत मुख गौर।
अंग अंग छवि राजत, सोभा सबदातीत है जोर ॥१७

पीतांबर पट पेहेरन के, रंग लाल इजार।
पटका कसा कंमर, करने रास बिहार ॥१८

पटका चौकड़ी उर पर, और चौकड़ी वासें।
दोऊ बाजू छेड़े लटकत, सोभा कही न जाए इन मे ॥१९

पांचो हार जवेरं के, उर ऊपर झलकत।
दोऊ बांहों बाजू बंध, चारो फुमक लटकत ॥२०

पोहोंची जुगल जड़ाव कीं, कांड़े कडली कंचन ।
बींटी नंग जवेर की, झलकत नूर रोसन ॥२१

चारों भूषन चरन के, स्वर बाजत मीठो रसाल ।
सब साज चेतन देख के, हुए अतंत खुसाल ॥२२

भोम द्रुम ब्रख बेलियां, देखी चेतन जोत अपार ।
तब याद किया सखियन को, करने को रास बिहार ॥२३

करी आग्यां जोगमाया को, सखियां लाओ बोलाए ।
अब विरह सहे ना सकों, सिताब देओ पोहोंचाए ॥२४

सेहे ना सके भए आतुर, ब्रहे सह्यो ना जाए मोमिन ।
त्रुटिकाल जुगन के अयुत भए, हुआ ऐसा आतुर मन ॥२५

तब मुरली लेकर धरी, अधुरों लगाय स्वर गाए ।
तब ब्रज में स्वर पोहोंचिया, तब सैयां निकसीं धाए ॥२६

पेहेले तामसी चली, ताय आड़ो ना आयो संसार ।
राजसियां पीछे चली, भयो आड़ो सातसियों कुटुम परिवार

तो आकार इनों छोड़िया, ए उन आगूं दोड़ी जाए ।
राह में जोगमाया मिली, करी खंडनी आप पर बनाए ॥

कछू ना टेहेल मुझसों भई, मैं आई इनों को बोलावन ।
ए आगूसे निकसीं, ए प्रेम इसक राज मगन ॥२६

कोई आकार रहित थीं, ताके नए किए आकार ।
वय एक किसोर सबकी कर, कराए चेतन सिंनगार ॥३०

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, एह बीतक दूसरा दिन ।
ताकी विध लेयकें, दिल को करो रोसन ।।३१

प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ३१ ।।

[वृन्दावन की शोभा]

अब सुक वचन से कहों, जो पांचों अध्याय में रमन ।
ले सास्त्र साख संछेप से, समझेंगे मरम मोमिन ।।१

जो रमे हैं रास में, ताको आवे याद ।
मूल वचन देखाइया, इत मोमिन पावें सवाद ।।२

भगवान पि ता रात्रीः, हुई प्रफुल्लित सरद रुत ।
देख बन फूले चेतन को, जोगमाया उपासी इत ।।३

ता पद जो कह्यो रातको सो चार रातों की सरदार ।
एक रात मृत लोककी, ताको सुनो विचार ।।४

सोतोचारेपोहोर म्रतलोक के, और दूजी देवन की रात ।
सो छमहीने मृतलोक के, आगे तीसरी रातकोसुनोजात ।।

जो ब्रह्मा लोक ब्रम्हाअ की, हजार चौकड़ी की होए ।
चौथीरातनारायनजीकी, नाही निरमान कह्यो सोए ।।

रासकी रात इनपर भई, ए चारों इनके दरमियान ।
कदीनारायनजीअपनीरातका, निरमान कहें पेहेचान ।।६

पर रास की रातको निरमान, करना सके कोए ।
सोतो मृत लोकमें भई, बिन मोमिन न कादर होए ।।८

ता समे की सुनो मोमिन, उदय सोल कला ससी जान ।
राजा उडु नक्षत्र का, ककुभ प्राची दिस पेहेचान ।।६

लालक से लेपन करी, प्राची दिस परवान ।
किरना अपनी पसारके, लालक सीतल जान ॥१०
आया आनंद दिस को, सचरषणी सरवत्र जान ।
ताको मोद ऐसो भयो, कही न जाए पेहेचान ॥११
द्रस्टांत देत ता ऊपर, ज्यों एक विरहन नार ।
दीरघ कालों आइया, जब मिले तिन भरतार ॥१२
ताय आनंद अति होत है, त्यों दिसें भई सुखकार ।
और कुमोदनी वनसपती, सब कमल फूलनहार ॥१३
अखंड मंडल चंद्रमा, रस सींचत सब बन ।
है भरतारब्रखवेलियों, ताकों देखत प्रफुल्लित भयो मन ॥१४
रमा लछमी बैकुंठ में, जो भगवान की अरधांग ।
मानो मुख है तिनका, था सनमंध भ्राता संग ॥१५
गो-किरना कही तिनकी, अति सोभित तिनसे बन ।
ताको देख वेण बजायो, सखियों के मन हरन ॥१६
तामे गान ऐसो कियो, अनंग वृद्ध करने काम ।
हर लिये मन ब्रज सुन्दरी, ब्रन्दावन ठाढ़े हैं साम ॥१७
अपनो उदंम चलन को, कोई न लखाए किन ।
जाहां कंत खड़ा अपना, लटके कुंडल वेग चलत तिन १८
कोई गाय दोहन करै, छूट गया दोहन हाथ ।
कोई दूध अवटावती, सो छोड चली ताको साथ ॥१६
मनु उदवेगन हो रही, सुनते वेणु कानन ।
ए तामसियां पेहेली चली, चली राजसियां दिल रोसन ॥२०

कोई भरतारन कों पीरसती, कोई बाल करावे पय-पान ।
कोई पत की सेवा मिने, छोड़ते कछू ना रही पेहेचान ॥२१

कोई जेमने के समे, कोई जल करती पान ।
कोई भोजन भरतार को, छोड़ते कछू ना रही सान ॥२२

कोई नहाय अंग लेपना करे, कोई पोंछत तन ।
कोई नैन समारतीं, देत एक आंख अंजन ॥२३

कोई बस्तर पेहेनती, कोई भूषन पांउके पेहेनती कान ।
सान न रही सरीर की, जाते निकट क्रस्न सनमान ॥२४

ताय पत मने करने लगे, पुत्र भ्रात कुटुंब परवार ।
जाकी हरी आतमा सामने, सो क्यों फिरे इन बिहार ॥२५

स्वातसी ग्रह में रहे गई, निकसने न पावें ठौर ।
भाव सरूप रूदे धर, चित में न आया और ॥२६

ध्यान किया मीच लोचन, रह्या सरूप हिरदै भराए ।
मंगल छन तैसे भए, असुभ विरहे ताप से गया नसाए ॥२७

प्रीतम विरह ना सहे सकीं, इनकी पोहोंची पर आतम ।
जार बुध उप संग से, छूट गया आकार का दम ॥२८

सुभ असुभ दोऊ गले, सब आगे भई प्रायत ।
जोग माया सिंगार कराए, जाए पहोंची हजूर तित ॥२९

मेहेमत कहे ए मोमिनो, सुनो पांउ भरे तुम ।
कहों आगे तुमारी बीतक, जो देखाया हक हुकम ॥३०

प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ६१ ॥

[राजा परींक्षित का प्रस्न]

इत राजाने प्रश्न कियो, ऐ मुनी सुकदेव ।
क्यों गोपी पोहोंची निरगुनको, सोए कहो मोहे भेव ॥ १

क्रस्न जी को एक रमण, जानो परमकांत सोभायमान।
न जान्यो ब्रह्म अद्वैतकों, याको कछू न थी पेहेचान ॥ २

और गुन प्रवाह संसार में, रहे संसार ग्रहस्थास्रम ।
ए कछू ना जानती, पेहेचान जो आतम ॥ ३

तो इनको क्यों प्रापत भई, वस्त जो निरगुन ।
क्यों अंधेर मिटा आतम, दिलको करो रोसन ॥ ४

तब सुकदेवे कह्या, एह तो मैं पेहेले ही कहे वचन ।
चैद्य जो सिसपालको, देख्या दुसमन मन ॥ ५

उने न चाही मुगत, थी दुसमनी दिल दरमियान ।
ताको मुगत ऐसी दई, ना तप जोग ना ग्यान ॥ ६
सोए मुगत दई तिनको, बिन चाहे बिन पेहेचान ।
इनमें तो आठो पोहोर, था रमन सुख उपमान ॥ ७
ऐसे सिसपालको उधारो, एह मैं कह्यो सप्तमस्कधं में।
ए तो प्रीतम सामकी, औरों प्रापत होय इनसे ॥ ८
जेते कोई आदमी, तिन सबनका उध्दार ।
सुनतेही मुगत होवही, इनोंको नित्त विहार ॥ ९
निदान तेरो नाम राजा तो, तोकों रजो गुन अधिकार।
ना निरमान है बलको, जिन जानो ए सगुण आकार ॥ १०

इनके देह है निरगुन, इनकों निरगुन बेहेवार ।
सब करतूत माया निरगुन, ए सबदातीन के पार ॥११

ए सरूप ऐसा है सामका, कोई याकों भजे होए काम।
कोई क्रोध कर भजे, कोए भए कर भजे इस ठाम ॥१२

कोई सनेह कर सेवही, कोऊ एकता कर एक ।
कोऊ सुहृद पने भजे, कोऊ और भावे अनेक ॥१३

यों नित जो कोऊ भजे, ताको ते निमित प्रातत होए।
तो कौन अचरज इनका, इत सक न रही कोए ॥१४

तामे राजा तूं भगवदी, तामे तोकों न चाहिए सक ।
इन तेरी रछा करी, पैठ गरभ बुजरक ॥१५

ए तो जोगेस्वरों का ईस है, एह है ताको ईस्वर ।
कोई ना पोहोंचे इनकों, याकी साहेबी सब ऊपर ॥१६

जिनकी द्रिस्ट से ऐसे कई, हाथों कर बताया इंड ।
सो सारा अखंड भया, त्रिगुन समेत ब्रह्मांड ॥१७

ताके निकट आय पोहोंची, ब्रज जोसिता भगवान ।
बोलन वालोंमें बोलका, कहे मुख मीठी बान ॥१८

मेहेमत कहे ए मोमिनो, कहों उथला के बचन ।
तुमारी परीछा लेने को, कहे मोहित बचन रोसन ॥१९

प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ ८० ॥

[सखियों को कृष्ण का उपदेश]

आय सैयां पोहोंची राज के, मिल सैयों लिया घेर ।
राजे देख सुख पाया, कहे बचन मुख फेर ॥१

देखन को परीछा, जिन माया होवे लेस ।
याद देने सैयन कों, क्यों छोड़े अपने रवेस ॥२

ऐसा दिल में लेय्रके, बचने कहे श्री मुख ।
महाभाग्य कहे बुलाए, भले चल आई सनमुख ॥३

कहो कारज तुमारो, है कुसल ब्रज में ।
हकीकत मुझको कहो, आंई कौन परोजन सें ॥४

घोर रूप एह रात है, रहे घोर जीव बीच बन ।
तिसवास्ते पीछे फिरो, तुम बड़ी कुलबधू जन ॥५

तुमारे माता पिता, और कुटंम परवार ।
सब ढूंढ़त हैं तुमकों, ताको करो मनुहार ॥६

तिनसों हठ न कीजिए, जो कदी देखन आइयां बन ।
राकेस कर सोभित, जमुना उजल जल रोसन ॥७

बन देखो सोहामनो, फूल सुगंध सीतल सार ।
पात फूल फल चेतन, देखो जोगमाया विस्तार ॥८

अब रात बोहोत जात है, सती सेवै पती जान ।
तुमारे वछ बालक रोवत, ताए सेवो सिखापन मान ॥९

अथवा मेरे सनेह की, आई जंत्री तुम ।
आंई भले पालो परवार, तुम मानो मेरा हुकम ॥१०

अथवा मेरे सनेह की, आंई जंत्री तुम इत ।
कुटुंब को पोषन करो, जाओ घरों तित ॥११

परम धरम अस्त्रीअनको, सेवै पती सनमुख ।
तुम बुध हो कल्यानी, है तुमारो प्रजा पोषण में सुख ॥१२

दुसील दुरभाग्य होए, वृद्ध जड़ रोगी अपार।
पतिब्रता छोड़े नहीं, ऐसा होय पत भरतार ॥१३
तासे सरग न होवे प्रापत, फल थोड़ा भए बोहोत होए।
जगमें निंदा सब करे, ऐसा करे ना कुलबधू कोए ॥१४
मेरा स्रवन दरसन, और करे जो मेरो ध्यान।
नहीं निकट मेरे तैसा, सुख सब है मिने पेहेचान ॥१५
तिसवास्ते तुम सब, फिर जाओ अपने घर।
उतही ध्यान सुमरन करो, रहो भजन मेरे में ततपर ॥१६
एह वचन सुकदेव ने, राजा को सुनाए कान।
सुन सुकन भगवान के, दुख पायो मेर समान ॥१७
मेहेमत कहे ए मोमिनो, ऐसे बचन सुनाए कान।
ताको उत्तर तुम दियौ करो ताकी पेहेचान ॥१८
प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ६८ ॥

[गोपियों की अवस्था]

अब कहों वचन सैअन के, जो उत्तर दियो तुम।
सो सुकन याद करो, जो देखाया तुमे हुकम ॥१
सुकजी राजा सों कहे, अप्रिय सुने बचन।
गोविंद मुख गोपीअने, भए भग्न संकलप मन ॥२
दुरतेया चिता भई, याको तर ना सके कोए।
सखी सात्विक मूरछित भई, तलफ राजसियों होए ॥३
तामसियां सामे भई, पेहेले किए वसुधा मुख।
स्वांसो स्वांस लेने लगी, लाल अधुर स्फुर पायो दुख ॥४

चरन अंगूठे कर, लगीं भोम लिखने ।
दोऊधारो नैनों आंसू झरे, दोऊ तरफों चले तिने ॥५

खुसबोय अगरजा चंदन, भीग चले सब ठौर ।
लगियां छेड़े पोंछने, फेर स्वासो स्वास ले और ॥६

कछू रुदन कछू पोछत, कछू बोल ना सके मुख ।
एक मही सखी बोलनको, हुई राजसों सनमुख ॥७

बड़ो कुलाहल इन समे, हुओ साथ में तब ।
मने करत छानी रहीं, सहीए बचन कहे जब ॥८

सुनो सइया एक मैं कहों, है अपनी तकसीर ।
क्यों ना राज ऐसा कहे, अपन पोहोंचे ना राज तीर ॥९

राज आए प्रातसे संभालों, आपन रहे बीच घर ।
सोभी बोलाए लई अपनकों, भूल मानो सबे इन पर ॥१०

सुकजी राजासों कहे, सिफत ब्रजबधू के नाम ।
श्री क्रस्नजीके अरथे, छोड़े सब अपने काम ॥११

रुदन करे आंसू पोंछे, गदगद कंठ कहे बान ।
सनेह पूर्वक सुकन, है प्रेमे सरूप निदान ॥१२

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए रासमें कहे सुकन ।
याद करो तुम तिनकों, आगे करत रोसन ॥१३

प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १११ ॥

[गोपियों का जवाब]

कहे सैयां सनमुख राजसों, उन बचनों के उत्तर ।
जो बोलाए पीछे फिरत, ताको सुनो पड उत्तर ॥१

तुम सब बातों समरथ, क्यों बचन केहेत कठन ।
जो तुम बताया हमको, सो हम विषे तजे सजन ।।२
और हमारे विषम वैभव, सो तो हैं तुमारे चरन ।
क्यों हमको तुम तज सको, हम विषए माया उतारी मन ।।३
क्यों न भजो तुम हमको, करो रछा सबन ।
ज्यों उपेन्द्र इन्द्र की, करे रछा सब देवन ।।४
जो तुम हमकों कहा, पती बताए संतत ।
और कुटुंब परवार, कहा स्वधर्म स्त्रीओंका इत ।।५
ए धर्मवेत्ता हम. तुमकों, नीके जान्या उत्तम ।
तुमारो वचन न लोपनो, सब किया चाहिए हम ।।६
तुमारो उपदेस तुम, करो ताको विचार ।
सब अंतरजामी आतमा, हो तुमही सबको सार ।।७
ज्यों एक दरखत खड़ा, ताए पानी सींचिए मूल में ।
तो डाल पात फूल फल को, पोहोंचत है तिनसे ।।८
और पानी डारे पातों पर, तो कहूं ना पोहोंचत ।
त्यों तुमको सेवते, सबों की सेवा होवे इत ।।९
जो कोई हेत करे तुमसों, सोई सुफल आतम ।
नित्य प्रिय तुमारो सरूप, सब सुख दाता तुम ।।१०
और तुम बताइया, पति सुत दाता दुख ।
हो प्रसन्न तिन वास्ते, वरदे स्वर दे हमें सुख ।।११
आसा हमारी पूरन, करने है सब तुम ।
बोहोत दिनन की उमेद, क्यों दूर करत हो हम ।।१२

हे कमल दल लोचन, हमारे चित बांधे तुमसे ।
ग्रह काम हम क्यों करें, चेतन आतम रही तुम में ॥१३

बाकी जड़ता आकार की, तिनसे कछुए ना होए ।
चरन न पाउँ छोडहीं, क्यों काम करैं ब्रज में सोए ॥१४

हम तो तुमारी अंगना, सींचो अधरा अमृत ।
मुरली द्वार अधुर से, हंस अवलोको हमसे इत ॥१५

कल गीत वेणु बजाए के, काम अगनी करो दूर ।
जो कदी तुम ना कहो, विरहन आकार करे चूर ॥१६

और ध्यान करके जोए, तुमारी पदवी निज धाम ।
तांहां हम पोहोंचे तुम, तो इहां क्यों न पूरो मनोरथ काम ॥१७

हे सखे तुमसे कहे, हे कमल दल लोचन ।
तुमारे चरन कमल, रमा तलासे दे तन मन* ॥१८

और दिया कृपा करके, अरंन वासी कों कछु होए ।
हम प्रार्थना करत हैं, भजत भगते सब सोए* ॥१९

कोऊ पार न पावही, तुमारी माया दुस्तर ।
रेहेत लछमी वछस्थल, चरन उपासना सब पर* ॥२०

सब सेवक सेवही, तुलसी बसे चरन ।
ताकी रिस लछमी करै, याको एही चितवनी मन* ॥२१

सब देव वांछैं कटाछ जिनकी, सो रज वांछत चित दे मन
मोकों एही दीजिए, तुम प्रियकी सेवन ॥२२

तिस वास्ते तुम हम पर, क्यों ना होत प्रसन्न ।
तुम दूर कियो दुःख ब्रज को, हम प्रापत भई चरन* ॥२३

सबको हम छोड़ के, करी तुमारी उपासन ।
सुंदरता सरूप की, हुआ तीवर काम उतपन्न* ॥२४

तुमारी निरखन से, हे पुरुष भूषन ।
तीवर कामना हमको, दे दास पना सबन* ॥२५

देख मुखार-विंद को, दोऊ बाजू जुलफन ।
कुंडल कानों झलकत, है गौर गलस्थल रोसन* ॥२६

अधुरामृत लालाक से, हंस करो अवलोकन ।
अभे दान हमको देओ, भुजा तले रखो सरन ॥२७

अवलोको नैनन से, रहे रमा उर पर खास ।
हम और न चाहत, सेवे तुमे होय दास* ॥२८

कौन स्त्री ऐसी है, इन त्रइलोकी मिने ।
जब वेणु धरो अधर पर, करो गान अमृत देओ स्रवने* ॥२९

सो सुन कुल मरजाद कों, ग्रेहेने ना समरथ कोए ।
सब सोभा त्रिलोकी की, जाके देखने में होए* ॥३०

सो कैसे रहे ना सकत, इत कोई नाही समरथ ।
गाय पंखी ब्रख मृग, कर सकें न अपना अरथ* ॥३१

रोम रोम हरख होत है, जड़ पसु सब कोए ।
ऐसे भी हम ना भए, होए जड़ ब्रख समान भी सोए* ॥३२

भए हरने हमारे, इन वास्ते प्रगटे तुम ।
ज्यों आद पुरुष स्वर लोक की, रछा करे सब कुम* ॥३३

तिसवास्ते कर पंकज, धरो तपत हमारे स्तन पर ।
तुम आतम के बंधन, किंकरी करो तुमारे घर* ॥३४

मेहेमत कहे ऐ मोमिनों, एह कहे तुम सुकन ।
होए सनमुख साम के, बीच नूह किस्ती रोसन ॥३५

प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १४६ ॥

[रास विहार और कृष्ण अंतर्ध्यान]

कहे बचन सनमुख, झरत आंसू नैनन ।
कर रबद पीछे गिरी, सुने सबोंने वचन ॥१
एकै बेर सबे गिरी, रुदन करे जलधार ।
राज देख हाल इनों का, मैं करों सइयां विहार ॥२
आंसू पोंछे मुख के, अपने वस्तर सें ।
उठाइया अंक भर के, मैं रमूं रहूं तुममें ॥३
मैं तुम से एक छन, जुदा ना सकों होए ।
तुम वल्लभ हो मेरे प्राण के, क्यों सहूं दुख तुमारो सोए ॥४
ए बचन सुके कहे, राजा सों सम्वाद ।
राज सखियाँ सबे उठे, कर रास रमन बुनियाद ॥५
वृन्दावन देखाया जुगते, फिर सब ठोर ।
बन गलियों जमुना तट, रेहेस लीला करी जोर ॥६
हे जोगेस्वर का ईस्वर, तब हंसे आतमाराम ।
जो अंदर सो बाहेर रमै, किए पूरन मनोरथ काम* ॥७
ता समै तिन साथ सों, करी उदार चेस्टा विहार ।
प्रफुल्लित मुख सबन के, पायो अति सुख अंग करार ॥८
उदार हाँस करने लगे, द्विज दंत झलकत नूर ।
ज्यों गजराज विहरे बन में, ताको कह्यो न जाए जहूर* ॥६

गाती रमती इन में, फिरैं जूथ बनिता बन।
एक एक में तीन से, चालीस बार सहस्त्र एक तन ॥१०

माला झलकत उर पर, रमे खंड खंड बन मांहे।
फेर रमते आए जमुना तट, रेती सुंदर झलकै तांहे ॥११

लिए बांह पसार आलिंगन, नीवी स्तन नख ग्रहे एधान।
खेलावें लोक नीति पर, परस परे सनमान* ॥१२

इन भांत सुख सागर, सब सैयां हुई गरक।
मन इच्छित कामना, सबों पूरी हुई बुजरक ॥१३

अधिक मान गर्व सागर, मूल सरूपें देख्या इत।
सुख सब एह धाम में, हुआ विरह दुख चाहिए बखत ॥१४

लिया आवेस आग्या कर, अख्यर सुरत पर।
जब सुरत एकली भई, देख्या धाम साथ निज घर ॥१५

सुरत चमक पीछे फिरी, तब भए अंतर ध्यान।
कहा राज कहां रमते, एही रही रटन मुख बान ॥१६

कहूं न पावै ढूढ़ते, सब जागा ठौर ठौर।
तब लगी रोने पुकारने, विरह किआ अति जोर ॥१७

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए है तुमारो रमन।
फेर याद करो तुम बीतक, सब एक ठोर मोमिन ॥१८

प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १६४ ॥

[कृष्ण वियोग में सखियों की अवस्था]

एह कह्या श्रीभागवत, दसम स्कंध के मिने।
उनतीसमें अध्या मिने, वचन कहे राजा आगे सुकन ॥१

अब कहों अध्याय तीसमा, जो किए विरह वचन ।
अंतरधान समे भयो, विरहे गाय तलफे तन ॥२

सुकजी राजासों कहे, जब भए अंतरधान ।
एकै समे ब्रजांगना, तपत भई सुन कान ॥३

तम आंखन आय गई, विचरत विकलप मन ।
ज्यों करिनी जूथ जुदा होय, त्यों फिरे विकलप तन* ॥४

चित विभ्रम देखत फिरैं, वचन कहैं मनोहर ।
चित्त आरूढ सरूप पर, ले लीला चित्त ऊपर ॥५

तैसी तैसी चेस्टा, लगीं करन सब कोए ।
अजू ब्रे हे ब्याप्यो नाहीं, साम आतम रूप है सोए ॥६

ले गत साम सरूप की, और मंद मंद मुसकान ।
नैनों ज्यों कर निरखत, मुख मीठी बान बोलन ॥७

ए सखी रास सरूप पर, आरूढ भई सबकोए ।
आसा दिल में आवन की, अबला विभ्रमचित्त है सोए ॥८

न जानैं वेहेवारकों, कोई गान करे बीच बन ।
कोई ऊंचे स्वर आलापत, कोई राग तरंग उतपन ॥९

कोई विचरत बन में, कोई उनमद आकार ।
कोई बन बन में फिरती, ढूंढे चित्त हरन-हार ॥१०

कोई आकासे पूंछती, रहे अंतर कहे वचन ।
चित्त चितवन ढूंढ़न की, पूछैं विलख अपना बन ॥११

पूछैं पीपल अस्वत्थ से, ले गया चोर हमारे मन ।
नंद सुत तुम देखया, कर प्रेम हांस अवलोकन ॥१२

कहो कुरुबंका हमको, नाग पुन्नाग चंपक।
लघु भ्राता बलभद्र का, देखाय भानो हमारी सक ॥१३

भरा मद माननीअका, गया हर कर हांस।
तिसवास्ते हम पूछत, वनस्पती आकास ॥१४

कहो तुलसी तूं कल्यानी, तोको प्रिय गोविंद चरन।
अली भमर घेरा कहूं देख्या, प्रिय मारे हमारे मन ॥१५

प्रिय अच्युत हमारड़ा, मालती ब्रख न बोले कोए।
संग सब कोई मिलके, जाती जुथपै पूंछत सोए ॥१६

सखी प्रफुल्लित है ए ब्रख, कर माधव किया परस।
प्रीत जनावत अंग में, है औरोंसों सरस ॥१७

ब्रख आंबकों पूंछहीं, अच्युत बताओ ठौर।
ब्रख प्रियाल और पनसा, कोई बतावे हमे और ॥१८

और कोऊ पूछै ब्रख वेलियां, और विरह करत अति कोए।
ए जांबू बिल्व बकासोक, हमकों राज बताओ सोए ॥१९

जेते तुम हो भोम पर, ब्रख हो परार्थ काम।
हमको क्यों ना बतावत, भई रहित पदवी साम ॥२०

कलपै हमारी आतमा, कहे ना मानै इत कोए।
मिने स्वांतसी राजसी, तामसी चरन पूछत हैं सोए ॥२१

काहा तैं तप कियो प्रिथवी, चरन राज फिरैं तुझ पर।
पुलकित अंग परसे थे, सखी देखो तुम यों कर ॥२२

अंग उछरंग तोकों भयो, भयो गर्व गरुआपन तोए।
तोकों आगे बराहने, तोसों लिया आलिंगन सोए ॥२३

एक कहे एकन सों, भई ए क्यों बतावे हम ।
गर्व मान संग पति के, हिल मिल रही आतम ॥२४

एक दूजी को कहे, ए देखो दिल विचार ।
काहां गए राज हमसे, कोई सखी है तिन लार ॥२५

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, ए विलाप किए तुम ।
एह तुम मांग्या अरस में, सो देखावत हक हुकम ॥२६

प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ २९० ॥

[कृष्ण वियोग]

एक सखी दूजीकों कहे, एक सखी राज के संग ।
अंग आलिंगन ले चले, द्रिस्ट ना देखत अंग ॥१

ए अबहीं इहां से गये, है अच्युत संग निस्वत ।
सखी कुचकुंकुम रंगीजित, कोई कलपत कोऊ हँसत ॥२

सुगंध अंगको आवही, क्यों परिमल न आई तुम ।
बाहू कंध कमल फिरावत, ए हम में कौन आतम ॥३

संग रामानुज के, मधुकुल भमर फिरे ले गंध ।
इहां आए चले जात हैं, हम क्यों ना पावत संग ॥४

ब्रख प्रणाम करत, अस्तुत करें अवलोक ।
चरन कमल चित्त लेअके, भागत इनका सोक ॥५

यों पूछत ब्रखन कों, बाहु कंध एक दूजी पर ।
वनस्पती बोलें नहीं, ताए निंदत हैं यों कर ॥६

यों सुकजी राजाकों कहें, यों उनमत्त भई गोप ।
भई कायर क्रस्न देखनकों, रहे ढूंढ़ काढ़ने चोप ॥७

तामसियां परबोधही, क्यों विकल भए मन ।
अब ही ढूंढ़ काढहीं, करें लीला प्रिया इन तन ॥८

सब मिलके अपन करें, ब्रज में लीला करी जे ।
आरूढ़ चित क्रस्न आतमा, इन और ना आवे दिल के ॥९

अति आसीगो अंगमें, हम न छोड़के जाए ।
एक दूजी प्रबोध ही, गुन देखो राज उर ल्याए ॥१०

मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, एह तुमारी बीतक ।
विलाप किए बीच बनके, तुमे खेल देखाया हक ॥११

प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ २०१ ॥

[वृन्दाबन में ब्रजलीला]

ब्रजलीला करने लगीं, जिनमें रमे श्रीराज ।
एह देख प्रगट होएंगे, तो होवे तुमारा काज ॥१

कोई वेष धरे पूतना, कोई क्रस्न वेष धरे बाल ।
लगी अस्तन पान कराने, ताको वध करत गोपाल ॥२

एक गाड़े को बेष करके, वेष दैत सकटासुर ।
बांध झोली रुदन करे बालक, पांउ मारा ताके ऊपर ॥३

एह दैत इत आया, क्रस्न बालक रूप होए ।
एक रछ रछ वचन कहे, मुख पुकारत सोए ॥४

एक वेष करे बलभद्रका, धरे बाल गोवालों वेष ।
वेन बजावे अधुर धर, करे चातुरी विसेष ॥५

कोई वेष बछरन के, कोई अघासुर फाड़े मुख ।
बाल बछ ले उदरमें, क्रस्न देख सखा पावें दुख ॥६

एक बकासुर होए के, बाल गोपाल फिरे संग ।
ताए पेहेचान के मारत, वेहे करने लागी जंग ॥७

एक केहे ना देखत, बछ गाएं गंई दूर ।
बेन बजाएके टेरही, एक एक करे मजकूर ॥८

साधु साधु सुन बेनके, यों सिफत करें सब कोए ।
कोऊ बाहू लटकावे राज ज्यों, कोई चले तिरछी चितवन होए

कोई कहे मैं क्रस्न हों, देखो मेरी गत भांत ।
ललित चाल अति सुंदर, कोई बात करे एकांत ॥१०

ना बरसा की भे करो, एक कहे यों मुख ।
मैं रछा करने समरथ, काहूं पैठ ना सके दुख ॥११

एक कहे राखे क्रस्न, इंद्र कोप मेघ धार ।
अम्बर उतार कुंडली कर, टची अंगुली उठाया भार ॥१२

आओ गोप इनके तले, कहे लकुटी टेको तुम ।
जिन गिरे काहू तरफों, तुम मेरा मानो हुकम ॥१३

एक सखी मुखसे कहे, वचन पुकारे जोर ।
मैं साहे ब्रजको करों, तुम कहो पुकार सब ठौर ॥१४

एक दुस्ट आतम जिन रहे, डंड करता खलको मैं ।
ताए एक सखी पुकारत, कहे देख इनसे ॥१५

एक दावानल देखावहीं, एक होए क्रस्न मुदावे नैन ।
खेम देत सब सखा कों, मीठे कहे मुख बैन ॥१६

एक जसोदा होए के, एक क्रस्न करे अन्याए ।
ताए बांधत, एक रेंकती रोती जाए ॥१७

एक लकुटी ले डरावत, फोड़ें भाजन दधी के ।
एक जमला अरजुन-व्रख, एक गिराए बीच होए ए ॥१८

इन भांत कै रामतें, करे बीच वृन्दावन ।
सब वनमें फिरती रहे, रहें तपत विरहा अगन ॥१९

एकने पद देख्या परमातमा, देखावे सखी और ।
नंदकुअर इहां से गए, देखन लगी ठौर ठौर ॥२०

पदम चेहेन कदमों, जव बज्र अंकुस होए ।
नैनों निरखे बन एही, क्यों ना पेहेचानत सोए ॥२१

ज्यों पगी होए पग खोजत, ता पीछे चली जांए ।
पावत नाहीं पीउकों, दुख आतुर तलफांए ॥२२

अन बांछत अबला, एक दूजी बतावत ।
कोई भूली बन में, कहे मैं राज देखे इत ॥२३

एक पुन फिरती बन में, जुगल चरन देख के ।
आतुरत मंद होय रही, मुख कहे कोई बतावे ए ॥२४

कहे एक दूजीअकों, रहे नंद सुत के संग ।
विकल होय ढूंढ़त फिरे, ज्यों करिणी जूथ बिन अंग ॥२५

ए कौन सखी आराधन कियो, जाय भगवान हरि ईस्वर ।
साम सूं प्रीत बांध के, रही एकांत विहार पर ॥२६

मेहेमत्त कहे ए मोमिनो, यों विकल भई मन ।
ढूंढ़त फिरैं ना देखहीं, फिरती वृन्दावन ॥२७

प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ २२८ ॥

[वृन्दाबन में कृष्ण की खोज]

सुकजी राजा सों कहें, धनं सखी बड़ भाग ।
रेणु राज की सबों दुर्लभ, जाको कोई ना पावे सुहाग ।।१
ता रेणु में लोटत फिरैं, जो दुर्लभ ब्रह्मादिक ।
त्रिगुन सिर धरैं पावे नहीं, लगा तासों इनो इसक ।।२
अरे सखी इत राज थे, मन पावैं अति छोभ ।
एही चरन सखी स्यामके, इनके दिल याही रहे लोभ ।।३
अधुरामृत राजके, भोग कियो सखी इन ठौर ।
देख इहां अकेले राज थे, तिन वास्ते न देखे और ।।४
खेद पावत पांऊ देखके, हैं प्रिया इत दोय ।
इत बेन गूंथी सखीअ की, फूल गिरे देखत नहीं सोय ।।५
जो जो सखी केहेत है, सोई सोई करत श्रीराज ।
फिरे यों एक एक विकलप, सब रहें ढूंढने के काज ।।६
देख सखी इन ठौर को, इत क्यों कर कियो विहार ।
केस पसार सखीअके, इन भांत कियो मनुहार ।।७
बेन गूंथी हाथ अपने, एह सुगन्ध फूलन की फब ।
इहांसे गए बेर कछू ना लगी, इहांसे उठे राज अब ।।८
सुकजी राजासों कहे, आतमा राम रमन ।
सो तो अखंड लीला मिने, जुदा रहेना अपने जन ।।
कामी जनकी दीनता, दुष्टात्मा अस्त्री-अन ।
दोय भाव देखाए खेल में, ए देखो सई जन ।।१०
इन भांत सई ढूंढते, एक सखी तलफत देखी बन ।

सखियां पूंछत तिनकों, कांहा राज किस ठौर ।
क्यों कर तेरे संग थे, मिल सब करने लगीं सोर ॥१२

वन में श्री ठकुरानीजी, ढूंढते पाई अचेत ।
वरिष्ट सब सैयन में, क्यों ना होए सावचेत ॥१३

मोकों कछू खबर नहीं, थे बन में मेरे पास ।
मैं संग चल ना सकी, बड़ो विस्वास थो आस ॥१४

मेरे ही पास थे गए, भए अंतर ध्यान ।
मैं तलफत रहे गई, मोहे और ना रही पेहेचान ॥१५

हा नाथ रमण प्रेष्ट, कांहां गए मोसों दूर ।
हम अबला दास हैं, खडी योंकर करें मजकूर ॥१६

अत लालच दरसन की, इच्छत है भगवान ।
यों देखी सखीकों विलखती, दे हमकों पेहेचान ॥१७

सखी दुखी सब मोहित, आप पर खंडित कहे वचन ।
सब विसमे होय रही, कलपत है सब मन ॥१८

फेर एकठी होयकें, ढूंढत फिरें सब बन ।
जहां लों चद्र उजाला, तांहांलों मिल ढूंढ़ा सबन ॥१९

जब अंधेरा आया, उहां से फिरें सब साथ ।
अब तो हम ना पाया, एक दूजी के पकड़े हाथ ॥२०

तब राजाको संदेह भयो, टूटी आसा जब ।
तब इनके आकार क्यों रहे, एह मोकों कहो सब ॥२१

तब सुकजीने कह्या, सुन राजा कहों तुम ।
मन कृस्न रूप होय गयो, आलापन वही आतम ॥२२

चेष्टा भी करैं क्रस्नकी, है क्रस्न रूप आतम ।
गुन तिनके गावत, याद आकार न आया भरम ॥२३

फेर जमुना तट आए के, जित सुन्दर रेत सीतल ।
ताहां आए बैठीं सब, एक ठौर सामल ॥२४

मेहेमत कहें ऐ मोमिनो, एह दूसरा तकरार ।
अपनी बीतक देखियो, ए कहों विरह विस्तार ॥२५

॥ प्रकरण ॥११॥ चौपाई ॥२५५॥

[गोपियों की विरह वेदना]

एह अध्याय तीसमा कह्या, विरहे वचन विस्तार ।
कहों अध्याय एकतीसमा, किए जमुना तीर विचार ॥

जमुना तीरे बैठके, विरहा गावत हैं नार ।
गुन कों याद कर कें, विलखैं कर याद विहार ॥२

ता दिनसे ब्रज मंडल, अधिक जय पावत ।
जब तुमे नजर करी, आय प्रगटे तुम इत ॥३

ता दिनसे लखमी, ब्रज सेवत दास पने ।
देखाओ दरसन प्रीतम, जे जन तुमारे इन में ॥४

असु-प्राण हमारे, सो रहे तुमारे चरन ।
तो तुमकों ढूंढ़त फिरैं, तलपत विरहा मन ॥५

सरद समे जो कमल, ताकी अंदर सुंदर उदर ।
तिन मानिंद श्रीमुख, ना पटंतर सरभर ॥६

हे सुरतनाथ तुमकों कहैं, तुमारी बिन मूली हम दास ।
वरदे वरदेन वाले, क्यों वध किया छेदी आस ॥७

जो तुमारे मन ऐसी थी, तो विष जलसे काहे जिलाए ।
व्याल राछस सब ठौर से, हमें तासे काहे बचाए ॥८

वृषभासुर तृणावंत से, दावानल अगन ।
इंद्र कोप बरसा करी, विस्मे भयो मेरे मन ॥६

जो वध करने हता, थी बहुत ठौर ।
वारंवार रछा करी, कहा कहें तुमे और ॥१०

जेती कोई गोपिका, ताहे आनंद के देनहार ।
अखिल देही अन्तर आतमा, करे सब अरथों विहार ॥

हे सखे क्यों ना देखावत, अपना जो दरसन ।
समरथ सब बातसे, क्यों कलपावो मन ॥१२

हे अभे देन वाले, क्यों धूतपना करै हमसे ।
सरन आंई क्यों छोड़त, क्यों न देत अभे हमें ॥१३

हे कांत कर सरोरुह, सकल कामना देनहार ।
सिर हमारे पर धरो, श्रीकर ग्रहो भरतार ॥६४

ब्रज के लोक की आरत, हरनहार हो तुम ।
तुम हमारे भरतार, न चाहिए तजनी हम ॥१५

अपने जो कोई निज जन, मंद मुसकनी कर ।
मानो दुख हमारड़े, करो अपनाइत हम पर ॥१६

हम तुमारी किंकरी, हे कमलदल लोचन ।
बदन देखाओ सुंदर, जिन तलपाओ मन ॥१७

जो सरण तुमारे आवही, पाप जाए सब नास ।
तृण चरके पीछे फिरैं, है लखमी जांहां निवास ॥१८

नागफनी कालीफन पर, धरे तुमारे चरन ।
कमल समान कोमल, धरो उर ऊपर ठारो मन ॥१६

रहे अगनत कामना, करो ता अगन को दूर ।
बोलो मीठी रसनाए, करो हमसों मजकूर ॥२०

बुध जो कोई पंडित, मन हरै तुमारी बान ।
निरखी मीठे नैनसों, करो हमारा सनमान ॥२१

क्यों हमकों मारत, हम पर क्यों उतारत मन ।
अधुर सुधारस सींचके, हैं हम तुमारे निज जन ॥२२

कदाच तुम ऐसे करो, हमारे सिर पर धरो हाथ ।
सो तो सनेही पर धरो, जो मेरे आतम सौंपे साथ ॥२३

तुमारे प्राण क्यों कर रहे, कदी यों कहो मजकूर ।
और पेहेले तुम कह्या, सो केहेने मात्र सहूर ॥२४

हम धरे तुमारे विषे, कहे हमारे जो प्राण ।
सो रहे तुमारे बिषे, सो अब काहां गई पेहेचान ॥२५

जो कदी मेरे विषे प्राण थे, तो अब रहे क्यों कर ।
पर एभी है केहेनेअ कों, जो वचन कहे इन पर ॥२६

ए तेहेकीक ऐसा ही है, जैसा केहेत हो तुम ।
पर हमारे प्राण निकलते, तुमारी कथाने रोके हम ॥२७

[कैसी तुमारी कथा, षट गुणात्मिका होए ।
जैसा सरूप तुमारा, याकों न जानत कोए* ॥२८

एक ज्ञान और वैराग्य, और ऐस्वर्य जस सब ।
और रमा साख्यात, होय बल पूरनता जब* ॥२९

ताकों कहिये भगवान, षट गुण जाको होए ।
ए न्यूनता सब मिने है, ए पूरनता रखैं न कोए* ॥३०

है पूरणता तुम विषे, छ गुन साख्यातकार ।
सोई तुमारी कथा मिने, षट्गुण ऐश्वर्य वेहेवार* ॥३१

सोई तुमारी कथा मिने, है पूरनता सुज्ञान ।
और वैराग्य है पूरन, सब जस पूरन जान* ॥३२

सब आई जस कथा मिने, पूरन लछमी कथा में जान ।
तुमारे चरित्र मिने, बसे लछमी तिन स्थान* ॥३३

समस्त बल कथा मिने, जो षट्गुन भगवान ।
है कथा तुम बराबर, एक तुमसे अधिकता जान*] ॥३४

तुमारे विरहे निकसते प्रानकों, कथा रोक रही इस ठौर ।
तुमारी लीला अम्रत, एह बल देख्या कथा में जोर* ॥३५

मेहेमत कहे ए मोमिनो, इन विध कहे वचन ।
तुम आपै जवाब देत हो, आगे और भी सुनो सुकन ॥३६

प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ २६१ ॥

[कृष्ण को उलाहना]

यों कथा तुमारी चरचते, रहे हमारे आकार ।
और न याद आवही, रहा एक तुमारा ही विचार ॥१

तपत हमारी आतम, कथा जीवन मूल ताकी होए ।
कवि मुख गायन करी, अघ पाप हरन कही सोए ॥२

जो कोई सरवन करे, होय सब मंगल प्रापत ।
सब ही लछमी कर प्रापत, जो कथा ग्रहै इत ॥३

बड़े भाग के ते धनी, जो होय तुमारी कथा सन्मुख ।
ता समान कोई नहीं, सब विध पावैं सुख ॥४

क्यों ना हंसत हो प्रिय, प्रेम कर निरखो नैन ।
विहार करो तुम हमसे, ध्यान मंगल मुख बैन ॥५

तुम रेहेस सब जानत, दे हमकों परस सुख ।
क्यों कपट काहा राखत, हमको क्यों देते हो दुख ॥६

[जंब चलते तुम ब्रज से, पसु चारने बन ।
कमल समान कोमल, है तुमारे चरन* ॥७

सो तृण सिलान पर फिरत, सीदत हमारे मन ।
सब सैयां कायर होत हैं, हे कांत कांहां जात तपे तन*॥८

जब दिन अस्त पावत, नील घूंघरिआले केस ।
वनमें रेहेके आवत, घन रज लगी भेस* ॥९

बारंबार देत दरसन, सो मन कर सुमरन ।
उरझत हैं हम दिल में, क्यों तलफावत मन* ॥१०

जो सरन आया तिनकों, सकल कामना दे तिन ।
लखमी जाय अरचन करे, धरनी भोम मंडन* ॥११

ध्यान करे जो कोई, वाकी आपदा हरन-हार ।
कमल समान ए चरन, संत सेवैं कर सार* ॥१२

सो हमारे स्तनन पर, क्यों ना करें रमन ।
हरो व्याध हमारडी, आय चित्त करो परसन* ॥१३

सुरत काम वरधन, सोक नास करन-हार ।
मुरलीने चुंबित किये, नीके अधुरको आहार* ॥१४

भूलत और राज को, ज़े कोई हैं मनुख ।
दे तुमारो रमन,. कर अधर अमृत हे सख* ॥१५

जब तुम फिरते बन में, एक त्रुटि काल जब जाय ।
होय कोट जुगन काल, ऐसो समे लखाय ॥१६

जब हमने देखे तुमको, कुटिल कुंतल राजत मुख ।
जब पलक बीच पड़ती, तब पावत विधि पर दुख ॥१७

क्यों आड़ी पलक करी, निरखत नंदकुमार ।
बड़ा जड़ ब्रह्मा भया, जिन एता न किया विचार ॥१८

ए सरूप मुख निरखते, क्यों पलकें ,हुई नैनन ।
सुख लेने हमे न देवही, यों केहेतीं मुख बैन* ॥१६

पति सुत भ्रात बांधव, ताय उलंघ आइयां हम ।
एक विलंब ना करी छनकी, गीतमोहित भई तुम*॥२०

हे कितब कपटी तुम बन, कोई तजे जोषिता वन ।
तामें भी निसा समे, क्यों तलफावे मन* ॥२१

हमारा रेहेस तम जानत, हमे काम उदय होय ।
तो मिलाप तुम क्यों ना करो, अंग परसकरो सोय* ॥

हमारे तुम सनमुख, हंस देखो आनन ।
कटाछ कर हम सनमुख, देखो दोऊ नैनन* ॥२३

दु:सह विरह हम देखत, पावैं सरूप तमारो धाम ।
एही इच्छा हमकों रही, मन उरझत इन काम* ॥२३

ब्रजके जन जो कोई हे, है आरत हरने प्रागट ।
सब विस्वके मंगल, क्यों न मानो हमारे संकट* ॥२४

तज मनका कपट, सजन होय आतम ।
क्यों अंतसकरन कलपावत, करो अंगीकार हम* ॥२५
जब चरनकमल कुच धरती, कोमलताआतमअतिसार ।
डरतीं कठन उर जान के, ताको करत विचार* ॥२६
तिन कोमल चरनसे, फिरत भोम पर तम ।
बुध हमारी फिरत है, क्रपण होत आतम* ॥२७
मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, कहे विरहे वचन ।
एह तुमारी बीतक, कहों आगे सुनो सबन] ॥२८

॥ प्रकरण ॥१३॥ चौपाई ॥३१७॥

[कृष्ण-दर्शन]

सुकजी राजासों कहे, यों कर ब्रजकी नार ।
विरहे विलाप विचित्र, रुदन करें जलधार ॥१

स्वर सुन्दर सोहामनो, क्रस्न सरूप लालसा ।
एके स्वरे रुदन करें, रहे अन्दर दरसनकी आस ॥२
तिन सैयांन के घरों मिने, मंद मुसकनी अंबुज मुख ।
उर माला पट पीतांबर, लिए इसक सरूप सब सुख ॥३
मन्मथ कामको मथते, भये प्रगट मध्य जुवतिन ।
अवलोकत प्रीतमकों, भये प्रफुल्लित मन ॥४
अबला द्रस्ट देखके, ज्यों मृत आवै प्रान ।
त्यों सैइयां सब ठाढ़ी भई, सुन स्वर भूषन कान ॥५
कोई सखी श्रीराज कों, करसों ग्रहे कर हाथ ।
सुउरी सूभट संग्राम में, कोई लेत आलिंगन बाथ* ॥६

कोई मुदित मुख आयके, बांह धरे मुदित स्कंध ।
चंदन चूआ चरचित, जुगते धरे सनंध* ॥७

कोई सखी आगे आय के, अंजुली धरे आगे मुख ।
तांबूल प्रसादी पावने, इच्छा कर इच्छे सुख* ॥८

कोई सखी ढिग आय के, कर धरे ऊपर कुच सोय ।
तपत काम अगनसे, यों कर अति सुख होय* ॥६

कोई भृकुटी चढ़ायके, प्रेम विकल होय नार ।
मारत बान कटाख्य सों, मुख क्रोधावेश बेहेवार ॥१०

कोई सखी नैनों कर, निरखे नंदकुमार ।
पलकों पल न वालती, नेत्र खुले रखे द्वार ॥११

कोई पान करे मुख नैन, तृपत ना होवैं मन ।
ज्यों अघावै न संत सेवनमें, सो अतंत पावत चेहेन ॥

कोई सखी नेत्र द्वारने, ग्रहे सरूप हिरदे अन्तर ।
ध्यान धरे नेत्र मूदके, अब क्यों भागे बाहेर ॥१३

जब रूप भराना अन्तर, भई रोम रोम हरषित नार ।
ज्यों जोग सिद्ध जोगेश्वर, प्रफुल्लित अङ्ग सुखकार ॥

सब सखी श्रीराजके, अवलोकत आनंद अङ्ग ।
परम उछाह होने लगा, सब रमे राजके संग ॥१५

विरह जनित जे ताप थे, ते छूट गये सबन ।
ज्यों ग्यानी चतुरसों मिल, त्यों प्रफुल्लित भए हैं मन ॥

गए सोक सब साथंके, मिलीं अच्युत ब्रत भगवान ।
सोभित सब सैयनमें, वैभव पुरुष समान* ॥१७

मेहेमत कहे ए मोमिनो, सङ्ग उपन्यो अति सुख ।
तुमे विरह विलास रस देखाया, मांगीथी माया दुख ॥१८

॥ प्रकरण ॥१४॥ चौपाई ॥३३५॥

[जमुना में स्नान और गोपियों का प्रश्न]

एह लीला भागवत में, अध्याय बतीसमें होए ।
इहां लीला जो करी, बताऊं आगेकी सोए ॥१
ताँहां सेती फेर उठके, आए जमुना तीर ।
गुंजार भमर करे, जमुना उज्जल नीर ॥२
फूल सुगंध प्रफुल्लित, वन गहेरी छाया सुख विहार ।
तांहां सैयां सब परवरी, राज करत मनुहार ॥३
समे रुत सरद की, ससांक स्त्रवत अमृत ।
दूर कर अंधेर कों, वन चेतन उज्जल इत ॥४
जमुना हस्त तरंग से, आय परस करे चरन ।
तित कोमल रेत बिछाय के, सेवत हैं सब तन ॥५
झीलन राज सखिन संग, जमुना जल प्रवेस ।
जल छलके रामत करे, जानी आतम खेस ॥६
बहु भांते रामत रमे, क्रीड़ा अति विस्तार ।
सखी स्यामके सनमुख, अति घनो कियो विहार ॥७
फिर निकसे सिंगार को, वस्तर पेहेनाए सखी चार ।
औरश्रीठकुरानीजीअको, और एकएकसे करे मनुहार ॥
श्रीराजके दरसन को, बड़ो अङ्ग आहलाद ।
धोयो रोग हृदयको, सुख पायो रसकाम सवाद ॥६

भई मनोरथ के अन्तको, प्रापत ज्यों श्रुति वेद ।
जाय नेत नेत कर गावही, साख न पावे भेद ॥१०

कुच कुंकुम अङ्कित, उतारे जो वस्तर ।
ताको आसन करके, साम बैठाए ता पर* ॥११

जब राज सिंगार कर, खड़े जमुना तट ।
तब सखी सिंगार करके, जो ठाढ़ी थीं निकट* ॥१२

ता सखीए रेती पर, ओढ़नी बिछाई यों कर ।
राज बिराजो या पर, ऐसे कियो आदर* ॥१३

और सखी देख कर, ल्याई अपना बस्तर ।
ता ऊपर बिछाय के, यों पोहोंची सेवा कर* ॥१४

राज चरन धर के, जब लागे बैठन ।
तब और सखी लागी बिछावने, लगी मनुहार करन*॥१५

यों आसन सब साथ के, वस्तर का बड़ा होए ।
कुच कुंकुम अंकित सबे, कियो आसन सोए* ॥१६

ता पर राज बैठाए के, साथ बैठी सखियां घेर ।
सामी नैनों नैन मिलाय के, विरहा चढ़ आया फेर ॥१७

ता आसन के ऊपर, बैठे श्री भगवान ।
जोगेस्वर हिरदे नहीं, आसन कलपे जान* ॥१८

तामें कबहू न आवहीं, ताय गोपी करे चकास ।
लखमी जो त्रिलोक की, ले सोभा बैठे खास* ॥१९

सभा ऐसी सोभंती, होय अनंग दीपन काम ।
हांस लीला कटाच्छ कर, सखी इच्छत सरूप साम* ॥२०

अंग परस कर बैठियां, हस्त कमल चरन ।
कोई अंग सों अंग लगाए के, कोई चरन धरे तपत स्तन* ॥२१
कोई अस्तुत करे मुखसे, कोई सनेह भर देखे नैन ।
कोई कोप अति धर के, सनमुख कहे वेन ॥२२
एक आसंका मन में, इत हमें उपजी आए ।
ताको उत्तर हमको, तुम नीके देओ समझाए ॥२३
एक भजै भजते को, एक विपरजै होय ।
एक भजै दूजा ना भजे, विपर जै कहिये सोय* ॥२४
और दूसरा भज के, ना भजने वाला और ।
ए दोऊ कौन ना देखत, ए कौन कांहां इनों का ठौर* ॥२५
इन प्रस्नका उत्तर, हमको देओ श्रीराज ।
तुमतो सब कछू जानत, देओ जवाब इन आवाज* ॥
सुनो सखी मैं कहों तुमें, इन उत्तर को काज ।
स्वारथकों जो भजत है, मिथ्या ताको है साज* ॥२७
जांहां स्वारथ अरथ भयो, ना तहां सुहिदेय धरम ।
गायकों दूध वास्ते, सेवत मिथ्या करम* ॥२८
अनभजते को जो भजे, माता बाल सेवै सार ।
तहां सुहिद धरम है, मध्यम एह बेहेवार* ॥२९
जो भजनवाले ना भजे, तो अनभजते भजे क्यों सोय ।
यामें विवेक देखना, जनचार प्रकार के होय* ॥३०
एक आतमा राम है, दूजे आपत काम ।
तीसरे कृतघ्न, गुरु द्रोही चौथो नाम* ॥३१

अक्रुतघन .वचन पर, लगीं समस्या करन ।
मिल आपसमें बातां करे, सो राजें सुनी श्रवन* ॥३२
नाहीं सखी मैं इनमें, मोही भजे सांच जे कोए ।
ताकीमनकीविरती वधारने, बीच अंतरपाया सोए ॥३३
ज्यों एक आगे निरधन, ताए धनकी प्रापत होए ।
फेर धन तासे जावही, धनरूप चित होए सोए ॥३४
एह नीके मैं जानत, मेरे अरथ तुम जीते लोक वेद ।
सेवा तुम सब सैयंन की, मैं नीके जानत भेद ॥३५
ना ओसीगल मैं हो सकों, लेऊं ब्रह्माकी आयु बल ।
नित्त नए उपगार करों, तोभी न परे मोहे कल ॥३६
जो भानी तुम गृह सं खला, काहू और न भानी दुरजर ।
वेद मरजादा तोड़े, तुमारे कोई ना सरभर ॥३७
मेहेमत कहे ए मोमिनो, एह तुमारी बीतक ।
आगे तुमारा रमन, सो कहे भानों सक ॥३८
॥ प्रकरण ॥१५॥ चौपाई ॥३७३॥

[रास विहार]

अब कहूं अध्याय तेतीसमां, जामें रमन कह्यो श्रीराज ।
सैयन के सुखदेन के, करत रास रमन को काज ॥१
इन भांत भगवान के, सैयों मिल सुने सुकन ।
सुसीतल बानीअसों, अति हुए प्रफुल्लित मन ॥२
ताप विरहा छोड़के, अंग रमन भए चेतन ।
रास रमनकी इच्छा करी, सबों सुखपायो आतम ॥३

आरंभ कियो श्रीराजने, रास क्रीडा करन विहार ।
अंग उछरंग अंगना, करत सबे मनुहार ।।४

सब अस्त्रियों में रतन, एक दूजीसों करे प्रीत ।
बाहुसों बाहु बांधके, करी रास रमनकी रीत ।।५

प्रवरतत रास उछव, गोपी मंडल है मंडित ।
जोगेस्वरोंका ईस्वर, होए दोय दोय सैयों बीच इत ।।६

ता अंदर प्रवेस करके, कंठ ग्रहे बांहे दोए ।
सैयनके निकट रहे, एक एक फिरत हैं सोए ।।७

दिवौकस चारो दिसा, भयो आनंद अंग उजास ।
उछव आतम सरूपको, करके पूरी सबों की आस ।।८

दुंदुभी नगारे बाजहीं, हुई फूल बरसा जलधार ।
गंधर्व पत अस्त्री लेके, जस गायन करें विहार ।।६

चेतन चरनके भूषन, वलै नेपुर घूंघरी घमकार ।
और कटि मेखला किंकिणी, स्वर मीठा उठे मनुहार ।।१०

संग योषिता क्रस्नजी, स्वर भूषन सबद होए ।
सखियां जुथ चालीस, संग बारहजार रास कह्यो सोए ।।११

तिन साथमें सोभित, सखियों बीच भगवान ।
केहेवे कों पुत्र देवकी, इत सोभा नापोहोंचे उपमान ।।१२

ज्यों मरकत मणी रोसन, कुंदन में जड़ित है नंग ।
त्यों सैयां कुंदन रूप हैं, मध्य जड़ित साम के संग ।।१३

न्यास पदनके नाचते, भुज बाहू लटकें फिरते ।
हांस करें मंद मुसकनी कर, भौं विलास बातों के ।।१४

चलत कुच भुजन मध्य, झलके पट वस्तर सिंगार ।
हलैं झलकत कानोंकुंडल, करे गंडस्थल झलकार ॥१५

झांई मुख पर झलकत, बेना गूंथी फूल गिरत ।
स्वर सुन्दर सो गावहीं, क्रस्न वधूसखियों सोभित ॥१६

ज्यों गरजत बीज्जु चमके, मध्य मेघघटा स्याम होए ।
त्यों सैयां चमके बीज्ज ज्यों, घटा साम सरूप है सोए ॥१७

अति ऊंचे स्वरनसे, जुगल सरूप करे गान ।
नीके निरत करत हैं, सुख देखावत दे मान ॥१८

रति काम प्रिय परसपर, सब हरखत अंग परस ।
भई सैयां सुखसागर, रमत रास लीला सरस ॥१९

कोई सखी संग राजके, कंठ गायन स्वर मिलाए ।
और सखी अस्तुत करैं, ले अतिभले स्वर गाए ॥२०

तब हंसी चरन को, एक दूजीको करे प्यार ।
अतिमान पायो राजसे, करैं अति रस सुख विहार ॥२१

कोई रास रमते थकी, क्रिस्न कंध धरे बांहे ।
सिथिल भई ठाढ़ी रहैं, गिरे भोम फूल तांहे ॥२२

धरे बाहू राजकी कंध पर, चंदन चूआ चरचित ।
ताकी परिमल लेयके, मुख फेर फेर चुम्बत ॥२३

कोई सखी उत आएके, निकट खडी श्रीराज ।
गालसों गाल लगाएके, करत अपनो काज ॥२४

कोई मुखसों मुख मिलायके, ले तंबोल प्रसादी जान ।
अंग अंगसों मिल गईं, यों कर देत सनमान ॥२५

कोई निरत करत है, कोई गायन करे सनमुख ।
स्वर कटि मेखला नूपुर, ए सबद में ना आवै सुख ॥२६

कोई हाथों फेरत कमल, कोई कर धरै कुच पर ।
सो सैयाँ सुख पावत, रमे राजसों इन पर ॥२७

गोप्यो पाया एकांत कर, लखमी का भरतार ।
दोए बाहू कंठ घरके, अत सुख होत विहार* ॥२८

मेहेमत कहे ए मोमिनो, कह्या तुमारा रमन ।
भी तुमें आगे कहों, ज्यों दिल होए रोसन ॥२६

॥ प्रकरण ॥१६॥ चौपाई ॥४०२॥

[रास विहार]

भी कहूं रमन रास में, जो तुम किए विहार ।
सब भातों तुमको कह्या, अति सुख दिए भरतार ॥१

बन विहरत करे गायन, करन उत्पलित भूषन ।
गाल कपोल झलकत, देखे सोभा प्रफुल्लित मन ॥२

नेपुर घूघरी किंकिनी, स्वर सुन्दर सुख होए ।
सखी सनमुख सामके, करी निरत बनाए ॥३

सुगंध सार केसनकी, प्रेमल बेहेकत जोर ।
तांहां भमर फिरत रहे, गुन्जन करे अति सोर ॥४

पुन कै भांत रामत, मिल करी रास में जब ।
कर कुच ग्रहे परसमें, सच व्यान हांस किया तब* ॥५

हांस अवलोकन प्रेमका, कटी विलसत विहार ।
रमे रमाडें ब्रजवधू, करत सुख मनुहार* ॥६

सुकजी राजासों कहै, इत हूजो खबरदार।
मैं रासलीला कहत हों, जो रहस नित्त विचार ॥७

जिन संदेह इत ल्यावही, मैं बरजों राजा तोए।
ज्यों कर अरभक बालक, दरपन रमता होए* ॥८

त्यों सैयां सरूप राजका, इहां दूजा नाहीं कोए।
अपने अंगसों रमत हैं, रहस क्रीडाअति होए* ॥९

प्रमदा कुल ब्रजवधू, इंद्री भोग विहार।
केस दुकूल वस्तर, कुच हस्त ग्रहे आकार* ॥१०

रस सरूप ऐसी भई, खबर ना रही सुखकार।
भूषन वस्तर खिस गए, करते अत विहार* ॥११

क्रीडा करी जो सामने, सत सइयों को दियो मान।
दिवौकस देवता कहे, रहे विसमित आसमान ॥१२

ससांक जो कह्यो चंद्रमा, पीडित भयो देख काम।
गण नखत्र चकित भया, थिरहो रह्यो इस ठाम ॥१३

किए सरूप जो अपने, जेती सखी आतम नाम।
रमे तिन गोपिनसों, लीला सुख सब काम ॥१४

जो आतमाराम अंदर, विहरत है सब बन अंग।
सोई बाहेर रमत है, अपनेई सरूपके संग* ॥१५

अति बिहार कियो या समे, तासों वदन भए स्रांत।
पोंछत मुख करुना कर, रमे ठौर ठौर एकांत* ॥१६

अनंग काम मनोरथ, सबोंके पूरन भए साथ।
अंगसों अंग मिलायके, कई भांत रमे ले बाथ ॥१७

कानों कुन्डल झलकत, और गलस्थल झलकत ।
सखी कुन्तल केस ग्रहे, इन समें सब सोभा लेत ॥१८

गाल गंडस्थल हंसत, मुदित हास करें मुख ।
नैनों अवलोकन करें, कह्यो न जाए ए सुख ॥१६

साम सरूप मान देत है, कर उर सुख अतिविहार ।
कृत कृत्य पूरन जानती, मन्मथ मोद सुखकार ॥२०

ता समें स्रम अङ्ग संग, नैनों नैन हुए एक ।
रंजित हैं कुच ककुम, कियो बिहार रामत अनेक ॥२१

बेहेकत सौरभ सुगंध, तांहां भमर करे गुन्जार ।
मानू गंधर्वपाल आयके, गायन करे विहार ॥२२

ज्यों गज विहार कर, रहे स्वतः गजिनी संज ।
त्यों ही विहरत वनमें, सखी लिए अपने अङ्ग* ॥२३

अतंत अस्थल सोभित, संग जुवती बिहार ।
परस परे विनोद की, प्रेम नैनों करे निहार ॥२४

हंसत हेत अति मोदसों, अंगसों अग लगाए ।
फूल बरखावें विमान सों, करे देवता ऊपर से आए ॥२५

हरषत अस्तुत करत हैं, करे लीला ज्यों गज इंद्र ।
ए दस्टांत बिहार के, सोभा ना पोहोंचे इंड ॥२६

इन भांत श्रीक्रस्नजी, बन थल जल विहरत ।
सुगंध फूल होऊ तट, बेहेकत अतंत इत ॥२७

तांहां भमर गुंजार करैं, विहरत अंगना साथ ।
ज्योंगजराजकरिणीसंग, चलैंचाललटकनीग्रहेहाथ* ॥२८

संझा को चंद्र कर सोभित, निसा रात्रि में बन ।
सत काम ब्रजअंगना, मिल जूथ सबे जुवतंन ॥२९
सखा कियो है आतमा, सुरत समै सुख होए ।
सकल काव्य कथा रस, रस बातां करें बनाए ॥३०
मेहेमत कहे ऐ मोमिनो, तुम किए इन भांत कइ विहार ।
कई सुख देखे रासमें, कह्यो ना जाए सुमार ॥३१

॥ प्रकरण ॥१७॥ चौपाई ॥४३३॥

[राजा परीच्छित की शंका समाधान]

इत राजा परीछितकों, संसे उपजा मन ।
धर्म स्थापना करने, इसवास्ते अवतार भगवान ॥१
सो क्यों धर्म मरजाद की, पुलकों डारे तोड़ ।
जो है धर्मका वक्ता, रछा करत है जोड़ ॥२
जगतका जो ईश्वर, सो क्यों परदारा करै रमन ।
ऐसे आचरन क्यों करै, ब्रह्म अद्वैत पद जिन ॥३
आप्त काम है जदुपती, करै जग निंदित क्यों करम ।
कौन अभिप्राय इनको, ए भानो मेरो भरम ॥४
ए सुकन सुकें सुनके, मन दुख पायो अपार ।
जोस था सो उतर गया, वह समै ना रहा लगार ॥४
रासलीला का सुख, रहे गया इन भांत ।
उत्तर राजाकों दिया, रेहे गई मनकी खांत ॥६
धरम व्यतिक्रम ईस्वर, करते दोष ना लगै कोए ।
तेजस्वीकों ना लगै, सब भखै अगनी सोए ॥७

और जीवहोएके कोई, चाहिए करै ना कबहूं मन ।
बिन ईस्वर दुख पावही, मूढ़ विनास पावै तन ॥८
ज्यों रुद्र विष पानकों, लोप ना सके लगार ।
और कों बोय आवते, उड़ जाए आकार ॥९
ईस्वरोंके वचन, सत कर जानिए सोए ।
आचरन कोइक लीजिए, बुधवान विचारना होए ॥१०
जो कोई कुसल आचरै, स्वारथ अपने के ।
तो विपर्य अनरथ होए, प्रभु अहंकार रहित है ए* ॥११
अखिल सकत जो कोई, त्रिजग मानुष देव ।
तिन सबनकों ईस्वर, कुसल जानै सब भेव ॥१२
जिनके चरन कमलकी, आई जरा खुसबोए ।
रिषी भ्रपत हुए तिनसे, करम जोग प्रभावे धोए ॥१३
अखंड पद सब पायके, निर्भय होए विचरत ।
ताकों कछू लागै नहीं, पाप पुन्य ना करम कृत ॥१४
तिन प्रभुकी इच्छासें, काहू ना होए बंधन ।
तोतिनकोंकाहालगतहै, होए मुगत विचरत मन ॥१५
गोपी गोपनके पत, और देह धारी सब कोए ।
जो अंतर सो बाहेर मे, ए तो एकै क्रीड़ाकरै सोए ॥
ए अनुग्रह सखियन पर, करे धर मानुष देह ।
जैसे चाहे तैसे रमे, पार पोहोंचे सुन सनेह ॥१७
भए रास ब्रज दोऊ अखंड, ताको सुनो नीके निरने ।
सैयां तुम विचारियो, जाग्रत बुध ले इने ॥१८

मेहेमत कहे ए मोमिनो, ए रासलीला सनमंध ।
आगे कहों और भी, तीसरे ब्रह्मांडकी संध* ॥१६

॥ प्रकरण ॥१८॥ चौपाई ॥४५२॥

॥ रास लीला तमाम ॥

॥ उपसंहार ॥

एह बात अद्वैत ठौरकी, जित द्वैतभाव ना होए ।
सत् चित् आनन्दरूप में, सदा सुख कहियत सोए ॥१

ताहां दुख ना परस कदी, ना कबूं इच्छा उपजे मन ।
ना नया पुराना होवही, सदा सुखकारी तन ॥२

ताहां रवद इसक का, रहे हमेसा जब ।
राज आसक सइयनका, सखिआं आसक कहे तब ॥३

श्री ठकुराणीजी कहे, मैं आसक तुमारी ।
और आसक सखियनकी, ए दिल देखो विचारी ॥४

राज रवद कहे ना करों, तुमे देखाऊं बेवरा कर ।
जब देखो खेल खबूतर, तब पाओ पटंतर ॥५

जब जुदे होए मोसों रहो, हाल जैसा होवै तैयार ।
तब मैं तुमकों जानूंगा, जब मैं करोंगा खबरदार ॥६

तब मूल मिलावे मांगया, सब सइयों मिलकर ।
खेल दुख देखाओ माया मिने, फेर फेर रवद करें योंकर ॥७

जब अग्यारबरसबावनदिन, काल मायादेखाया इंड ।
तब राज विचार किया, जोगमायाका ब्रह्मांड ॥८

निकलते सातसियों, दुख देखे छोड़ते आकार ।
तलफी राजसी उथले, रही तामसीलड़नेकोंहुसियार ॥
फेर रामत रस चढ़ी, सुख में भई मगन ।
राजने तब देखया, रहे विरहे मनोरथ तन ॥१०
इन सैयों मूल में माँगया, हमकों देखाओ दुख ।
सो तामसियों ना देखया, हे सदा धाम में सुख ॥११
तिरुवास्ते इच्छाभगवानपर, कर नीद आधी दई उड़ाए।
चेतन जोगमाया मिने, खेलत अति सुख पाए ॥१२
जब रामत रस चढ़ी, भई या सुख मगन ।
तब अपना आवेस खैंचया, रह्याअख्यरसुरतकामन ॥१३
देख सइया सुरत फिरी, चमक जगी अपने ठौर ।
अतर्धान सैयोंमें भए, विलाप कियो अति जोर ॥१४
अख्यर बुध जाग्रत में, देख्यो जोगमाया ब्रह्मांड ।
बुध ग्रहो नीके कर, एह कबूं ना भूले इंड ॥१५
फेर आवेस देयके प्रगटे, सब सैयों बीच आए ।
फेर रामत रमे सैया में, झीलन जमुना तट कराए ॥१६
फेर बैठे आरोगने, तांहां करने लागे मजकूर ।
विरहे हिरदे चढ़ आए, भाने संसै कर सहूर ॥१७
तब सुन सुकन राजके, इहां भागे सुपन ।
अख्यर ठौर अपने भए, सखियों के मुड़के मन ॥१८
पर इच्छा खेल देखनकी, रही तामसियों जोर ।
अख्यरचित्तसदासिव, चित्त पहेले देख्या ब्रज ठौर ॥१९

ब्रजलीला चित्तमें चुभ रही, नंद जसोदा गोप गोआल
गोपी-गोप गैया सबे, यों अखंड भया वहख्याल ॥२०
बुधमें रास अखंड, चित्तमें ब्रज अखंड।
राजें सैयों चित्त देखके, तीसरे मन फेलाया इन इंड ॥२१
राज साथकों देखकें, ए तामसियों न देखे दुख।
तिसवास्ते एह किया, हुकम भया श्रीमुख ॥२२
एह सोई ब्रह्मांड, हुआ फेरके सुपन।
तब अख्यरको उपज्या, एह तीसरे फेरा मन ॥२३
नंद जाने मैं नंद, जसोदा जानै हूं मैं।
गोपी गोआल त्यों के त्यों, सब उठे अपने घरों से ॥२४
एह सुकजी राजासों कही, अब भया इत प्रात।
त्योंकी त्यों क्रीडा करै, असल ब्रह्मांड की भांत ॥२५
रात ब्रह्मकी मुहूर्त बाकी रही, सखियोंकोंराजें करीरजाए।
इछा पीछे रेह गई, ठौर पोहोंची धाम सहाए ॥२६
काहू रिस ना करी तीसरेमिने, मायामोहित सब जन।
सब जाने हम पास हैं, व्रज सुंदरी व्रज में तन ॥२७
एह क्रीड़ा व्रज सुंदरी, और विस्नु थे अवतार।
जो अग्यारे दिनवेष बागे, गोकलमथुराकियोविहार ॥
एह पंच अध्याई स्त्रद्धाकर, सुने गाए करे प्रेम।
हिरदेरोग जाए धीर होए, कर ससार पोहोंचे छेम ॥२६
सात दिन गोकल में रहे, चार दिन मथुरा में।
कंस मार वसुदेव छोडे, उग्रसेंनराज पाया इनसे ॥३०

जब मथुरा घेरी सेनाले, जरा संधे ले लस्कर ।
तब चिंता आतुर भए, बैकुंठसे विस्नु आए फेर ॥३१

एह अवतार संपूरन, सोल कला संपूरन होए ।
मथुरा द्वारका लीला, एक सौ बारबरसकरीसोए ॥३२

फेर पोहोंचे बैकुठ में, एह लीला अवतार ।
अपने संग जोस हुकम, भेज्या परवरदिगार ॥३३

जो आए बीच आरब, महंमद अलै हसलाम ।
हकीकत लिखी साथकी, ल्याया अल्ला कलाम ॥३४

सब में किया जाहेर, दावत जो इसलाम ।
आवैं रूहें फिरस्ते, तुम उमेदवार रहो इस ठाम ॥३५

हजरत ईसा आवेगा, और मेहेदी इमाम ।
और उम्मत अरसकी, भई पेहेचान तमाम ॥३६

खुदा आप आवेगा, काजी होए ले हिसाब ।
तब ईमान जो ल्यावही, सो पावे बडो सवाब ॥३७

मेहेमद ईसा ईमाम, इसराफील बजावै सूर ।
तब कलजुग दज्जालकों, होए मारने का मजकूर ॥३८

अग्यारै बारै मिने, होए आठो भिस्त जाहेर ।
तब सब खलक दौड़ेगी, होएकें माहिर ॥३९

हजरत ईसे के इलमसें, सब होवे एक दीन ।
साफ दिल सब होयके, ल्यावेंगे आकीन ॥४०

कायम होवे सायत, छ दिन जिंन दरम्यान ।
पेहेले खेले ब्रज में, ताकी होवे पेहेचान ॥४१

दूसरा दिन ब्रजसे रासमें, तीसरे आए बरारब स्याम ।
चौथे दिन हजरत ईसा, पांचमें दिन इमाम* ॥४३
छठा दिन जुमेका, जित मिलै खलक तमाम ।
तहां लेखा सबका जाहेर, होए बीच दीन इसलाम* ॥
एह सायत अरम की, सो सबों देखी जाए ।
मोमिन का मरातब, देत खुदा बताए* ॥४४
दीदार भया दुनियां कों, पोहोंचे मोमिन अपने ठोर ।
उठैंआठोंभिस्तअख्यरमें, तब मुआ दज्जालकाजोर* ॥
मेहेमत कहे ए मोमिनो, एह दूसरा तकरार ।
अब आगे तीसरे की, जो देखाया परवर दिगार*] ॥४६

॥ प्रकरण ॥१६॥ चौपाई ॥४६८॥

परमधाम ब्रज तथा राज की कुलजमा चौपाई ११३६

॥ इति श्रीपरमहंस लालदास स्वामी कृत बीतक ब्रजरास नामक दो ब्रह्मांड की संक्षिप्त कथा सम्पूर्ण हुई ॥

विषयानुक्रमणिका

विषय — पृष्ठ संख्या

धामवर्णन

भूमिका	१ (४६३)
अथ मगला चरण	२ (४६४)
श्री अखंड धाम वर्णन	५ (४६७)
चौक पहिला चौरस हवेलियो का	६
,, दूसरा ,, ,,	१०
,, तीसरा ,, ,,	१२
,, चौथा ,, ,,	१३
,, पाँचमा गोल ,,	१४
श्रीश्यामाजी का सिनगार वर्णन	१८

ब्रजलीला

श्री कृष्ण जन्म	२८
नन्द घर बधाई	३२
ब्रज विहार	३४
कंसको आकाश वाणी	३६
नन्दजी का मथुरा से आगमन	४३
कृष्ण चर्चा	४४
ब्रज बस्ती	४५
अब कहों नन्द घर का	४६
कर्तव्य और प्रेम	५०
सखियों का सिंगार	५२
श्रीकृष्ण की बाल लीला	५३
घर घर ब्रज के मदिरो	५३
खेलत गोवालों संग	५४
वसंत पंचमी	५५
अध्यायों का संक्षिप्त विवरण	५७